डॉ. देव शंकर नवीन

(जन्म : 2 अगस्त 1962) मैथिली तथा हिन्दी मे एम.ए., पी-एच.डी., भौतिकी मे एम. एस-सी. तथा पुस्तक प्रकाशन एवं अनुवाद मे पी.जी. डिप्लोमा, ल.ना. मिथिला वि.वि. , दरभंगा; रांची वि.वि., दिल्ली वि.वि., जे.एन.यू. तथा केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा सं कएलाक बाद जी.एल.ए. कॉलेज डालटनगंज मे छओ बर्ख धरि मैथिली मे अध्यापन कएलनि। हिन्दी अकादमी, नई दिल्ली सं श्रेष्ठ युवा कविक पुरस्कार, पल्लिवाणी (ओड़िया साहित्यिक संस्था) द्वारा सम्मान, यू.जी.सी. द्वारा तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा कनिष्ठ शोध अध्येता वृत्ति प्राप्त कएलनि। राजकमल चौधरीक साहित्य तथा तुलनात्मक साहित्य पर विशेषज्ञता प्राप्त नवीनक प्रकाशित कृति छनि :

'ओ ना मा सी' (मैथिली तथा हिन्दी की अभ्यासकालीन सर्जना), 'चानन काजर' (मैथिली कविता संग्रह), 'जमाना बदल गया' (हिन्दी कहानी), 'राजकमल चौधरी का रचनाकर्म' (आलोचना), 'प्रतिनिधि कहानियां : राजकमल चौधरी', 'राजकमल चौधरी की चुनी हुई कहानियां', शव यात्रा के बाद देह शुद्धि, 'उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार', 'लोकवेद आ लाल किला' (संपादित), 'सद्भाव मिशन' (पत्रिका) क संपादन।

मुद्रणाधीन : 'अभिधा' (हिन्दी कविता संग्रह), 'साठ के बाद की मैथिली एवं हिन्दी कवितओं का तुलनात्मक अध्ययन' (शोध-ग्रंथ) 'राजकमल के पांच उपन्यास', 'प्रतिनिधि कविताएं : राजकमल चौधरी', 'पत्थर के नीचे दबे हुए हाथ', 'रा.क.चौ. की मैथिली कहानियां' (संपादित)।

एतद्रिक्त हिन्दी, मैथिली की समस्त प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका मे कविता, कथा, आलोचनात्मक निबंध, लघुकथा आदि प्रकाशित तथा बांग्ला, तेलुगु, पंजाबी, अंग्रेजी मे अनूदित।

रुचि : जीवन आ लेखन, भाषा आ व्यवहार, रचना आ कर्म मे समानता राखब आ विपरीत आचरण कएनिहारक विरोध करब।

संपर्क सूत्र : नेशनल बुक ट्रस्ट, ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

(आलोचनात्मक निबंध-संग्रह)

देवशंकर नवीन

अंतिका प्रकाशन

iqLrd % vk/kqfud lkfgR;d ifjn`';

¼vkykspukRed fuca/k&laxzg½

ys[kd % nso'kadj uohu

izdk'kd % vafrdk izdk'ku
153ch@ikWdsV bZ
fny'kkn xkMZu] fnYyh&110095

izdk'ku o"kZ % 2000

ewY; % lk/kkj.k laLdj.k 60 Vkdk
iqLrdky; laLdj.k 120 Vkdk

eqnzd % vkj-ds- vkWQlSV izkslsl]
fnYyh&110032

Aadhunik Sahityak Paridrishya, a book of criticism on Maithili Literature by DeoShankar Navin. Published by Nandini for Antika Prakashan

कहबाक छलजे...

मैथिली भाषा-साहित्यक गद्यक इतिहास संसारक सभ भाषा सं पुरान अछि। मुदा एकर आलोचना साहित्य संसारक सब भाषा सं पछुआएल अछि। असल मे आलोचनाक अंकुर तं लक्षण ग्रंथक फरमूला पर कृतिक परीक्षण सं फूटल, मुदा बाद मे आलोचनाक सामाजिकता महत्वपूर्ण होअए लागल। साहित्य, अपना समयक समाजक चित्तवृत्ति वाहक होइत रहल अछि। कोनो कालक इतिहास समकालीन राजाक राजपाट, शासन- व्यवस्था, युद्ध-शांति, आखेट-प्रेम, क्रूरता-दयालुताक खिस्सा कहैत रहल अछि। ओहि कालक अधिसंख्य जनता, जे राज-पाट बढ़बै मे वध भ' जाइत अछि, मरि खपि जाइत अछि, जकरा लेल कननिहार सर-कुटुमक क्रंदनक सूचना राज दरबार धरि पहुंचियो नइं पबैत अछि, ताहि समुदायक दुख दर्द कतहु उल्लिखित नइं होइत अछि। राज्याश्रय प्राप्त व्यक्तिक आतंक-अत्याचार कें विवशतावश सहैत जनताक व्यथा कतहु अंकित नइं होइत अछि। सब समयक साहित्य अही जनताक चित्तवृत्तिक इतिहास होइत आएल अछि। मुदा मैथिली साहित्यक ई विडंबना थिक जे एकटा समृद्ध साहित्यिक परंपराक अछैत, एकर कोनो दृष्टि संपन्न इतिहास नइं लिखल गेल। इतिहास-दृष्टि आ आलोचना-दृष्टिक अकाल मैथिलीक जड़िआएल बीमारी थिक। रमानाथ झा द्वारा कएल काजक विस्तार नइं भेल। रामानुग्रह झा आ ललितेश मिश्र प्रारंभ करिते देरी बंद क' देलनि। फेर अइ आलोचना दिश थोड़ेक काज कुलानंद मिश्र आ भीमनाथ झा कएलनि, मुदा हुनको मुख्य वृत्ति से नइं रहलनि। एखन मोहन भारद्वाज आ रमानंद झा 'रमण' अइ कर्म मे केंद्रित भ' कए जुटल छथि। ओना तं मैथिलीक अधिकांश रचनाकार समय-समय पर आलोचना कर्म करैत रहैत छथि। तारानंद वियोगी आ शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा लिखल थोड़ेक आलोचनात्मक लेख, आलोचनाक प्रतिमान बना सकल अछि। मुदा ई कहबा मे हमरा कोनो संकोच नइं भ' रहल अछि, जे मैथिलीक रचनाकार समालोचनाक महत्व कें बड़ कम वजन पर ल' रहलाह अछि। कोनहुं भाषाक आलोचना साहित्य ओकर सार्वत्रिक लोकप्रियता आ सार्वत्रिक प्रसारक कारण होइत अछि, एहि तथ्य सं मैथिलीक लोक अपरिचित छथि। आलोचना कर्म लेल सहृदयता, क्रूरता, ईमानदारी, तटस्थता, अध्ययनशीलता, परिश्रम आ सर्वोपरि प्रतिभाक जतबा आवश्यकता होइत छैक, ततबा पूंजी लगब' लेल मैथिली मे किओ तैयार नइं छथि। आलोचक कें ने तं सत्य कहबाक क्रूरता छनि आ ने रचनाक संग न्याय करबाक सहृदयता तं फेर आलोचना कोना हो ?

ई पोथी किछु सर्वेक्षण आ किछु मूल्यांकनक संग उपस्थित अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यक परिदृश्य ततेक विराट भ' गेल अछि, जे एक-एकटा रचनाकार पर एक एकटा संपूर्ण पोथीक खगता अछि, ताहि मे ई एकटा पोथी पूरा परिदृश्य कें कोना समेटि सकत ? सीताराम झा, कांचीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, मनमोहन झा, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', रामकृष्ण झा 'किसुन', धीरेन्द्र, सोमदेव, हंसराज, रामदेव झा, रमानंद रेणु, साकेतानन्द, रामलोचन ठाकुर, सुकान्त सोम, महाप्रकाश, भीमनाथ झा, उदयचन्द्र झा 'विनोद', कुलानंद मिश्र, पूर्णेन्दु चौधरी, अग्निपुष्प, उपेन्द्र दोषी, विनोद बिहारी लाल, नवीन चौधरी, विभा रानी, सियाराम सरस, केदार कानन, शैलेन्द्र आनन्द, राज, हरेकृष्ण झा, विद्यानन्द झा सन कतोक महत्वपूर्ण रचनाकारक योगदान कें अंकित कएने बिना आधुनिक मैथिली साहित्यक परिदृश्य पूर्ण नइं भ' सकैत अछि। मुदा एक व्यक्तिक श्रम आ एक प्रकाशकक साधनक तं सीमा होइत अछि, ताहि सीमा मे यथासाध्य क्षमताक उपयोग करैत जे भ' सकल, से प्रस्तुत अछि। लेखक आ प्रकाशक प्रतिश्रुत अछि, जे अगिला खेप मे अइ कमी कें पूर क' देल जाएत। ओना तं कोनो नीक काज कहिओ पूर्ण नइं होइत अछि। मुदा मैथिली भाषा साहित्यक प्रति तटस्थ जिज्ञासा रखनिहार पाठकक कनेको तृषा ई पोथी जं शांत क' सकल, तं हम अपन परिश्रम सार्थक बूझब।

सन् 1983 सं आइ धरि, मैथिली मे लिखल प्रकाशित अप्रकाशित आलोचनात्मक लेखक संपादित संकलन थिक ई पोथी। संपादनक क्रम मे पुरान लेख सब कें छोट-पैघ कएल गेल अछि, तें प्रकाशन वर्ष अथवा पत्रिकाक नाम उद्धृत नइं कएल गेल। शताब्दीक अंतिम दशक मे कतोक नाम अपन महत्व साबित कएलक अछि शैलेन्द्र कुमार झा, अरविंद ठाकुर, संजय कुंदन, कामिनी, रमण कुमार सिंह, निर्भय, विनय भूषण, कृष्ण मोहन झा, अनलकांत, श्याम दरिहरे प्रभृत्ति लोकनि पर सेहो विचार हएबाक चाही। मुदा, से आब आगू...। जतेक गोटएक आभारी छी, तिनकर नाम गनाएब असंभवो अछि, अनुचितो। ओना मैथिली मे थोड़ेक नटवर लाल, हर्षद मेहता, सतवंत-बेअंत सब छथि, हम हुनका लोकनिक विशेष रूप से अभारी छी।

–देवशंकर नवीन

विषय-सूची

losZ{k.k

गद्यक विकासक रूपरेखा

मैथिली साहित्यक विकासक लेल मैथिली गद्यक सभ संवर्गक समृद्धि आवश्यक अछि। सभ दिशा मे एकर गद्य सभ तरहें युगीन राग, लय एवं ताल सं चलि सकए, विषय आ शिल्प दुनू स्तर पर अपन नूतनता आ मौलिकताक स्थापना कए सकए, से अपेक्षा तं अछि मुदा एहि मे सभ सं पैघ बाधक अछि प्रकाशनक असुविधा।

गद्य लेखन, कविकर्मक कसौटी होइत अछि से सर्वविदित बात थिक। विदित बात ईहो थिक जे गद्यक विकास सं कोनहु भाषा साहित्यक सर्वतोन्मुखी विकास संभव अछि। प्रारंभिक काल सं पद्य मे लयात्मकता, पदलालित्य, छंद विधान आदि-आदि तत्व लोकरुचि कें अपना मे लपटौने रहल अछि। मुदा, तें ई नहि कहल जा सकैत अछि, जे गद्यक प्रति लोकक उपेक्षा भाव कहियो रहल होयत। होएबा लए तं भारतीय साहित्यक आदिकाव्य पद्ये सं प्रारंभ भेल अछि। किंतु, ई बात सहज अनुमानक थिक, जे ओहू समय मे गद्यक उपेक्षा नहि होइत होएत। कारण, सृष्टिक विकास मे जहिया सं मानव सभ्यताक बीच आपसी अभिव्यक्तिक माध्यम वाचिक प्रक्रिया बनल अछि, सामान्यतया लोक आपस मे वार्त्तालाप गद्यहि मे करैत होएत। जेना कि कथा-कहानीक मादे कहल जाइत अछि, जे पहिने ई कह' आ सुन'क वस्तु छल। भारतक समस्त आधुनिक भाषाक गद्यक प्रसंग इएह कहल जा सकैत अछि। सामान्य संभाषण, विचार-विमर्श, उपदेश-आदेश, कथा-उपकथा आदिक माध्यम गद्ये रहल होएत।

गद्यक विकासक परंपरा तकबा मे अपस्यांत भेल हिंदीक अनुसंधानार्थी जखन नाथपंथी योगी सभक धार्मिक उपदेशक अंश उद्धृत क' कए ब्रजभाषा गद्यक काल विक्रम सं. 1400 कहिओ क' संतुष्ट नहि भेलाह, तखन मैथिली साहित्यिक महत्वपूर्ण कृति 'वर्णरत्नाकर' दिस दौड़लाह। जखन कि मैथिली गद्यक विकास परंपरा ताक' मे एहेन कोनो फिरीसानी नहि अछि। संस्कृतक अतिरिक्त प्रायः आन कोनो एहन भारतीय भाषा नहि होएत, जकर गद्य-साहित्य एतेक प्राचीन हो। मुदा मैथिली गद्यक ई विडंबना थिक, जे एतेक प्राचीन आ सबल परंपराक अछैतो लिखित साहित्यक

रूप मे ई भकरार भ' कए नहि आबि सकल। कारण स्पष्ट अछि जे तत्कालीन विद्वतवर्ग संस्कृतानुरागी रहैत छलाह, लोक भाषा मे रचना करबा मे हीनता बोध होइत छलनि। ओहि समय मे अपन प्रखर साहसिकताक परिचय विद्यापति देलनि। घोषणा करैत लोकभाषा मे रचना कयलनि। मुदा, मैथिली गद्य हुनकहु साहित्य मे नहि पनगल।

गद्यक विधिवत विकास, वस्तुतः कोनो साहित्यक श्रेष्ठता आ साहित्यक प्रमाण-पत्र मानल जाइत अछि। मैथिली गद्यक आरंभिक सूत्र भने हमरा लोकनि कें चौदहम शताब्दी मे भेटि जाए, वर्णरत्नाकर ल' कए पुरजोर दावा ठोकि ली, मुदा ईहो बात सहज रूपें मानबाक थिक जे ज्योतिरीश्वरक पश्चात् मैथिली गद्यक धारा रुकि जकां गेल आ आजुक मैथिली गद्यक जे स्वरूप हमरालोकनि कें प्राप्त अछि, तकर गहन प्रारंभ प्रायः उनैसम शताब्दीक अंतिम काल आ वर्त्तमान शताब्दीक आरंभिक काल मे भेल अछि। ई बात भिन्न, जे आजुक गद्य कें 'वर्णरत्नाकर' सं संबंध करएबा लेल बीचक शताब्दी सभ मे नेपाल आ आसाम मे लिखल मैथिली नाटक सभक गद्य कें उद्धृत क' ली आ ओहि क्षीण शृंखला कें मैथिली गद्यक क्रमिक विकासक सोपान मानि ली। एहि मध्य व्यक्तिगत पत्र, अधिकार पत्र, दान-पत्र आदि मे प्रयुक्त गद्यक चर्चा इतिहासकार लोकनि करैत छथि। सभ समयक भाषा, समकालीन संस्कृति सं प्रभावित होइत अछि। एहि बीचक सामाजिक प्रथाक अनुसार भाषा मे परिवर्तन होइत गेल। मुदा भाषा संबंधी जे किछु महत्वपूर्ण बात उनैसम शताब्दी मे भेल से अनेक दृष्टिएं अद्वितीय अछि। एहि शताब्दीक मध्य अबैत-अबैत मिथिलाक जीवन-प्रक्रिया मे, सामाजिक परिवेश मे, क्षिप्र गतिएं परिवर्तन प्रारंभ भ' गेल। मिथिला मे अनेक अंग्रेजी स्कूलक स्थापना, विदेशी लोकनिक द्वारा भारतवासी पर अपन संस्कृति, भाषा, आचार-विचार कें थोपि देबाक उत्साह, ईसाई धर्मक प्रचार-प्रसारक तेजी, मिथिला राज्यक शासन कोर्ट ऑफ वार्ड्सक अंदर जाएब, ईस्ट इंडिया कंपनीक प्रारंभिक प्रोत्साहन सं मुसलमान द्वारा नागरी लिपिक बहिष्कार आदि-आदि घटनावली संवेदनशील विद्वान लोकनि कें उत्प्रेरित कएलकनि। मातृभाषाक प्रति हिनका लोकनि आदरक भावना बढ़ल। आन-आन पार्श्ववर्ती भाषा सभ मे सेहो गद्य प्रचलित होअए लागल। एहि परिस्थिति मे मातृभाषाक परम अनुरागी लौह-पुरुष कवीश्वर चन्दा झा, विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाक अनुवाद मे मैथिली गद्य प्रयुक्त कएलनि आ तत्पश्चात् मैथिली गद्य विविध सभा सोसाइटी, संस्था, अधिवेशन आदिक आलोक मे विकसित होअए लागल। एतए सं गद्यक परंपरा तीन दिशा मे चलल पहिल दिशा मे प्रारंभिक पौराणिक अथवा शास्त्रीय ग्रंथक अनुवाद, दोसर असहज भाषाक टीका आ तेसर पोथी सभक भूमिका आदि। मुदा, ई स्थिति बेसी दिन नहि रहल। 'मैथिल हित साधन' (1905), 'मिथिला मोद' (1906), 'मिथिला मिहिर' (1909) आदि पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल आ मैथिली गद्यक प्रगति बेस प्रखरता सं होअए लागल। पुनः

नव-नव पत्रिकाक प्रकाशन बढ़ैत-घटैत रहल आ मैथिली गद्य अनुवाद सं मौलिकता पर आबि गेल। अनुवाद भारतीय साहित्यक अतिरिक्त पाश्चात्यो साहित्यक होअए लागल। एहि सं गद्य लेखनक शिल्प एवं शैली मे तेजी तं अएबे कएल, संगहिं गद्यक उपांगक रचना सभ सेहो प्रारंभ भेल।

मैथिली गद्यक अद्यतन विकसित स्वरूपक आधार पर एकरा चारि कोटि मे बांटल जा सकैत अछि   सृजनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तथ्यात्मक। रचनात्मक गद्यक अंतर्गत कथा, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी; वर्णनात्मक गद्यक अंतर्गत जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, शिकार कथा, रेखा चित्र, रिपोर्ताज; विश्लेषणात्मक गद्यक अंतर्गत अनुसंधान, अनुशीलन, आलोचना, परिचर्चा; तथ्यात्मक गद्यक अंतर्गत इतिहास, भूगोल, धर्म, दर्शन, मनोविज्ञान आदि अबैत अछि।

आइ मैथिली गद्यक जे स्वरूप हमरालोकनिक समक्ष अछि से सर्वांश मे मैथिल हित साधन, मिथिला मोद, मिथिलामिहिर, विभूति, भारती, वैदेही आदि पत्रिका सभक संग आनो-आन पत्र-पत्रिकाक देन कहल जाएत। एहि पत्र-पत्रिका सभक संपादक लोकनि मैथिली गद्यक प्रगति मे अपन दूरदर्शिता आ मातृभाषाक प्रति प्रबल अनुरागक परिचय देलनि अछि। सन् 1898 मे पहिल बेर प्रकाशित 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवाद मे कवीश्वर चन्दा झा मैथिली गद्य मे जाहि तरहें नवताक सूत्रपात कएलनि, तकर परवर्ती प्रतिफलन एकटा सुदीर्घ, सुपुष्ट रूपें, आ पाछू मौलिक रूपें होमए लागल। प्रारंभिक काल मे प्रकाशनक अभाव छल आ संग-संग लोकभाषाक प्रति कोनो अतिरिक्त अनुराग नहि छल। गीत आदि तं लोकानुरंजनक भावना सं सेहो लोकप्रिय होइत गेल। मुदा, चन्दा झाक समय मे प्रकाशनक सुविधा भेटए लागल। लेखक लोकनिक उत्साहवर्द्धन भेलनि। विविध तरहक भावनाक प्रकाशन सं विद्वान लोकनिक दृष्टिफलक बढ़लनि। वैज्ञानिकताक प्रवेश सं लोक पार्श्ववर्त्तीक अतिरिक्त सुदूर देश सभक सभ्यता-संस्कृति सं परिचित होअए लागल। एहि क्रम मे चिंतक-विचारक लोकनि कें अपन डीह-डाबर, घर-समाज डेरही-दलान, इनार-पोखरिक अतिरिक्त देश-विदेशक संस्कृति ओकर आर्थिक, शैक्षिक, मानसिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिदृश्य सूझए लगलनि। ओ अपना सं ओकर तुलना करए लगलाह। एहि क्रम मे मैथिली गद्यक प्रगति आओर जोर पकड़लक। तें ई कहि देब एकदम भ्रामक होएत जे मैथिली गद्यक आधुनिक रूप कोनो पाश्चात्य साहित्यक अनुकृति थिक। हं, संस्कृतक ऋणी होएब एकर कृतज्ञता अवश्य मानल जाएत। वस्तुतः संस्कृतक अनुवाद सं प्रारंभ आधुनिक मैथिली गद्यक परंपरा किछु दिन धरि संस्कृतक छाहरि सं मुक्त नहि भए सकल। ओना, ईहो कहल जएबाक चाही, जे व्यक्ति विशेषक अपन मौलिकताक स्तरक कारणें संस्कृतक प्रभावक प्रतिशतता मे कमी-बेशी होइत रहल अछि।

संस्कृतक सघन छाहरि सं मुक्त मैथिली गद्यक प्रारंभ होइत अछि वर्त्तमान शताब्दीक तेसर दशकक अंतिम चरण सं। एहि परंपराक पुरोधा छथि   रमानाथ झा आ भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'। जें कि साहित्य मे कोनो नवीन भावधाराक प्रारंभ हठात् नहि भ' क' एकटा सुनिश्चित विकास परंपराक अंतर्गत होइत अछि, मैथिली गद्यहुक संग से भेल। एहि दुनू गद्यकार सं पूर्वक गद्य साहित्य कें दू कोटि मे बांटल जा सकैत अछि   पहिल ओ, जे अनुवादक कारणें खाहे रचनाकारक अनुभवहीन प्रयोगधर्मिताक कारणें संस्कृतबहुल, बेलसि भाषा विन्यास, संस्कृतक विभक्ति, सामासिकता, क्लिष्टता आदि सं युक्त अछि आ दोसर ओ, जकर आधार भने संस्कृतक हो, मुदा मैथिलीक मौलिकता, भाषाक सहजता, सरलता, आदि ओहि मे विद्यमान अछि। हं, दोसरो कोटिक गद्य मे तत्सम शब्दक बाहुल्य अछि, से धरि मान्य। किंतु, संस्कृतक विभक्ति सं मुक्त रहलाक कारणें ओकर बोधगम्यता पर आघात नहि पड़ैत अछि। एहि कालक प्रतिनिधि रचनाकार मे मुख्यतया कवीश्वर चन्दा झा, महावैयाकरण दीनबंधु झा, मुकुन्द झा 'बख्शी', त्रिलोचन झा, बलदेव मिश्र, तुलापति सिंह, जीवन झा, रघुनन्दन दास, मुरलीधर झा, गंगनाथ झा प्रभृति लोकनि अबैत छथि। एही मे सं क्रमे-क्रमे मैथिली गद्य अपन मौलिक लेखन आ मौलिक चिंतनक सीमा दिस उन्मुख भेल। क्रमशः संस्कृतक शब्दादि सं रचनाकार बचए लागलाह आ मैथिलीक मौलिकता सुपुष्ट होइत गेल। रमानाथ झा मुदा संस्कृतनिष्ठ भाषा सं पूर्णतः मुक्त नहिएं भेलाह।

एही समयांतराल मे मैथिलीक सृजनात्मक गद्य विकसित भेल। प्रारंभ मे संस्कृतक पौराणिक कथाक अनुवाद आ फेर प्रारंभिक ग्रंथक कथासूत्र पर आधारित मौलिकताक संग कथा-रचना शुरू भेल। सन् 1914 सं उपन्यास लेखन मौलिक रूपें मान्य थिक। अनुवादक क्रम मे रचनाकार लोकनि गद्यक लोकप्रियता सं परिचित भेला। अपन सामाजिक परिवेशक समस्त जीवन-विधान हिनका लोकनिक समक्ष छलनि। प्राचीन ग्रंथक उपदेशात्मकता आ मनोरंजनात्मकता सं अनुप्रेरित भ' कए ई लोकनि समकालीन जन-जीवनक कटु-मधु अपन सृजनशीलताक संग उगाहए लगलाह। मैथिली नाटकक लेखन सेहो पहिले दशक सं प्रारंभ भए गेल।

वर्तमान शताब्दीक चारिम दशक अबैत-अबैत मिथिलाक सामाजिक परिवेशक हालति थोड़ेक आओर जटिल भ' गेल। सामाजिक विडंबना मात्र बाल-विवाह, बहुविवाह, सासु-पुतौहुक अमानुषिकता, दहेज आदि नहि रहि गेल। फलतः साहित्य सेहो मनोरंजन आ उपयुक्त समस्याक आंगन मे बौआइत नहि रहल। विदेशी शासकक अत्याचार, धर्मक पाखंड, सामंतशाही निष्ठुरता, स्तुत्य संस्कृति आ परंपराक उपेक्षा, उच्चवर्गक स्वेच्छाचारिता, राजनीतिक विकृति, मानवीय संबंधक विगलन आदि-आदि समस्या जीवन-क्रम कें आओरो जटिल बनौलक। आब विद्वान लोकनि बाह्यजगतक संग-संग मनुष्यक अंतर्भावना सं सेहो परिचित होअए लगलाह। मैथिलीक कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदिक कथ्यक विस्तार भेल। हंसी-ठठ्ठा, सखी-बहिनपा,

पूजा-पाठ, विवाह-दान, कोबर-अरिपन आदि सं एकर विषय निकलि कए आत्मदमन, शोषण, अनाचार, महगी, बेकारी, भूख, दांपत्य-तनाव, दैहिक विवशता, मानसिक घीचा-तीरी, श्रम-अवमूल्यन आदिक बाट तय करैत विद्रोह आ आंदोलन धरि आबि गेल। एहि समस्त विषयक आलोक मे विद्वान लोकनि शिल्पक दिशा मे सेहो नवीन भेलाह। रमानाथ झा आ भुवनक गद्यशैली कें अपन-अपन यत्किंचित मौलिकताक संग पुष्ट कएनिहार मे परिगणित प्रमुख विद्वान सभ छथि भोला लाल दास, लक्ष्मीपति सिंह, ईशनाथ झा, सुरेन्द्र झा 'सुमन', तंत्रनाथ झा, हरिमोहन झा, जयदेव मिश्र, जयकान्त मिश्र, राधा कृष्ण चौधरी, कांचीनाथ झा 'किरण', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', आनन्द मिश्र, ललित, राजकमल चौधरी, मायानन्द मिश्र, धीरेन्द्र, सोमदेव प्रभृति।

देश-विदेशक अनूदित साहित्यक संपर्क, अपन सुपुष्ट आ सुदीर्घ सृजन परंपरा तथा फरीछ चेतनशीलता, सोझराएल दृष्टिकोण एवं मौलिक सृजनशीलताक त्रिवेणी मे स्नातक मैथिलीक सृजनात्मक गद्य आब शिल्प, शैली एवं कथ्य सभ तरहें पूर्ण समर्थ भ' आएल। जेना-जेना सामाजिक स्थिति-परिस्थिति बदलैत गेल, रचनाकारक कथ्य विस्तृत होइत गेल। एम्हर आबि कए यात्री आ राजकमल फेर सं एकटा नव प्रकाश अनलनि, जे परवर्ती पीढ़ीक लेल अनुकरणीय बनि गेल अछि। शिल्प-शैलीक स्तर पर ई दुनू व्यक्ति अपना-अपना दिशा मे विशाल प्रयोगशाला छथि, जतए शैलीक आविष्कार कएल जाइत रहल अछि आ अनुगामी पीढ़ीक लेल आलोक बांटल जाइत रहल अछि। चारिम दशक सं प्रारंभ क' कए नवम् दशकक अंत धरिक सर्वेक्षण सं साफ-साफ बात सोझां अबैत अछि जे एहि छओ दशक मे सृजनात्मक साहित्य बेस लिखल गेल ! एकटा पैघ सन वर्ग, गद्य लेखन लेल तैयार भेल। पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन सं ई धारा उत्प्रेरित भेल आ संगहि एहि अंतराल मे तीन टा महत्त्वपूर्ण मोड़ आयल। पहिल मोड़ सं एहि अंतरालक प्रारंभ थिक, जखन सामान्य सामाजिक समस्याक संग-संग परतंत्रताक त्रास ओहि कालक रचनाकार लेकनि कें आंदोलनोन्मुख सृजन दिश उत्प्रेरित कएलकनि। दोसर मोड़ थिक साठिक बादक, जखन भारतक जनता स्वतंत्रताक मृगतृष्णा सं परिचित भेल आ चतुर्दिक समस्याक जाल पसारि देल गेल। एहि समस्त आयामक संगें मैथिली गद्य विकसित भेल आ क्रमशः कथ्य तथा शिल्पक स्तर पर निधोख आ निडर भ' गेल अछि।

मैथिली गद्यक दोसर उपांग, जकरा वर्णनात्मक गद्य कहल गेल अछि, शुद्ध रूप सं हेबनि मे विकसित कहल जाएत। आत्मकथाक छिट-फुट एकाध टा परंपरा कें मजगूत करबाक लेल आ एहि विधा कें समृद्धि देबाक लेल हरिमोहन झाक देन स्तुत्य अछि। हिनकर 'जीवन-यात्रा' पुस्तक मैथिली गद्य मे आत्मकथाक विकासक परंपरा लेल माइल-स्टोनक रूप मे निर्विवाद रूपें परिगणित होएत। ओना एहि सं पूर्वहु एहि दिशा मे प्रयास प्रारंभ भेल, मुदा से अपन परिचिति नहि बना सकल।

एहि कोटिक दोसर आयाम थिक यात्रा वृत्तांत। मिथिलाक लोक पहिने विदेश गमन कें पाप बुझैत छलाह। किंतु बाद मे बहुत रास एतुक्का विद्वान लोकनि विदेश जाए लगलाह। साहित्यिक लूरि-बुद्धिक लोक कम गेलाह। स्वदेशे मे तीर्थाटन अथवा शिक्षा दानक निमित्त कएल भ्रमण कें किछु विद्वान लोकनि एहि शताब्दीक आरंभ मे लिपिबद्ध कएलनि। एहू दिशा मे छोट-छीन अनेक प्रयास भेल अछि। मुदा, सुभद्र झाक 'प्रवास' आ उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क 'विदेश-भ्रमण' एहि परंपराक लेल विपुल आलोक पुंजक काज कएलक अछि, जे मैथिली गद्यक एहि प्रभाग कें दिशाक संग-संग एकर सफलता आ लोकप्रियताक सूत्र सेहो बुझबैत अछि। शिकार-कथा प्रायः मैथिली मे नहिएं लिखल गेल अछि। अपेक्षाकृत खूब लिखल गेल अछि 'जीवनी'परक गद्य। से खाहे पुस्तकाकार हो अथवा छिट-फुट, मुदा एकर अस्मिता मैथिली गद्य मे नीक जकां स्थापित भ' चुकल अछि। मिथिलाक इतिहासपुरुष, साधु, संत, विशिष्ट विद्वान, प्रसिद्ध साहित्यकार, लोककथाक नायक आदिक जीवन कें संक्षेप मे आंकबाक खूब प्रयास मैथिली मे भेल अछि। कतेको विभूति कें केंद्र मे राखि नाटक एकांकी सेहो लिखल गेल। एम्हर साहित्य अकादमी आ मैथिली अकादमीक प्रश्रय सं वर्णनात्मक गद्यक ई संवर्ग आओरो बेसी पुष्ट भेल। आब तं व्यक्ति परक शोध प्रबंध मे सेहो, ई परंपरा बेस जकां सुदृढ़ भए रहल अछि। संस्मरण, रिपोर्ताज आ रेखाचित्र शुद्ध रूप सं एखनहुं पत्रिके धरि सीमित अछि। एकदम सं हेबनि मे विकसित ई संवर्ग अत्यंत कम समय मे आ बहुत कमे लिखएलाक पश्चात् अपन प्रतिमान स्थापित कए चुकल अछि तथा खूब लोकप्रिय भेल। लोकप्रियताक ई सोपान, निश्चित रूप सं एकर मौलिकता आ सृजन प्रतिभाक तीक्ष्णताक द्योतक थिक।

मैथिली साहित्यक विश्लेषण, परीक्षण पहिने मैथिलीएतरे विद्वान लोकनि प्रारंभ कएलनि। मुदा विधिवत मैथिली मे आलोचना आदिक प्रारंभ कवीश्वर चन्दा झा सं प्रारंभ होइत अछि जे अनेक विद्वानक लेखनी सं समृद्ध होइत रमानाथ झाक समालोचना पद्धति मे नीक जकां माटि पकड़लक आ फेर आनन्द मिश्र, शिवशंकर झा 'कान्त', रामानुग्रह झा, कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, रमानन्द झा 'रमण' प्रभृतिक लेखनी सं अनुप्राणित भेल। एहि अंतराल मे ई प्रक्रिया दुइ गोट आओर दिशा सं सुपुष्ट भेल। एक दिशा थिक विश्वविद्यालय मे प्रारंभ शिक्षण-पद्धति आ दोसर दिशा थिक पी-एच. डी. तथा डी. लिट्क उपाधि हेतु लिखित शोध-प्रबंध। एहि दुनू अभिक्रिया सं सेहो मैथिली गद्यक अनुशीलन, अनुसंधान आलोचना आदि कें यथेष्ट विकासक अवसर भेटलैक। मुदा तत्वाभिनिवेशन मैथिलीक आलोचना मे कम भेल अछि। समालोचनाक आठो तत्व प्रतिभा, सहृदयता, अंतर्दृष्टि, निष्पक्षता, सहानुभूति, ईमानदारी औचित्यबोध, अभ्यास आदि मे सं कोनो-ने-कोनो तत्वक यत्किंचित उपेक्षा होइत रहल अछि आ से भेल प्रायः उपाधि हेतु लिखल आलोचना मे। ओना साहित्यक इतिहास लेखन सेहो एहि संवर्ग कें बल देलक अछि।

वस्तुतः रचनाकार आ पाठकक बीच पुल बनएबाक क्रम मे, समालोचक, दुनू वर्गक लेल अलग-अलग सेहो क्रियाशील रहैत छथि। एहि प्रक्रिया मे रचनाकारक कृति समालोचकक परीक्षण कसौटी सं परिशोधित होइत अछि। स्वाभाविक रूप सं कृतिक गुण आ दोष दुनूक अन्वेषण होइत अछि। मुदा, रचनाकार एकरा बर्दाश्त नहि क' पबैत छथि। समालोचक एहि कोपभाजन बनबाक प्रक्रिया सं बचए चाहैत छथि। जखन कि अपेक्षा अछि रचनाकार सं सहनशीलताक आ समालोचक सं निर्भीकताक। मैथिली मे ओना अधिकांश वस्तुवादिए समीक्षा भेल अछि, कलावादी समीक्षा नहिएं जकां। मुदा, वस्तुवादी समीक्षा मे सेहो प्रारंभ मे सैद्धांतिक समीक्षा होइत रहल अछि। मोहन भारद्वाज, कुलानन्द मिश्र, रमानन्द झा 'रमण', प्रभृति अपन समीक्षा कें प्रवृत्तिमूलक बनौलनि अछि से धरि प्रशंसनीय। वास्तविक रूपें प्रवृत्तिगते समीक्षा रचनाक संग उचित न्याय क' पबैत अछि।

मैथिलीक तथ्यात्मक गद्यक विकास वस्तुतः एखनहुं मौलिक रूपें नहिएं जकां प्रारंभ भेल अछि। मैथिलीक माध्यमे स्कूल मे पढ़ौनी प्रारंभ भेला सन्तां टेक्स्ट बुक कमिटी पोथी सभक अनुवाद करौलक, तकर अतिरिक्त वेद-उपनिषद सभक अनुवाद भेल आ भ' रहल अछि। हं, इतिहासक कोटि मे परिगणित किछु पुस्तक अवश्य आयल अछि, जाहि मे प्रमुख थिक म. परमेश्वर झाक 'मिथिला तत्व-विमर्श', 'मैथिली अकादमी सं प्रकाशित उपेन्द्र ठाकुरक 'मिथिलाक इतिहास' आदि।

मुदा मैथिली साहित्यक सर्वतोन्मुखी विकासक लेल मैथिली गद्यक सभ संवर्गक समृद्धि आवश्यक अछि आ सभ दिशा मे एकर गद्य सभ तरहें युगीन राग, लय, ताल सं चलि कए; विषय आ शिल्प दुनू स्तर पर अपन नूतनता आ मौलिकताक स्थापना कए सकए तेहन प्रयास होएबाक चाही। मुदा पत्र-पत्रिका आ पुस्तकक प्रकाशन सुविधाक अभाव गद्यक विकासक प्रबल बाधक बनि आयल अछि।

आधुनिक मैथिली साहित्य पर एक नजरि

कोनो साहित्यिक कृति, समकालीन जीवन-धाराक अनुकृति होइत अछि। सामान्य जन जीवनक परिवेश आ मानसिकताक परिचय साहित्य दैत अछि। अइ परिचय देबाक क्रम मे कोनहुं कलाकृतिक लेल 'शिल्प'क उपादेयता प्रबल भ' उठैत अछि। विषय वस्तुक चयन तं सभ रचनाकार समकालीन समाजे सं करैत अछि, समाजक समस्त प्राणी अपन परिवेशक घटनावली सं तं परिचित रहिते टा अछि, तखन अइ स्थिति मे कोनो रचनाकारक रचना विशेष जं किनको नवीन लगैत छनि, तं मूल कारण ओहि कथ्यक उपस्थापन शैली होइत अछि। शिल्प आ शैली एक टा एहेन कूंची होइत अछि, जाहि सं चमत्कृत भ' क' कोनो विषय प्रेक्षकक सोझां नवीनताक संग उपस्थापित होइत अछि। उदाहरण लेल राजकमल चौधरीक दू टा कथा 'चन्नरदास' आ 'कीर्तनियां' कें लेल जा सकैत अछि। एक्के विषय पर लिखल ई दू टा कथा जं भिन्न लगैत अछि तं एकर मूल कारण शिल्पे थिक। असल मे परिवेशक समस्त घटना, जे रचनाकारक मोन-प्राण कें उद्वेलित करैत अछि, रचनाकारक संवेदनशील मानसिकता कें निश्ंचित भ' क' बैस' नंइ दैत अछि, से शिल्पेक संयोग सं अपन प्रभावशाली स्वरूप ग्रहण करैत अछि। अइ अर्थ मे विषय सं शिल्पक संबंध अत्यंत घनिष्ठ अछि।

डॉ. नगेन्द्र शैली कें विशेष भाषिक संरचना मानैत छथि। असल मे शिल्प कें शैलीक पर्याय नहि कहल जा सकैत अछि। मुदा किछु अर्थ मे शिल्प, कला, रूप, शैली, रीति आदिक स्थिति आपस मे गड्डमड्ड रहैत अछि। अइ परिस्थितिक सूक्ष्मता सं परिचित होइत कोनो भाषाक अध्ययन-परीक्षण एक टा खास अर्थ रखैत अछि।

शिल्प आ शैलीक कारण कृतिक मौलिकता देखबा लेल मैथिलीक दू टा

महत्वपूर्ण कृति कवीश्वर चन्दा झा रचित 'मिथिला भाषा रामायण' आ महाकवि लालदास रचित 'रमेश्वर चरित रामायण' कें देखल जयबाक चाही। कृतिक अइ नवीनताक मूल कारण शिल्पे थिक। ई बात अन्यान्यो कैक टा रचनाक परीक्षण मे सत्य होइत अछि।

मैथिली मे प्रेम, वर्षा, ग्रीष्म, भक्ति, विकृति आदि पर भिन्न-भिन्न रचनाकारक भिन्न-भिन्न रचना अलग-अलग भाव-बोधक अछि, तं तकर मूल कारण शिल्प आ शैलिए थिक।

विद्यापति सं ल' क' आइ धरिक मैथिली कविताक विकास क्रम मे कैक टा महत्वपूर्ण मोड़ आयल। सभ मोड़ पर शिल्प आ शैली अपन सामर्थ्यवान स्वरूपक संग ठाढ़ भेल। मुदा मैथिली आलोचना-साहित्यक नजरि अइ दिशा मे नइं उठल। शिल्प एवं शैलीक संग विषय वस्तुक अंतरंगता देखबैत मैथिली कविताक सूक्ष्मतर अध्ययन कतेक महत्वपूर्ण अछि, से गंभीरता सं नइं बूझल गेल। जूता मे खीर परसि क' खोआयब कतेक प्रभावकारी होयत, से के नइं जनैत अछि ? शिल्प आ शैलीक इएह महत्व अछि।

शिल्प आ शैलीक अनुशीलन मे ध्यान रखबाक थिक, जे भाषा, शिल्प आ रचना शैलीक वैज्ञानिक अध्ययन हो। सामान्यतया भाषाक चारि टा उपकरण मानल गेल अछि वर्ण, शब्द, वाक्य आ अर्थ। अही आधार पर भाषा-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान आ अर्थ-विज्ञानक अध्ययन होइत अछि। मैथिली कविता आ आन विधाक परीक्षण अइ कसौटी पर आवश्यक अछि। बिंब आ प्रतीकक अध्ययन सेहो शैलिएक अंतर्गत अबैत अछि। पाठकक हृदय मे कविताक प्रवेश बिंब आ प्रतीकेक माध्यमे होइत अछि आ एकरे सहायता सं कविता, पाठकक मनीषा कें उद्‌बुद्ध करैत अछि। तें ई बात सहज प्रमाणित अछि जे शिल्प आ शैलीक अनुशीलन, साहित्य-निष्पत्तिक अनुशीलन होयत।

मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक प्रवेशक पश्चात जतेक परिवर्त्तन आ प्रगति आयल अछि, तकर जड़ि पकड़बा लेल तं ई आओर बेसी महत्वपूर्ण भ' उठल अछि। ओना आधुनिक समय मे अइ कलावादी अनुशीलन पर अंगुरी उठेनिहार लोकक कमी नहि अछि, मुदा सत्य सत्य होइत अछि। साहित्य-समीक्षा करबा काल कछुआ धर्म अपनौनाइ उचित नहि। आधुनिक मैथिली साहित्यक समीक्षा करैत काल इएह कलावादी समीक्षा कोनो दू टा रचनाकारक कृतिक भिन्नता स्पष्ट क' सकैत अछि। 'निर्दयी सासु' आकि 'कन्यादान' आकि 'पारो', 'नवतुरिआ' आकि 'मधुश्रावणी' कोना क' अलग- अलग रचना भ' सकल, तकर स्पष्टता शिल्प आ शैलीक मदति सं बेसी संभव अछि।

'मैथिली मे आधुनिकता या आधुनिक मैथिली साहित्यक सूत्रपात पत्रकारिता सं भेल अछि, जकर मुख्य भूमिका कवीश्वर चन्दा झा एवं जार्ज ग्रियर्सन तैयार

कयलनि। बंगलाक विद्वान महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, पी. सी. बागची, सुनीति कुमार चटर्जी, नगेन्द्र नाथ गुप्त, खगेन्द्रनाथ मित्र, विमान बिहारी मजूमदार आदि लोकनि आधुनिक मैथिलीक विकास मे अप्रतिम योगदान देलनि।'[1]

1. समकालीन साहित्य ओ समीक्षा/डॉ. बेचन/पृ. 66

पत्रकारिताक विकास पर चर्चा करैत बेचन आगू कहैत छथि, 'पत्रकारिताक विकास 1905 ई. सं मैथिली मे भेल, जखन कि, 'मैथिल-हित-साधन' नामक पत्रिकाक प्रकाशन श्री मधुसूदन झा (जयपुर) कयलनि। सन् 1906 ई. मे 'मिथिलामोद' आ फेर 'मिथिला मिहिर'क प्रकाशन आरंभ भेल।'[1]

पत्रकारिताक विकासक मादे बेचनक मत सत्य छनि। दुर्गानाथ झा 'श्रीश' सेहो इएह गप कहैत छथि[2]। मुदा आधुनिक मैथिली साहित्यक सूत्रपातक प्रसंग बेचनक मतक संशोधन कयल जा सकैत अछि।

मैथिली साहित्यक आधुनिकता कें दू रूप मे ताकल जा सकैत अछि पहिल तं विषयगत आ दोसर शैलीगत। एहि दुनू दृष्टिकोण सं मैथिली साहित्य मे आधुनिकता आ नवताक भावभूमि कवीश्वर चन्दा झा सं पूर्वहि मनबोधक साहित्यक मे नीक जकां परिलक्षित होइत अछि।

महाकवि मनबोध सं पूर्व प्रबंधात्मक शैली मे मैथिली मे काव्य रचनाक परंपरा नहि छल। मुक्तक काव्यक रचना होइतो छल, तकर विषय-वस्तु अधिकांशतः राधा-कृष्णक प्रेम-विषयक छल अथवा भक्तिपरक छल। महाकवि मनबोध एहि परंपरा कें तोड़ि क' एक टा नव परंपराक स्थापना कयलनि आ 'कृष्ण-जन्म' महाकाव्यक रचना कयलनि। एहि कृति मे महाकवि अपन अद्‌भुत साहसक परिचय देलनि अछि। शब्द प्रयोगक आधुनिकता, तत्सामयिक लोकोक्ति आ मुहावरा प्रयोगक उत्कृष्टता, ठेठ शब्द-प्रयोगक शैली, अलंकार योजनाक नवीनता, छंद-निबद्धताक कौशल, विषयगत नूतनता सभ तरहक आधुनिकता आनि, मैथिली साहित्य मे एक टा नव शैलीक स्थापना कयलनि आ तकरहि बल पर मैथिली मे ई प्रवृत्ति बढ़ैत गेल। फलस्वरूप प्रबंधात्मक शैली मे साहित्य-सृजनक एक टा परंपरा आबि गेल आ मैथिली साहित्यक प्रबंधात्मक विधा जगजियार भेल, प्रतिष्ठित भेल, प्रचलित भेल, प्रशंसित भेल। काव्य कहबाक, सर्जना करबाक शैली मे अधुनातन प्रयोगक प्रक्रिया प्रारंभ भेल।

सिपाही विद्रोहक पश्चात लोक राष्ट्रव्यापी स्वतंत्रताक प्रति बेसी सचेष्ट भेल। अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार देखि लोक मातृभाषाक उत्थानक प्रति जागरूक भेल। मैथिलियहु मे लोकक चेतना स्फुटित भेल। गद्य मे सेहो रचना प्रारंभ भेल। नव शैलिएं साहित्य मे यथार्थ बातक उपस्थापना होअय लागल। तखन कोना नहि कहल जाय, जे मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक सूत्रपात भेल। आधुनिकता आयल, अवश्य

आयल, आ से आयल मनबोधक साहित्य सं; हं, ई बात फराक, जे कवीश्वर चन्दा झाक साहित्य मे ई बेसी भकरार भेल। हिनकर साहित्य मे थोड़ेक आओरो शैल्पिक नूतनता आयल।

---

1. ऐजन/पृ. 66-67
2. मै. साहित्यक इतिहास/डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' पृ. 122

नूतनता विषय-वस्तु मे सेहो आयल। विषय-वस्तु मे जे सर्वप्रथम नवीनता आयल, से थिक युगक यथातथ्य चित्रण।

अपन रचना मे अति साधारण, सर्वप्रचलित आ सर्वबोधगम्य शब्दक प्रयोगक कारणें कवीश्वर चन्दा झा अत्यंत लोकप्रिय रचनाकार साबित भेलाह। सर्वविधि शैलीगत नूतनताक उन्नायक हएबाक कारणें जे लोकप्रियता भेटल होइनि, मुदा प्राचीन पाखंडी सभ सं उपेक्षो कम नहि भेटलनि।

कवीश्वर चन्दा झा कें इतिहासकार लोकनि युगसंधिक कवि कहलकनि अछि, मुदा मूल रूप सं हम ई कह' चाहैत छी, जे मैथिली साहित्य मे नवताक जाहि भाव भूमिक निर्माण मनबोध कयलनि तकर सर्वतोन्मुखी विकास हिनकहि साहित्य मे भेल। पद्य रचनाक अतिरिक्त आनहुं क्षेत्र मे नव प्रयोगक प्रणेता इएह भेलाह। विद्यापतिक गद्य-पद्य मिश्रित पोथीक मैथिली अनुवाद क'क' मैथिली मे अनुवाद साहित्य आ गद्य साहित्यक परंपरा इएह चलओलनि।

मैथिली साहित्य मे मनबोध आ चन्दा झाक पश्चात् पूर्ववर्ती रचनाकार सं प्रेरणा-ग्रहण, वैज्ञानिक युगक प्रगति, देश-विदेशक साहित्य सं परिचय आ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक मदति सं शिल्प-शैली मे अनेक प्रकारक नूतनता आयल। पहिने प्रेमपरक अथवा भक्तिपरक मुक्तक गीत लिखल जाइत छल। मुदा प्रबंधकाव्य आ गद्य लेखनक विविध स्वरूप जाहि तरहें मैथिली मे होअय लागल, से आधुनिकतेक प्रमाण छल। एहि आधुनिकता कें पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक प्रारंभ भेला सं तूल भेटलैक आ क्रमे-क्रमे एहि साहित्यक सभ विधा मे शैलीक अधुनातन स्वरूपक स्थापना होअय लागल।

मैथिली मे प्रबंध काव्यक परंपराक प्रारंभ हम 'कृष्णजन्म' सं मानैत छी, सत्ते ई मैथिलीक पहिल प्रबंध काव्य थिक। ओना 'मैथिली साहित्यक इतिहास' मे दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मनबोधक कृष्ण जन्म कें कथाकाव्यक बिना कोनो परिभाषा स्थिर कयने कथाकाव्य कहि देने छथि। पुनः एही पोथी मे आगू एकरा मैथिलीक प्रथम महाकाव्य मानैत छथि। कहि नहि हिनकर दुनू उक्ति मे सत्य कोन थिक। प्रबंधात्मक शैली मे लिखल काव्य कें महाकाव्य आ खंडकाव्य दू कोटि मे बांटला पर खंडकाव्यक रचनाक प्रारंभ इतिहासकार लोकनिक सूचनाक आधार पर 1909 ई. थिक।

मनबोधक 'कृष्णजन्म', चन्दा झाक 'मिथिला भाषा रामायण' आ लाल दासक 'रमेश्वर-चरित-रामायण' तीनू प्रबंधकाव्य बीसम शताब्दीक पहिल-दोसर दशक

अथवा ओहि सं पूर्वक थिक आ तीनूक रचनाकाल मैथिली प्रबंधकाव्यक शैशवावस्था थिक। शैलीगत जे कोनो सामान्यो चमत्कार एहि तीनू मे भेटैत अछि, से अतुलित कहल जायत। ई समय मैथिली-प्रबंध काव्यक उद्‌भवक समय थिक, तथापि एहि मे शैल्पिक चमत्कार अपूर्व अछि। सहज शब्द, प्रचलित लोकोक्ति, प्रभावकारी भाषा-शैली, मार्मिक उपस्थापन शैलीक प्राचुर्य एहि मे सर्वत्र भेटैत अछि। प्रमाण-स्वरूप किछु अंश उद्धृत अछि :

कतो एक दिवस बीति गेल, हरि पुनु हथगर गोरगर भेल।
से कोन ठाम जतए नहि जाथि, कय बेर अंगनहु सौं बहराथि।
द्वार उपर सौं धरि-धरि आनि, हरखथि हंसथि यशोदा रानी।
कय बेर आगि हाथ सौं छीनु, कय बेर पकलाह तकला बीनु।

(कृष्ण जन्म)

बालापनक चंचलता कें द्योतित करबाक शैली मे रचनाकारक कल्पनाशीलता अद्‌भुत छटा आनि देने अछि।

अरे बाबा दावानल सदृश लंका जारैए
अधर्म्मी लंकेशे तनिक सभ पापे मरैए
पड़ा रे रे बाबू किछु न मन काबू परैए
बिना पानि लंकनृपति पटरानी मरैए।

(मिथिला भाषा रामायण)

लंका जरय अनाथ सन, बढ़ल ज्वाल आकाश
रवि सन कपि तहि बीच मे, शोभित प्रभा प्रकाश
अनल अनिल साहित्य सौं, लंका कै अनुमान
भरम कमल छन मे यथा त्रिपुरहि रूद्रक बान।

(लाल दास)

तीनू महाकाव्यक अवलोकन सं ई बात सोझां अबैत अछि, जे ई तीन रचनाकार लोकनि अपन-अपन कृति मे कथ्यक अपेक्षा शैली मे कनेको कम सफलता नहि प्राप्त कयलनि अछि। संपूर्ण कृति मे वर्ण, शब्द, वाक्य आ अर्थक अनुपम प्रयोग सं लक्ष्यार्थ प्रतीत करएबाक सामर्थ्य, शैल्पिक चमत्कारक योग सं आयल अछि।

श्री विद्यानिवास मिश्रक शब्द मे 'काव्य भाषा के रूप मे एक तीसरा स्तर भी जुड़ जाता है। वह स्तर है लयबोध का। यह लयबोध श्रव्यगुण के रूप मे ध्वनि व्यवस्था के द्वारा (कभी-कभी यतिभंग के द्वारा भी), कलाघात या सुराघात के द्वारा तथा आंशिक भीतरी या बाहरी तुकों के द्वारा और उससे भी अधिक एक शब्द या पदबंध या प्रत्यय या एक प्रकार की संरचना की पुनरावृत्ति के द्वारा, उस पुनरावृत्ति मे भंग के द्वारा भी सार्थकता का एक नया आयाम जोड़ देता है, किंतु इस तीसरे आयाम को पकड़ने के लिए विश्लेषणीय सामग्री विपुलता मे उपलब्ध होनी चाहिए;

जैसे पूरी कविता, कहानी, उपन्यास या महाकाव्य।’[1]

एहि लय-बोध, ध्वनि व्यवस्था, पदबंध, पुनरावृत्ति इत्यादिक लेल रचनाकार कें यथेष्ट अवसर भेटलनि। कृतिक विपुल काया, कृतिकारक विपुल शब्द-ज्ञान, कल्पनाशीलता, शैली चयनक चातुर्य आदिक योगदान सं आप्लावित भ’ क’ विशिष्ट

1. रीति विज्ञान/श्री विद्यानिवास मिश्र/पृ. 23

शैली मे अनुपम स्वरूपक संग उपस्थित भेल।

एहि तीनू कृतिक बाद मैथिली मे महाकाव्यक श्रृंखला प्रारंभ भेल। बद्रीनाथ झाक ‘एकावली परिणय’, मुं. रघुनन्दन दासक ‘सुभद्राहरण’, तंत्रनाथ झाक ‘कीचक वध’ तथा ‘कृष्णचरित’, सीताराम झाक ‘अंबचरित’, जीवनाथ झाक ‘रावणवध’, दीनानाथ पाठक ‘बंधु’क ‘चाणक्य’, श्री लक्ष्मण झाक ‘गंगा’ तथा ‘शांतिदूत’, काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’क ‘राधा विरह’, वैद्यनाथ मल्लिक ‘विधु’क ‘सीतायन’, सुरेन्द्र झा ‘सुमन’क ‘दत्तवती’, बुद्धिधारी सिंह ‘रमाकर’क ‘स्मृति सहस्री’, मार्कण्डेय प्रवासीक ‘अगस्त्यायिनी’, किरणजीक ‘पराशर’ प्रभृति महत्वपूर्ण महाकाव्य सभ थिक।

जेना कि महाकाव्यक नामे सं स्पष्ट अछि, प्रायः सभ महाकाव्यक आधार तत्व रामायण, महाभारत, श्रीमद्‌भागवत, वेद अथवा संस्कृतक प्राचीन ग्रंथ सभ थिक। एहि सभ वस्तुक चित्रण प्रायः संस्कृत साहित्य मे पूर्वहि भ’ चुकल छल। मुदा तैयो, विषयक पुनरावृत्ति पाठकक मनोमस्तिष्क कें उबिअएबाक अवसर नहि देलक आ सभ कृति कें यथायोग्य प्रशंसा भेटलैक, तकर एक मात्र कारण थिक वस्तु उपस्थापनक शैली, अभिव्यंजनाक प्रविधि।

चरित्र-चित्रण मे मनोविश्लेषण, प्रकृति-चित्रण मे मानवीकरण, अलंकार-योजना मे पदलालित्य आदि सं विविध रचनाकार विविध शैलीक आश्रय लेलनि अछि।

सैरन्ध्रीक वेश मे द्रौपदीक आत्मसंस्कार कें द्योतित करैत आ चाणक्यक आत्मचिंतन कें द्योतित करैत मनोविश्लेषणक किछु उदाहरण एना अछि

शार्दूली की कखनहुं पाबए त्रास
जंबूकक ? की ज्वलित अंगार
तृणचय सकय झांपि ? की चम्पकवास
भ्रमर तुच्छ कए सकए कतहु उपभोग ?

(कीचक वध)

रवि सम दीप्त अनल सम दाहक, पवि सम कठिन कठोर
कोनो गूढ़तम भावमगन चिंता सं आत्म-विभोर
अंग-अंग सं चूबए टपटप सुदृढ़ आत्मविश्वास
पाटलिपुत्रक जनपथ पर के घूमि रहल गत त्रास ?

(चाणक्य)

साहित्य शाब्दिककला थिक। कोनो रचना विशेष, भाषाक सीमा मे बन्हायल एकनिष्ठ वस्तु थिक। कृति, भाषा कें आ शब्द कें, ने केवल अपन माध्यम बनबैत अछि, अपितु ओ भाषाक अंतस्तल मे जन्म सेहो लैत अछि। सत्य तं ईहो थिक जे भाषाक संबंध विचार सं अछि, चिंतन सं अछि भाषाक अभाव मे मनुष्य सोचब बंद क’ देत। रचनाक संदर्भ मे भाषाक प्रकृति एवं संरचरना कें स्पष्ट करबाक क्षमते ओकर शैलीक स्वरूप होइत अछि।

महाकाव्यक रचनाक संदर्भ मे किंचित उदाहरण सं तत्काल ई कहि आगू बढ़ल जयबाक चाही, जे मैथिली महाकाव्यक विषय-वस्तु पुरान रहितहु शैलीएक कारणें प्रशंसित अछि आ कृति मे रोचकता, एकतानता आ आकर्षण आनि सकल अछि। प्रबंध काव्यक दोसर उपविधा थिक खंडकाव्य। शास्त्रीय बंधनक कारणें सेहो संभव अछि, जे मैथिली महाकाव्यक सूची नमहर नहि अछि मुदा खंडकाव्यक रचना अपेक्षाकृत बेसी भेल अछि। मुदा, जे भेल अछि, ताहि मे अधिकांशक विषय-वस्तु वैह धर्म-कथा, नीति कथा, उपाख्यान, महाभारत, पुराण आदिक आधार पर अछि। 1947 सं पूर्व खंडकाव्यक जे सूची अछि, ताहि मे इतिहासकार लोकनि छेदी झा ‘द्विजवर’क ‘कोइलीदूती’ कें सेहो खंडकाव्य मानि नेने छथि। मुदा एकरा खंडकाव्य मानबा मे हमरा विरोध अछि। ओना जे हो, एत’ हमर अभीष्ट शैलीक चर्चा करब अछि। तें एतबा कहब आवश्यक अछि, जे ‘कोइलीदूती’ संदेश-काव्य जकां लिखल भारतवासीक परतंत्रताक मनश्चेतना थिक। शैली प्रशंसनीय अछि, श्लाघनीय अछि।

मैथिली खंडकाव्यक क्षेत्र मे अभिनव भावधाराक स्थापना प्रारंभ भेल अछि श्री उपेन्द्रनाथ झा ‘व्यास’क ‘संन्यासी’ सं। ‘संन्यासी’क पश्चात उल्लेखनीय खंडकाव्य थिक केदारनाथ लाभक ‘लखिमा रानी’ तथा ‘भारती’, रमाकरक ‘शरशय्या’ आदि। ‘संन्यासी’ खंडकाव्य अंगरेजी-शिल्पक आधार पर लिखल गेल अछि। ई कृति सर्गबद्ध नहि अछि। पाश्चात्य शैली मे पंक्तिक गणनाक आधार पर एकर रचना भेल अछि। हमरा बुझने मनोरंजन झाक ‘इंटउघनी’ प्रायः एसगर एहन कृति थिक जे शास्त्र पुरानक परिपाटी सं अलग हटि क’ नूतन शिल्पक संग उपस्थित भेल।

आकर्षक आ प्रभावकारी शैली मे रचल आन खंडकाव्य सभ मे सं प्रमुख अछि व्यासजीक ‘पतन’, अमरेन्द्र मिश्रक ‘एकलव्य’, लक्ष्मण झाक ‘उत्सर्ग’ आदि।

मुक्तक काव्य मे, उनैसम शताब्दीक प्रारंभ सं आइ धरि अनेक मोड़ उपस्थित भेल अछि। छंद, अलंकार, पद, लय, ताल आदिक आधार पर विचित्र-विचित्र परिवर्तन भेल। रस-बोध, भाव-बोधक अद्‌भुत स्वरूप उपस्थित भेल। मनबोध, चंदा झा आ लालदासक साहित्य मे विषयगत, भाषागत क्रांति आयल तं आगू आबि क’ आओरो नवीनताक आह्वान भेल।

सन् 1905 मे पत्रकारिता प्रारंभ भेल। लोक अपन मातृभाषाक प्रति जागरूक भ’ चुकल छल। देश परतंत्रताक बोझ तर कुचा रहल छल। अंग्रेजक कुशासन सं

समस्त भारतीय नागरिक त्रस्त छल। ओकर भावनाक अभिव्यक्ति होयब आवश्यक छल, मुदा अभिव्यक्त करबाक लेल खतराक पहाड़ सोझां ठाढ़ छल। कुशासकक कुशासन नागरिकक मुंह कें सीबि देने छलैक। एहेन परिस्थिति मे रचनाकारक दायित्व छलैक जे ओ नागरिक कें सही दिशा-निर्देश दैथि। साहित्य कोनहुं ऐतिहासिक क्रांतिक अगुआ रहल अछि। साहित्य मे नागरिकक यथास्थितिक चित्रण आवश्यक छलैक।

संपूर्ण समाज मे विक्षोभ आ कुंठाक वातावरण पसरि गेल छल। भाषा-शैली वा शब्द-विन्यासक ढंग ततेक ने परिवर्तित भ' गेल जे प्राच्य कविता बहुत पाछू रहि गेल। अंग्रेजी मे जे कविता 'लिरिक' कहबैत छल, मैथिली मे एहि शैलीक कविता नवीन गीतिकाव्य कहाब' लागल। अर्थात् बंगला, हिन्दी आ अंग्रेजीक मिश्रित प्रभाव तथा देश-देशांतरक संपर्कक कारणें मैथिली कविता पर अद्भुत प्रभाव पड़ल। कविताक शैली मे मौलिक परिवर्तन लक्षित होअय लागल।

एहि सभ दृष्टिएं 1925 ई.क पश्चातक मैथिली कविताक शैलीगत विश्लेषण कयने ई तथ्य सोझां अबैत अछि, जे प्रगीत-काव्यक स्वरूप मे चलल एक टा काव्यक शैली बहुत बाद धरि नंगराइत-नंगराइत अबैत रहल ता बीचहि मे प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आ आधुनिक कविता आबि गेल।

ओना नवीन गीतिकाव्यक आत्माभिव्यक्ति मूलक तत्व चन्दा झाक रचना सं उभर' लागल छल। मुदा सन् 1925 अबैत-अबैत ई बेस भकरार भेल आ तकर सर्वश्रेष्ठ उन्नायक मानल जाइत छथि भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'। भुवनक पश्चात कविता कें आओरो नवीनोन्मुख करबाक श्रेय जाइत छनि वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क नामे। यात्री क काव्य धारा मे अद्भुत शैली, अभिनव प्रयोग भेल अछि। शैलीक भाषा वैज्ञानिक विश्लेषणक आधार पर एहि मे ध्वनि विज्ञान, अर्थ विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, बिंब-प्रतीक आदि सभ तरहें हिनकर कविताक शैली अभिनव अछि। भाषा शैलीक उत्तम प्रभावोत्पादकता आ शब्द योजनाक कोमलता आह्लादक अछि। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद, कारक, वचन, लिंग आदिक वक्र प्रयोग सं उत्पन्न चमत्कारक मार्मिक विश्लेषण हिनकर रचना मे देखाओल जा सकैत अछि। 1941 ई. क हिनकर कविताक पांति द्रष्टव्य अछि

तोहर मन दौड़ैत छह कोठाक दिश
पैघ-पैघ धनीक दिश दरबार दिश
गरीबक दिश ककर जाइत छइ नजरि
के तकइ अछि हमर नोरक धार दिश

(कविक स्वप्न)

सुमन, यात्री, तंत्रनाथ, मधुप, प्रभृति रचनाकारक रचनाशीलता मे अनुपम शैलीक छटा सं मैथिली कविता अनुप्राणित होइत रहल। यात्रीक 'चित्रा'क प्रकाशन बाद

राजकमलक स्वरगंधा, किसुनक आत्मनेपद प्रकाशित भेल। राजकमल लय, गीत, छंद, यति आदि सभ सं बेसी महत्व कविता मे शब्द कें देलनि, शिल्प कें देलनि :

कविता आब नहि अछि नायिका भेद, नख शिख सिंगार
कविता नहि अछि रतिविपरीतक उनटल ग्रीवाहार
कविता थिक जनजीवनक अग्निप्राण जयघोष
गाएब, गाबिकए रिझाएब नहि थिक कविता (राजकमल)

एहि तरहें मैथिली कविता एकबाइगे शिखर पर पहुंचि गेल। अद्भुत रूप सं नवीनतम परंपराक प्रारंभ गेल। कोनो तरहक 'वाद' अथवा आंदोलन सं मुक्त भ' क' नूतन बिंब प्रतीक, वक्रोक्ति, वैचित्र्य आदि सं कविताक नूतन स्वरूप बनल आ तकर अनुयायी पर्याप्त संख्या मे भेल। हिनका संगें काव्य-सृजनक प्रक्रिया मे जुटल रहलाह मायानन्द मिश्र, सोमदेव, रेणु, धूमकेतु, धीरेंद्र, रमानन्द रेणु, प्रभृति। आ हिनकर पाछां एही शैली मे काव्य-संसारक बहाव चलल। रचनाकार अएलाह गंगेश गुंजन, जीवकान्त, कीर्ति नारायण, महाप्रकाश, पूर्णेन्दु चौधरी, सुकान्त सोम, भीमनाथ झा, महेन्द्र, उपेन्द्र दोषी, उदयचन्द्र झा 'विनोद', ललितेश मिश्र, रामलोचन ठाकुर, कुणाल, अग्निपुष्प विभूति आनन्द, अशोक, तारानन्द वियोगी, केदार कानन, शिवशंकर श्रीनिवास, नारायणजी, हरेकृष्ण झा, नरेन्द्र, सारंग कुमार, रमेश, विद्यानन्द झा, प्रभृति।

मैथिली कविताक क्षेत्र मे एहि तरहें आयल आधुनिकता मे शैली कें अत्यंत गंभीरता सं लेल गेल। एक दिस कवि लोकनिक सूक्ष्म दृष्टि जं समाजक प्रत्येक नागरिकक अतल मोन मे उठैत मनोभाव, वेदना, क्रांतिक बुलबुला कें देखबाक लेल साकांक्ष भेलाह, तं दोसर दिस ओहि मनोभाव कें समाजक प्रत्येक नागरिक धरि पहुंचेबाक लेल उत्तम सं उत्तम, प्रभावकारी आ आकर्षक शैली मे ढारि देबा मे सफल भ' सकलाह। शैलीक कारणें ई कविता सभ अत्यंत नोछराह साबित भेल, जे जनमानसक सूतल विद्रोही भावना कें नोछरि-नोछरि जगेबाक लेल अधिकाधिक सफल भ' सकल।

मैथिली साहित्य मे मौलिक कथालेखनक परंपरा प्रारंभ भेल अछि मूलरूप सं वर्तमान शताब्दीक चारिम-पांचम दशक सं। एहि सं पूर्व मैथिली मे कथालेखनक नाम पर संस्कृतक कथा सभक अनुवादे चलैत छल। प्रो. हरिमोहन झाक 'प्रणम्य देवता'क प्रकाशन सं मैथिली कथा-साहित्यक ई अजोह टांग एकाएक समर्थ भ' गेल आ हिनकर भाषा शैली, वस्तु-उपस्थापनक शैली, कथ्य-चयनक प्रवृत्ति, कथा-लेखनक शिल्प, एकाएक मैथिलीक कथा साहित्य मे आंदोलन आनि देलक। एहि समय धरि पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन खूब होअय लागल छल। वैदेही पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ

भेल। ओहि सं पूर्व 'मिथिला मोद', 'मिथिला मिहिर', 'मैथिली प्रभाकर', 'मिथिला मित्र', 'मैथिल बंधु', 'विभूति', 'भारती' आदि पत्रिका सभ छपैत छल। एहि समय मे एतय कथा-लेखन अथवा कथा वाचनक जे परंपरा छल, से छल हास-परिहासक रूप मे, कोनो प्रेम-प्रसंगक रूप मे उठाओल गेल बात कें सोझ-सपाट ढंगें कहि देब। एहि कहि देबा मे कोनो कलात्मकता, कोनो गुणात्मकता देखायब आवश्यक नहि छल। एहेन बात नहि छल, जे परिवेश मे कथ्यक अभाव छलैक। कारण, जे जं अभाव रहितैक तं ओहि समय मे हरिमोहन झा कें कोना एहेन-एहेन आकर्षक कथ्य भेटितनि ?

सन् 1935 सं पूर्वक कथाक मादे राजमोहन झाक कहब छनि, 'ओहि समयक कथा सुधारवादी होइत छल, जाहि मे कथानक वा चरित्र-चित्रण दिस ध्यान देब जरूरी नहि बूझल जाइत छल। दैव-संयोग आ आकस्मिक घटनाक संयोजन पर कथा आधारित रहैत छल। कथाकार लोकनिक मुख्य ध्यान रहैत छलनि सामाजिक कुरीति पर, जकर दुष्परिणाम देखा क' नायकक प्रति सहानुभूति जगेबाक प्रयास मे सायास करुण भ' गेनाइ कथाक नियति भ' जाइत छलैक।'[1]

मुदा हरिमोहन झाक 'प्रणम्य देवता'क प्रकाशन 1945 ई. मे जखन भेल, तं एहि सं मैथिली पाठकक सोझां ई बात स्पष्ट भ' क' आएल, जे चरित्रांकनक कौशल, कथानकक मांसलता, कथ्यक नूतनता आ मौलिकता, उपस्थापन-शैलीक सौंदर्य, ओकर कलात्मकता आदिक बड़ु बेसी महत्व अछि कथा लेखन मे। 'प्रणम्य-देवता' संग्रहक कथा सभ मे अनेरो, अवांछित, अनावश्यक करुणा उत्पन्न क' क' जबरदस्ती पाठकक हृदय मे करुणा उत्पन्न करबाक प्रयास नहि कयल गेल अछि आ ने कोनो उचित प्रसंगक झांपा-तोपी। समाजक प्रत्येक ओहि बिंदु पर हितकर आ अनुभवी दृष्टि देल गेल अछि, जे समाजक कुरीति छल, असाध्य पीड़ा छल। आ कथ्यक दृष्टिकोणें तथा उपस्थापन शैलीक दृष्टिकोणें हिनकर कथा संसार मे नूतनता आयल। कथा कहबाक हिनकर शैली सरेस कागज सन नोछराह अवश्य साबित भेल, मुदा जहिना सरेस सं काठ कें रगड़ि क' चिक्कन आ मुलायम बनाओल जाइत अछि, तहिना हिनकर उपस्थापन शैली सेहो रहल। मिथिलाक जीवन-प्रक्रिया, स्थापित संस्कार, संस्कृति आ रहन-सहन मे अदौ सं जे जड़िआयल ग्रंथि सब छल, हरिमोहन झा तकरा नोचि-नोचि क' हटौलनि। कथा मे शैलीगत परिवर्तनक ई मौलिकता द' क' ओ एक टा उत्कृष्ट काज कयलनि, जकर फलस्वरूप मैथिली कथालेखन मे सब तरहें परिवर्तन आबि गेल। पाश्चात्य आ आनोआन भारतीय भाषा सबहक संगें एक्के अखड़हा पर उतरबा लेल मैथिली कथाक तेवर बन' लागल। सुग्गा-मैना, कौआ-नढ़ियाक बदला मे, राजकन्या आ ऋषिकन्याक बदला मे, किन्नर आ गन्धर्वक बदला मे कथाक पात्र आम आदमी होअय लागल।

सन् 1950 सं पूर्वक कथाकार मे सं प्रमुख छथि कांचीनाथ झा 'किरण',

मनमोहन झा, उमानाथ झा, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', सुधांशु शेखर चौधरी प्रभृति। वातावरणक विश्लेषण, पात्रक मनोविश्लेषण आ सहज भाषा शैली मे यथार्थ-निरूपण हिनका लोकनिक कथाक मूल उद्देश्य रहल।

सन् 1950 क बाद तथा 1960 क पूर्वक कथाकार मे सं प्रमुख छथि मणिपद्म, गोविन्द झा, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', राधाकृष्ण झा 'बहेड़', शैलेन्द्र मोहन झा, किसुन, ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र, बलराम, धूमकेतु, लिली रे, हंसराज, रमानंद रेणु, रामदेव प्रभृति। एहि समयक प्रायः समस्त कथा एकदम अधुनातन शैलीक संग आबि सकल।

एहि कथाकार लोकनिक कथाक विश्लेषण कयला पर ई बात सोझां आओत, जे जत' ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' अपन कथाक प्रभावोत्पादकता बढ़ेबाक उद्देश्य सं तथा पात्र एवं वातावरणक मौलिकता कें अक्षुण्ण रखबाक उदेश्य सं अधिकांशतः निम्नवर्गीय भाषा, देहाती लोकोक्ति, ठेठ शब्दावलीक प्रयोग कयलनि अछि, ओतहि शैलेन्द्र मोहन झाक भाषा-शैली निविष्ट आ पण्डिताम। मुदा तें कथाक प्राणतत्व कें कोनो हानि नहि भ' सकल। अन्य समस्त कथाकार लोकनि सभ सेहो हिनकहि जकां यथार्थक धरातल सं कथाभूमिक चयन करब अपन ध्येय बुझलनि। बाह्यपक्ष आ अंतर्पक्ष दूनूक निरूपण सहज, सरल आ स्वाभाविक ढंगें कयलनि अछि। पात्रानुकूल भाषाक निबद्धता सं कथाक सौंदर्य मे अतीव वृद्धि भेल अछि। राजकमल, ललित आ मायानन्द कनेक आगू बढ़ि क' कथाक मूल तत्व, शैली कें प्रधानता देलनि। हिनका लोकनिक कथा मे अंतर्मनक चित्रणक प्राधान्य रहल। बल्कि राजकमल थोड़ेक आओर आगू आबि क' समाजक आ सामाजिक प्राणीक अंतर्मन कें चित्रित कयलनि, ओकर गुणावगुण, दोषादोष निरूपण सं अपन पाठक वृन्दक नजरि खोललनि।

बीसम शताब्दीक सातम-आठम दशक मे उदित कथाकार सभ मे सं प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन, धीरेन्द्र, जीवकान्त, राजमोहन झा, सुभाषचन्द्र यादव, महाप्रकाश, सुकान्त सोम, ललितेश मिश्र प्रभृति किछु एहेन गरिमामय नाम अछि, जे अपन पछिला पीढ़ी सं प्रेरणा, युगीन समाज सं अनुभव आ अपन प्रतिभा सं कौशल जमा क' क' कथा लेखनक क्रम कें विकसित कयलनि, जे परवर्ती पीढ़ीक कथाकार लोकनिक लेल प्रेरणापुंज बनि सकल। तत्पश्चात् एहि समयक कथाकार लोकनि मे सं प्रमुख छथि महेन्द्र, उपेन्द्र दोषी, उदयचन्द्र झा 'विनोद', विभूति आनन्द, केदार कानन, प्रदीप बिहारी, विनोद बिहारी लाल, तारानन्द वियोगी, शेफालिका वर्मा, पूर्णेन्दु चौधरी, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, शैलेन्द आनन्द, रमेश, प्रभृति।

1. प्रणम्य देवता (कथा-संग्रह) क भूमिका/राज मोहन झा/पृ.-ग

कथाकारक एहि समूहक बाद जे कथाकार लोकनि अपन पहिचान बनौलनि ओहि पीढ़ी कें कोनो अलग सं नाम देब, संख्या आ गुणवत्ता दुनू दृष्टिएं बहुत आवश्यक नहि अछि। कथा विधा मैथिली साहित्यक सर्वाधिक विकसित विधा थिक, से कथ्य आ शिल्प दुनू दृष्टिकोणें। परीक्षण-स्वरूप अनेक उदाहरण ताकल जा सकैत अछि। शिल्पक विकासक परिणाम थिक एखनुक लघुकथा, जाहि मे किछु शब्द मात्र मे बहुत बात कहल जा रहल अछि अथवा कोनो कथा, जाहि मे बड़ी काल धरि, बहुत ढंगें कनिए टा बात कहल जा रहल अछि अथवा विज्ञान कथा, जाहि मे साहित्य मे विज्ञान द्वारा काल्हि होअय बला सूचना देल जा रहल अछि।

प्राचीन कालक अपेक्षा उपन्यासक विकास सेहो यथेष्ट भेल अछि। उपन्यासकार सभ मे सं प्रारंभिक नाम अबैत अछि जनार्दन झा 'जनसीदन', जीवछ मिश्र, पुण्यानन्द झा, भोल, कांझीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, लक्ष्मीपति सिंह, कुमार गंगानन्द सिंह, हरिनन्दन ठाकुर सरोज, योगानन्द झा, ब्रजनन्दन प्रभृति लोकनि, जे मैथिली मे मौलिक उपन्यास लेखनक परंपरा चलओलनि। ई बात स्पष्टतया कहल जा सकैत अछि, जे ई लोकनि युगीन परिस्थिति मे जे देखलनि, तकरा शैलीगत आकर्षण आ सौंदर्यक संग पाठकक सोझां प्रस्तुत कयलनि। मुदा, एहि मे सं दू टा नाम एहेन अछि, जे सर्वथा, सभ तरहें मैथिली उपन्यास लेखन कें नव तरहें आगू बढ़ौलनि। आ ओ नाम थिक किरण तथा हरिमोहन। आगू आबि क' जे मैथिली उपन्यासक कोष पुष्ट भेल तकर सर्वाधिक श्रेय एही दुनू उपन्यासकार कें देल जयतनि। 'कन्यादान' अपन शैलीक कारणें मैथिली पाठकक बीच प्रशस्त भेल आ पाठक मैथिली उपन्यास दिस झुकलाह। तत्पश्चात् जतेक नमहर उपन्यासकारक समूह बनल, ताहि मे अग्रगण्य छथि यात्री, व्यास, शैलेन्द्र मोहन झा, अमर, मणिपद्म, ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, रेणु, धीरेन्द्र, सुधांशु शेखर चौधरी, गंगेश गुंजन, जीवकान्त, विभूति आनन्द, प्रदीप बिहारी, नवीन चौधरी, उषाकिरण खान प्रभृति।

एहि समस्त उपन्यासकारक संपर्क विश्व साहित्य सं बनल आ तखन शिल्प-शैलीक मौलिकताक संगें ई लोकनि उपन्यासक कायापलट कोन मनोरम ढंगें कएने छथि तकर उदाहरण आंदोलन, आदिकथा, चानोदाय, बिहारि-पात-पाथर, दू-पत्र, दूध-फूल, भोरुकबा, दू कुहेसक बाट आदि उपन्यास मे ताकल जा सकैत अछि।

मनोविश्लेषण प्रधान, चरित्र-प्रधान, घटना-प्रधान, वर्णन-प्रधान, पत्रात्मक, आत्मकथात्मक आदि शैली उपन्यास विधा कें खूब प्रशस्ति देलक।

मैथिली साहित्य मे नाटकक उद्भवक स्रोत जं ताकल जायत, तं ई विधा ज्योतिरीश्वरक 'धूर्त समागम' सं शुरुह मानल जाएत, तहिया नाटकक उद्देश्य प्रायः हास्य रहैत छल। नाटक, साहित्यक सर्वसशक्त विधा थिक। मुदा ताहि समय सं आधुनिक काल धरि पुनः अनेक नाट्य परंपरा आएल आ चल गेल। कीर्तनियां

नाटकक परंपरा सेहो चलल। नेवारी नाटक, अंकिया नाट आदि लिखल गेल, मंचित भेल। मुदा बीसम शताब्दी मे आबि क' जीवन झाक नाटक सभ, पुरना सभ नाटक सं भिन्न जकां आयल। किंतु हिनकहु नाटक मे अधिकांशतः पद्ये मे बात कहल जाइत रहल। संवाद वाचनक शैली मे जे नूतनता आयल, से मूलतः युगीन प्रभावक कारणें। साज-सज्जाक यथेष्ट सुविधा, मंचनक सौविध्य, नौटंकीक विकास, सिनेमाक प्रादुर्भाव, वैज्ञानिक साधनक सुविधा आदिक कारणें नाटकक भाषा-शैली, लेखन-प्रक्रिया, कथ्य आदि मे परिवर्त्तन भेल। आम आदमीक जीवन पर नाटक लिखल जाय लागल।

एहि नूतनताक आगमन भेल ईशनाथ झा, गोविन्द झा, काशीनाथ मिश्र, मणिपद्म, किरण प्रभृति नाटककार लोकनिक नाटक सं। मुदा महेन्द्र मलंगिया एकरा सर्वथा नव स्वरूप देलनि एहि परंपराक विकास सं एक टा आओर नव परंपराक जन्म भेल आ से थिक एकांकी नाटक। एकांकी लेखकक सूची मे प्रमुख छथि हरिमोहन झा, सुधांशु शेखर चौधरी, आनन्द मिश्र, मणिपद्म, किरण, तंत्रनाथ झा, अमर, गोविन्द झा, राजकमल, महेन्द्र मलंगिया प्रभृति। खाहे नाटक हो वा एकांकी, एतबा अवश्य कहबाक थिक जे ई विधा बहुत थोड़ समय मे बड्ड बेसी ख्याति पओलक आ से पओलक शैलिएक कारणें।

आलोचना साहित्य कोनहुं साहित्यक लेल बड्ड आवश्यक आ महत्त्वपूर्ण होइत अछि, मुदा मैथिली साहित्य मे एहि विधाक दशा-दिशा बड्ड दयनीय अछि। एतेक प्रगति प्राप्त कयलाक पश्चातहु मैथिली साहित्य मे प्रशंसा कें आलोचना आ आलोचना कें निंदा बूझल जा रहल अछि। आलोचना विधा मैथिली साहित्य मे कोनहुं आन भाषा-साहित्य सं कम पुष्ट नहि अछि, मुदा गुणवत्ता आ आलोचकक निष्ठा कें ध्यान मे राखि जखन एकर अवलोकन कयल जाय, तं लगैत अछि, जे मैथिली साहित्यक आलोचना रचनापरक नहि, व्यक्तिपरक होइत अछि (अपवाद कें छोड़ि क')।

मैथिली मे एखन धरि आलोचनाक चारि स्वरूप देखाइछ कोनो पोथीक भूमिका लेखन, साहित्यक इतिहास लेखन, फुटकर निबंध लेखन आ कोनो रचना पर पाठकीय प्रतिक्रिया अथवा समीक्षा। भूमिका लेखन कें ने प्रारंभ सं ल' क' आइ धरि मे प्रशंसेक संज्ञा देल जायत, मुदा अन्य तीन मे इमानदारी पूर्वक बात कहल जएबाक चाही, किंतु कहल नहि जाइत अछि। जे कहलनि, से अनावश्यक ओहि रचनाकार समेत हुनकर समूहक कोपभाजन बनताह। एकरा मूल मे रचनाकारक असहिष्णुता अछि। दोसर बात ई, जे अधिकांश आलोचना एखन एहनो अबैत अछि, जाहि मे पन्नाक-पन्ना बात कहि देलाक बादहु कोनो बात साफ नहि होइत अछि। ओना भाषाक दष्टिएं प्रारंभिक आलोचना सं एखनुक आलोचना विकसित भेल अछि। रचनाक परीक्षणक शैली मे अभूतपूर्व परिवर्तन आयल अछि, मुदा तकर उपयोग कम ठाम होइत अछि।

किछु आन विधा, जेना रेखाचित्र, जीवनी, रिपोर्ताज, ललित निबंध आदि एखन ततेक विकसित नहि भेल अछि। मुदा जाहि कोनो विधाक जाहि तरहें प्रगति-प्रसार

भेल अछि, तकर शैलीक पुनर्पुनरावलोकन बड्ड आवश्यक अछि।

मैथिली कथायात्रा आ कथाकारक संधान

कथा कहबाक प्रथा हमरा लोकनिक ओतए ओतबे पुरान अछि, जतेक मानवक सभ्यता, हमरा लोकनिक संस्कृति। ई प्रवृत्ति अदौ सं प्रगतिशील रहल अछि आ समय-समय पर ई अपन आंतरिक गुण मे युग सापेक्ष परिवर्तन अनैत रहल अछि। भारतीय साहित्य मे तं वैदिके काल सं कथाक मूल स्वरूप प्राप्त भ' जाइत अछि। वेद उपनिषद आदि मे अनेक आख्यान, उपाख्यान प्राप्त होइत अछि, पौराणिक साहित्य मे सेहो कथाक सम्यक विकास परिलक्षित होइत अछि। कहबाक अभिप्राय ई, जे भारतीय परंपरा मे कथा-साहित्य कोनो नव उद्‌भूत विधा नहि, अपितु एहि आख्यायिका अथवा लोक गाथाक विकासक एकटा पैघ सन धाराक परिणाम थिक। मुदा लगले ईहो कह' पड़ैत अछि जे एखनुक कथा साहित्यक जे रूप, जे चाकचिक्य अछि, से एहि पौराणिक साहित्यक कथात्मकता अथवा लोक गाथात्मकताक अपेक्षा पाश्चात्य कहानी सं विशेष संपर्कित बुझाइछ। ई संभव जे रूपक ई आधुनिकता अनेक वर्षक विकासक परिणाम तथा देश-देशांतरक बढ़ैत निकटताक फल हो।

मूल रूपें मैथिली मे कथा साहित्यक आरंभ अनूदित कथा सं भेल अछि। हरिमोहन झाक प्रसिद्ध कथा-संग्रह 'प्रणम्यदेवता'क प्रकाशन वर्ष 1945 सं पूर्व मैथिली-कथा साहित्यिक नाम पर अनूदित कथा-संग्रहक नाम जोड़ा कए संतोष करए पड़ि रहल अछि। इतिहासकार लोकनि द्वारा गनाओल जं किछु मौलिक कथाक नाम सोझां अबितो अछि तं ओहि पर इतिहासकार लोकनि अपने कथ्य पर अपनहि ओझरा गेल छथि। एम्हर आबि कए 'प्रणम्य देवता' कथा संग्रहक पुनर्मुद्रण भेल अछि। अइ मे राजमोहन झा द्वारा प्रकाशकीय मे देल गेल किछु सूचना सं बात थोड़ेक फरिछाइत अछि। इतिहासकार लोकनिक कतोक पंक्ति तं एहेन भ्रमाह बुझाइत छनि, जे कोनो अर्थ बहार करब असंभव। दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एकहि हाथें अपन एकहि इतिहास मे एक ठाम किरणजीक 'चन्द्रग्रहण' कें उपन्यास लिखै छथि आ दोसर ठाम एकरा दीर्घ कथा लिखै छथि। आब हिनकर कोन कथन कें प्रामाणिक

मानी, से निर्णय करब कठिन।

राजमोहन झाक लिखल प्रकाशकीय सं ई सूचना भेटैत अछि जे 'प्रणम्य देवता' क पहिल संस्करण 1945 मे बहार भेल। एहि सं पूर्व मात्र चारि गोट मौलिक कथा-संग्रहक चर्चा अछि चन्द्रप्रभा (श्री कृष्ण ठाकुर), गप्प-सप्पक खरिहान (वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु'), कामिनीक जीवन (कालीकुमार दास) तथा बीछल फूल (श्री प्रबोध नारायण चौधरी)। एहि चारू कथा-संग्रहक, अलावे हमरा लोकनि अनूदिते कथा- संग्रहक नाम गना सकैत छी, जाहि मे अबैत अछि चन्दा झा द्वारा 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवाद, मुरलीधर झा द्वारा मित्रलाभ आ हितोपदेशक अनुवाद। म. म. परमेश्वर झा द्वारा 'सीमन्तिनी आख्यान'क अनुवाद आदि।

एहि चारू मौलिक कथा- संग्रहक मादे इतिहासकार लोकनि एक सं एक वजनी पंक्ति देलनि। केओ 'विद्या-सिन्धु' कें पाश्चात्य रीतिक प्रथम गल्पकार माननलनि तं केओ कलात्मक सौष्ठव देखलनि, मुदा असली गप्प ई अछि जे 'चन्द्रप्रभा' संस्कृतक मित्रलाभ-हितोपदेश जकां उपदेशात्मक ढंगें लिखल छोट-छोट लोककथाक संग्रह थिक आ 'गप्प-सप्पक खरिहान' नामानुकूल हास्य-लघु कथाक संग्रह थिक। 'कामिनीक जीवन' बिना कोनो कलात्मकताक कोनो प्रेम-प्रसंगक सपाट वर्णन थिक। एहि सभ सं कनेक आगू प्रबोध नारायण चौधरीक कथा- संग्रह 'बीछल फूल' अवश्य अछि, मुदा कथानक आ शिल्पक दृष्टिएं बहुत प्रभावशाली नहि। तैयो मैथिली कथा-साहित्य मे जें कि मौलिक लेखन इएह लोकनि प्रारंभ कयलनि तें हिनका लोकनिक नाम कथा-साहित्यक इतिहास मे श्रद्धापर्वूक लेल जाएत। आ, अही चारू संग्रहक पश्चात मैथिली कथा-साहित्य पर छाड़ल कुहेस कें एकबाइगे फाड़ि देलक हरिमोहन झाक 'प्रणम्य देवता'। ओ 'विकट पाहुन' कथाक भावभूमि कें समाजक एकदम लगीच जा कए उठौलनि आ तकरा ततेक मनोरम ढंगें सजौलनि अछि जे सामान्यो पाठकक लेल ई अतीव सुखदायी अछि। हरिमोहन झाक नाम मैथिली साहित्य मे अग्रगण्य एही टा लेल नहि छनि, जे ओ मैथिली मे बहुत रास लिखि कए साहित्य कें समृद्ध कएलनि, बल्कि विशेष एहि लेल छनि जे ई मैथिली साहित्यक लेल एकटा विशाल पाठक वर्ग तैयार कएलनि। भाषाक सरलता, अभिव्यक्तिक सुस्पष्टता, विषयक व्यापकता, कथ्यक नूतनता, शिल्पक आकर्षण इत्यादि सभ दृष्टिकोणें हिनकर साहित्य विशेष रूपें चर्चित रहल। की उपन्यास, की कथा...सभ मे हिनकर योगदान विशेष महत्त्वक अछि। जहिना उपन्यास मे 'कन्यादान' कें पढ़बाक लेल मैथिली भाषा सं इतर वर्गक लोक सेहो मैथिली पढ़ब सिखलनि, अनपढ़ लोक पढ़बा कए सुनलनि, कथाक क्षेत्र मे तहिना 'प्रणम्य देवता'क स्थिति रहल। मैथिली कथा-साहित्यक कथ्य, शिल्प, कथानक इत्यादि अनभिव्यक्तिक जाहि विशाल चट्टान तर दाबल छल, तकरा एकहि बेर मे ज्वालामुखी सदृश फाड़िकए प्रणम्य देवता बाहर आएल आ परवर्ती साहित्यकार-पाठक लोकनि मे कथा लिखबा-पढ़बाक अभिरुचि जगौलक आ सफलो

भेल ! सफलताक इएह प्रतिफल थिक जे आइ कथा साहित्य एहेन समृद्ध अछि आ 'प्रणम्य देवता' संग्रहक कैक संस्करण बहराएल। 'प्रणम्य देवता'क अतरिक्त हिनक आओर कथा संग्रह सब अछि जे विशेष महत्त्वक वस्तु मे गनले टा जाइछ रंगशाला, चर्चरी, तीर्थयात्रा, एकादशी इत्यादि। ओना हिनकर सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध संग्रह 'खट्टर ककाक तरंग' कथा तत्वक अभावक अछइतो भाषाक सरलता आ आनो बहुत रास गुणक कारणें कथा - संग्रह मे गनल जाए लागल।

सन् 1889 (चन्दा झा द्वारा अनूदित 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवाद) सं ल' कए 1930 धरि अनूदित कथा-साहित्य अबाध गतिएं चलैत रहल। ताही संग- संग मौलिक कथालेखनक एकटा भावभूमि 1940 धरि, अर्थात् प्रबोध नारायण चौधरीक 'बीछल फूल' धरि रहल। तें एकर बादक समय कें अर्थात् 1941 सं आइ धरिक समय कें छओ दशक मे बांटल जा सकैत अछि। जें हेतुएं 1950 सं पूर्व धरि मौलिक कथा लेखन बड़ा विरल गतिएं भेल, तें 1950 सं पूर्वक कथा पर एक किस्त मे विचार कएल जा सकैत अछि। सन् 1947 मे देश स्वतंत्र भेल। मुदा स्वतंत्रता प्राप्ति सं जे असंतोष, आक्रोश, समाजक कुरीति, सत्ताक कुव्यवस्था पाओल गेल, से सभटा छठम दशक मे व्यक्त होअए लागल।

जं संग्रहक बात कें गौण राखि, पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित कथा सभ सं बात उठाओल जाए तं मैथिलीक मौलिक कथा लेखन प्रायः तेसरे दशक सं प्रारंभ भेल मानल जाएत। एहि समयक कथा मे कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क 'शून्य' आ 'रौद छाया', जलेश्वर सिंहक 'भगवतीक पाश्चात्य रूप', भीमेश्वर सिंहक 'विसर्जन' वा 'साओनक राति' इत्यादि अबैत अछि। हिनका लोकनिक अतिरिक्त अइ संग्रह विहीन कालावधि, अर्थात् 1950 सं पूर्वक समयक महत्त्वपूर्ण कथाकार सभ छथि हरिमोहन झा, लक्ष्मीपति सिंह, कांचीनाथ झा 'किरण', प्रबोध नारायण चौधरी, तंत्रनाथ झा, मनमोहन झा, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', योगानन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, सुरेन्द्र झा 'सुमन' प्रभृति।

हरिमोहन झाक कथालेखनक प्रारंभ मैथिली साहित्यक ओहि संक्रमण काल मे भेल, जखन मैथिली साहित्य कें पाठकक अभाव छलैक। पांचम दशक धरिक प्रकाशित पत्र-पत्रिका, जं एक दिश एकटा बेस पैघ लेखक वर्ग तैयार कएलक तं हरिमोहन झा दोसर दिश एकटा पैघ पाठक वर्ग तैयार कएलनि आ एतहि सं पुनः अबाध गतिएं संग्रहक लेखन-प्रकाशन होअए लागल। जतए गंगापति सिंह, लक्ष्मीपति सिंह, हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', 'किरण', कुलानन्द 'नन्दन', परमानन्द दत्त 'परमार्थी', कालीकुमार दास, नंदकिशोर लाल, जयनारायण मल्लिक, प्रभृति कथाकार लोकनिक कथा शृंगार ओ करुणरस सं परिपूर्ण रहैत छल, ओतए हरिमोहन झाक कथा हास्य-रसक डबडबाएल रसगुल्लाक संग उपस्थित भेल, मुदा एहि हास्यक भीतरी तह मे व्यंग्यक

ततेक मेंही आ मार्मिक चित्रण रहैत छल, जे एकर उद्देश्य मात्र मनोरंजने टा नहि, एहि समाजक प्रत्येक अनुचित व्यवहार आ अतार्किक अभिक्रिया दिश सामान्य पाठकक ध्यान आकर्षित करब सेहो रहल।

पांचम दशक धरिक परिगणित कथाकार लोकनि मे जतेक नाम गनाओल जाइत अछि ताहि मे श्री बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क नाम विलक्षणतापूर्वक लेबाक थिक। अपन समसामयिकताक दृष्टिएं ई अति प्रगतिशील रहलाह। ग्राम्य जीवनक चित्र ई ततेक स्पष्ट आ सहज शब्द सं घीचैत छथि जे सामान्य पाठक सब तरहें हिनकर कथ्य कें बूझि लेबा लेल उताहुल रहैत छथि आ बुझिए कें विश्राम लैत छथि। अति सुबोध-सहज ठेंठ शब्दक प्रयोग, सामान्य जन-जीवनक सुच्चा अभिव्यक्ति, छोट-छोट घटना पर सूक्ष्म चिंतनक संग कथा लेखन, कथ्यक अनुरूप भाषा-शैली, सहजता, स्वाभाविकता, सरलता इत्यादि हिनकर लेखनीक मुख्य प्रवृत्ति थिकनि। यद्यपि हिनकर कथाक संख्या अंगुरिए पर गन' जोग अछि।

कथा-साहित्य मे मनमोहन झाक नाम श्रद्धापूर्वक लेल जाइत छनि। ओना कथा तं ई अनगिनत लिखलनि मुदा सभ सं मुख्य रूपें ई 'अश्रुकण'क संग चर्चित होइत छथि। कथा मे नारी हृदयक गहनतापूर्वक चित्रण करबाक अपूर्व कौशल उपस्थित कएने छथि। करुणा हिनकर कथाक मूल प्रवृत्ति थिकनि। कथाकार योगानन्द झाक कथा रोमांचक आ शृंगारिक गुण सं ओत-प्रोत रहैत छनि। 'आमक जलखरी' हिनकर चर्चित कथा मे सं अबैत अछि, तहिना मैथिल समाजक विविध अंगक सजीव ओ संवेदनशील चित्र उपस्थित करबा मे उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' पहिने तं 'रूसल जमाय' सं चर्चित भेलाह, मुदा पछाति कतोक नीक-नीक कथा लिखलनि।

रामदहिन मिश्र लिखै छथि (काव्य दर्पण/पृ. 258) जे कथाक प्रधान उद्देश्य होइत अछि मनोरंजन, मुदा जं से बात रहितै तं किरणक 'मधुरमनि' पढ़ि कए आ तात्कालिक मनोरंजन प्राप्त क' कए बिसरि जएबाक प्रवृत्ति बला मनुक्ख जाति बिसरि गेल रहितए ओहि कथा कें। मनोरंजन तं होइते छैक, एकर अलावे आओरो बहुत रास महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होइत छैक कथाक, जे ओकरा शाश्वतता प्रदान करैत छैक। इएह शाश्वतता अछि मधुरमनि मे। एहि पांचम दशकक अंत अबैत-अबैत सुधांशु शेखर चौधरी, विकल, विशारद, भ्रमर प्रभृति कथाकार प्रतिष्ठित भ' गेल छलाह। अपन विविध कथाक माध्यमे ई लोकनि आत्मसंघर्षक चित्रणकर्त्ताक रूप मे मानदंड बनौलनि।

एहि पैघ अंतराल कें एकहि ठाम समेटैत आब कथा-यात्राक दोसर डेग प्रारंभ होइत अछि 1951 सं। एहि छठम दशक मे ओना कथाकार सूची बड्ड पैघ नहि बनल मुदा अपेक्षाकृत संख्या बढ़ल। संख्याक संगहि कथाकारक नजरि खुजलनि। कथाक फलक बढ़ल। वस्तुक व्यापकता देखल गेल। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद लोकक जे इच्छा, आकांक्षा छलैक तकर पूर्तिक कोनो टा बाट प्रशस्त नहि भेल, समाज सं

मानवताक गुण सभ विलीन होइत देखल गेल। फलस्वरूप युगीन समस्या सं अकच्छ भ' कए ठाढ़ भेलाह शैलेन्द्र मोहन झा, रामकृष्ण झा 'किसुन', प्रबोध नारायण सिंह, रमाकान्त झा, गोविन्द झा, ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, हंसराज, रामदेव झा, बलराम, धीरेन्द्र प्रभृति।

एहि दशकक कथाकार लोकनिक कथा लेखन मे किछु प्रवृत्तिगत अंतर पाओल गेल। किछु लोकनिक प्रवृत्ति रहल कथातत्व कें अक्षुण्ण रखैत, चरित्र-चित्रणक सूक्ष्मताक संग उचित वातावरणक निर्माण कए सामाजिक युगीन समस्या सभ कें रसात्मक उत्कर्ष देब, जेना गोविन्द झाक 'भुतही पाकड़ि', मणिपद्मक 'संयोग' रमाकान्त झाक 'रक्तदान', शैलेन्द्र मोहन झाक 'प्रारब्ध' इत्यादि। किछु लोकनिक प्रवृत्ति रहल सामाजिक यथार्थ कें सहज एवं पात्रानुकूल भाषा मे चरित्रक मनोविश्लेषण करैत उद्घाटित करब। एहि वर्गक कथाकार लोकनि मे अबै छथि   सोमदेव (अङ्गा), बलराम (मोटरी), रामदेव झा (एक खीरा : तीन फांक), हंसराज (छिद्र), कल्पना शरण (रंगीन पर्दा) प्रभृति। मुदा अहू सं किछु आगू बढ़ि कए युगीन क्लिष्टता मे जिबैत मनुक्खक अतल मोनक दुःख दर्द कें बूझि कए, छोट सन कथ्य पर शिल्पक माध्यमे विशाल सं विशाल कथा बुननिहार मे जाहि तीन गोट नाम कें मुख्य रूप सं गनल जाइछ, तकरा लोक 'त्रिपुंड' कहि कए अभिहित कएलनि ललित, राजकमल, मायानन्द। हिनका लोकनिक लेल कथाक हेतु मूल चीज शिल्प रहल। जीवन-जगत कें अतीव गंभीरता पूर्वक ई लोकनि देखलनि एवं मैथिली कथाधारा कें जे दिशा देलनि, तकरे फल थिक जे मैथिलीक कथा साहित्य नवम दशक मे आबि कए एतेक फर्रोस भेल। ललितक 'रमजानी', 'ओभर लोड', 'मुक्ति', राजकमलक 'सांझक गाछ', 'ललका पाग', 'पनडुब्बी' तथा मायानन्दक 'गाड़ीक पहिया', 'हंसीक बजट' इत्यादि कथा सभक चर्चा दृष्टांत स्वरूप कएल जा सकैछ। मैथिली कथाधारा कें एहि त्रिपुंड सं जे भेटलैक से मैथिली कथा साहित्य कहिओ नहि बिसरि पाओत।

एहि दशकक बाद प्रारंभ होइत अछि सातम दशक। सातम दशक मे आबि कए मैथिली कथा साहित्य बेसी पुष्ट भेल। लेखन क्षिप्र गतिएं होअए लागल, पछिलो दशकक कथाकारक संग- संग नवोदित कथाकारक कथा लेखन चलैत रहल। एहि दशकक कथा लेखन मे सामाजिक कुव्यवस्था, असमानता, शोषण, सीदन इत्यादिक चित्रण बेसी प्रखर होअ' लागल। एहि मे अबै छथि गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, रमानन्द रेणु, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा 'विनोद' प्रभृति कथाकार लोकनि जे लगातार अबाध गतिएं कथा लिखैत रहलाह आ समाजक नग्न सत्य टीपैत सामान्य लोकक दृष्टि मे रहलाह। बाद मे अही पीढ़ी सं मैथिली साहित्य मे राजनीतिक चिंतापरक लेखन पुष्ट हएब प्रारंभ भेल। ओना राजनीतिक बिंदुक प्रवेश मायानन्दक लेखन मे भ' चुकल छल। रमानन्द रेणुक (एक टघार नोर), जीवकान्तक 'हाहि' गंगेश गुंजनक 'अभिनय', साकेतानन्दक 'जिनगीक कांट', प्रभास कुमार चौधरीक

'आएल पानि गेल पानि', राजमोहन झाक 'युद्ध-युद्ध-युद्ध' सुभाष चन्द्र यादवक 'काठक बनल लोक', महाप्रकाशक 'जोड़-घटाव-गुणा-भाग' इत्यादि युगीन समस्याक, सामान्य जन-जीवनक दुःख-दर्दक वाहक बनल।

आठम दशक मे कथा, कथा-संग्रह आ कथाकारक संख्या बेस पुष्ट भेल, से उत्कृष्ट साहित्य आ साहित्यकार सं, दृष्टिपूर्ण प्रतिभा सं। एहि दशकक कथाकार मे ओना कथाकारक सूची तं पैघ अछि, मुदा मूल रूप सं गनल जाइत छथि विनोद बिहारी लाल , विभूति आनन्द, पूर्णेन्दु चौधरी, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, तारानन्द वियोगी, केदार कानन, प्रदीप बिहारी, प्रभृति लोकनि। वैज्ञानिक युगक प्रादुर्भाव सं देश-विदेशक संपर्कक कारणें साहित्यिक चेतना बढ़ल आ उर्ध्वमुखी यथार्थक प्रति रचनाकारक आग्रह बढ़ल। साहित्यिक आदान-प्रदान सं साहित्यिक प्रवृत्ति पर प्रभाव पड़ब स्वाभाविक छल। पाश्चात्य धारा सं हमरा लोकनिक साहित्य प्रभावित होअ' लागल। कथा मे घटनाक प्रधानताक बदला शिल्पक प्रधानता भ' गेल। कथा देश-देशांतरक मारि-लड़ाइ, प्रक्षेपास्त्र, लौहमानव, चन्द्रतलक भ्रमण, सूर्य-पृथ्वीक आपसी संबंधक गप्प कहए लागल, बेकारी-बेगारी, भूख, दुःख, अभाव, व्यभिचार, शोषण-सीदनक गप्प सुनब' लागल। शोषित कें ओकर तागतक बोध करबैत ललकारा देब' लागल आ शोषकक पतनक बात कहए लागल। अल्पवेतन भोगी परिवारक विविध समस्या कें उद्घाटित करए लागल, मानवीय इच्छा आकांक्षाक दमित वासना कें उद्घाटित करए लागल आ एहि समस्त अभिव्यक्तिकक संग आएल तारानन्द वियोगीक 'पिआस', 'बिसरभोर', केदार काननक 'नाटक', 'तामस', 'आतंक', प्रदीप बिहारीक 'एकटा रोगियाह जिनगी', विनोद बिहारी लालक 'जिनगी', विभूति आनन्दक 'खापड़ि महंक धान' इत्यादि।

रौद मे रहला सं कोनो रंगीन वस्त्र उदास भ' जाइत अछि, रंग उड़िकए पूर्ण रूपें उज्जर नहि होइत अछि, तहिना मनुक्खो कें अपन-अपन संस्कारक प्रति किछु विवशता रहैत छैक। किछु गोटे प्रभावित होइतो छथि, किछु नहिओं होइत छथि। आठम-सातम दशकक प्रायः सभ कथाकार पर अपेक्षाकृत युगक प्रभाव बेसी पड़ल आ ओही प्रभावक अंतर्गत लेखनो भेल। जीवकान्तक कथा 'गौर' विशुद्ध रूप सं प्रतीकात्मक थिक। ओना प्रतीक मूल रूपें कविताक वस्तु होइत अछि, कथा मे पाठक कें सपाट ढंगक गप्प भेटबाक चाही, मुदा प्रतीकात्मक रहला सं ओकर सोद्देश्यता भंग नहि हो, कथ्यक अभिव्यक्ति भ' जाए आ प्रभावोत्पादकता मे कतहु व्यतिक्रम नहि आबए तं ओ, कथाक विशिष्ट गुण भेल। कथा शीर्षक 'गौर' एहि कसौटी पर सोलहो आना सुच्चा उतड़ैत अछि। अदौ सं बान्हल गौर जखन बथान पर सं खुजि कए जंगली मवेशीक हेंज मे चल जाइछ तं ओकरा चीन्हब आ चीन्हि कए ल' आनब ओतबे कठिन अछि जतेक एखनुक जनवादी समूह मे सर्वहाराक ढुकि गेला पर ओकरा निकालि आनब। दोसर अर्थ मे हमरा लोकनिक हेराएल मानवता,

मानवीय मूल्य इएह गौर थिक जकर खोज मे हमरा लोकनि बौआइत छी, ताकि नहि पबैत छी।

तारानन्द वियोगीक कथा 'उद्दीपन' एक दिश सामंतवादीक शोषण प्रवृत्ति आ सर्वहाराक सीदन सहबाक प्रवृत्ति देखबैत अछि तं दोसर दिश सर्वहारा वर्ग मे दू पीढ़ीक संघर्ष मे नूतन पीढ़ीक विजय देखबैत अछि। तहिना कथा शीर्षक 'कंस-वध' समाजक एकदम अछूत वस्तु कें उठाकए चलल अछि।

एहि सभ पीढ़ीक कथा-कथाकारक चर्चाक पश्चात एतबा कहब अपेक्षित जे बीसम शताब्दीक पहिल चरणक उत्तरार्द्ध अथवा दोसर चरणक पूर्वार्द्ध सं उद्भूत मौलिक मैथिली कथा लेखन, छठमे दशक धरि मे जतेक प्रगति केलक ताहि तुलना मे ओकर अगिला लेखनक प्रगति न्यून बुझाइछ। ई बात भिन्न जे एखन मैथिली साहित्यक सभ सं बेसी सफल विधा कथे साहित्य भ' गेल अछि, मुदा तें ई कहब उचित नहि जे ई विधा अपन यथेष्ट विकास क' चुकल अछि।

पांचम दशक मे मौलिक कथालेखन नीक जकां अपन प्लेटफार्म तैयार नहि कएने छल, हरिमोहन पाठक वर्ग तैयार कर' मे लागले छलाह कि छठम दशक मे 'त्रिपुंड'क कथा मे मानवक अंतर्मनक व्यथा, शिल्पक प्राधान्य आब' लागल। मुदा तकरा बाद कतोक समय बीति रहल अछि, किंतु प्रगति अपेक्षाकृत कम अछि। आब'क कथा मे मानसिक संघर्ष, संवेगात्मक अथवा बौद्धिक कुतूहल इत्यादिक प्रति आग्रह तथा राजा-रानी वाला कथा परंपराक प्रति उदासीनता रहबाक चाही। कथाक जे धारा एखन चलि रहल अछि ताहि मे एखन छोट-सं-छोट कथ्य पर नीक सं नीक कथा लिखल जा सकैछ। आब'क कथा घटना प्रधान नहि रहि शिल्प प्रधान भ' गेल अछि, तें आब एहि विधा सं बेसी-सं-बेसी प्रगतिक आशा कएल जा सकैए।

समकालीन मैथिली कथा

जेना कि एजरा पाउंडक कथन छनि A Great age of literature is perhaps always a great age of translation (Mak-lit-New, Page—101, 125)

अर्थात् कोनो साहित्यक महान युग, ओहि मे अनुवाद-युग होइत अछि। मैथिलीक कथा-साहित्य, एकर अपवाद नहि थिक। प्रारंभ मे मैथिलीक कथा-साहित्य पौराणिक कथा सभक भावानुवादे छल। तें एकर इतिहास बड़ पुराण नहि अछि।

मैथिली मे कहबा-सुनबाक प्राक्रिया मे पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोक, कथा सिखैत रहल, समय-परिवेशक अनुसार कहबाक क्षमता मे किछु जुटैत गेल, किछु कटैत गेल। कथावाचक प्रायः निरक्षरे होइत छल, लिखबाक क्षमता ओकरा नहि रहैत छलैक। फलस्वरूप अधिकांश कथा खिसक्करक संगहि चल गेल आ हमरा लोकनिक कथा साहित्य, एहू कारणें पाछां क' विकसित भेल।

हमरा लोकनि कथा-लेखनक मौलिकता अनुवादे सं सिखलहुं। संस्कृत-साहित्यक कथा-उपकथा सं अनुवाद भेल। संस्कृत-साहित्य मे एहि कथा सभक उद्देश्य उपदेशात्मक रहैत छल। धर्मशास्त्रक नीति वाक्य सं पाठक अथवा श्रोता कें अविचलित रखबाक लेल मनोरंजनात्मक सेहो रहैत छल।

मुदा, एखन हमरा लोकनि कथाक जे स्वरूप देखैत छी, तकरा ने केवल पौराणिक साहित्यक देन कहल जायत आ ने विदेशी साहित्यक प्रभाव। कथा-साहित्यक वर्त्तमान स्वरूपक श्रेय चारि टा स्रोत कें जाइत अछि संस्कृत साहित्य, फारसी साहित्य, लोक साहित्य आ पाश्चात्य साहित्य। संस्कृत साहित्य सं प्राप्त सामग्री हमर पुरान संस्कृति आ समकालीन सामाजिक परिस्थितिक झांकी प्रस्तुत करैत अछि। धार्मिक आ लौकिक होइतो एहि मे उद्देश्यगत एकता आ जीवनक प्रति एकटा संतुलित दृष्टिकोण भेटैत अछि। फारसी-साहित्य दार्शनिकता-प्रधान हेबाक कारणें विशिष्ट रूपक दृष्टिकोण प्रदान कयलक। मध्यकालीन भारतक संपदाक रूप मे शौर्यपूर्ण आ रोमानी कथासूत्र हमरा लोकनि कें लोक साहित्य सं प्राप्त भेल। मुदा, एहि तीनू

स्रोत सं उपलब्ध कथाक वर्ण्य-विषय पुरान छल। तें आधुनिक भारतक आवश्यकता आ भावनाक अनुकूल कथा नहि बनि पबैत छल। एहि मे मिथिलाक वर्त्तमान रीति-कुरीति, ईर्ष्या-द्वेष, मान-अपमान, वर्ग-संघर्ष, शोषण, अनाचार इत्यादिक चित्रण भेटब दुर्लभ छल। फलतः कथा मे जन-जीवनक ई चित्रण पाश्चात्य साहित्य सं आयल।

साहित्य मे दू तरहक मूल्य होइत अछि वर्त्तमान मूल्य आ शाश्वत मूल्य। वर्त्तमान मूल्य भेल वर्तमान समय मे व्याप्त मानव-जीवन सं ओहि साहित्यक तादात्म्य आ शाश्वत मूल्य भेल चिरकालक बाद ओहि साहित्यक चित्रण-वर्णनक उपयोगिता। साहित्यक वर्तमाने मूल्य ओकर समकालीनताक द्योतक थिक। 'समकालीनता' शब्द विशेष रूपें विचारणीय अछि। जे साहित्य समकालीन नहि होएत अर्थात् जकर वर्त्तमान मूल्य उपेक्षणीय हैत, ओ शाश्वत मूल्यक वस्तु कहिओ नहि भ' सकैत अछि। साहित्य मे समकालीनताक अर्थ भेल तत्कालीन समाजक, आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितिक चित्रांकनक संग सामाजिक जीवनक यथार्थ कें अंकित करब। युग परिवर्त्तनक संग-संग मानव जीवनक स्थिति-परिस्थिति, मनुष्यक सभ्यता-संस्कृति मे परिष्कार होइत अछि, किछु परिवर्त्तन होइत अछि तें जीवन-प्रक्रिया कें अथवा रहन सहन कें अथवा सभ्यता-संस्कृति कें मनुष्य बिसरि नहि जाइत अछि, ओ थाती कोनो ने कोनो रूप मे, किछु ने किछु अंश मे सुरक्षित रहैत अछि। अतएव, ई बात सर्वथा मान्य थिक जे समकालीन साहित्य शाश्वत-मूल्यक दृष्टिकोणें सेहो उत्तम होइत अछि। आ तें, साहित्यक उत्कृष्टताक हेतु ई आवश्यक अछि, जे ओ समकालीन होअय।

मैथिली कथा-साहित्यक समकालीनता पर विचार करबा सं पूर्व एकटा समस्या आगां अबैत अछि, प्रकाशनक समस्या। एहि समस्याक कारण एहि बातक पूर्ण संभावना रहैत अछि, जे कोनो कथाकारक आजुक अनुभूति, आजुक कथ्य, आजुक शिल्प जं संयोग लागय, तं बीस-बाइस बर्खक बाद हमरा लोकनिक सोझां आबय।

साहित्यकार अत्यंत भावुक आ संवेदनशील प्राणी होइत अछि। ओ जाहि परिवेश मे जीबैत अछि, ओकर कटुमधु अनुभव ओकरा नीक जकां प्रभावित करैत छैक। समाज मे विद्यमान एक-एकटा उचित अभिक्रिया ओकरा अंतस् कें सुख दैत छैक आ एक-एकटा अनुचित, अवैध, अवांछित अभिक्रिया, अनाचार-अत्याचार, शोषकीय प्रवृत्ति इत्यादि ओकर मोन-प्राण कें व्यथित करैत छैक। रचनाकारक ई संवेदनशीलता ओकरा भीतर मे एकटा अद्भुत प्रक्रिया प्रारंभ क' दैत छैक। अव्यवस्था आ विसंगतिक ई प्रत्यक्ष दर्शन रचनाकारक मोन मे ओहि घटनाक एकटा भोक्ताक जन्म दैत अछि जे ओहि घटना कें भोगैत अछि अर्थात् ओहि भोक्ता सं रचनाकार अंतरंगता स्थापित करैत अछि आ तखन एहि यथार्थ-भोगक पश्चात् एहि घटनाक परिस्थिति-परिवेश-उद्देश्य-परिणाम इत्यादि पर विचार केलाक बाद अनुभूतिक नाङट स्वरूप तैयार करैत

अछि। पुनः भाषा शिल्पक साज-शृंगारक संग पाठकक आगां प्रस्तुत करैत अछि। 'की कही' से जतेक आवश्यक अछि, ताहि सं बेसी आवश्यक 'कोना कही' से अछि। यैह 'कोना कही' थिक शिल्प। कथाक समकालीन स्वरूप मे 'शिल्प' विशेष रूपें चर्चित अछि।

विरासत मे संस्कृत सं प्राप्त संस्कार, वैज्ञानिक युगक देन सं बढ़ैत देश-विदेशक सभ्यता-संस्कृतिक संपर्क, आ विदेशी साहित्यक प्रभाव मैथिली कथाक वर्तमान स्वरूप कें प्राप्त भेल छैक।

मैथिली कथा-साहित्यक सभ सं ऐतिहासिक उत्थानक समय थिक स्वतंत्रता प्राप्तिक आस-पासक पांच बर्खक समय। एहि समय मे समाजक विविध वर्गक लोक लेखनी उठौलनि आ से संकीर्णता सं निरपेक्ष रहि क'। एहि समयक रचनाकार कोनो जातिवादी, वर्गवादी, संप्रदायवादी विचार, रूढ़िग्रस्तता आदि सं मुक्त छलाह। हिनका लोकनिक दृष्टिफलक विशाल छलनि। फलस्वरूप समाजक विविध क्रिया-प्रक्रिया कें कथा लेखनक विषय बनाओल जाए लागल आ साहित्य, सामान्य जन-जीवन सं जुटि सकल।

कथा सन छोट रचना मे, चरित्र-चित्रणक बेसी सुविधा नहि रहैत अछि। कथोपकथनो कें बेसी नमरयबाक शौकर्यक अभावे रहैत अछि। मुदा कथाक प्राणतत्त्व कथानक, घटना चक्रक आधार पर आ वर्णन कौशलक आधार पर बढ़ैत अछि, कथ्यक विस्तार आ स्पष्टीकरण एही सं होइत अछि। एहि घटनाचक्र कें वर्णित करबाक लेल परिस्थितिविशेष, परिवेशविशेष, स्थान-काल-पात्रविशेष केर खास-खास तथ्य कें चित्रित करए पड़ैत छैक। एहि चित्रण मे यथासंभव चरित्र-चित्रण, कथापेकथन, परिस्थितिक चित्रणक सौष्ठव झलकि उठैत अछि। मुदा, एम्हर आबि क' कथाक दुइए टा तत्त्व प्रमुख होअए लागल अछि कथ्य आ शिल्प।

कथा लेखन मे अद्यावधि तीन तरहक मौलिक परिवर्त्तन आयल अछि कथ्यगत, शिल्पगत आ भाषागत। ई तीनू परिवर्त्तन हमरा समाजक बदलैत सभ्यता-संस्कृति, बढ़ैत रीति-कुरीति, विकसित ज्ञान-प्रतिभा आ देश-देशांतरक मित्रता इत्यादिक अवदान थिक। जेना-जेना समय ससरैत गेल, कथा-लेखनक तेवर मे परिवर्त्तन आयल गेल। आ आब एहि निष्कर्ष पर पहुंचल छी, जे कथा साहित्य मैथिलीए नहि अपितु सभ भाषाक सर्वप्रसिद्ध सर्वप्रशंसित विधा थिक। मैथिली कथा-विधा आन सभ विधा कें अत्यंत पाछू छोड़ि विश्व-साहित्यक दौड़ मे जुटल अछि, मुदा एम्हर आबि क' मैथिली मे किछु गोटे थोड़ेक स'ख सं कथा लिखब प्रारंभ कयलनि। साहित्य लेखन एकटा पैघ साधना थिक आ तें स'ख सं कथा लिखनिहार कथाकार एहि साधना मे नहि थम्हताह। जेना गदहा नाल नहि ठोकबाओत। एहन कथाकारक रचना, सभ दृष्टिएं उपेक्षणीय अछि। भर्त्सनोक दृष्टिएं एहन रचनाक चर्चा नहि होयबाक चाही।

कथा लिखब बहुत पैघ जोखिम उठायब थिक। आन कोनो विधा मे कनेक हुसि जायब क्षमा करबा योग्य होइतो अछि, मुदा कथा-लेखनक प्रारंभ आ अंत होयबा पर किछु मत एना अछि कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्र को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है, जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता (प्रेमचन्द्र/साहित्य का उद्देश्य पृ.-44)। राजकमलक एकटा निबन्ध मे चेखवक उद्धरण अछि उत्तम कोटिक कथा अपन समाप्तिए स्थल सं प्रारंभ होइत अछि (मिथिला मिहिर, 6 जून 1965 पृ.-20)। राजकमल स्वयं कहैत छथि 'कथा समाप्तिए, कथाक अंतरात्माक प्रतीक होइत अछि, कथाक विषय नहि (पृ.-21)। एहि निबंधक संपादक संपादकीय टिप्पणी मे कहैत छथि 'कथाक समाप्ति किछु एहने सन स्थल पर क' देल जाए जाहि सं पाठक कें नीक जकां बौआय पड़ि जाइक, तं से भेल एकर शिल्प, मुदा कोनो शिल्प विशेषक कारणें यदि पाठक समाप्तिक अर्थ कें अनर्थक रूप मे ग्रहण करए तं से भेल कथाकारक दौर्बल्य (पृ.-31)।'

आब प्रश्न उठैत अछि जे कथाक मध्य भाग केहन होयबाक चाही ? युगीन मानसिकताक हिसाब सं, कथाकार कें कथाक बुनावटि, भाषा, वाक्य-विन्यास, चरित्रांकन, कथा-शिल्प, कथ्य, शब्द-प्रयोग इत्यादि सभ पर एतेक अनुशासन रखबाक चाही, जे कथा, अपन उद्देश्य सं तिल भरि विचलित नहि होअय। कथा समकालीन समाजक आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक चित्रावलि होअ' लागल अछि, वर्ग-संघर्ष, दैन्य, विवशता शोषण, अभाव इत्यादि कें भोगैत विशाल जन समुदायक दर्दगाथा होअए लागल अछि। समाजक एहन परिवेश मे जीबैत मनुष्यक मस्तिष्क एहि समस्त मनोविकार सं भरल रहैत छैक, तखन दुःख पर ई दुःख लोक किएक भोगत ? ज्वर सं पीड़ित मनुष्य अपन तिक्त मुंह कें कुनैनक गोली सं आरो तिक्त कोना करत ? एहि तिक्तताक निवारण हेतु एहि गोली पर मनोरंजकताक मिठास लेपल रहैत अछि। ई मनोरंजकता पाठक कें कथाक आद्योपांत पारायण धरि एकाग्र कएने रहैत अछि, बन्हने रहैत अछि। फलस्वरूप अंत मे पाठक कथाक मौलिक उद्देश्य धरि पहुंचि पबैत छथि। प्रारंभ मे मनोरंजकते मैथिली कथाक मुख्य ध्येय छल, जेना सुधांशु शेखर चौधरी सेहो स्वीकारैत छथि (संदर्भ पृ. 70)।

कथाकार लेल अप्पन जीवन-दर्शन; परिपक्व अनुभूति, सफल, निर्धोख, कटु आ यथार्थ परिस्थितिक अभिव्यक्तिक साहसिकता; प्रखर प्रतिभा, आकर्षक भाषा-शैली इत्यादि बड्ड आवश्यक शर्त अछि। प्रारंभे सं हमरा समाज मे पूंजी-प्रथा, छूआ-छूति, बहु-विवाह, बाल-वृद्ध विवाह, कुत्सित यौनाचार पसरल छल। एतद्रिक्त, स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् थोड़ेक आर दुर्गुण हमरा समाज कें सनेसक रूप मे प्राप्त भेलैक। सुविधा सन चीज प्रशासनिक मुट्ठी मे गनल-गूथल लोक लेल बंद भ' गेल। मौलिक अधिकार, कहबाक लेल बनल, मुदा ओ संविधान किछु खास लोकक चीज भ'गेल।

गाम, समाज, देश सभ खंड-खंड मे विविध स्तर सं बंटि गेल। कार्यालय मे अराजकता, चोरी, बैमानी, घुसखोरी बढ़ि गेल। नेता-अफसर-पत्रकार-शिक्षक समस्त बुद्धिजीवी अपना कर्त्तव्य सं विमुख भ' गेल। समाज दुर्गुणक खजाना भ' गेल। मुदा एहू परिस्थिति मे पूर्वक कथाकार लोकनि समाजक रूढ़ि ग्रस्त कट्टरता आ अव्यवस्था आ अनाचार इत्यादि सं टक्कर लेब वाजिब नहि बुझलनि। एहि परिस्थिति मे समाजक दैनिक जीवनक बाह्य आ आंतरिक यथार्थ कें चिन्हलनि हरिमोहन झा, मणिपद्म, किरण, व्यास, मनमोहन झा, सुधांशु शेखर चौधरी, लक्ष्मीपति सिंह, गोविन्द झा, शैलेन्द्रमोहन झा, किसुन, प्रबोध नारायण सिंह, ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, हंसराज, कल्पना शरण (लिली रे), रामदेव, धीरेन्द्र, रमानन्द रेणु, प्रभृति।

एहि रचनाकार मे सं किछु केर ध्येय रहलनि कथाक कथातत्त्व कें अक्षुण्ण रखैत चारित्रिक वैशिष्ट्य कें उत्कर्ष देब, तं केछु केर रहलनि आत्मसंघर्षक ऊहापोह आ मानस विश्लेषणक फेरा मे कथा तत्त्व कें गौण क' देब। एकर अलावे एहि समय मे थोड़ेक आर कथाकारक नाम गनाओल जा सकैत छल, मुदा ओहि मे अधिकांश नाम, रहि नहि सकल। एहि समय मे मैथिली मे कतोक पत्रिकाक प्रकाशन सेहो होब' लागल आ ई प्रकाशन कथाकारक एकटा समूह बनयबा मे बेसी समर्थ साबित भेल।

युगीन संदर्भ मे गामक उच्चवर्गीय, अर्थसंपन्न परिवारक संभ्रांत नागरिक द्वारा अर्थविपन्नक शोषण, ओकर अभाव सं लाभ लेबाक प्रवृत्ति, निम्नवर्गीय लोकक स्त्रीक संग व्यभिचार...आदिक चित्रण बेसी आवश्यक छल।

समकालीन समाजक एहि आंतरिक पक्ष कें चिन्हलनि ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, कल्पना शरण। मुदा अभिव्यक्तिक जोखिम उठयबा मे राजकमल सभ कें पाछू छोड़ि, बढ़ि गेलाह। प्रायः हिनकर समस्त कथा-साहित्य मे अंतर्मुखी विचारधारा प्रगाढ़ होइते गेल। आ एतए आबि क' राजकमल, मैथिली-कथा-साहित्यक एकटा युग जीति गेलाह, जे मैथिली-कथा मे अपूर्व नूतनता अनलनि। देश-देशांतरक साहित्य सं संपर्क छलनि, दुर्द्धर्ष प्रतिभाशाली, दुर्दांत पढ़ाकू छलाहे। विश्व-साहित्यक परिप्रेक्ष्य मे अधुनातन प्रयोगक जानकारी छलनि। हिनकर कथा साहित्य मे मूल स्थान शिल्प प्राप्त कयलक। हिनकर कहब छलनि जे असल वस्तु कथा मे शिल्पे होइत अछि, कथ्य तं सभक एक्के होइत छैक, शिल्पेक नवीनता लेखकक निजत्व होइत अछि (स्मृति संध्या, पृ. 153)। लेखकक लेल ओ ईहो शर्त राखैत छथि जे हुनका मे एतबा प्रतिभा, क्षमता रहबाक चाही, जाहि सं ओ साधारण सं साधारण पाठक कें अपन कथावस्तु, अपन मन्तव्य, अपन शिल्प-प्रयोग आ अपन आंतरिक उद्देश्य सं स्पष्ट भावें परिचित करा सकय (मि. मि.; 6 जून, 65 पृ.-20)। अपन शिल्प-प्रयोग आ अपन उद्देश्य सं राजकमल सामान्यो पाठक कें परिचित करयबा मे सफल भेलाह अछि आ शिल्पक नवीनता एक्के कथ्य कें कोना भिन्न करैत अछि,

तकर दृष्टांत स्वरूप 'कीरतनियां' आ 'चन्नरदास' एवं 'आवागमन' आ 'एकटा चंपाकली एकटा विषधर' कथा देखल जा सकैत अछि।

पाछू आबि क' ललित-राजकमल-मायान्दक नाम सं मैथली कथा-धारा मे त्रिपुंडक प्रचलन भेल। मुदा राजकमलक कथा-प्रक्रिया परवर्ती कथाकार लोकनिक लेल विशेष रूप सं अनुकरणीय भेल ! प्रायः एहन देखल गेल अछि, जे सभ रचनाकार अपन पूर्ववर्ती रचनाकार सं प्रेरणा ल' क', प्रभाव ग्रहण क' क' डेग आगू ससारैत छथि, मुदा, मैथिली कथा कें आइ सं तैंतीस बर्ख पूर्व राजकमल जतए छोड़ि कए गेलाह, ततए धरि एखनो किछुए कथाकार पहुंचि सकलाह अछि।

निम्नवर्गीय जन-जीवन पहिने मैथिली साहित्य लेखनक विषय नहि होइत छल। एहि परंपरा कें प्रायः शुरुह कयलनि कांचीनाथ झा 'किरण'। मणिपद्म केर कथा लेखनक तं विषये यैह वर्ग रहलनि। फेर ललित आ बाद मे एहि पर रमानन्द रेणुक लेखनीक चमत्कार देखल जाए लागल। निम्नवर्गीय परिवेश कें भोगैत जनताक आत्माभिव्यक्ति, चरित्रांकन, ओकर दैन्य, ओकर विवशता हिनका साहित्य मे आएल। ओना, कथा मे मनोरंजकता अथवा उत्कृष्टता अनबाक लोभें एम्हर कतोक कथाकार लोकनि, देखा-देखी निम्नवर्गीय आंचलिक बोलीक समावेश करए लगलाह। मुदा, एहि वर्गक बोली पर साधनाक अभाव रहलाक कारणें ओ कथाक दोष बनि कए रहि गेल।

कथा-विधा मे जे नूतनता राजकमल अनलनि, तकर आन जे कोनो कारण रहल हो, मुदा परिवेशगत आवश्यकता ई अवश्य छल। कथा लिखबाक क्रम मे अत्यंत छोटो सन घटना क्रम कें चित्रित करबा काल, पात्रक पूर्वकथा, ओकर परिवेश, ओकर चरित्र, ओकर मानसिकता, ओकर प्रवृत्ति, ओकर गुण, ओकर अवगुण, ओकर सामाजिक मानदण्ड, ओकरा पर परिवेशक प्रभाव इत्यादिक वर्णन हैब आवश्यक भ' गेल अछि। एहि वर्णनक क्रम मे आब प्रत्येक प्राणीक एक-एक क्षणक घटना कथाक निर्माण क' सकैत अछि। युगीन विसंगित मे जीबैत मनुष्यक जीवन एतेक क्लिष्ट आ वैविध्यपूर्ण अछि जे मनुष्य एक-एकटा सांस कथा-लेखनक प्लॉट पर घिचैत अछि। एहि परिस्थिति कें पकड़लनि गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, राजमोहन झा, जीवकान्त, महाप्रकाश, गंगेश गुंजन, सुभाषचन्द्र यादव, सुकान्त सोम, उषाकिरण खान, पूर्णेन्दु चौधरी प्रभृति।

वर्त्तमान शताब्दीक आठम दशक मे हमरा समाज मे किछु नव समस्या अपन प्राबल्य पर आएल। बेरोजगारी-बेकारी आ एकरा संगे महगी। एहि सं पुनः अनेक अराजकता उत्पन्न भेल। मानवक अवमूल्यन भेल। अभाव बढ़ल। शोषण-बढ़ल। अभावग्रस्त युवापीढ़ी तनावग्रस्त अवस्था मे जीब' लागल। एम्हर आबि क' किछु नव बात ईहो भेल जे, शोषित समुदायक बीच युवावर्ग कें थोड़ेक आत्मचेतना, अस्तित्त्वबोध भेलनि। एहि समस्त सामाजिक क्रिया-अभिक्रिया, स्थिति-परिस्थिति

कें एहि कालक प्रतिभाशाली कथाकार लोकनि चिन्हलनि। उदय चन्द्र झा 'विनोद', विनोद बिहारी लाल, विभूति आनन्द, नवीन चौधरी, प्रदीप बिहारी, तारानन्द वियोगी, केदार कानन, शैलेन्द्र आनन्द प्रभृत्ति कथाकार लोकनिक युगबोध, आत्म-परीक्षण चेतनशीलता हिनका सभक कथा मे भेटैत रहल अछि। समकालीन सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक परिवेश सं हिनका लोकनिक कथा बेसी लगीच लगैत अछि। जन-जीवनक वर्त्तमान समस्या हिनका लोकनिक कथ्य होइत रहलनि, ओहि समस्या कें भोगैत व्यक्ति हिनकर चरित्र नायक होइत अछि आ तकर चरित्रांकन मे अपन पूर्ण जीवन-दर्शनक उपयोग क' क' पात्रक मनोभाव कें पढ़ि क' ओकरा उजागर करैत रहलाह अछि। सेवा निवृत्तिक पश्चात् कोनो व्यक्तिक मनोविश्लेषणात्मक चरित्रांकन, युवावर्गक आत्मचेतना, नवीन संस्कारक विजय प्राप्ति, पघिलैत दांपत्य-सूत्र, क्लिष्ट जिनगीक संघर्ष, युगीन छल-छद्म, मोह-भंग, विद्रोह, बेकारीक समस्या सं उद्भूत अनेक मानसिक द्वन्द्व सं अइ दशकक कथा सराबोर अछि।

असल मे स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् मिथिलाक सभ्यता-संस्कृति आ जीवन-प्रक्रिया मे किछु तेना जकां परिवर्त्तन अबैत रहलैक, जे एहि विधाक स्वरूप तुरत-तुरत बदलैत गेल। प्रतिभाशाली कथाकार एहि परिवर्त्तनक औचित्य कें, आ साहित्य मे एकर चित्रणक आवश्यकता कें बुझैत रहलाह।

वस्तुतः मैथिली कथा आब कोबर-डहकन, चुलहा-चिनबार, सोहर समदाओन, अरिपन-पुरहरक सीमा सं बाहर आबि युगक प्रतियोगिता मे गर्व सं ठाढ़ अछि। कथ्य-शिल्प-भाषा, तीनू नवीनताक संग मैथिली कथा एखन युगक प्रतिनिधित्व मे संलग्न अछि। प्रेमचन्दक मतें सभ सं उत्तम कोटिक कथा ओ होइत अछि, जकर आधार कोना मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो (साहित्य का उद्देश्य, पृ.-51)। मनोविज्ञान एखन साहित्य मे विशेष रूपें भेटैत अछि। कथाक श्रवण वा अध्ययन सं प्राप्त आनन्द अथवा घटित विरेचन, वस्तुतः एकटा मानसिक प्रक्रिया थिक। मनोविश्लेषणात्मक चित्रण एहि कारण सं पाठकक हेतु विशेष रूप सं लोकप्रिय भेल अछि। मानव-जीवनक यथार्थ आब संघर्षक अखाड़ा बनि गेल अछि। जीवन-संग्राम मे तन्मय मनुष्य कें आब मनोरंजनक लेल समयक अत्यंत अभाव रह' लागल छैक। एहि परिस्थिति मे आब आवश्यक अछि, जे ओ कम समय मे अधिक सं अधिक मनोरंजन प्राप्त करबाक बाट ताकए। मनोरंजन नहियों हो, कम सं कम मोनक सुंदर भावना कें जाग्रत अवश्य करए। एहि लेल आवश्यक अछि कथा मे संपन्नता, बुनाबटि मे गहनता, कथ्य मे यथार्थता, चरित्रांकन मे मनोवैज्ञानिकता, अभिव्यक्ति मे स्पष्टता, आ शिल्प मे नूतनता। कथाक एक-एक शब्द आकर्षक हो आ अपरिहार्य हो। कथाक एहि सीमा-शर्त कें समकालीन कथाकार लोकिन चीन्हि रहल छथि। एत' हम, ओहन कथाकारक चर्चा क' क' हुनका अनावश्यक महत्त्वपूर्ण नहि बनब' चाहैत छी, जे स'ख सं रचनाकार बन' चाहैत छथि, अर्थ-संपन्न छथि तं पोथिओ छपा लैत छथि,

मुदा ने तं साहित्यक वर्त्तमान मूल्य कें बुझैत छथि, ने शाश्वत मूल्य कें। कथा-लेखन बिजलीक धारा सदृश होयबाक चाही, स्वीच दबल कि धारा प्रवाहित हैब शुरू, कथाक पहिल पंक्ति पढ़लहुं कि कथाक परिवेश मे चल गेलहुं।

एखन मैथिली मे कथा लेखन खूब भ' रहल अछि, मुदा लगैत अछि जेना मामिला सेराएल सन हो। एकर मूल कारण प्रकाशनक दुर्दशा थिक। एकटा समय छल सन् 1950-55 क, जाहि मे 'वैदेही'क प्रकाशन सं मैथिली कथा कें एकटा दिशा भेटलैक। ललित, राजकमल प्रभृति कथाकारक एकटा समूह तैयार भेल जे मैथिलीक कथा-विधा कें एकटा युगीन स्वरूप देलनि। 'मिथिला मिहिर'क पुनर्प्रकाशन एहि दिशा कें मजगूती देलक। मुदा, एखन प्रकाशनक अभाव मे युगसम्मत कथा, कथाकारक फाइल मे दाबल अछि, आ अर्थ समृद्ध, देखौंसिया कथाकारक कथा-संग्रह इत्यादि आयल जाइत अछि।

महगी, बेकारी, अभाव, अस्पृश्यता, दहेज, घुसखोरी, दांपत्य जीवनक कटुता, बेमेल-विवाह, ईर्ष्या, द्वेष, कुत्सित यौनाचार, अर्थ संपन्नताक आश्रय सं अर्थविपन्नक शोषण, बलात्कार, चोरी, राजनीतिक अस्थिरता, राजनीतिक अराजकता आ असंतुलन, राजनीतिक अपराधीकरण, विज्ञानक आगमन सं प्राप्त प्रगति आ अवनति इत्यादि एखन हमरा समाजक वर्त्तमान समस्या अछि। एहि मे सं सभ एक दोसरक जननी थिक। एहि कटु यथार्थ सं मुंह चोराएब हमरा कथाकारक नियति नहि थिक। निम्नवर्गीय जातिक सर्वविधि शोषण समाजक उच्च वर्गीय जातिक अधिकार जकां बनि गेल, मुदा आजुक शिक्षा प्रणालीक प्रचार-प्रसार, शहरी-क्षेत्र आ शिक्षित लोकक संसर्ग निम्नजातिक युवा वर्गक दृष्टि खोलि देलक। ओकर आत्मबोध जागि गेल। फलस्वरूप ओकरा मोनक विद्रोह धधकि उठल। ओकर ई विद्रोही स्वभाव, तथाकथित उच्चवर्गीय समुदाय कें अनुचित लाग' लगलनि। एहि उचितानुचितक संघर्ष कें हमर कथाकार उपेक्षित नहि कएलनि।

कथ्य केर ई विशद-विराट फलक कथा साहित्यक काया मे समा गेल, समा रहल अछि। एकरा चित्रित करबाक लेल तीक्ष्ण भाषा-शैली आ नूतन शिल्पक अपेक्षा सहजें कयल जा सकैए। अदौ सं चल अबैत भाषा आ शिल्प मे वर्त्तमान कथ्य कें, अभिव्यक्ति कें ओझरयबाक पूर्ण संभावना छलैक। तें शिल्प आ भाषाक नवीनता, कथा कें नव-नव रूप मे आन' लागल।

एम्हर आबि क' शिल्पक ई नूतनता मैथिली मे लघुकथा नामक विधाक जन्म देलक अछि। जकर अंग्रेजी होयत Short Short-Story। मुदा ई अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव सं नहि आयल। ई आएल अछि वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, पंचतंत्र अथवा लोकथाक अजस्र स्रोत सं, जतए ई उपदेशात्मक प्रवचनक बीच मे अथवा लोककंठ मे नुकाओल छल। अर्थ गांभीर्य सं भरल, छोट काया मे तीक्ष्ण भाषा, नूतन शिल्प आ अत्यंत मर्माहत क' देब' वला ई उपविधा खूब प्रभावकारी साबित भेल

अछि आ विकास पाबि रहल अछि।

असल मे मैथिली मे सीमा क्षेत्र छोट रहबाक कारणें पैघ साहित्यकारक सान्निध्य, पैरवी आ दरबार पसंद, दृष्टिहीन, अर्थसंपन्न संपादक सं परिचय सहज भ' जाइत अछि। फलस्वरूप भदबारिक बेंग जकां बहुत रास लिखनिहार आबि जाइत छथि। मुदा एहेन लेखक सब रहितो छथि भादबे भरि। अपन जीवन-दर्शन, परिवेशगत अनुभूति आ प्रतिभाजन्य अभिव्यक्ति जिनका छनि, साहित्य मे वैह स्थायी भ' सकलाह।

मैथिली कथा-लेखन मे थोड़ेक नकली प्राणी सेहो अबैत रहलाह अछि, जे 'महाजनो गतेन स पन्थाः' पर चलि क' प्रसिद्धि हथिया लेब' चाहैत छथि, मुदा से भ' नहि पबैत छनि। चूंकि राजकमलक कथा मे सेक्स-चित्रण भेल आ राजकमल अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त क' लेलनि, तें, हमहूं सेक्स पर लिखि क' प्रसिद्धि समेटी; एहनो मानसिकता मैथिलीक कथाकार लोकनिक रहलनि अछि। ई देखबाक, परखबाक प्रतिभा नहि छनि, जे ओ सेक्स-चित्रण कोन संदर्भ मे आ कोन रूप मे भेल अछि ?

तथापि, एहि छिट-फुट समस्याक अछैतो, मैथिलीक वर्त्तमान कथा समकालिक माटि-पानि, जन-जीवन, जीवन-संग्राम, ज्वलंत समस्या, परिस्थिति, यथार्थ-जीवन, वर्ग-संघर्ष, युगीन संदर्भ इत्यादिक प्रतिबिंब देखबैत अछि। संख्याक हिसाब सं थोड़बे सही, मुदा एहनो कथाकार छथि, जे खेत मे काज करैत ज'न-हरवाहक, बंधुआ-मजदूरक शोषण क' अबैत छथि, सूद पर सूद जोड़ि क' ल' अबैत छथि आ आपस अयला पर ओकर दैन्य पर, ओकर विवशता पर कथा लिखैत छथि। कथा-लेखन कें एहि छद्म प्रगतिशीलता सं फराक राखब आवश्यक अछि। रचनाकारक लेखन आ जीवन, सिद्धांत आ व्यवहार मे समानता रहबाक चाही।

लक्ष्य संधान करैत मैथिली कथा

मैथिली मे मौलिक कथा वर्त्तमान शताब्दीक तेसर दशक सं प्रारंभ भ' क' धराधरि नव-नव आयाम ग्रहण करैत गेल। सन् 1921 मे जें अनूप मिश्र अपन 'नारद-विवाह' काव्यक भूमिका मे सर्वप्रथम उपन्यास एवं कथा कें अलग-अलग स्वतंत्र विधाक रूप मे रखलनि, तें प्रायः काली कुमार दासक 'भीषण-अन्याय' (1923) तथा कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल' (1924) कें मैथिलीक प्रारंभिक मौलिक कथाक रूप मे स्वीकारल गेल अछि। अर्थात्, मात्र आठ दशकक यात्रा मे मैथिली कथा आइ धरिक स्थिति मे पहुंचल अछि।

प्रकाशनक अवधि कोनहु कथाक समकालीनता द्योतित करैत अछि। मैथिली साहित्यक ई एकटा समस्या रहलैक अछि जे कथाकारक पांच-पांच दस-दस बर्खक पुरान अनुभूतिक अभिव्यक्ति प्रकाशित होइत अछि, किंवा नहिओं होइत अछि। जेना कि राजमोहन झा अपन कथा संग्रह 'एकटा-तेसर' मे कहलनि अछि जे 'ईहो तं मैथिली अकादमीएक कृपा थिक जे उनैस सय चौरासिओ मे आबि कए सरसठि सं पचहत्तरि धरिक लिखल कथा संग्रहीत भ' गेल, अन्यथा आबिओ सकैत कि नहि।' तथापि, जं प्रकाशने कें ध्यान मे राखि आधुनिक मैथिली कथाक अध्ययन कएल जाए तैयो एकरा तीन कोटि मे बांटि लेल जएबाक चाही (1) प्रारंभ सं पांचम दशक धरिक कथा (2) छठम दशकक कथा आ (3) छठम दशक सं बादक कथा।

नीतिपरक आ समाजपरक कथा सभक अनुवाद सं प्रारंभ भेल मैथिली कथा 'प्रणम्य देवता'क प्रकाशन होइत-होइत पाठकक बीच बेस प्रसिद्धि पाबि लेलक। फलस्वरूप आगूक कथाकार कें कथ्य आ शिल्प मे थोड़ेक आओर आगू अएबा मे सुविधा भेलनि। छठम दशकक कथाकार समाजक बाह्य ढ'ब-ढांचाक मोह छोड़ि सोझे व्यक्तिक चिंतन आ जीवन सं जुड़ि गेलाह। छठम दशकक बादक कथाकार सभ कें सेहो जं वर्गीकृत करी तं साफ-साफ देखाइत अछि, जे सातम आ आठम दशक

मे कथाकारक पैघ सूची तैयार भेल जे अचानक नवम दशक मे ओछ भ' गेल। ओना अइ ओछ हएबाक प्रत्यक्ष कारण थिक प्रकाशन मीडियाक अभाव। ऑडिओ-विजुअल अथवा ऑडीबुल मीडिया सं मैथिली मे एखनहुं धरि किछु सीझ-पाकि नहि रहल अछि। अइ पैघ सूचीक संग सातम आ आठम दशक खूब जोश-खरोश सं आएल छल। अइ दुनू दशकक कथाकार कें एकटा सुनिश्चित दूरी तय कएल कथा-क्रम भेटलनि, बदलल माहौल भेटलनि, स्वागत लए पाठक समुदाय भेटलनि, रचनात्मक डेग राख' लेल पत्रिकाक प्लेट फार्म भेटलनि, जीवन-दर्शन विकसित कर' लेल सामाजिक विकृति आ मानवीय संघर्ष भेटलनि आ अइ समस्त स्थितिक बीच मे कथ्यक वैराट्य एवं शिल्पक वैविध्य भेटलनि। ई लोकनि अइ समस्त अवदानक उपयोग कएलनि आ अपन रचना संसार मे विरासत सं प्राप्त प्रवृतिक विकास कएलनि।

नवम दशक मे अपन सृजनशीलताक परिचय देनिहार कथाकारक संख्या अत्यंत कम अछि। मुदा जतबे अछि, से पूर्वक समस्त रचनाकारक मैथिली कथाक शिल्प आ कथ्य कें समय-सापेक्ष बनएबाक लेल दत्तचित भ' कए जुटल छथि।

चूंकि, जीवन-दृष्टि मनुष्य कें शिक्षा सं नहि, उम्र सं नहि, आत्म-संघर्ष सं प्राप्त होइत अछि। आ युगीन प्रगतिशीलताक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभावक क्षेत्र मे मिथिला, आन प्रक्षेत्र सं पछुआएल इलाका अछि। साहित्यिक स्वरूपक प्रगतिशीलता लेल घटनाक्रम आवश्यक अछि। मिथिलांचल ओहुना आत्मजीवी लोकक निवास-स्थल थिक, जतए लोक यथास्थितिवादेक पोषक बेसी काल रहैत अछि। अही क्रम मे मैथिलीक साहित्यकारो थोड़ेक दिन मध्यम गति सं चलए लगलाह। फलस्वरूप राजकमलक बाद कथाक तीक्ष्णता प्रखर नहि भ' कए सामान्य गति सं चलए लागल।

अइ तीन दशक मे जनजीवनक विभीषिका उत्तरोत्तर विकसिते भेल। कतोक प्रतिभाशाली कथाकार संसार सं उठि गेलाह आ शेष कथाकार कें आगूक समय मे व्यवस्था जन्य विकृति नाक सं उपर बुझाए लगलनि। आत्मसंघर्षक रूप पराकाष्ठा पर आबि गेल। रचनाकार लोकनि कें जन-जीवनक एक-एक सांस मे कथा-तत्व भेटए लगलनि। अइ संघर्ष सं उद्भूत कथा-सृजन प्रखर भेल। अनुभवी रचनाकारक मांजल शिल्प आ नव कथाकारक नूतन शिल्प मे कथा-लेखन होअए लागल।

मूल रूप सं कथाक लेल दुइए टा वस्तु विचारणीय रहि गेल अछि कथ्य आ शिल्प। परिवेश सं उठाओल रॉ मैटेरियल कथ्य भेल आ ओकरा प्रस्तुत करबाक लूरि शिल्प भेल। राजकमल एहि प्रसंग एक बेर कहने छथि जे कथाक लेल असल वस्तु शिल्प होइत अछि। कथ्य तं बहुतो व्यक्तिक एक रंग भ' सकैत अछि, मुदा कथ्य कें उपस्थापित करबाक लूरि अपन-अपन खास-खास तरहक होइत अछि। एकहि परिवेश सं उठाओल विविध साहित्यकार द्वारा रॉ-मैटेरियल तं एक भ' सकैत

अछि, मुदा शिल्प निर्माण लोक अपन-अपन अनुभूतिक परिपक्वताक आधार पर करैत अछि। एही शिल्पक कारण एकहि कथ्य सं कैक तरहक कथाक जन्म देल जा सकैत अछि। इएह शिल्प हेबनि मे आबि कए कथा कें मनोवैज्ञानिकता दिश मोड़ि देलक। कथा, कथानक प्रधान नहि भ' कए, घटना प्रधान नहि भ' कए, शैली प्रधान होमए लागल। अनुभूतिक परिपक्वता सं शिल्प निर्मित होइत अछि। सन् 1960 क दशक मे अपन परिचिति बनौनिहार रचनाकार लोकनि नव भावबोध कें नव शैलिएं चित्रित करए तं लगलाह, मुदा किछु रूढ़िग्रस्त लोक कें से नहि पचलनि। अर्थ-तंत्र सं प्रभावित राजकमलक 'ननदि-भाउज' सन कथा ओहि पीढ़ीक लोक कें नहि अरघलनि। ओना, अपवाद सब किछु मे होइत अछि। गोविन्द झा सन लेखक आ पाठकक संख्या कम अछि। कथ्यक स्तर पर सेहो नवे पीढ़ीक लोक अपन फलक कें बेसी बढ़ा सकैत छथि, ई बात मानल जएबाक चाही। पुरान पीढ़ीक लोक लेल एखनहुं किछु क्षेत्र वर्जिते छनि; जखन कि नव पीढ़ीक लोक दिशाहारा युवा वर्गक फ्रस्ट्रेशन पर सेहो ध्यान केंद्रित करैत छथि आ एहि मानसिकता मे कैबरा डान्स देखैत काल सेहो अथवा कोनो वेश्याक कोर मे मूड़ी राखि कए चरम शांति प्राप्त करैत काल सेहो हुनका जीवन सं कथा तत्व निकालि लैत छथि। अर्थात, नव पीढ़ीक कथाकार लेल जीवनक कोनो क्षेत्र साहित्य मे बागल नहि जाइत अछि। एहि सृजक समूह लेल अभिव्यक्तिक कोनो खतरा नहि रहि गेल। अर्थ-तंत्र, राजनीति, कूटनीति, नारी-उत्पीड़न, भूख-बेरोजगारी- अभाव-शोषण, शैक्षिक-वेश्यावृत्ति, वैचारिक वेश्यावृत्ति, दांपत्य आ रक्त संबंधक विगलन, संबंधक ढोंग, धार्मिक पाखंड आदि समस्त सामाजिक गतिविधि कथाक वस्तु भ' सकैत अछि। छठम दशक सं ल' कए आइ धरिक कथा मे समयानुसार आ रचनाकारक कौशलक अनुसार ई सभ ताकल जा सकैत अछि।

युग संदर्भक संग रचनाकारक बड्ड अंतरंग संबंध रहैत छैक। रचनाकार कें युगानुकूल अपन दृष्टिक कैनवास परिवर्तित कर' पड़ैत छनि। आइ नेता, पुलिस, पत्रकार, शिक्षक, अफसर प्रभृति सभ व्यक्तिवादी धारणा मे समटा गेल छथि, तें आब जन सामान्यक आगू पथद्रष्टाक संकट अछि राजकमल ई दायित्व साहित्यकारक मानैत छथि। वस्तुतः उचितो सएह थिक। सृजनधर्मी लोक सामाजक सभ सं संवेदनशील तंतु होइत अछि, जकरा समाजक प्रत्येक छोट-पैघ घटना प्रभावित करैत छैक। आ जखन समाजक व्यवस्था तंत्र एहि तरहें स्वार्थ मे लिप्त भ' जाए, तखन वस्तुतः ई दायित्व साहित्यकारक होइत छनि जे ओ जनसामान्य कें दृष्टिबोध देथि आ युगक संग डेग मिला कए चलबाक लेल प्रेरित करथि।

दिनानुदिन युग बदलैत रहल अछि। रचनाकारक परिवेशमे आमूल परिवर्त्तन भ' गेल अछि। परिवेश सं रचनाकारक भोक्ता मन प्रभावित भेल। अनुभूतिक नव-नव दिशा प्राप्त केलक। वैज्ञानिक युगक आविर्भाव सं क्षेत्र-विस्तार भेल, भौगोलिक दूरी

कमि गेल, विश्वक सीमा घोकचि कए कम भ' गेल। जिनगीक व्यस्तता बढ़ल। मनुष्य रेल, हवाई जहाज सं यात्रा प्रारंभ कएलक। चंद्रमाक पूजा कएनिहार, चंद्रमा पर सं भ्रमण क' आएल। ई सभटा परिवर्त्तन, सभ क्रिया-कलाप साहित्य संरचनाक क्षेत्र मे एकटा क्रांति आनि देलक। लोक कम-सं-कम समय से बेसी-सं-बेसी सुख भोगबाक अभ्यासी बनि गेल। महाकाव्य सं खंड काव्य, खंडकाव्य सं मुक्तक, नाटक सं एकांकी, उपन्यास सं कथा, कथा सं लघुकथा दिश पाठकक झुकान बढ़ल। रचनाकार कें पाठकक एहि प्रवृत्ति कें चीन्हए पड़लनि। एहि चरम-सत्य सं छाह काट' वला रचनाकारक रचना वर्त्तमान समय मे त्याज्य भ' जाएब एकदम स्वाभाविक थिक। समस्यायुक्त समाजक जटिलतम जिनगी मे जीवित पाठक कें एकटा रहए राजा, एकटा रहए रानी कहि कए आब ओझराओल नहि जा सकैत छल। व्यवस्था सं उबिआएल एहि तंगहाल प्राणीक मनोविकारक शमन लेल रचना मे 'ओकर' बात कहब आवश्यक छल, अन्यथा विरेचन हएब असंभव भ' जइतए, जे साहित्यिक असफलताक द्योतक होइतए।

प्रायः सभ रचनाकार अपन पूर्ववर्ती रचनाकार सं कोनो-ने-कोनो तरहें अनुप्रेरित होइते टा छथि। या तं ओ प्रभाव ग्रहण करैत छथि, या आने कोनो तरहक दिशा-सूचना प्राप्त करैत छथि। एहि क्रम मे पूर्वक निकटवर्ती रचनाकारक रचना सं प्रेरणा भेटबाक बेसी संभावना रहैत अछि। छठम सं नवम दशक धरिक कथा मे थोड़-बहुत एहि क्रमक परिचय भेटैत अछि आ आब जखन कि छठम दशकक किछुए अग्रज कथाकार शेष तीन दशकक कथाकारक संग रचनाशील छथि, करीब-करीब अपन-अपन सृजन-सीमा तय क' कए मैथिली कथा-संसारक फलक-निर्माण मे लागल छथि।

सामान्य जनता आब हरदम मानसिक तनाव मे जीबैत अछि। लोकजीवनक ई दृश्य कथा शिल्प कें सोलहो आना बदलि देलक अछि। कथा मे आब कथात्मक चरित्र-चित्रणक बदला मनोविश्लेषणात्मक चरित्र-चित्रण होअए लागल अछि। एहना स्थिति मे पात्रक बाह्य संघर्षक अपेक्षा आंतरिक संघर्षक प्रति रचनाकारक मोह जाग' लागल अछि। तदनुसार कथ्य ओ शिल्पक नवीनता मुखर भेल। कथाक काया-कल्प छोट होमए लागल। लघुकथा खूब लिखल जाए लागल। अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, एम. मणिकान्त, तारानन्द वियोगी, कुमार पवन, प्रदीप बिहारी, देवशंकर नवीन, विद्यानन्द झा, सारंग कुमार प्रभृति लोकनिक सूक्ष्म प्रेक्षणीयता, काव्यात्मक कौशल सं कथ्य संप्रेषित करबाक क्षमता लघुकथा सभ मे अबैत रहल अछि, समय-समय पर पत्र-पत्रिकाक माध्यमे अपन कथा-शिल्पक परिचय ई लोकनि दैत रहलाह अछि। अर्वाचीन काल मे पाश्चात्य शैली सं प्रभावित भ' कए मैथिली-कथा अपन नव रूप-रंग मे प्रसारित-प्रचारित भेल। प्रचीन कथा जकां आब एहि मे बाह्य जगतक चित्रण सुनियोजित नहि रहल, अंतर्मनक कथा उमड़ि कए आबए लागल। जीवनक पक्ष-विशेष कें कम-सं-कम पात्रक आश्रय सं कम-सं-कम घटना-क्रम ल' कए छोट-छीन काया

मे विशेष प्रभावशाली ढंग सं कहबाक आग्रह आधुनिक मैथिली कथा मे रहए लागल। बंगलाक करुणा आ आंग्ल-भाषाक मनोवैज्ञानिकता मैथिली कथा मे रच'-पच' लागल। सारंग कुमारक 'निश्चिंत', शिवशंकर श्रीनिवासक 'धार आ मनुक्ख', तारानन्द वियोगीक 'परिस्थिति', विद्यानन्द झाक 'जरसीमन', देवशंकर नवीनक 'उसांस' आदि एकर साक्षी अछि। 'कोसी कुसम'क लघुकथा अंकक प्रायः सभटा मौलिक लघुकथा मे करुणा आ मनोवैज्ञानिकताक ई स्वर मुखर भेल अछि।

सूक्ष्मता सं जांच-पड़ताल कएल जाए तं ई तथ्य सोझां अबैत अछि, जे शुद्ध रूपें लोकानुरंजन लेल प्रारंभ भेल मौलिक कथा लेखन कें हरिमोहन झाक कथा-सृजन एकटा स्वरूप आ दिशा देलक, जकरा ललित, राजकमल, मायानन्द, धूमकेतु प्रभृति बहुत साहस आ बहुत मनोयोग सं नव क्षितिज देलनि। बादक दशकक कथाकार सभ एकजुट भ' कए एखनहुं सृजनशील छथि। मुदा ई देखाइत अछि जे कथा-सृजनक जे स्तर आगू नहि बढ़िकए क्षैतिज तल पर चलल जाइत छल, आइ सेहो घटए लागल अछि। मैथिली कथा आब विश्व कथा-साहित्यक स्तर पर डेग मिलएबा मे सक्षम भ' सकल अछि। एकटा अल्प अवधि मे ई जतए धरि पहुंचल, से आन कथा-साहित्यक लेल चुनौतीक बात भ' सकैत अछि। सुभाषचन्द्र यादव सन प्रतिष्ठित कथाकारक 'नदी' आ 'कबाछु', विनोद बिहारी लालक 'भोटतंत्र', जीवकान्तक 'गंगा लाभ' आदि सन किछु कथा देखि कए मैथिली कथा-विकासक मार्ग अवरुद्ध मानब समीचीन होएत। एतए नामवर सिंह कें उद्धृत करब उचित लगैत अछि, 'कहानी की असफलता परिश्रम और अभ्यास की कमी के कारण भी हो सकती है, लेकिन अभ्यस्त लेखकों के यहां यदि कहानी की ऐसी रूपहानि दिखाई पड़े तो क्या कहा जाएगा ? यही कहानी के क्षेत्र मे नए शिल्पवादियों की पहचान हो सकती है। नए भाव-सत्य के अनुसार नए कहानी-शिल्प के नाम पर ये कहानी मे कभी केवल वातारवरण देते हैं, जो कभी केवल एक व्यक्ति का रेखाचित्र, तो कभी रोचक व्यंग्यों मे फैलाकर आद्यंत विचार (नई कहानी : सफलता और सार्थकता)।'

नामवर अपन ई वक्तव्य जे हिन्दीक नई कहानीक संदर्भ मे देलनि अछि, तकरा मैथिलीक आधुनिक कथाक लेल सेहो ओही रूप मे देखल जा सकैत अछि। नामवरक शब्द मे 'कहानी का यह दुर्भाग्य है कि वह मनोरंजन के रूप मे पढ़ी जाती है। और शिल्प के रूप मे आलोचित होती है। मनोरंजन उसकी सफलता होती है तो शिल्प उसकी सार्थकता।' मैथिली कथाक जांच-पड़ताल सेहो अही अंदाज मे हएबाक चाही। आइ धरिक मैथिली कथाक उपलब्धि सं एकर उद्देश्य प्राप्ति नहि भ' सकैत अछि। आजुक समयाभाव आ जीवन-संग्रामक कारण मैथिली कथा जतए धरि पहुंचल अछि, से मैथिली कथाक चरम लक्ष्य नहि थिक आ एकर तीक्ष्णता अवरुद्ध करब लक्ष्य-गमन लेल अभिशाप थिक। आठमे दशक सं सक्रिय विभूति आनन्द, विनोद बिहारी लाल, प्रदीप बिहारी, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, तारानन्द

वियोगी, शैलेन्द्र आनन्द, रमेश, देवशंकर नवीन प्रभृत्तिक कथा पत्र-पत्रिका मे देखि ई कहल जा सकैत अछि जे मैथिली कथा कें युग-सापेक्ष बनएबा मे ई लोकनि जीतोड़ प्रयास कएलनि अछि। 'टुटैत बेढ़' आ 'बिहारि मे जड़ैत दीप' दुनू कथाक कथ्य आस-पड़ोसक रहितहु शिल्पक कारणें एकरा जे भिन्नता विनोद बिहारी लाल देलनि, से हिनकर प्रशंसनीय शिल्पक द्योतक थिक, मुदा से आगूक किछु कथा मे अपने प्रभाव कम करैत गेल अछि। विधवा विवाहक प्रति आग्रही, असहाय जायाक शोषणक प्रति विद्रोही कथाकार विनोद अपन कथ्य चयन मे सामाजिक सत्यक लगीच बुझाइत छथि। मुदा से कोनो-कोनो कथा मे ततेक अतिरंजित भ' जाइत छनि, जे कथा-पात्र कें बलजोरी-जनवादी बनबए लगैत अछि।

तारानन्द वियोगीक 'बिसरभोर' आ 'पिआस' कोशीक तांडव सं त्रस्त जनता पर राजनेता आ ग्रामनेताक अत्याचार सं उत्पन्न टटका अनुभूतिक अभिव्यक्ति थिक। दलित समुदायक मनोविश्लेषण आ ओहि समुदायक लोकक सतही एवं सामान्य आकांक्षा कें चीन्हब वियोगीक कथाक धर्म होइत छनि।

विभूति आनन्द पीढ़ीक द्वंद्व आ वर्ग-संघर्षक कथाकार छथि। 'रिटायरमेंट' कथा मे सेवामुक्त व्यक्तिक मनोविश्लेषण करबा मे विभूति सफल भेल छथि। मायानन्द मिश्रक 'चन्द्रबिंदु' आ हिन्दी लेखिका उषा प्रियम्वदाक 'वापसी' कथा कें स्मरण रखितो विभूतिक 'रिटायरमेन्ट' कथाक अस्मिता अपना दिशा मे स्वतंत्र रूपें जाइत मानल जएबाक चाही। देह संबंधक रागात्मक एप्रोच सेहो विभूतिक कथाक मूल धर्म मे अबैत अछि। भाषाक स्तर पर विभूति सामान्य जन-जीवनक बेसी लगीच छथि।

'सरंगिया' प्रदीप बिहारीक मानसिक द्वंद्वक कथा थिक, जतए सरंगिया बनि भीख मंगैत अपन पति कें चीन्हि गेलाक बाद पत्नीक कारुणिक स्थिति फरीछ भ' कए आएल अछि। भावना आ यथार्थक ई संघर्ष प्रदीपक कथा मे भकरार भ' कए आएल अछि। समस्या बहुल समाज मे एखन प्रेम-प्रसंग जेना उपेक्षित होअए लागल अछि, तकरा प्रदीप अपन आकर्षक खिस्सा-शैली मे कहैत छथि। अत्यंत सामान्य कोटिक लोक-जीवनक अत्यंत छोट-सन घटना प्रदीपक कथाक कथ्य बनैत अछि। 'मौगियाह' अइ कोटिक कथा मे राखल जा सकैत अछि। नारी-संबंधक अनिवार्यता प्रदीपक कथाक मुख्य गुण जकां भ' गेल अछि। परिमाणात्मक रूप मे बहुत कथा लिखि कए गुणात्मक रूपें कम कथाक संगें मोन रहनिहार कथाकार मे प्रदीप बिहारी आ विनोद बिहारी लाल गनल जएताह।

'डेरबुक', 'ओहिरातिक भोर' आ 'मिर्जासाहेब' अशोकक कथा-लेखनक विस्तार कें द्योतित करैत अछि। 'डेरबुक' जतए ग्रामीण बालाक मानसिक संवेग सं गहन संपर्क करबैत अछि, ओतहि 'मिर्जा साहेब' सांप्रदायिक संबंधक कटुता कें। अशोक अपन कथा-लेखनक समस्त दिशा मे मानवीय संबंधक दैन्य पर चिंतित छथि। संबंधक

व्याकरण हिनकर कथा सृजन कें उद्वेलित कएने छनि।

शिवशंकर श्रीनिवासक 'सीतापुरक सुनयना' आ 'दबाइ' सामाजिक रहस्यात्मक घटनाक मूलतत्व कें उद्घाटित करैत अछि। शिवशंकर अपन संपूर्ण कथा लेखन मे पाठकक संगें विचरैत छथि। कथाक्रमक सहज विकास, लोकजीवनक पारंपरिक संस्कृतिक प्रति सहज संवेदन हिनकर कथाक प्रमुख गुण थिक। अपन माटिक गंधक मौलिकता कें अक्षुण्ण राखब हिनकर कथा कें जीवनी शक्ति दैत अछि। अतिरंजना हिनकर कथा मध्य हुलकिओ नहि मारैत अछि। इएह कारण थिक जे सफलता आ सार्थकता दुनूक संग ई एकहि समय मे तैयार रहैत छथि।

रमेश वर्त्तमान जनजीवनक व्यावहारिक रहन-सहन मे छिड़िआएल सूक्ष्मताक कथाकार छथि। युगीन चटक-मटक आ उपभोक्ता संस्कृतिक आधुनिकता मे दहाइत-भसिआइत मानवोचित संस्कारक लोमहर्षक चित्रण हिनकर कथा मे भेटैत अछि। 'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो' सन कतोक कथाक नाम लेल जा सकैत अछि। रमेश अपन परिवेशक प्रति अत्यंत सजग आ साकांक्ष कथाकार छथि। देवशंकर नवीनक 'बबूर' कथा सेहो अपन अन्वितिक लेल समृद्ध कथा थिक।

केदार काननक 'नाटक', 'तामस', 'आतंक' प्रभृति कथा सभ युगचेतना सं सराबोर अछि। व्यवस्थाक नांगट दृश्य अत्यंत निर्भीकता सं उपस्थित करबा मे केदार धखाइत नहि छथि। हिनका अभिव्यक्तिक पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त छनि। उत्कृष्ट अभिव्यक्ति लेल ई कठोर-सं-कठोर शब्द कें साहित्यिक गरिमा द' दैत छथि। व्यक्ति-सत्य कें समूह-सत्यक आंखिएं देखबाक हिनकर कौशल प्रशंसनीय छनि। शैलेन्द्र आनन्दक 'उठ पुत्ता ! पुरल-पुरल' समाज सापेक्ष यथार्थ आ युग सापेक्ष शिल्पक उदाहरण भ' सकैत अछि। यद्यपि कथा-लेखन मे शैलेन्द्र अत्यंत मंथर छथि, तथापि तात्विक आ गुणात्मक उत्कर्ष, परिमाणात्मक कमीक क्षति पूर्ति करैत अछि।

कथा आ कथाकारक नाम गना कए मैथिली कथाक विश्लेषण एकटा निबंध मे करब आब संभव नहि अछि। अहू पीढ़ीक कतोक कथाकार आ कतोक कथा एहेन अछि, जकर अहम भूमिका अइ संधान मे रहल अछि। मुदा सभक नाम गनएबा सं बेसी उपयुक्त अइ पीढ़ीक पूर्ववर्ती दिश जाएब बेसी आवश्यक अछि। तेसर दशक सं आरंभ भेल मैथिलीक मौलिक कथा कें ललित-राजकमल-मायानन्द जे नव दिशा प्रदान कएलनि, से परवर्ती कथाकार लोकनि कहिओ नहि बिसरि सकताह। मायानन्दक रचनाधर्मिता सं मैथिली कथा एखनहुं अनुप्राणित होइत रहैत अछि। मुदा ई बात खूब निर्भीकता सं कहल जा सकैत अछि जे राजकमल अपन कथाक माध्यमे कथालेखनक जे बाट निर्दिष्ट केलनि तकरा पकड़बा मे परवर्ती कथाकार सफल भ' सकलाह अछि। भाषा आ शिल्पक नूतनता तथा तेजीक कारण ओकरा एकैसम शताब्दीक मैथिली कथा कहल जा सकैत अछि। ओहि टक्करक कथा जं आइ पूर्ण सामर्थ्यक संग आबए लागए तं हमरा बुझने आन साहित्यक कथा

प्रतियोगिताक बाट पर मुंह बिधुऔने रहि जाएत। हिनका लोकनिक अतिरिक्त धूमकेतु, सोमदेव, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन, राजमोहन झा, रमानन्द रेणु, हंसराज, धीरेन्द्र, लिली रे, जीवकान्त, सुभाष चन्द्र यादव, महाप्रकाश, महेन्द्र, ललितेश मिश्र, मार्कण्डेय, सुकान्त सोम, पूर्णेन्दु चौधरी, उषाकिरण खान प्रभृति रचनाकारक कथा सं मैथिली कथा-साहित्य समृद्ध होइत रहल अछि। आधुनिक मैथिली कथाक सबल स्तंभ सभक रचना 'अगुरवान' (धूमकेतु), 'इन्किलाब', 'तेतरी', 'गौड़' (जीवकान्त), 'अनुपस्थित महाशय' (गंगेश गुंजन) 'पाखंड पर्व' (महाप्रकाश), 'युद्ध-युद्ध-युद्ध', 'सब-दे-सब' (राजमोहन झा) 'काठक बनल लोक' (सुभाष चन्द्र यादव) आदि मे आत्मसंघर्ष सं उद्‌भूत अनुभूतिक दर्शन होइत अछि, युगबोधक चित्र भेटैत अछि। मैथिलीक कथा आ कथाकारक विपुल संख्याक नामोल्लेख एतए नहि भ' सकल अछि, मुदा तय अछि जे ओ लोकनि मैथिली कथाक शैशव कें बड़ा मनोयोग सं सम्हारलनि अछि, कैशोर्य कें सजौलनि अछि आ पल्लवित-पुष्पित कएलनि अछि। छत्रानन्दक 'स्वर्ग'क संप्रेषणीयता पाठकक अंतस्तल कें छूबि लैत अछि, 'अनुपस्थित महाशय' मे नायकक विदेशी सभ्यताक प्रति झुकान आ मातृभाषाक प्रति कृत्रिम स्नेह, कथाकार गंगेश गुजनक खौंझ कें जगा दैत अछि, श्री देवक 'नज्म-ए-लक्ष्मी' मिथ्या जातिवादक साफ चित्रण करैत अछि, मनमोहन झाक 'जोंक' व्यक्तिक भलमनसाहतक अनुचित लाभ उठएबाक कुकृत्यक परिचय दैत अछि। राजमोहनक 'सब-दे-सब' मे पंजाबी भाषाक समावेशक कारणें किछु पाठक ओकरा कमजोर कहलनि, मुदा कथाक स्तरक कसौटी ओकर किछु संवादे टा नहि थिक। वस्तुतः कथा मे प्रसंगानुकूल आन भाषा अथवा बोलीक समावेश परिस्थितिक मांग पर निर्भर करैत अछि। जं कथ्य संप्रेषण मे ई समावेश बाधक नहि हो, तं ई गुणे कहल जएबाक चाही, एहि सं कथ्यक विश्वसनीयता पुष्ट होइत अछि। युग-जीवन आब बड्ड गतिशील भ' गेल अछि। मात्र अरिपन-पुरहर आ कोबरक चित्त-भित्ति पर मैथिली कथा कें राखब सर्वथा युग-जीवन सं काटब हएत। एहि मनोवैज्ञानिक युगक द्रुत गतिक संग मैथिली कथाक भाषा कें, विषय कें, नव टेकनिक कें दौड़' पड़तै, तखनहि मैथिली कथा युगक संग चलबामे समर्थ हैत। तें वाक्य प्रयोगक एहि तरहें विरोध उचित नहि।

एतए एकटा बात आब कहक चाही जे तथाकथित नेता, पुलिस, पत्रकार आदि जकां प्रशस्ति पाबि गेलाक बाद रचनाकार कें साहित्य संग वंचना नहि करबाक चाही, प्रशस्तिक कमाइ नहि खएबाक चाही। एहि सं हुनकर तं जे थोड़-बहुत बिगड़नि से बिगड़नि, साहित्यक भारी अनिष्ट होइत छैक आ अइ पर एकर दूरगामी दुष्प्रभाव पड़ैत छैक। 'पूर्वांचल' पत्रिकाक कथा सभमे प्रतिष्ठित कथाकार लोकनिक किरदानी देखल जा सकैत अछि। साहित्यकार लोक-जीवनक पथ-प्रदर्शक होइत छथि, तें हुनका कम-सं-कम कर्त्तव्य बोध रहबाक चाहिअनि। अनुभूत सत्य, जन-जीवनक समस्या

आदि सं संबद्ध रहि कए सृजन करबाक चाहिअनि। लोक-जीवन सं पृथक रहि कए कएल गेल लेखन बालुक भीत ठाढ़ करब हएत।

वैज्ञानिक युगक एहि व्यवस्था सं प्रभावित परिवेश मे मनुक्खक व्यस्तता बढ़ि गेल अछि। समयक अभाव, दूरीक संकुचन, मानव मस्तिष्क मे तनावक बाहुल्य, रोटीक समस्या, रोटीक अभाव मे नारी-देहक बिक्री, शोषण, अपहरण, लूटि आदि आम बात भ' गेल अछि। घूसखोरीक प्रवेश भेल, उचितो काज अनुचित जकां होअए लागल, अनुचित कें उचितक स्थान भेटि गेल। जनमानस मे एहि सं असंतोष जागल। परिवेशक एहि क्लिष्टता सं साहित्य प्रभावित भेल। संचार आ संधान माध्यमक कारणें देश-विदेशक संपर्क बढ़ल, एक देशक साहित्य, संस्कृति, रीति-रिवाज दोसर देश मे प्रचारित भेल। मैथिली साहित्यक कथा लेखन अहू सं प्रभावित भेल। ई प्रभाव, जाहि रूप मे लोकरुचिक परिवर्त्तन कएलक, मैथिली कथाक स्वरूप तकर अनुरूपे रह'क चाही। जे, किंचित अछिओ, किंचित नहि।

आधुनिक कथा सही अर्थ मे घोड़दौड़क चुस्ती सं युक्त रहक चाही। कथाक पहिल पंक्ति मे प्रवेश करिते एहेन वातावरण बन'क चाही, जाहि सं पाठक समाधिस्थ भ' जाइथ आ कथा समाप्त होइत-होइत पाठक कें पूर्ण मनःतोष भेटि जाइन। राजकमलक कथा एहि दिशा मे सर्वसफल कथा अछि। अपन परिवेशक सर्वविधि ज्ञानक अभाव मे, साकांक्ष दृष्टिक अभाव मे ई उपलब्धि असंभव अछि। जन-जीवन सं निरपेक्ष रहिकए कथा लिखब, घड़ियालक नोर बहाएब थिक। पुनः युग-सत्य कें चीन्हब-बूझब आ ओहि सं जुटि कए रचना करब जतेक आवश्यक अछि, भाषाक तेजी, शिल्पक नूतनता, अभिव्यक्तिक स्पष्टता तथा छोट-सं-छोट काया मे बेसी-सं-बेसी संतुष्टि देबाक क्षमता सेहो ओतबे आवश्यक अछि।

स्वयं वातानुकूलित निवासक सुख ली आ जेठक रौद मे झरकैत वा माघक जाड़ मे ठिठुरैत बोनिहारिनक जीवन पर कथा लिखी; परिस्थिति आ व्यवस्थाक मारल असहाय नारीक लाचारी सं मौज मनाबी आ तखन इजोत मे ओकर मुक्तिक लेल नारा लगाबी; ई रचनाकारक घोर बैमानी आ रचनाधर्मिताक प्रति खेलौड़ कहल जाएत। कथाक सफलता लेल कथाकारक लेखन आ जीवन-दर्शन मे साम्य हएब ओतबे आवश्यक अछि, जतबा कथालेखन। एकटा रचनाकार असंख्य लाठी तैयार करबाक सामर्थ्य रखैत छथि। इएह कारण थिक जे इतिहासक क्रांति दूत, सभ युग मे साहित्यकारे बनैत अएलाह अछि। साहित्य कें युग-सापेक्ष हएबाक लेल रचनाकार कें कर्त्तव्य-बोध हएब आवश्यक। इएह कर्त्तव्यबोध जनजीवनक यथार्थक संग रचनाकारक शिल्प पहिरि कए साहित्य मे उतरैत अछि जे जनताक आंखि खोलैत अछि, ओकर चेतना कें जाग्रत करैत अछि, ओकरा अस्तित्व बोध दैत अछि। अंततः सामाजिक क्रांति होइत अछि, व्यवस्था-परिवर्त्तन होइत अछि।

मैथिली कथा एखन जतए धरि पहुंचल अछि, से उम्र-सापेक्ष तं भ' गेल,

युग-सापेक्ष एखन धरि नहि भ' सकल अछि। वैज्ञानिकता आ आधुनिकताक एहि होड़ मे एकरा युग-सापेक्ष बनएबा लेल कथाकार कें अपन दायित्व पर पूर्ण सचेष्ट रह' पड़तनि। बिना से भेने व्यवस्था कें गारि पढ़ब अरण्य रोदन हएत...।

समकालीन उपन्यास : प्रयास आ परिणाम

मैथिली उपन्यासक चर्चा करैत ई स्वीकारि लेबा मे संकोच नहि होयबाक चाही जे परिमाणात्मक रूप सं मैथिली साहित्यक ई विधा बड़ पाछू अछि आ एकर भंडार बड़ छुछून अछि। गुणात्मकताक प्रसंग ई कहब उचित नहि होयत, मुदा जं लिखले नहि जाय, तं ओकर गुणवत्ताक परीक्षण की होयत ?

स्वतंत्रता प्राप्ति सं पूर्वे मैथिली मे उपन्यास लेखन दिस रचनाकारक आसक्ति परिलक्षित होइत अछि। व्यक्ति-व्यक्तिक हृदय मे आत्म-कुंठा बढ़ि रहल छल। प्रशासकीय उत्पीड़न सं जन-सामान्यक अंतर्मन व्यथित छल। भौतिक विकास आ मानसिक स्तर एहि दू दृष्टिकोणें, मिथिला बहुत बेसी पछुआएल प्रक्षेत्र छल। एत' शास्त्रीय ज्ञानक विपुल धरोहरि छल, ज्ञानार्जनक असीम उद्देश्य बिंदु छल, मुदा नागरिक अपन रूढ़िक जाल मे ओझरायल छल। एहि परिस्थिति मे, जनताक आगू दू तरहक समस्या छल व्यवस्थाजन्य आ परंपराजन्य। मनुष्य जातिक ई स्वभाव होइत अछि जे ओ अपन लड़ाइ छोट स्तरक प्रतिपक्षी सं प्रारंभ करैत अछि। व्यवस्थाजन्य समस्या आ विदेशी शासकक दानवताक सीमा विस्तृत छल। मैथिली उपन्यास मे प्रायः एहि व्यवस्था कें ओहि समय मे व्यक्त नहि कयल गेल। तत्कालीन समाज मे मिथिलाक जनजीवन बेमेल विवाह, बहुविवाह, बाल विवाह, सासु-पुतौहु, हास-परिहास, निरक्षरता, नारी-दमन आदि-आदि रीति-कुरीति सं भरल छल। कोनो कालक साहित्य समकालीन समाजक परिभाषा होइत अछि। ओहि कालक उपन्यास एहि सभ बिंदु कें चित्रित करबा मे लागल रहल। मिथिलाक नारीक अज्ञान आ दैन्य कें चित्रित करैत रहल अथवा जातीय वैषम्य, पंजीबद्ध अहंकार आदि सं उद्भूत विकृति कें द्योतित करैत रहल। आजुक संदर्भ मे एहि कालक उपन्यासक परीक्षण क' कए एक पंक्ति मे कहि देल जायत जे ई अंतराल मैथिली उपन्यासक लेल शिल्प आ काव्य दुनू दृष्टिएं अपरिपक्व काल थिक। मुदा, से आलोचनाक ईमानदारी नहि होयत। कारण उपन्यास लेखन आ उपन्यासक अध्ययन दुनू दिशा मे लोकासक्ति कें हम सामंती संस्कार

सं मुक्त भ' क' निम्न-मध्यवर्गीय लोकक एकतापूर्ण जीवन जीबाक आग्रह मानैत छी। महाकाव्यक नायकक सीमा शर्त सं मुक्ति पाबि क' समाजक सभ कोटिक नागरिक कें अपन काव्यपुरुष बनयबाक अधिकार रचनाकार प्राप्त तं क' लेलनि, मुदा कथा, मुक्तक, एकांकी आदि मे समाज कें, जीवन कें टुकड़ी-टुकड़ी मे देखबाक जे आग्रह परिलक्षित होइत अछि तकरा उपन्यास आ नाटक दुनू अर्थ मे एकटा दिशा दैत प्रतीत होइत अछि। ई बात सभ साहित्यक लेल मान्य भ' सकैत अछि। एहि कालक मैथिली उपन्यासक कमजोर तंतु कें गीजब उचित नहि। ओना एहि अवधिक किछु महत्त्वपूर्ण उपन्यास कें उक्त तथ्य सं फराक बूझ'क चाही। कांचीनाथ झा 'किरण'क 'चन्द्रगहण', हरिमोहन झाक 'कन्यादान', द्विरागमन', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क 'पारो' आदि एहने उपन्यास थिक, जकरा पर कथानकक बुनावटिक प्रसंग, जलफांफी होयबाक कलंक नहि थोपल जायत।

समकालीनता आ सौंदर्यबोध   ई दुनू शब्द समय सापेक्ष अछि। रचनाकालक हिसाब सं समकालीन होइतो कतिपय कृति विषय आ उपस्थापनाक दृष्टिएं समकालीन नहि भ' पबैत अछि। मुदा किछु कृति एहेनो होइत अछि, जे शाश्वत रूपें अपन महत्त्व अक्षुण्ण रखने रहैत अछि। किछु कृति एहनो होइत अछि, जे अपन समयक अभूतपूर्व प्रभावक कारणें जनमानस मे तेहन स्थान बना लैत अछि, जाहि सं सदैव ओकर महत्त्व सुरक्षित रहि जाइत अछि, पैतृक संपत्ति जकां ओकर प्रशस्ति पुश्त-दर-पुश्त चलैत रहैत अछि। 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' मैथिली साहित्य मे एकर उदाहरण थिक। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' मैथिली साहित्यक इतिहास मे आइए नहि, भविष्यो मे एतबे समादृत होयत आ एकर सृजन एकटा युगक रूप मे जानल जायत। एहि उपन्यासक विषय यद्यपि आजुक समय मे ततेक संदर्भयुक्त नहि अछि, तथापि अपन प्रभावोत्पादकता, उपस्थापन आदि-आदि गुणक कारणें बेस जकां प्रतिष्ठित अछि। युग आ युगीन दृष्टिकोण, दुनू मे परिवर्त्तन होइत रहैत अछि। एहि परिवर्त्तन सं व्यक्तिक रुचि आ दृष्टिबोध दुनू मे परिवर्त्तन अबैत अछि। पचीस बर्ख पहिने जाहि दलान पर काली, लक्ष्मी, शिव आ रामक आदमकद फोटो टांगल रहैत छल, ओत' पांच बर्ख पहिने विद्यापति, यात्री, निराला आ सिमोन द बुआक फोटो आ आइ कोनो सिनेमाक हिरोइनक प्रणयलिप्त कलेंडर टांगल जाय लागल। व्यक्तिक सौंदर्य प्रेक्षण एहि हिसाबें परिवर्तित भेल। एहना स्थिति मे सौंदर्यबोध कें समकालीन सत्य आ वैयक्तिक दृष्टिकोण सं काटि क' नहि देखल जा सकैत अछि। वैयक्तिक दृष्टिकोण प्रत्येक रचनाकारक सृजनशीलता कें प्रभावित करैत अछि। ई प्रभाव रचनाकारक सौंदर्यबोधक माध्यमे सेहो रचना मे उतरैत अछि।

सुविधाक दृष्टिएं मैथिलीक प्रतिनिधि उपन्यास कें लेखनकाल अथवा प्रकाशन कालक स्तर सं दू कोटि मे बांटल जा सकैत अछि। ई विभाजन उपन्यासक विषय चेतनाक प्रसंग मे विशेष प्रयोजनीय साबित होइत अछि। ई विभाजक बिंदु थिक

छठम दशकक अंत। सन साठि सं पूर्व प्रकाशित उपन्यास सभ मे सं प्रतिनिधि कृतिक रूप मे गनल जायत   कन्यादान, द्विरागमन, पारो, नवतुरिया, कुमार, मधुश्रावणी, विद्यापति, आदिकथा, चानोदाइ, बिहाड़ि पात पाथर आदि। एहि समस्त कृति सभ मे 'पारो' आ 'विद्यापति' कें छोड़ि क' अन्य सभटा मिथिलाक वैवाहिक संदर्भ सं संबद्ध अछि। 'पारो' ममिऔत-पिसिऔत भाइ-बहिनक प्रेमकथा पर आ 'विद्यापति' ऐतिहासिक कथा पर आधारित उपन्यास थिक। जेना कि पहिने कहलहुं, रचनाकार अपन युगबोध, सौंदर्य-बोध सं अनुप्राणित रचनाशीलता कें समकालीन कथा-प्रसंगक माध्यमे स्पष्ट करैत छथि, उक्त सभ उपन्यास मे सैह मुखर होइत अछि। युगबोधक स्तर पर आ समकालीन समाािजक रहन-सहन तथा व्यक्ति-व्यक्तिक मानवता-दानवताक स्तर पर प्रेक्षकक सौंदर्य चेतना परिवर्तित होइत रहैत अछि। तत्कालीन मिथिला जाहि प्रकारक वैवाहिक विसंगति सं युद्ध क' रहल छल, दहेज, अशिक्षा, मानसिक वैषम्य, बहु-विवाह, प्रेम-विवाह, प्रेमहीन विवाह, धन लोलुप विवाह, पंजीबद्धताक कारणें प्रस्तुत समस्या आदि-आदि सं एत' जतेक विडंबना उत्पन्न छल, ताहि परिस्थिति मे कोनो भावुक आ प्रबुद्ध लोक कोनो सुवर्णा, सुरूपाक भृकुटि विलास आ अलक जाल दिस जा कए नहि ओझरा सकैत छथि। एहि स्थितिक अवलोकन सं अपन हृदय मे गुदगुदी नहि उठा सकैत छलाह। कोनो संवेदनशील व्यक्तिक नेत्र अपना परिवेशक एहि विडंबना पर केंद्रित होइत हेतनि। आ तें एहि अंतरालक अधिकांश कृति एहि सभ समस्या पर आधारित अछि। मुदा जें कि युगबोधक संग-संग वैयक्तिक दृष्टिकोण बेसी महत्त्वपूर्ण होइत अछि, एहि समस्त उपन्यासक कथा-संदर्भ एक रहितो अपन-अपन उद्देश्य मे भिन्न-भिन्न अछि। जतए हरिमोहन झा अंग्रेजी संस्कारक संक्रामक रोग सं ग्रसित सी. सी. मिश्रक विवाह करा दैत छथि, ओतहि 'कन्यादान'क प्रकाशनक तेरह वर्षक बाद उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क 'कुमार' मे नायक प्रेम-प्रसंग मे असफल भेला पर टूटि जाइत अछि। निराशाक जाल मे ओझरा कए अपन किछु राखि नहि पबैत अछि। पछाति हिनकर कथा नायक अपन प्रतिज्ञा पर पछताइतो छनि, फेर विवाहो करैत छनि। एहि समस्त स्थिति सं संग्राम करैत व्यक्तिक मनोदशा 'कुमार' मे चित्रित भेल अछि। एहि चित्रण मे हिनकर उपस्थापनक प्रविधि निश्चित रूप सं अतीव आकर्षक अछि। मुदा कथानायकक मानसिकता हताश रहैत छनि। जखन कि हरिमोहनक नायक विकृत आधुनिकताक चटक-मटक मे गृहीत अपन जिद्द पर अड़ल रहए वला। 'कन्यादान'क बुच्चीदाइक मूढ़ता आ देहाती प्रवृत्ति कें खतम क' कए सी. सी. मिश्रक अहंकार मर्दन लेल अगिला उपन्यास 'द्विरागमन' मे बुच्चीदाइक संबंधी मे जागरूकता देखबैत छथि, जखन कि 'सोमदेव' अपन 'चानोदाइ' मे अशिक्षाक कारणें नारी जातिक दुरवस्था कें चित्रित करैत छथि। नारी कें पुरुषक भोग्याक रूप मे ठाढ़ करैत छथि, मुदा तकर समाधानो अपन ओही कृति मे निकालि दैत छथि। वस्तुतः 'कन्यादान'क

अगिला भागक रूप मे 'द्विरागमन' कें गनल जयबाक चाही। से मात्र एहि लेल नहि, जे कन्यादानक प्रमुख पात्र द्विरागमनो मे विद्यमान छथि। अपितु एहि लेल, जे उपन्यासकारक प्रगतिशीलता आ हिनकर दृष्टिबोध, एहि दुनू कृति कें मिला क' देखबा मे पूर्ण स्पष्ट होइत अछि। यात्रीक 'नवतुरिया' आ मायानंदक 'बिहाड़ि पात पाथर' एके रंगक समस्या कें ल' क' चलैत अछि। मुदा, रचनाकारक वैयक्तिक दृष्टिकोण दुनू उपन्यास कें दू दिशा मे मोड़ि दैत अछि। यात्री कें नवतुरियाक साहस आ शक्ति पर ततबा भरोस छनि, जे एकटा बूढ़ वर सं विसेसरीक विवाहक संपूर्ण सरंजाम कयले रहि जाइत छनि, समाजक रूढ़ि टेंटिआइत रहि जाइत अछि आ नवतुरिया एहि समस्त ढाठ कें तोड़ि क' विसेसरीक यथोचित विवाह करा दैत अछि। एत' यात्रीक आत्मविश्वास, हिनकर आस्था नवशक्तिक प्रति आशा आदि दर्शित अछि। जखन कि मायानंद मे सामाजिक यथास्थिति विद्यमान रहैत छनि। 'बिहाड़ि पात पाथर'क तिरबेनी कें रुद्रनाथ मिश्रक हाथें बिकयबा सं रोक' लेल कोने नवांकुर ठाढ़ नहि होइत अछि। 'नवतुरिआ'क प्रकाशनक छओ बर्ख बादो मायानंदक समाजक नवतुरिआ एतबा साहस नहि क' पबैत छनि। अर्थात् मायानन्द एखन धरि अपन समाजक एहि विकृति कें, एहि विडंबना कें मेटयबाक लेल ठाढ़ होअ' वाला कोनो आंदोलनक लुत्ती नहि देखि सकलाह आ हिनकर तिरबेनी असमय मे विधवा भ' गेलनि। उम्र जन्य यौवनोन्मादक झांट-बिहाड़ि सहैत रहलनि। सामाजिक मर्यादा आ दैहिक आवश्यताक रस्साकशी मे तनाइत रहलनि, किकिआइत रहलनि। एत' निश्चित रूप सं ई कहल जयबाक चाही, जे मायानन्द कें जखन अपन समाजक एहि पाखंडी मर्यादाक आवरण मजगूत बुझयलनि, हिनकर नायिका जीवनक एहि अन्हर-बिहाड़ि कें अंगेजि लेलकनि, तखन यात्री कें ई सभटा पाखंड नवशक्तिक आगू फोंकिल बुझयलनि आ हिनकर नवतुरिया ओहि फोंकिल पाखंड कें फोड़ि क' विसेसरी कें मुक्त क' देलनि। यात्री एतबा जोखिम ने केवल विषयक संदर्भ मे, अपितु भाषा आ उपस्थापन आदिक संदर्भ मे सेहो उठौने छथि। वस्तुतः यात्रीक चेतना मात्र वातावरण मे व्याप्त प्रत्यक्ष दृश्य धरि सीमित नहि रहैत छनि, अपितु महत्त्वहीन अहंकार, षड्यंत्रपूर्ण सामाजिक मर्यादा आदिक सीड़कक कोन उठा क' ओकरा त'र मे होइत क्रियाकलाप धरि बढ़ि जाइत छनि। अपन एहि प्रवृत्तिक कारणें ओ बिरजू आ पारोक प्रेमाकर्षण कें चित्रित क' सकलाह। ओना एहि उपन्यासक ई संबंध अधिकांश पाठक कें नहि अरघलनि। कारण समाज कें ओएह चीज सुंदर लगैत छैक, 'जे होयबाक चाही'। मुदा, रचनाकार कें ओ चीज बेसी सुन्नर लगैत छैक जे होइत अछि। जत' 'होयबाक चाही' एकटा खास वर्गक बनाओल आदर्शक नमूना थिक, ओत' 'होइत अछि' सत्य। सत्य कें आदर्शक पर्दा त'र झांपि क' रखबाक षड्यंत्र दीर्घकालिक परंपरा थिक। मिथिला मे एहि परंपरा कें संरक्षण भेटैत रहलैक अछि। यात्री एकरा खंडित कयलनि आ सत्य पर सं आदर्शक ओढ़ना घीचि लेलनि।

हिनका सत्य सभ सं बेसी सुंदर बुझाइत रहलनि अछि। सत्य मायानन्द कें सेहो सुंदर बुझयलनि, बल्कि एहि कालक समस्त उपन्यासकारक आधार तत्व समकालिक जनसत्ये थिक। मुदा, ओहि सत्यक संग रचनाकारक बौद्धिकता आ साहस कोन स्तरक संबंध स्थापित क' पबैत अछि, से महत्त्वक विषय थिक। मायानन्द अपन कथा नायिका कें सामाजिक अनुशासनक पटरी पर चलबैत-चलबैत थका दैत छथि, ओकरा अपन भाग्य बलें जीवन संधान करबा लेल छोड़ि दैत छथि, जखन कि यात्री अपन कथा नायिकाक भविष्य सुधार' लेल नवशक्तिक निर्माण करैत छथि, पुरान शक्ति कें ध्वस्त करैत छथि आ ओकरा समुचित रूपें दृढ़ करैत छथि।

'मधुश्रावणी' उपन्यास सेहो बहुलांश मे वैवाहिक संदर्भ सं जुड़ल अछि। शैलेन्द्र मोहन झा एहि मे कमल आ नलिनीक संयोग-वियोग कें चित्रित करैत करुणाक आधिक्य उत्पन्न करैत रहलाह अछि। वियोगादिक अतिरिक्त चित्रण एहि उपन्यास कें अत्यधिक कारुणिक बना देलक अछि। ठाम-ठाम किछु अप्रासांगिक आ अनुपयुक्त चित्र सभ परिलक्षित होइत अछि। मुदा एहि उपन्यास मे वर्णन, विश्लेषण आ खास क' चरित्र-चित्रण सं जाहि त्रासदीक जन्म भेल अछि, विरेचन प्रक्रिया ओही सं प्रारंभ होइत अछि। मनोविश्लेषण कें उपन्यासकार अधिक महत्त्व देने छथि। हिनको दृष्टिकोण मिथिलाक एहि विवाह परंपरा आ दैविक संयोगादिक बीच प्रताड़ित जीवन कें उबार' लेल कोनो जोखिम नहि उठा सकलनि। मिथलाक एहि विकराल दुरावस्था मे ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' मिथिलाक विभूति, साहित्यसेवी, इतिहास प्रसिद्ध भाषाविज्ञ विद्यापतिक जीवन क्रम कें केंद्र मे आनि उपन्यास लिखलनि 'विद्यापति'। मुदा उपन्यास मे ऐतिहासिक तथ्यक उपेक्षाक संग- संग औपन्यासिक संरचनात्मकताक उपेक्षा सेहो भेल अछि। 1954 ई. मे 'नवतुरिआ' प्रकाशित भेल आ 1958 मे प्रकाशित भेल 'आदिकथा'। नवतुरिआक प्रकाशन मैथिली उपन्यासक क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण घटना छल। महत्त्वपूर्ण घटना 'कन्यादान'क प्रकाशन सेहो छल। मुदा, मैथिली उपन्यासक जाहि प्रशस्त बाट दिश हरिमोहन झा इशारा क' देलनि, क्रमानुसार ओ बाट भोतिआय लागल। 'नवतुरिआ'क प्रकाशन सं उपन्यासक आयाम कें जे विस्तार देल गेल, तकरा एत' सं नव मोड़ मानल जायत। मैथिली उपन्यासक समृद्ध चेतनाक उदाहरण मानल जायत 'आदिकथा'। 'आदिकथा' मे राजकमल चौधरीक युगबोध, आत्मबोध, दृष्टिबोध आ यथार्थबोध सभ सम्मिलित भ' क' आयल अछि। युग-यथार्थक चित्रणे टा महत्त्वपूर्ण नहि होइत अछि, महत्त्वपूर्ण होइत अछि रचनाकारक आत्मबोध आ दृष्टि बोध सं अनुप्राणित युग-यथार्थक चित्रण, रचनाकारक सौंदर्यचेतना। हुनकर आत्मबोध उत्प्रेरणा सं जाग्रत होइत अछि आ ताहि पर युग-सत्यक भंडार सं अपूर्व आ गुप्त तथ्य कें जगजियार करबाक प्रवृत्ति निखरैत अछि। राजकमलक 'आदिकथा' समसामयिक, सामाजिक जीवनक व्यक्तिनिष्ठ विडंबना नहि थिक, ओहि कालक समाजनिष्ठ फोंकिल यथार्थ सं आवृत्त व्यक्ति-व्यक्तिक अंदरूनी त्रासदी थिक। एकर एक-एक

पात्र समाजक वर्ग विशेषक प्रतीक थिक। देह, मोन, परिवेश, संपदा, आदर्श आदि-आदिक अपन-अपन अस्मिता मे व्यक्ति कोना विवश होइत अछि, तकर भकरार चित्रण कए राजकमल एहि उपन्यास कें अपूर्व उत्कर्ष देलनि। पूर्वे चर्चा भेल अछि जे समकालीन सौंदर्यबोध व्यक्ति-व्यक्तिक दृष्टिकोण पर निर्भर करैत अछि। संवेदनशील सृजनधर्मीक लेल साहित्य लेखन ओकर विवशता होइत अछि। कोनो समयक व्यवस्थाजन्य विसंगति, विकृति ओहि समयक साहित्य लेल अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वक चीज होइत अछि। कारण ई नहि, जे ओहि समयक सुसंगति आ सुकृति रचनाकार कें दुःख दैत होइन, अपितु कारण ई, जे सामान्य जनता जाहि विडंबना सं निरपेक्ष रह' चाहैत अछि, जकरा भोगैत अछि, परंच ओहि पर सोचब आ ओकरा बूझब व्यर्थ बुझैत अछि, रचनाकार अरबैध क' ओ दृश्य पुनर्पुनः ओकरा आगू राखि, एहि परिस्थितिक निराकरण दिश उत्सुक होयबक प्रेरणा दैत छथि। साधारण व्यक्तिक सौंदर्यबोध आ एकटा रचनाकारक सौंदर्यबोध मे यैह तात्विक अंतर अछि। 'आदिकथा'क नायकक मातृकक संपदा सामान्य नागरिक लेल दृश्य बिंदु भ' सकैत अछि, नायकक माम आ सुशीलाक देहयष्ठि, हुनकर दृग चापल्य, भृकुटि विलास, अलक छटा आदि-आदि सौंदर्यक खान लागि सकैत अछि; मुदा एकटा दृष्टि संपन्न रचनाकार कें एहि सौंदर्यक प्रति ओहन आकर्षण, ओहन जुड़ाव नहि रहि सकैत छनि, जेहन एहि परिवेश मे जीबैत व्यक्तिक अंतस मे उठैत-खसैत द्वंद्वक प्रति, मानसिक ज्वारक प्रति, ओकर आंतरिक खौंझ आ छटपटी आ व्याकुलताक प्रति। सामाजिक आरोपित आदर्शक रक्षार्थ व्यक्ति कोना विवश रहैत अछि, समाज मे रहबाक लोभ मे व्यक्ति कोना अपन सर्वस्व स्वाहा क' दैत अछि, अपना कें बन्हक राखि दैत अछि, कोना अपन एक-एक सांस मे नाटक करैत अछि, समाज मे रहि क' जाहि सुखक संविधान रटि लैत अछि, तकर लक्षांशोक पूर्ति दुर्लभ होइत छैक, मुदा तैओ एहि समाज सं मुक्त होयबाक प्रयास नहि करैत अछि, एहि समाजक विकराल व्यथा सं मुक्त भ' क' जंगली जीवनक उन्मुक्तता दिस अग्रसर नहि होइत अछि। ई सभटा परिस्थिति रचनाकार कें बेसी आकर्षित करैत अछि। आकर्षित करैत अछि, एकर अवलोकन सं प्रसन्न होयबा लेल नहि, बल्कि व्यथित होयबा लेल आ एहि व्यथाक सहयोगी बनि क' दायित्वपालनक संतुष्टि प्राप्त करबा लेल। रचनाकार अपन सौंदर्य बोधक क्रम मे व्यक्तिक बाह्याडंबर, ओकर असार-पसार, ओकर वेश-भूषा सं बेसी महत्त्व ओकर अंतसूजगत सं संचालित ओकरा मुखाकृति पर निखरैत भाव कें दैत छथि। राजकमलक 'आदिकथा' मैथिली उपन्यासक यात्रा पथ पर एकटा विशिष्ट कृति थिक, जकर अवदानक चर्चा मे चुप भ' जायब बेसी अपेक्षित बात होयत।

'निर्दयी सासु' सं 'बिहाड़ि, पात पाथर' धरिक उपन्यास अपना समयक युगबोधक संग उपस्थित भेल अछि। अद्यावधि प्रकाशित सभ उपन्यासक चर्चा करबाक

सुयोग एकटा निबंध मे भेटब असंभव अछि, तें 'कन्यादान' सं पूर्वक उपन्यास लेखन कें अभ्यास काल मानि क' आगू बढ़ल जा सकैत अछि। सन् 1933 सं 1960 धरि, अर्थात् 'कन्यादान' सं 'बिहाड़ि पात पाथर' धरिक उपन्यास लेखन कें प्रयोगकाल कहल जायत। एहि अवधि मे हरिमोहन झा, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', शैलेन्द्र मोहन झाक दृष्टि-दिशाक सूक्ष्म अवलोकन यात्री, राजकमल, सोमदेव आ मायानन्द सं भिन्न बुझाइत छनि। पहिल वर्गक उपन्यासकार नायक कें प्रवासक जीवन देब आवश्यक बुझैत छथि, अपन कें उच्च शिक्षा सं अभिभूति करब आवश्यक बुझैत छथि। उपन्यासकारक ई प्रवृत्ति पुरुष शिक्षाक प्रति अपूर्वलगावक द्योतिका मानल जायत। मुदा ठामहि ईहो देखाइत अछि जे स्त्री शिक्षाक प्रति हरिमोहन झाक अलावे आन किनको तेहन आपकता नहि छनि। शिक्षा अनेक अंधकार सं मुक्ति दिआ सकैत अछि, तें शिक्षाक प्रति जागरूकता, मैथिली उपन्यासकारक उपलब्धि मानल जायत। मुदा नारी शिक्षाक प्रति उदासीनता हिनका लोकनिक प्रगतिशीलता कें कलंकित करतनि। दोसर वर्गक उपन्यासकार कें अपन कथ्य, अपन दृष्टिबोध सामान्य जनता धरि पहुंचयबा लेल कथाक बुनाबटि मे कोनो कॉलेज, कोनो विश्वविद्यालय, कोनो महानगर आदि सं उच्च शिक्षित युवक कें पकड़ि आनब आवश्यक नहि बुझयलनि। हिनका लोकनि कें ग्रामीण परिवेशक एहि विकृति कें ग्रामीणे स्तर पर सोझरायब उचित प्रतीत भेलनि। वस्तुतः हिनका लोकनिक ई तथ्य, सामाजिक जीवनक गाछक जड़ि मे लागल घून हटयबाक प्रकृति कहल जायत। यात्रीक 'नवतुरिआ' एहि बातक संकेत दैत अछि, जे आंदोलनक जुआ शिक्षिते व्यक्ति टा उठा सकत, से आवश्यक नहि। जखन कि 'बिहाड़ि, पात आ पाथर' तथा 'आदिकथा' सामाजक मर्यादाक जनघाती प्रवृत्तिक संकेत थिक। समाज मनुष्य कें किछु नहि द' सकैत अछि, दुःखक अतिरिक्त आन किछु नहि।

वर्ष 1960क पश्चात् मैथिली उपन्यासक उपवन खूब पल्लवित-पुष्पित भेल। ललित, सुधांशु शेखर चौधरी, रमानन्द रेणु, धीरेन्द्र, जीवकांत, मार्कण्डेय प्रवासी, गंगेश गुंजन, विभूति आनंद, प्रदीप बिहारी, नवीन चौधरी, उषाकिरण खान प्रभृति लोकनिक उपन्यास प्रकाश मे आएल। पहिलुको उपन्यासकार लोकनिक नव-नव उपन्यास सोझां आयल। उत्तरोत्तर उपन्यासक संख्या बढ़ैत गेल। उपर वर्णित-चर्चित प्रतिनिधि उपन्यासकारक अतिरिक्त आर बहुत रास उपन्यासकारक कृति मैथिली साहित्यक उपन्यास विधा कें पुष्ट कयलक अछि। सन् 1960 सं 1965 धरिक काल मैथिली उपन्यासक सर्वविधि प्रगति लेल विरल काल कहल जायत। कारण, एक त' एहि अंतराल मे उपन्यास आयल कम, दोसर जेहो आयल ताहि मे विकास आ प्रकृतिक संभावना कमे दृष्टिगोचर भेल। सोमदेवक दृष्टि, एहि समय मे देशक राजनीति आ अराजकता पर केंद्रित भ' चुकल छलनि। ब्रह्मपिचासक नामे धारावाहिक रूप मे प्रकाशिक हिनकर उपन्यास सन् 1964 मे 'होटल अनारकली'क नाम सं प्रकाशित

भेल। मैथिली मे ई प्रथम जासूसी उपन्यास कहल जायत। मुदा मैथिली मे ई परंपरा आगू चलि नहि सकल। परंपरा सूत्रक ई विच्छेद एहि बातक द्योतक थिक, जे एहू समय धरि मिथिलाक जनमानस अपन सतही समस्या सभ सं उबरि नहि सकल छल। एहि राजनीतिक षड्यंत्र सं बेसी चिंतनीय एहि वातावरण मे व्याप्त प्रत्यक्ष उत्पीड़न छल। फलतः रचनाकारक लेल सेहो, मूल आकर्षणक केंद्र ग्राम्य जीवने भेल। ओना, ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'क कोब्रागर्ल मे ई परंपरा सुपुष्ट होइत अछि आ विषयक विस्तार देशांतर धरि चल जाइछ। मणिपद्म, लोक साहित्यक उद्गाताक रूप मे मानल जायवला महान व्यक्तित्व छथि। लोकसंस्कृति, लोककथा, लोकगाथा हिनकर जीवनक अंग बनल प्रतीत होइत अछि। हिनकर अपन भाषा शैली छनि, अपन विश्लेषण पद्धति छनि, परिवेश सं संश्लिष्ट संस्कृतिक प्रति गहन जुड़ाव छनि, अपन परिवेशक शब्द भंडार छनि...ई समस्त तथ्य मिलि क' हिनकर औपन्यासिक उत्कर्ष कें असीम करैत अछि। 'विद्यापति' सन उपन्यास आ एहि विधा मे प्रवेश करैत 'राजा सलहेस' 'नैका बनिजारा', 'लोरिक विजय', 'लवहरि-कुशहरि', 'राइ-रणपाल' आदि-आदि लोककथात्मक उपन्यास सं ने केवल मैथिली उपन्यासक भंडार पुष्ट कयलनि अछि, अपितु मैथिलीक उपन्यास-लेखन कें एक टा नव आयाम देलनि अछि। मैथिलीक लोकसाहित्यक चर्चा मणिपद्मक चर्चा सं फराक भ' क' नहि भ' सकैए। तंत्र पर केंद्रित उपन्यास 'अर्द्धनारीश्वर' सेहो बेस चर्चित भेल मुदा 'कोब्रा गर्ल' (जासूसी उपन्यास) आ 'भारतीक बिलाड़ि' (प्रसिद्ध बाल उपन्यास)क प्रकाशन, मणिपद्मक अतिरिक्त प्रतिभाक परिचय दैत अछि। एहि दुनू कृतिक पाठ सं एकर कथ्यगत, विचारगत, भाषागत, चित्रगत, घटनागत विश्लेषण सं हिनकर लोककथात्मक स्वरूप कतहु सं बाधित नहि होइत अछि आ एकर वैशिष्ट्य, एकर सौंदर्य मणिपद्मक औपन्यासिक चेतनाक परिचय दैत अछि।

बीसम शताब्दीक सातम दशकक अर्द्धभाग बीतैत-बीतैत 'पृथ्वीपुत्र', 'भोरुकबा' तथा 'खोंता आ चिड़ै तीन टा महत्त्वपूर्ण उपन्यास प्रकाश मे आयल। स्वतंत्रता प्राप्तिक अठारह बर्खक पश्चात् एकाएक रचनाकारक ध्यान वर्ग-संघर्ष दिश गेलनि। पांच वर्ष पूर्व जे मायानन्द मिथिलाक वैवाहिक विसंगतिक सड़ल-गन्हायल तंतु सभ कें ताकि रहल छलाह, हुनकर नजरि समाजक वर्ग-संघर्ष दिश उन्मुख भेलनि। ललित आ धीरेन्द्र एहि चेतनाक संग उपन्यास लेखन मे प्रविष्ट भेलाह। एत' हिनका लोकनि कें समाजक निम्नवर्गीय जनजीवनक दैन्य असह्य भ' गेलनि। श्रमशील नागरिकक दुर्दशाक चित्रण हिनका लोकनिक सूक्ष्म दृष्टि कें चिन्हबा मे सहायक भेल अछि। यद्यपि तीनू उपन्यासक कथा परिवेश एक्के अछि, मुदा रचनाकारक वैयक्तिक चेतनाक कारणें तीनू उपन्यासक उद्देश्य भिन्न-भिन्न भ' जाइत अछि। तीनू उपन्यासक निम्न वर्गीय नायक जुझारू अछि आ अपन शोषक मंडलक विरोध करबाक प्रवृत्ति रखैत अछि। मुदा जतए 'खोंता आ चिड़ै'क विरोध समन्वय सं शांत होइत अछि, 'पृथ्वीपुत्र'

आ 'भोरुकबा'क विरोध विजय सं। ललित आ धीरेन्द्र कें अपन श्रमशील पात्रक साहस आ अस्तित्वबोध पर जतेक विश्वास छनि, मायानन्द कें ततेक नहि। ठामहि ललितक निम्नवर्गीय स्त्री पात्र दैहिक जाल मे जतेक ओझराइत छनि, मायानन्दक नहि। दांपत्य जीवनक प्रेमसूत्र कें मायानन्द जतेक मोलायम बनौलनि अछि, ततेक ललित नहि बना सकलथि। मायानन्दक नारी पात्रक हृदय मे उठल पत्नीत्वक लहरि, वासनाक समस्त विकार कें जरा दैत अछि, ललितक स्त्रीपात्र से नहि क' पबैत अछि। मायानन्द जत' खेत-पथार सं राजनीतिक भवन धरिक दृश्य कें ताल-मेल कराब' मे लागल रहैत छथि, धीरेन्द्र अपन नायक कें सहयोग दिया क' विजयी बनबै छथि आ ललित अपन पात्रक पारिवारिक सद्भाव तथा साहसक बल पर ओकरा सं समरशेष करा लैत छथि, स्खलित चरित्रक नायिका सेहो, हिनका नजरि मे अपन गुण विशेषक कारणें महत्त्वपूर्ण भ' जाइत अछि।

अगिला डेग मे मैथिली उपन्यासक फलक स्वतः विस्तृत भ' जाइत अछि। गाम सं शहर धरिक जीवन प्रक्रिया, देश सं विदेश धरिक संस्कृति, आत्म-स्थापनक शिखर धरि पहुंचबाक लेल उत्सुक युवावर्गक पीड़ा आ विवशता तथा एहि क्रम मे साक्षात्कार करैत अन्धखोहक कुत्सा, यौन विकृति, जीवन विकृति, संस्कार विकृति. ..आदि-आदि तत्व मैथिली उपन्यासक कथाभूमि बनल। स्वराज्य क्रांतिक भावभूमि पर केंद्रित भ' क' लिखल यात्रीक 'बलचनमा' आ प्रवासी मैथिल बंधुक षड्यंत्रकारी नीतिक बहन्नें, समाजक विविध बिंदु कें उजागर करैत राजकमलक 'आंदोलन' ई स्पष्ट करैत अछि, जे सातम दशकक उत्तरार्द्ध मे मैथिली उपन्यासकार संपूर्ण समाजक कोन-कोन कें ध्यान मे राखि सृजनशील होअ' लागल छलाह। स्वराजक पश्चात् सिद्धांत आ आदर्शक नाम पर देशक तथाकथित कर्णधारक विकृत मानसिकता 'बलचनमा'क पृष्ठ पर फरीछ भेल अछि। आत्मस्थापनाक समस्या सं अपस्यांत एक टा युवक कें कथा-नायकक रूप मे प्रस्तुत क' राजकमल मैथिल लोकनिक विकृत आ कुत्सित विचार कें चित्रित कयलनि अछि, जत' मैथिल बंधु भाषा-प्रेमक नाटक करैत अछि, मुदा मन मे आन बगल मे मे छूरी रखैत अछि। प्रसंगानुकूल मैथिल नारीक अस्तित्व आ देहसंबंधक विवशता आदिक सांगोपाग चित्रण भेल। अछि। मैथिली उपन्यास लेखनक ई दौड़ रचनाकार लोकनिक सौंदर्यबोध कें मोचारि क' राखि देलक। नारी जातिक भ्रू-विलास, नयन कटाक्ष, चिकुर विन्यास, नख-शिख शृंगार आदि-आदि सं विमुख भ' क' सौंदर्यबोधक सीमा-निर्धारण रचनाकार लोकनि सामाजिक विसंगति मे कयलनि तं पहिने मैथिलीक उपन्यासकारक नजरि समाजक वैवाहिक विसंगति पर केंद्रित भेलनि। एहि समयक उपन्यासकार लोकनि नारी जीवनक दैन्य, दहेजक अभाव मे ओकर दुर्दशा, ओकर दुर्गति आ सर्वोपरि समाज द्वारा नारी जाति कें वस्तु बुझबाक प्रवृत्ति आदि कें मूल बिंदु मानलनि। एत' सं क्रम आगू बढ़ल, तं फेर नारी देहक समर्पण अथवा क्रय अथवा पीड़न अथवा शोषण.

..सामाजिक विडंबना बनि गेल। हं, ई बात अवश्य, जे समकालीन समस्या मात्र नारी-देह आ नारी मोन पर केंद्रित नहि रहल। एहि कालक समाज विविध राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय आदि-आदि परिस्थिति सं परिचित आ प्रभावित भेल। फलस्वरूप समाजक संगति-विसंगति विविधमुखी भ' गेल। एहि विविधमुखी परिस्थितिक परिणाम थिक 'बलचनमा', 'आंदोलन', 'दूधफूल', 'दू-पत्र', 'कादो आ कोयला', 'ई बतहा संसार', 'पनिपत', 'दू कुहेसक बाट', 'अगिनबान', 'पीअर गुलाब छल', 'अभिशप्त', 'युगपुरुष', 'हमरा लग रहब', 'नवारंभ', 'पहिल लोक', 'मरीचिका', 'गाम सुनगैत', 'विसूवियस', 'बाट आ बटोही', 'हसीना मंजिल' आदि।

रमानन्द रेणुक 'दूध-फूल' आ धीरेन्द्रक 'कादो आ कोयला' निम्नवर्गीय जीवनक विराट समस्या सं भरल उपन्यास थिक। दुनू उपन्यासक नायक अपन पारिवारिक जीवनक पीड़ा सं आक्रांत भ' क' दिशाहारा पथिक जकां गाम सं शहर धरिक दूरी नापि पबैत अछि, सभ ठाम टौआ अबैत अछि; क्लिष्ट, उलझन युक्त, रहस्मय आ अबूझ जीवन एवं जीवन व्यवस्थाक भिन्न-भिन्न परिवेश-परिस्थिति कें भोगैत अछि, सभ परिस्थिति सं लड़ैत अछि, संघर्ष करैत अछि आ अंत मे थाकि जाइत अछि, एहि सभ परिस्थति सं लड़ैत-लड़ैत निराश भ' जाइत अछि। 'दूध-फूल'क नायक बबाजी बनि जाइत अछि, 'कादो आ कोइला'क नायक कें जीवन, समस्या सं भरल बुझाइत छैक। रेणुक नायक एक दिस जं आत्म-स्थापन अर्थोपार्जन आदिक समस्या सं लड़ि क' थाकि भ' जाइत छनि, संघर्षशील रहि क' निराश भ' जाइत छनि, तं दोसर दिश धीरेन्द्रक नायक नारी देहक प्रति पुरुष जातिक लोलुपता आ दानवताक अवलोकन सं निराश जाइत छनि। 'दूध-फूल'क नायक कें अपन संघर्ष मे सर्वदा आनंद भेटैत रहलैक अछि। एकर पात्र रामसरन, अपना जीवनक सभ अन्हर-बिहाड़ि कें बड्ड साहस आ औदार्य सं सहलक अछि। कोनो नारीक पीड़ा अथवा यौन-संबंध, धीरेन्द्रक विरनी जकां एकरा नहि सतबैत छैक। ई सभ टा घटना, रचनाकारक दृष्टिकोण कें सेहो ध्वनित करैत अछि।

जीवकांत आ प्रभासक उपन्यास-लेखनक अवधि क्रमशः 1967-1971 तथा 1970-1979 थिक आ उपन्यास विधा कें दुनू सं परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दुनू अवदान पूर्ण रूप सं भेटलैक अछि। हिनका लोकनि कें अपन उपन्यास कला कें पुष्ट करबाक यथेष्ट अवसर भेटलनि। एक टा व्यवस्थित औपन्यासिक परिवेश, उक्त विषय, तोड़ल रूढ़ि, स्वतंत्र देश, वैज्ञानिक आ राजनीतिक परिवर्त्तन, शिक्षोन्मुख समाज, विकृत व्यवस्था, सृजित समस्या, जीवनक तंगी, शोषण, बेरोजगारी आदि-आदिक अवदान सं जन-जीवन कें देखबाक-बुझबाक फरीछ दृष्टि भेटलनि, ई अवसर हिनका लोकनिक अनुभूति आ दृष्टिकोण कें प्रामाणिक बनौलकनि। आ, ई समस्त दृश्य हिनका लोकनिक उपन्यास मे उतरि आयल। गाम सं शहर धरिक जीवनक तीत-मीठ

कें चाटि क' देशक युवावर्ग जाहि तरहक सुरंग मे अपन संघर्ष-क्षमताक क्षय कयलनि अथवा अपन संघर्ष-शक्ति कें परिपक्व कयलनि, से साफ भ' क' हिनका लोकनिक उपन्यास मे आयल। नारी देह आ आत्म-स्थापनक समस्या हिनका लोकनिक उपन्यास मे उत्तरोत्तर मुखर होइत गेल। यात्रीक जे नवतुरिआ पूर्ववर्ती पीढ़ीक ढोंग, पाखंड आ रूढ़ि सं लड़िकए ओहि पर विजय प्राप्त केलक, से सुधांश शेखर चौधरी, जीवकांत, प्रभास, गंगेश गुंजन, विभूति, प्रदीप, नवीन चौधरी, उषाकिरण खान प्रभृतिक उपन्यास मे युगधर्म आ युगचक्रक जांत मे पिसाय लागल। समाजक शिक्षा पद्धतिक आंतरिक फोंक आ एकर सड़ल-गन्हायल आंत सं उठैत दुर्गंध हिनका लोकनिक कृति मे नीक जकां चित्रित भेल। गंगेश गुंजनक 'पहिल लोक' एक दिश शिक्षा अरजने नवतुरिआक व्यथा कहैत अछि, तं मार्कण्डेय प्रवासीक 'अभियान', शिक्षा-माफिया कविक दन्त कथा। विभूतिक 'गाम सुनगैत' शिक्षित नवयुवकक आन्दोलनी प्रवृत्तिक गुत्थी सोझराबैत अछि, तं प्रदीपक 'विसूवियस' आंदोलनक धधरा पर पूंजीक पानि फेंकबाक विवशता पबैत अछि। नवीन चौधरीक 'बाट आ बटोही' वैवाहिक विसंगति कें टिपैत अछि तं उषाकिरण खानक 'अनुत्तरित' आ 'दूर्वाक्षत' सर्वथा अक्षत, अछूत विषय कें स्वर दैत अछि। जेना कि र्चा भ' चुकल अछि, वैवाहिक समस्या पर प्रारंभे सं उपन्यास लिखाइत छल। मुदा नवम दशक मे आबि कए जखन अइ विषय पर ई पुस्तक आएल, तं सर्वथा नव गंध, स्वाद आ भंगिमा मैथिली उपन्यासक गुणवत्ताक प्रति आश्वस्त केलक। स्वतंत्र भारतक जाग्रत, मुदा निरीह भूखंड मे पैंतालीस वर्षक स्वाधीनताक अवदान सौंदर्य बोधक मानदंड कें कोन अर्थे विकृत कयलक अछि, तकर ब्लू-प्रिंट थिक ई सभ उपन्यास।

व्यासजीक 'दू-पत्र' नव शिल्पक प्रयोगात्मक उपन्यास थिक, जाहि मे दू संस्कृतिक रस्साकस्सी मे कात लागैत युवक आ भारतीय नारीक मान्यता स्पष्ट भेल अछि। रचनाकारक दृष्टि फलकक ई विस्तार मैथिली उपन्यास कें एक टा नव चेतना देलक अछि। 'मरीचिका' उपन्यास मे लिली रे वर्त्तमान संदर्भ सं बहुत पाछू जा क' सामंती व्यवस्थाक समालोचना कयलनि। 'पटाक्षेप' मे नक्सलवादी आंदोलन कें महत्त्व देनिहारि लिली रे, 'मरीचिका' मे सामंती संस्कारक गुणावगुणक विश्लेषण खूब मनोयोग सं कयलनि। विषयक स्तर पर अतीतगामी हिनकर दृष्टि शिल्प आ विश्लेषणक स्तर पर अग्रगामी कहल जयतनि।

मैथिली उपन्यास लेल नवम दशक बहुत खराब मानल जायत, दशम तं एकदम्मे। मैथिली उपन्यासक वेग एहि तरहें अवरुद्ध होयब दुखकर थिक। आठम दशकक पश्चात् उपन्यासकार लोकनि कें अपन दृष्टिकोण कें आर विस्तार देबाक अवसर भेटलनि, तकर सदुपयोग होयबाक चाही छल। पंडित जनार्दन झा 'जनसीदन' सं प्रदीप बिहारी आ नवीन चौधरीक उपन्यास लेखनक यात्रा क्रम मैथिली उपन्यास कें जतेक विषय-विस्तार, शिल्प-प्रयोग, बिंब-विधान, सौंदर्य-बोध आदि देलक, से

आगूक उपन्यास लेखन लेल प्रेरणाक स्रोत थिक। नारी जीवनक दैन्य सं चलल विषयक फलक विस्तृत होइत-होइत, आंदोलन आ क्रांति धरि पहुंचि गेल, परंच एखन धरि उपन्यास विधा, मैथिली मे अपन धाख नइं जमा सकल।

1993 मे गोविन्द झाक 'विद्यापतिक आत्मकथा' आ 1995 मे उषाकिरण खानक 'हसीना मंजिल' नंइ आएल रहितए तं वर्तमान शताब्दीक अंतिम दशकक इज्जति नइं बचितए। एतेक उपलब्धिक पश्चातो बीच-बीच मे एना गबदी मारब मैथिली उपन्यासक लेल अशुभ सूचना थिक। एही दशक मे गोविन्द झा लिखित 'विद्यापतिक आत्मकथा' ऐतिहासिक उपन्यास थिक। स्वयं विद्यापतिए कें पात्र बना कए हुनकहि सं हुनकर जीवनी कहाओल गेल अछि। 'हसीना मंजिल' उपन्यास कैक अर्थें महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली रचनाक नायक-नायिका सामान्यतया मुस्लिम संप्रदाय सं नइं अबैत अछि। ललित आकि राजकमल सन अपवादक गणना नइं हो ! भाषा सेहो पात्रक अनुकूल आ विषय तथा विषयक संग रचनाकारक व्यवहार ममत्वपूर्ण अछि। मानवीय संबंध आ मानव जीवनक त्रासदी एतए मार्मिक ढंगें उभरल अछि।

मैथिलीक समस्त उपन्यास आ उपन्यासकारक चर्चा करब, आब एक टा निबंध मे संभव नहि रहि गेल अछि, तैओ ई कहले टा जायत, जे मैथिली कविता आ कथाक तुलना मे उपन्यास बड़ पछुआयल अछि। एहि विधा मे आरो नव-नव प्रयोग कें पुष्टि देबाक प्रयोजन छैक।

आजुक मैथिली कविता

शताब्दीक चारिम दशकक पूर्वार्द्ध बीतैत-बीतैत हिन्दी साहित्य मे छायावादक टांग युगीन भावबोधक भार वहन मे लड़खड़ाए लागल छल। 1935 मे ई. एम. फार्स्टरक सभापतित्व मे पेरिस मे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशनक प्रथम अधिवेशन भेल। यूरोपीय देशक लेल ई काल ओहि स्थितिक थिक, जखन ओतुक्का समाज मे आ साहित्य मे एक प्रकारक स्थिरता आबि गेल छल। एही दमघोंटू वातावरण कें फरीछ करबा लेल ओतुक्का रचनाकार लोकनि प्रगतिक नारा देलनि। 1936 क लगाति भारतहु मे छायावादक विकास थम्हि गेल छल आ कवि लोकनि नूतन विचाराभिव्यक्तिक माध्यम ताक' लगलाह। महाकवि निराला बिना कोनो घोषणाक, कविता कें बहुजीवनक छवि मानि कए सामाजिक यथार्थ कें अपन रचना मे पहिनहि सं प्रश्रय देबए लागल छलाह। मुल्कराज आनन्द आ सज्जाद जहीरक प्रयास सं 1936 मे प्रेमचन्दक अध्यक्षता मे लखनऊ मे प्रगतिशील लेखक संघक पहिल अधिवेशन भेल। एही समयांतराल मे भुवनजी, मैथिली कविता मे नवीन भावनाक स्थापना क' कए प्रगतिशीलताक नारा बुलंद क' देलनि। 1936 मे हिनकर 'आषाढ़' कविता-संग्रह प्रकाशित भेल।

मैथिली साहित्यक नैसर्गिक सृजनधर्मी कवि लोकनि परतंत्र भारतक विभीषिकाक अंतिम क्षण कें भोगलनि। एम्हर भारत मे स्वतंत्रताक किरिण फूटल, ओम्हर जनता द्वारा स्वतंत्रताक फूजत बसात मे उन्मुक्त सांस लेबाक आकांक्षा पोसि लेब एकदम स्वाभाविक छल। से लोक पोसने छल। मैथिलीक कवि लोकनिक अद्वितीय प्रतिभा ततबा प्रखर छल जे समान्य जनजीवनक व्याकुलता, अकुलाहटि, निराशा आदि कें चिन्हबा-बुझबा मे कोनो कोताही नहि रहनि।

स्वाभाविक बात थिक, जे कोनो आंदोलनक नेतृत्व गनले-गूथल लोक सम्हारैत छथि। आ, आंदोलनक सफलताक पश्चात् आम जनजीवन ओहि वर्ग कें जनसेवक मानि अपन नेतृत्व हुनकहि लोकनिक हाथ मे सौंपि दैत अछि। से भारतो मे भेल। देश स्वतंत्र भेल। नागरिक अपन आकांक्षा पूर्तिक प्रति आश्वस्त भेल। मुदा राजनेता

वर्ग मे दानवताक प्रवेश, छल-छद्मक बीजारोपण, स्वार्थक प्रादुर्भाव सत्ताक संगहि भ' गेल। लोक निराश, उदास आ क्षुब्ध भ' गेल। मात्र ओकर मोहभंगे टा, होइतए, तं एक बात छल; अप्पन देश आ भाषाक लोक द्वारा सभ अनाचार होइत देखिकए ओ ग्लानिक महासमुद्र मे डूबए लागल। फलस्वरूप जोश-खरोशक बदला ओकरा कुण्ठा दाब' लागल। सत्ता वर्ग कें एकटा नीक बाट आओर सुझलनि। अही गर्म लोह पर चोट करब उचित बुझएलनि। अभाव आ बेकारीक सृजन आरंभ क' देलनि। काज कएनिहार कें काज नहि आ पदासीन कें क्रियाशीलता नहि। घूस, बैमानी, शोषण क्षिप्र गतिएं पराकाष्ठा दिश भाग' लागल। जन-जीवन आओर बेसी कमजोर होइत गेल। एहने विद्रूप व्यवस्था मे मैथिलीक नव कविताक विकास भेल।

मैथिली मे एखन जे कविता लिखल जा रहल अछि, तकर मूल 'स्वर' आ 'प्रवृत्ति' जाहि महत्वपूर्ण बात कें रेखांकित करैत अछि, से थिक जनहित विरोधी मान्यता आ व्यवस्थाक खंडन, जनशक्तिक प्रति आस्था आ विज्ञानक सुखद, शुभद अवदान सं समृद्ध भविष्यक आशा। आजुक मैथिली कवि (जे सत्ते कवि छथि) अपन परंपरा, अपन परिवेश आ देश-दुनियांक ताजा-तरीन विकास-परिवर्त्तन सं अवगत छथि। अन्हार घर मे सांप नइं मारै छथि अथवा आन्हर आंखिएं सूर्य देखबाक लालसा नइं करै छथि। तें, आजुक मैथिली कविताक मूल स्वर ओएह थिक, जे एखन देशक आन कोनो समृद्ध भाषाक स्वर अछि। आन्हर आंखिएं अथवा अन्हार मे लाठी चलएबाक लौल, जे लोकनि क' रहलाह अछि (मैथिली मे बहुत गोटए एहेन क' रहलाह अछि) से अनेरे लागल छथि। दोसर धंधा करताह तं बेसी टिकताह।

'मैथिली साहित्यक इतिहास' मे जाहि विद्वान लोकनिक मत काल विभाजन पर प्रकट भेलनि अछि, हुनकर तर्क मे ओतबो संगति नइं अछि जतबा एक टा गाय आ एक टा महींस कें दू भाइ मे बांट' काल गामक पंच सब रखै छथि। किनकहु जिम्मा मे आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक कालक प्रारंभ आ अंतक लेल कोनो तर्क नहि छनि। अइ मे सं कविता कें छांटि कए गप करबा काल विद्यापतिक पश्चात् पहिल मोड़ चन्दा झाक ओतए देखाइ पड़ै अछि। ओना भाषा आ विषय परिवर्त्तनक दृष्टिएं मनबोध सेहो अपना ढंगें नवीन साबित भेलाह। मुदा जन चेतना आ जन जीवनक चित्र विद्यापतिक पश्चात् चन्दा झाक साहित्य मे नव करौट फेरलक। भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क सृजन-संसार मे ई परिवर्त्तन नव दिशा पकड़लक। फेर यात्री, राजकमल आ तखन आगूक कविगण। मुदा समय-समय पर मैथिली काव्य यात्रा मे ओएह अकर्मण्यता आ परजीविता अबैत रहल अछि जे आम मैथिलक स्वभाव मे अछि। अर्थात् दू-पीढ़ी, चारि पीढ़ीक बाद खानदान मे केओ कमासुत जनमि गेल, अगिला किछु संतति ओही टोपें जीबि लैत अछि। किछु नव करबाक अथवा अपना बलें करबाक साहस नइं जुटबै छथि। दादा कें हाथी छल, दलान पर सिक्कड़ि टांगल अए। अइ मे सब सं लड़भड़ाएल स्थिति रहल चन्दा झा सं भुवनजी

होइत यात्री-राजकमल धरि। अइ चारि नामक अलावा कतोक नामी-उपनामी कवि अइ अंतराल मे मैथिली मे भेलाह। मुदा कीर्तन-भजन आ उचिती-डहकनक अलावा किनकहु ध्यान साहित्यिक गतिकता दिश नइं गेल। सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', तंत्रनाथ झा आ कांचीनाथ झा 'किरण' कें अइ अस्थाभर सं अलग कएल जएबाक चाही।

मोटा-मोटी जं गप शुरुह कएल जाए तं प्रगतिशील लेखक संघक पहिल अधिवेशन जे भारत मे भेल, तकर बाद विभिन्न साहित्यक लोक, काव्य धारा मे आंदोलन आ परिवर्त्तन सभक नाम देबए लगलाह; छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता, समकालीन कविता आदि-आदि नामक अनुवाद होअए लागल। मुदा असल गप ई थिक जे मैथिली मे ई सबटा बात गड्डमड्ड अछि। चन्दा झा सं भुवन होइत यात्री-राजकमल धरिक मैथिली कविताक परिवर्त्तन-प्रवृत्ति कोनो भाषाक रचनाकार कें चौंका सकैत अछि। जं आंखि रहितनि तं 'स्वरगंधाक' प्रकाशन पर नाक मुननिहार उपनामी कवि कें आबो गोंत-गोबर गीड़ि कए प्रायश्चित कर'क चाहिअनि। हुनका लोकनिक वश चलितनि तं मैथिली कें ओ एखनहुं कीर्तन भजनक, साहित्य बनौने रहितथि। जे-से...

असल मे चन्दा झाक साहित्य मे देश-दशा आ आम जनजीवनक जे छवि देखाइ पड़ैछ, भुवनक गीति आ कविता मे ओ खन छायावाद आ खन प्रगतिवादक उपरौंझ होअए लगैत अछि। यात्रीक 'चित्रा' सं एकटा समधानल डेग उठल आ राजकमलक 'स्वरगंधा' तं एकबाइगे, बहुत-बहुत पछुआएल मैथिली कविता कें 'चित्रा' सं जे आधुनिकता भेटल छलैक, तकरा अद्यतन क' देलकै। अर्थात् दहेज आ बियाह आ पूजा पाठ पर फकड़ा-डहकन सन चीज लिखबाक प्रवृत्तिक संभवना बनौनिहार कवि सब धानक भुस्सी जकां बेरा गेलाह।

स्वरगंधाक प्रकाशनक पश्चातो बहुत दिन धरि मैथिली कविता मे राजनीतिक समझ बहुत विरल रहल। मैथिली मे राजकमलक कविता मे तं नहिएं, यात्रियोक कविता मे राजनीतिक जागरूकता नहिएं जकां छल। परवर्तियो कालक किछुए कविक किछुए कविता मे राजनीतिक चेतना मुखर भेल। मायानन्द, गंगेश गुंजन, जीवकांत, महाप्रकाश आ महेन्द्रक ओतए राजनीतिबोधक किछु कविता भेटए लागल। आठम दशक मे जाहि सशक्त पीढ़ीक कवि अपन पहिचान बना सकलाह, हुनका सं ई शिकाइत नहि कएल जा सकैए। यात्री आ राजकमलक प्रयासें मैथिली कविता जतबा अद्यतन भ' सकल ताहि मे रेखांकित कर' जोगर ई योगदान थिक जे ई नवीनतम पीढ़ी मिथिलाक क्षेत्रीय आ पारिवारिक, सामाजिक समस्याक अतिरिक्त राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र आ वैज्ञानिक युगक आक्रमण तथा अवदान कें सेहो महत्व देलक। फलस्वरूप मैथिली कविता आइ वस्तु-बोध, भाव-बोध आ भाषा-बोध सभ तरहें अद्यतन अछि आ कोनो भाषा कें कदमताल द' सकैत अछि। अति प्रयोगशील हएबाक

खतरा एकाध रचनाकार कें अवश्य अछि। मैथिली कविताक तं ओ किछु नइं बिगाड़ि सकथिन, हुनकर अवश्य बिगड़ि जेतनि।

आइ मैथिली मे जे कविता लिखा रहल अछि, तकर हमरा बुझने कोनो नामकरण नइं हएबाक चाही। अही प्रक्रिया सं साहित्य मे जातिवाद, वर्गवाद, लिंगवाद आ समूहवाद आएल अछि। कविता, कविता होइत अछि आ सब समयक कविता अपना समयक समकालीन होइत अछि। साहित्य अपना समयक आम जनताक समकालीन होइत अछि, आम जनताक चित्तवृत्तिक वाहक होइत अछि। एकरा अपन युगबोध सं परिपूर्ण समकालीन कविता कहल जएबाक चाही। कोनो आन तरहक नामकरण नइं क' कए मैथिली कें भावी खतरा सं बचाओल जाएबाक चाही। ओहिना तं कैक खतरा ऊघि रहल छथि बेचारी।

विकासक क्रम दीर्घ भेला सं आकलन बड़ा जटिल भ' जाइत अछि। चिम्पैंजी सं विकसित मनुष्यक विकासक्रम पर के विश्वास करत ? मुदा सत्य तं थिक ! भाषाक विकास क्रम कोनो अर्थें अइ सं सहज नइं अछि। 'साहसी' शब्दक प्रयोग लूटि-मारि कएनिहार लेल होइत छल, से के विश्वास करत ? साढ़े छओ सय बर्खक परंपरा मे सं हम की ग्रहण कएलहुं आ कतेक कोन बिंदु कें विकसित कएलहुं; भात आकि दालि उधिअएला सं उछलैत झपना देखि कए रेल इंजिन बना सकलहुं...बड्ड कठिन अछि कहब। जे अछि आ जतए अछि, से ने तं शुद्ध रूप सं परंपरा थिक, ने शुद्ध रूप सं प्रयोग। सभटा प्रयोग, अपन पछिला प्रयोगक विकास होइत अछि। अर्थात् अपन पूर्ववर्तीक उपलब्धि मे योगदान दैत अछि। मेंडलीफ केर आवर्त्त तालिका ओहि रूप मे भ'ए जइतनि, बिना पूर्ववर्ती तालिकाक परिणाम देखने, से कहब कठिन अछि। कवितोक संबंध मे ई बात सत्य अछि। साहित्यक विकासक्रम, रिलेरेश थिक ! पूर्ववर्ती जतए धरि मशाल पहुंचा देलनि, अनुजवर्ती तकर आगू पहुंचौताह। बेसी प्रतिभा हेतनि तं किछु जल्दी आ किछु बेसी दूर धरि पहुंचा देताह।

युग यथार्थ आजुक रचनाकारक रक्त मे रचि-पचि गेल अछि। ई लोकनि मानवीय अंतः पीड़ा कें विषपायी सदृश पीलनि अछि। एहि अंतः पीड़ा सं उबिआएल मनुष्यक कछमछी, अपन समस्त दुर्दशा पर कनैत आ ओकरा अपन नियति बनबैत मनुष्यक पुसंत्त्वहीनता अथवा विवशता, व्यक्ति-व्यक्ति कें अलग करबाक षड्यंत्र, मानव-मूल्यक लोप आदि   संपूर्ण परिदृश्य, हिनका लोकनिक दृष्टि फलक सं गुजरल अछि। ई समस्त स्थिति समाज-सत्य आ युग-सापेक्ष अछि। एकरा अतिरंजित क' कए काल्पनिक बनएबाक बैमानी, ईमानदार आ समूहक प्रति निष्ठावान रचनाकार नहि क' सकलाह। इएह नहि क' सकबाक आदति हिनकर कवि कें आम पाठकक बीच पैघ बनबैत अछि आ रचना कें शाश्वत बनबैत अछि।

प्रवृत्तिगत विश्लेषण करैत आजुक कविता सं मानवक प्रभेद सभ जे बहराइत अछि, ताहि मे सं एकटा वर्ग ओ वर्ग थिक, जे सदति काल अपन स्वार्थ-साधनाक

निमित्त षड्यंत्र रचैत रहैत अछि। जनशक्तिक पराक्रमक आभास हुनका रहैत छनि। तें ओ व्यक्तिक आत्मिक सद्भाव कें खंडित करबाक लेल कखनहुं चूकए नहि चाहैत छथि।

आजुक कविता आ कवि, समाज, राजनीति आ विज्ञान   तीनू खंड सं परिचित अछि। कृषि, वाणिज्य आ प्रशासनक तंतु आ तंत्रिका सभ सं अवगत छथि। प्रतिभाक तर्कपूर्ण सदुपयोग लेल कवि आ समाजक विवेक काज करत। एकैसम शताब्दीक संहारक कल्पनाक जे पाखंड किछु धनपशु आ राजनीतिक सांढ़ सभ पसारलनि अछि, वैज्ञानिक उपादानक जाहि जोखिम आ उपलब्धिक संभावना अछि, राजनीतिक नृशंसता तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचारक जे ओर-छोर अछि, सामाजिक पशुताक जे कोनो स्वरूप अछि...आजुक कवि ओहि सभ संभावनाक प्रति सचेत, विवेकशील, सुबुद्ध आ तैनात छथि। आ, जें कि कवि, तैनात छथि, तें आजुक कविताक अछैत, अबैत शताब्दीक समाज आ समय, दुर्मुख आ दुर्वृत्ति सं बचल रहत, तकर विश्वास कएल जा सकैत अछि।

मैथिली कविते किऐ, मैथिलीक संपूर्ण साहित्यक सीमा थिक जे ओ ने पढ़ल जाइत अछि आ ने ओकर मूल्यांकन होइत अछि। संबंधवाद, स्कूलवाद, वर्गवाद, जातिवाद सं मैथिली साहित्य मुक्त होअए से प्रयास कएल जएबाक चाही।

मैथिलीक कविगण कें एखन धरि एतेक साहस नइं भेलैक अछि, जे कोनो पाठक अथवा समीक्षकक सत्यवचन सूनि लिअए। जं दूटा प्रतिनिधि कविक नाम पूछल जाए, आ कहि देल जाए   यात्री, राजकमल। तं मैथिलीक गुमनाम कवि छटंकी लाल नोन सातु बान्हि कए पटना स्टेशन पर ठाढ़ रहताह जे 'पटना उतरिते नवीन कें फांसी चढ़ा देबनि। हमर नाम छोड़ि कए राजकमलक नाम लेलनि अछि ! कविता बूझए अबै छनि ?'...

कहबाक लेल तं बहुत किछु रहैत छैक, स्वयं नवागंतुक रहैत, अपनहुं सं बेसी नवागंतुक लेल एकटा शालीन सलाह जे मैथिली रचनाकारक स्कूलबाजी सं बचथि। किऐक तं मैथिली साहित्यक सर्वनाश करबा लेल प्रणबद्ध जे स्कूल सेन्टरलाइज्ड छल, तकर ब्रांच आब कैक ठाम खुजि गेल छैक। तत्काल चमकबाक होइन तं ओइ स्कूल सभ मे दीक्षित होथि। मुदा जं मोन सं किछु करए चाहैत छथि, तं साहित्यिक षड्यंत्र सं बचथि। मैथिली मे एकर, अर्थात् एहि एड्स केर पर्याप्त संभावना छैक।

मैथिली नाटक : प्रयोग आ प्रवृत्ति

सर्वविदित बात अछि, जे साहित्यक आन कोनहुं विधा सं बेस रमनगर विधा नाटक थिक। दृश्यात्मक आ श्रव्यात्मक अपन दुनू क्षमताक कारणहिं एकर श्रेष्ठता स्वीकारल गेल अछि प्रायः। वस्तुतः अपन अही विशेषताक कारणें ई प्रेक्षकक लेल अत्यधिक हृदयग्राही प्रभावोत्पादक आ संप्रेषणीय बनि जाइत अछि ! प्रायः तें, आचार्य लोकनि एकर रम्यता कें स्वीकारैत कहने छथि 'काव्येषु नाटकं रम्यम्'। किंतु, नाटकक जे तीनटा अनिवार्य अंग अछि वस्तु, नेता, रस ताहि मे वस्तु, एहेन आधारभूत तथ्य थिक, जे नाटकक मेरुदंड मानल गेल अछि। चूंकि एतए बहुत व्याख्या करबाक सावकाश नहि अछि, तें मोटा-मोटी ई मानि कए चलबाक थिक, जे नाटकक कथावस्तुए, वस्तु थिक। आधुनिक मैथिली नाटक मे कथा-तत्त्वक मादे किछु प्रवृत्ति मूलक विश्लेषणात्मक गप्प करबा सं पूर्व संक्षेप मे कथावस्तुक सैद्धांतिक परिभाषा कें एक नजरि देखि लेब अनुपयुक्त नहि हैत।

कथावस्तुक उपयोग नाटककार लोकनि प्रारंभ सं जेना करैत अएलाह अछि, तकरा आचार्य लोकनि व्युत्पत्तिक हिसाबें तीन कोटि मे बंटने छथि प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्रित। अहिना व्यवहारक दृष्टिकोणें सेहो सूच्य, श्रव्य आ दृश्य तीन कोटि मे बंटने छथि। पुनः एकर भेदोपभेद अछि, मुदा, से हमर अभीष्ट नहि।

मैथिली मे मौलिक रूपें नाटक-लेखन, वर्त्तमान शताब्दीक संगहिं प्रारंभ भेल। 1904 ई. मे जीवन झाक 'सुंदर-संयोग' प्रकाश मे आएल। तहिआ सं दहाइक दहाइ नाटक अबैत गेल, मुदा, एक तं समालोचकक बीच चर्चा मे गनल-गूथल नाटक रहल आ दोसर, जे जनसामान्यक बीच ओकर संख्या आओरो कमि गेल। हमरा बुझने एकर मौलिक कारण दू टा भेल नाट्य वस्तु आ नाट्यवस्तुक उपस्थापन शैली। वस्तुतः कथावस्तुक जाहि दू तरहें भेदोपभेद उपर देखाओल गेल अछि, से आब समीक्षाक आधार नहि बनि सकैत अछि। प्रारंभ मे कोनो प्रख्यात कथा पर, ऐतिहासिक अथवा पौराणिक आख्यान पर अथवा मनोरंजकता उत्पन्न करबा लेल कोनो मनगढ़ंत कथा

पर अथवा दुनू कें मिलाकए नाटकक कथावस्तु तैयार कएल जाइत छल। ओही मे किछु एहेन शुष्क अथवा अश्लील अंश जं रहैत छल, तं तकरा विषकंभक, प्रवेशक, चूलिका आदि द्वारा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपें सूचित क' देल जाइत छल। मुदा, आब युगक मांग से नहि अछि।

आब प्रेक्षकक जीवन जतबा व्यस्त आ वैविध्यपूर्ण भ' गेल अछि, विडंबनाक तेहेन-तेहेन उत्कर्ष ओ भोगि चुकल अछि, यातना आ समस्याक संकीर्ण सुरंग सं ततेक बेर आबा-जाही क' चुकल अछि, जे लोकरुचि मे विशाल परिवर्त्तन आबि गेल अछि, अपरिमित परिवर्त्तन। आब नाटक मे लोक अनकर कथा नहि, अपन कथा देखए चाहैत अछि, अपन जीवन-प्रक्रिया तकैत अछि, नाटकक मंचन मे अपना कें तकैत अछि, वस्तुतः ओतबा काल ओ नाटक देखैत नहि छथि, नाटक भोगैत छथि। एहि परिप्रेक्ष्य मे नाटकक कथावस्तु मे नवताक अपेक्षा छलैक, जकरा कम गोटए चिन्हलनि। फलस्वरूप नाटककारक रूप मे विपुल लोकप्रियता कम गोटए कें भेटलनि। जीवन झा आकि लालदासक नाटकक उपेक्षा, तें कएल जा रहल अछि, से नहि। से तं ई कहल जेबाक चाही, जे ई लोकनि ओहि समय मे नाटक विधा मे जे प्रयोग कएलनि, से इएह क' सकैत छलाह, मैथिली नाटक कें ई प्रारंभ आओर केओ कहां देलनि ?

वस्तुतः वर्त्तमान शताब्दीक प्रवेश एकटा झंझावातक संग भेल। मानव जीवनक बाह्यांतर बहुत क्षिप्र गतिएं परिवर्तित होअए लागल। लोकरुचिक रेस ततेक तेज गति सं भेल, जे बहुत कम समय मे लोक पूजा-पाठ, शास्त्र-पुराण, विश्वास, रूढ़ि आदि सं मुक्ति ल' कए जन-जीवनक दैन्य, ओकर यातनाक पृष्ठाधारक अन्वेषण आदि पर आबि गेल। एहि स्थिति मे किछु रचनाकार अपन कतोक विवशताक कारणें अपन पुरान सीमा सं नहि बहरएलाह। उपर कथावस्तुक जाहि तीन कोटिक (प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्रित) चर्चा भेल अछि, से आजुक कथावस्तुक विभाजनक प्रक्रिया नहि भ' सकैत अछि। आजुक नाटकक कथावस्तु कें जीवनमूलक दृष्टिकोण सं विभाजित कएल जा सकैत अछि। मुदा, से विभाजन कथी लेल ?

मैथिली मे नीक जकां आधुनिक नाटक लिखबाक पुरजोर उत्साह कने मने 1960क पश्चाते देखल जाइत अछि। एहि सं पूर्व मैथिली नाटकक कथातत्त्व वेद, पुराण, रामायण, महाभारत इतिहास आदि सं उठाओल जाइत छल आ स्थापित लीक पर मैथिलीयहु मे नाटक लिखा जाइत छल। ओना एहि काल मे तीन गोट नाटककारक नाम श्रद्धापूर्वक लेल जेबाक चाहिअनि, जिनका ओही काल मे, मानव-जीवन मे नाट्य वस्तु भेटि गेलनि। ई लोकनि छथि मुंशी रघुनन्दन दास (मिथिला नाटक), ईशनाथ झा (चीनीक लड्डू) आ गोविन्द झा (बसात)। मूलतः ई कहल जाए, जे ई तीनू नाटककार जाहि तरहें कथ्य आ शिल्प दुनू स्तर पर मैथिली नाटक मे नवीनता भरलनि, तकरे आगू विस्तार भेल। एहि तीनू नाटकक कथा तत्त्व समकालीन समाजक

स्थिति-परिस्थितिक तानी-भरनी सं बुनल गेल। सामाजिक जागरण, ईर्ष्या आ द्वेषवश मानव-हत्याक षड्यंत्र आ वैवाहिक असंतुष्टिक प्रकरण सं उठल समस्या आदिक चित्रण रमणीय ढंग सं एहि नाटक सभ मे आबि सकल अछि। हिनका लोकनिक अद्वितीय अवदान ईहो मानल जाएत, जे कथा-तत्त्व कें ई लोकनि ततबा मंजलनि, जे सहज रूपें मंचित हएबाक शैली मे लिखएबा सं एकर प्राणतत्त्व अक्षुण्णे रहल।

ओना, 1960क पश्चात् सेहो मिथिला विभूति आदिक जीवनक खंड-विशेष पर आधारित कथा तत्त्व बुनल गेल। मुदा एहि काल मे बरोबरि चर्चाक क्रम मे जे नाटककार लोकनि रहल छथि, से छथि सुधांशु शेखर चौधरी, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', गोविन्द झा, नचिकेता, गंगेश गुंजन, महेन्द्र मलंगिया, विभूति आनन्द, अरविन्द अक्कू, लल्लन प्रसाद ठाकुर प्रभृति।

मणिपद्मक तीन गोट नाटक 'कंठहार', 'झुमकी' आ 'तेसर कनियां' आदि चर्चाक क्रम मे अबैत अछि। तीनू नाटकक लेखन आ प्रकाशन काल भिन्न-भिन्न अछि। 'कंठहार', विद्यापतिक कथा पर आधारित नाटक थिक। अन्य दुनू नाटकक कथातत्व नाटककार समाज सं उठौने छथि। मणिपद्मक देन, मैथिली साहित्यक लेल शाश्वत रूपें अनुपमेय रहत। मुदा नाट्यशिल्पक स्तर पर मणिपद्म एहि नाटक सभ मे असफलतम नाटककारक रूप मे परिलक्षित होइत छथि। हं, हिनकर रचनाक संख्या बढ़ेबा काल एहि नाटक सभ कें गनि लेब उचिते हएत। 'तेसर कनियां' दहेज सन घसल-पीटल विषय पर लिखल गेल नाटक थिक, जकर कथा-तत्त्व कें बुनबा मे मणिपद्म असाधारण त्रुटि सभ कएने छथि। 'झुमकी'क कथातत्त्व सेहो ताहि दोष सं बचल नहि अछि।

वस्तुतः 'कथा-तत्त्व' नाटकक रीढ़ थिक से बात असगरे कथा-तत्त्व सं निष्पादित नहि भ' जाइत अछि। नाटक कें जा धरि नाट्य-शिल्प, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, घटना संकलन, रस-परिपाक आदि तत्त्वक पूर्ण सहयोग नहि भेटतैक, कथा-तत्त्व उत्कर्ष नहि पाबि सकत। आ तखन, जखन कि नाटकक रीढ़े कमजोर रहत, नाटक सोझ भ' कए कोना बैसत ? ओकरा कूबर बहरएबे करतैक। मणिपद्मक नाटकक एक तं कथा-तत्त्वे जर्जर छनि, ताहि पर ओकर समस्त सहयोगी तत्त्व अपना-अपना दिशा मे जाइत छनि। तें हिनकर नाटक मे सगरे कूबर बहराएल छनि। हरदम बुझाइत रहैत अछि, जेना नाटक मे ई अंश नाटकीयता आन' लेल देल गेल अछि।

सुधांशु शेखर चौधरीक 'भफाइत चाहक जिनगी', 'लेटाइत आंचर' आ 'पहिल सांझ' तीनू नाटक सातम दशकक बादे प्रकाश मे आएल। मैथिलीक आधुनिक नाटककारक रूप मे ओइ काल धरिक पूर्ण सफल नाटककार शेखर अद्वितीय नाट्य-कौशल क मालिक छथि। हिनकर नाटकक प्रेक्षण, अनुशीलन, मैथिली नाट्य लेखनक लेल चुनौती नहि, प्रेरणादायक स्रोत बनि सकैत अछि, जतए एक-एक

टा नाट्य तत्त्व अपन मौलिकताक संग उपस्थित अछि। तीनू नाटकक कथातत्त्व सामाजिक परिवेश मे बुनल गेल अछि। बेरोजगारी, दहेजक कुप्रभाव आ पीढ़ीक अंतराल पर मैथिलीयहु मे आ आनहु साहित्य मे कतोक रचना भेल अछि।

मुदा एहि विषय कें देखबाक दृष्टिकोण रचनाकार केहेन रखैत छथि, ई बहुत महत्त्वपूर्ण बात होइत अछि। दृष्टिकोणक इएह मौलिकता, इएह नूतनता पुरानो विषय सं विलक्षण कथ्य निकालि अनैत अछि। शेखर, एहि तीनू विषय सं विशिष्ट कथ्यक नेनु बहार कएने छथि। आ ओहि कथ्य कें सर्वांश रूपें प्रेक्षक धरि पहुंचा देबाक लेल जेहेन विलक्षण कथा गढ़ने छथि, तें हिनकर असाधारण प्रतिभा, कथ्य आ शिल्पक मौलिकताक परिचायक थिक। छोट-छोट वाक्य विन्यासक संग लघुसंवाद, सहज शब्दावलीक प्रयोग, सहज उपकथा एवं घटना संकलन, पात्रक सहज अभिक्रिया एवं सहज चारित्रिक विकास आदिक मदति सं नाटककार एहि नाटक सभक कथा-तत्त्व कें स्वस्थ आ सामर्थ्यवान बनौने छथि। कथाक कथ्य युगानुकूल ढंगें उठाओल गेल अछि। सृजित बेकारीक समस्या मे सरिसो जकां पिसाइत युवा पीढ़ीक संपूर्ण मनोदशा कें प्रतीकात्मकताक संग द्योतित करब, दहेज-लोलुप व्यक्तिक प्रतिक्रियावादी अभिक्रिया सं उद्भूत दारुण समस्या आ दू पीढ़ीक मानसिक स्तर मे होइत युद्ध, शालीनताक आवरण त'र व्यथित होइत व्यक्तिक मनोदशाक चित्रण आदि-आदि, शेखरक नाटकक कथातत्त्व कें उत्कर्ष दैत अछि। कथा-तत्त्वक सौष्ठव मे शिल्पक केहेन महत्त्व होइत अछि, तकरे उत्तर थिक शेखरक नाटक। हिनकर नाटकक कथा-तत्त्व बरख, दू बरखक जीवन सं छानि कए नहि आनल गेल अछि। वस्तुतः जतबा काल प्रेक्षक हिनकर नाटक कें भोगए, ततबहि कालक घटना पूर्ण कौशल सं हिनका नाटक मे चित्रित रहैत अछि से हिनकर नाट्य शिल्प आ कथा विन्यासक अतिरिक्त गुण थिक। गोविन्द झाक वक्तव्य, 'मैथिली मे आधुनिक नाटकक जन्म...प्राचीन नाटक सभक गर्भ सं नहि, बल्कि ओकर समाधि पर भेल अछि' हिनकहि नाटकक लेल सर्वांश मे सत्य होइत अछि। शेखर, आधुनिक मैथिली नाटकक कथा-तत्त्व कें सर्वथा नवीन दिशा देने छथि आ एकरा सभ अर्थें मंचोपयोगी बनाएबाक बाट प्रशस्त कएने छथि। ई दुर्भाग्य थिक, जे पछाति काल मे खूब नाटक लिखाएल, मुदा अधिकांश नाटककार शेखरक बैरियर धरि पहुंचि नहि सकल छथि।

'बसात' नाटक लिखि कए मैथिली नाटकक क्षेत्र मे आधुनिकताक पृष्ठभूमि तैयार करबा मे वरेण्य स्थान प्राप्त कएनिहार गोविन्द झाक 'अंतिम प्रणाम' क अतरिक्त आओरो नाटक छनि। मुदा, कथातत्त्वक दृष्टिएं एतए 'अंतिम प्रणाम' विशेष रूपें उल्लेख्य थिक। नाटकक कथा ग्रामीण परिवेशक स्वार्थपरक षड्यंत्र, एकटा निरक्षर आ बोनिहार व्यक्तिकें गामक प्रति आकर्षण आ फेर वस्तुस्थिति सं अवगत भेलाक बाद विकर्षणक आधार पर गढ़ल गेल अछि। एहि छोट सन कथा कें नाटकक रूप मे सजएबाक लेल दहेज समस्या, अल्प-वेतन भोगी व्यक्तिक समस्या, प्रेम-प्रसंग

आदि कें आनुषंगिक कथाक रूप मे आनल गेल अछि। लघुसंवाद, सहज शब्द आदिक कारणें एहि नाटकक प्रशंसा कएल जा सकैत अछि। मुदा एकटा नीक नाटकक कथा-संरचनाक लेल जाहि तरहें सहज आ विश्वसनीय उपकथाक संयोग हएबाक चाही, जाहि तरहें पात्रक अवतरण हएबाक चाही, तकर अभाव एहि नाटक मे अछि। फलस्वरूप, एकटा नीक कथा-शिल्पीक कथा-तत्त्व दुर्बल भ' गेल छनि। असहज ढंगें पात्रक अवतरण आ अविश्वसनीय घटना क्रमक कारणें एकटा दिव्य-सन कथ्य अपन अभीष्ट धरि जएबा मे उचित उत्कर्ष नहि पाबि सकल अछि।

'एक छल राजा' नचिकेताक बेस प्रशंसित नाटक मे परिगणित होइत अछि। हिनकर एहि नाटकक कथा तत्त्वक दिशा आन कोनहुं नाटककारक लेल सर्वथा स्पर्शहीन रहल अछि। वैज्ञानिकताक प्रवेश सं उद्योगीकरण बढ़ल आ ओम्हर सरकारी हस्तक्षेप सं जमींदारी-प्रथाक अंत भेल। मुदा तें शोषण-प्रतारणक अंत भ' गेल, से किन्नहुं सत्य नहि। वस्तुतः ओहि सामंती प्रथाक हस्तांतरण भ' गेल अछि। ई समस्या सेहो हमरा समाजक पैघ समस्या थिक। समस्या मात्र गाम घर मे नहि शहरी परिवेश मे सेहो अछि। नचिकेता एहि कथ्य कें अत्यंत गंभीरता सं पकड़लनि आ सर्वथा नव तरहक कथा-तत्त्व नव शिल्पक संगें मैथिली नाटक कें देलनि। मुदा, ओ से क्रम बनौने नहि राखि सकलाह।

गंगेश गुंजन, मैथिली नाटकक क्षेत्र मे एकटा अद्भुत प्रयोगकर्त्ताक रूप मे परिगणित छथि। नुक्कड़-नाटकक प्रयोग मैथिली मे पूर्ण सफलताक संग हिनकहि सं पहिल बेर संभव भेल, से कहबा मे कोनो व्यवधान नहि हएबाक चाही। नुक्कड़ नाटक, हिन्दी मे खूब लिखल आ खेलल जाइत अछि। मैथिली मे एकर सर्वथा अकाल छल, जकर प्रयोग क' कए गुंजन, मैथिली नाटक-लेखनक नव दिशा प्रशस्त कएलनि। सामान्यतया नुक्कड़ नाटक विविध सामाजिक समस्या कें एक संग उठबैक प्रयास करैत अछि। हिनकर नाटक 'बुधिबधिया' ताहि दृष्टिकोणें सफल नाटक अछि। नाटकक कथा, सामाजिक परिवेश मे राजनीतिक विडंबनाक आविष्कार सं उठाओल गेल अछि। नाटकक कथावस्तु समाजक विविध विघटन, संबंध विकृति आदि कें दर्शएबाक निमित्ते टा नहि अपितु देशक राजनीतिक स्तर, राजनीतिज्ञक आत्मकेंद्रित दृष्टिकोण, ओकर छद्म, जनताक प्रति ओकर निरपेक्षता, क्षीण स्वार्थक लोलुपता मे सामान्य नागरिकक चमचइ प्रवृत्ति, देशक अर्थनीति, अंतर्राष्ट्रीय नीति, विश्व स्तरक वैज्ञानिकताक दुर्वृत्ति आदि कें एकत्रित क' कए पात्र-सभक संवाद गढ़ने छथि। विपुल घटनाक्रमक समूह मे केओ छोटो सन गप कहि सकबा मे असमर्थ भ' जाइत अछि। जखन कि गुंजन, छोट-सन घटना-क्रम मे विश्व-देश-राज्य-गाम-व्यक्ति सभक बात खुशफैल सं क' नेने छथि। कथा-तत्त्वक अभाव रहितहुं, राजनीतिक चिंतनपरक संभाषण रहितहुं, नाटक कतहु बोझिल नहि भेल अछि, से गुंजनक अनुभूतिक परिपक्वता आ शिल्पक मौलिकताक द्योतक थिक। जे कथा नहि थिक,

तकरा कथा बना देब लूरिक उत्कर्ष थिक।

महेन्द्र मलंगियाक नाट्य-लेखनक अनुशीलन करैत, जं ई कहल जाए, जे शेखर जाहि तरहक नाट्य नूतनता मैथिली मे अनलनि तकरा एक दिशा मे सफलतम ढंगें ल' जाए वला केओ एकटा नाटककार मैथिली मे छथि, तं से थिकाह महेन्द्र मलंगिया, तं कोनो अतिशयोक्ति नहि हैत। 'लक्ष्मण रेखा खंडित', 'एक कमल नोर मे', 'जुआएल कनकनी', 'ओकरा आंगनक बारहमासा' आदि हिनकर प्रसिद्ध नाटक सभ थिकनि। अपन नाटकक कथा-तत्त्व ई प्रायः निम्नवर्गीय समुदायक दैनिक जीवन मे बीछैत छथि। जतए शेखरक कथाक परिवेश सामान्यतया मध्यमवर्गीय समुदायक पारिवारिक आ आर्थिक समस्या होइत छलनि, ओतए महेन्द्र मलंगिया निम्नवर्गक चूल्हा-चिनबार सं परिचित भेलाह। ओकर समस्त सुख-दुख कें अपन कथा मे स्थान देलनि। पात्रक चारित्रिक विश्लेषण, मनोविश्लेषण, लघुतर संवाद, सरल भाषा, सहज शब्दावली, छोट-छीन वाक्य, कथोपकथनक अंतरंगता आदि सं कथा-तत्त्वक सौष्ठव कें ई बल देने छथि। नाटक सभक कथा संरचना, एतेक विश्वसनीय घटना-क्रम आ उपकथा सभक द्वारा भेल अछि, जे ओ नाटकक लेल सहजहिं उत्कृष्टक बात भ' जाइत अछि आ ओकर संप्रेषणीयता मे निखार अनैत अछि। हं, ई कहल जएबाक चाही जे महेन्द्र मलंगिया अपन नाट्य-लेखनक दिशा मात्र एकमुखी रखलनि। निम्नवर्गक लोक पर तथाकथित उच्चवर्गीय लोकक अत्याचारक कथाक संरचना विविध आयाम ल' कए महेन्द्र करैत छथि आ तें नाटक मे ओही वर्गक जीवनक आओरो पक्ष सभ उभरि अबैत अछि। सामाजिक विषमता, निम्नवर्गक यातना, अत्याचार, भ्रष्टाचार, कुरीति आदि समस्त विडंबनाक लेल महेन्द्रक कथा, उच्च वर्ग (तथाकथित) कें दोषी मानैत अछि आ निम्न वर्ग सर्वथा निर्दोष रहैत अछि। जे हिनकर कथा-तत्त्वक लोकप्रियता भनहि बढ़ा दइन, मुदा न्यायप्रियता नहि कहल जेतनि।

परवर्ती पीढ़ी मे नाटककारक जे एकटा समूह बनल, तकर मूल श्रेय विविध क्षेत्रक रंगशाला कें देल जाएत। एहि काल मे आबि कए नाटकक लेखन-प्रकाशन आ मंचन यथेष्ट रूपें होअए लागल अछि। विभिन्न श्रेष्ठ कथाकारक, उपन्यासकारक कथा एवं उपन्यासक नाट्य रूपांतरण होअए लागल। कतोक रूपांतरण मे कथाक प्राण तत्त्व रहि सकल, कतोक मे परिवर्तित भ'गेल, कतोक मे स्खलित भ' गेल। एहेन कमे रूपांतरण भ' पाओल, जाहि मे कथाकार आ रूपांतरकार दुनू अपन-अपन मौलिकताक संग होथि। एम्हर आबिकए रूपांतरण अथवा मौलिक नाटक लेखन मे संलग्न नाटककार मे प्रमुख छथि विभूति आनन्द, अरविन्द अक्कू, लल्लन प्रसाद ठाकुर प्रभृत्ति। विभूति आनन्दक नाटक 'समय संकेत' शिक्षित युवकक बेरोजगार जीवन पर आधारित नाटक थिक, जकर कथा ओहि युवकक संपूर्ण परिवारक परिवेश मे गढ़ल गेल अछि। विभूति अपन नाटकक कथात्मकता कें संपूर्ण मनोयोग सं

विस्तार देने छथि। बेरोजगार जीवन कें भोगैत संघर्षरत ओहि युवकक धैर्य आ ओकर नियति तथा संपूर्ण परिवारक अपेक्षाक मौलिक ढांचा पर कथा-तत्त्व कें उत्कर्ष देबा लेल प्रासांगिक रूपें अन्य पारिवारिक संदर्भक चित्र सेहो सहज आ विश्वसनीय ढंग सं जोड़ि सकलाह अछि। बेरोजगारीक समस्या पर अरविंद अक्कूक नाटक 'एना कते दिन' सेहो अछि। एकरो कथा एकटा बेरोजगार युवकक समस्या सं जनमैत अछि। मुदा छोट सन नाटक मे ततेक रास उपकथा अक्कू भरि देने छथि, जे मूल प्रभाव मंद भ' जाइत अछि आ आने प्रबल।

बेरोजगारीक समस्या पर लिखल 'भफाइत चाहक जिनगी', 'समय संकेत' आ 'एना कते दिन' तीन टा नाट्य शिल्प आ कथात्मक मौलिकताक कारणें तीन दिशा दिश ल' जाइत अछि। शेखरक बेरोजगार आत्मरत भ' कए संघर्ष करैत छनि, विभूति क बेरोजगार अपन तात्कालिक उद्देश्य कें छोड़ि व्यवस्था परिवर्त्तनक कामना रखैत अछि, जखन कि अक्कूक बेरोजगार खौंझाह भ' कए भगवतीक फोटो फोड़ए लगैत छनि। नाटक मे पात्रक ई अभिक्रिया, ई मनोदशा नाटककारक वैयक्तिक चिंतनशीलताक द्योतक होइत अछि। अक्कू एकटा निविष्ट स्वतंत्रता सेनानीक ईमानदारी आ पवित्रताक चर्चा करैत जाहि उपकथा सभक समावेश कएने छथि, ताहि मे अविश्वसनीयताक पुट ताकल जा सकैत अछि। ओना कथातत्त्वक आन-आन सहयोगी घटकक संयोजन मे ओ औसत रूपें सफल भेलाह अछि। 'अन्हार जंगल' ग्रामीण पाखंड, रूढ़िग्रस्तता, दानवीयता, दुष्टता, बैमानी, षड्यंत्र, लोभ आदिक आश्रय सं लिखल गेल नाटक अछि। जखन कि 'आगि धधकि रहल छै', एकटा पागलखानाक दृश्य मे उपस्थित बताह सभक पृष्ठभूमि पर चोट करैत अछि। नाटकक लोकप्रियता आ नाटकक विश्वसनीयता हमरा बुझने दुनू दू स्तरक बात थिक। कोनो नाटकक कथातत्त्व समाजक सभ दिशा सं ई अनैत छथि, मुदा तकर प्रस्तुतीकरण मे जखन अविश्वसनीयता ल' अबैत छथि, तं मोन खिन्न हैब स्वाभाविक। वस्तुतः नाटक कें विविध आयाम इएह टा मैथिली से द' सकलाह अछि। मुदा कथा मे अविश्वसनीयता सं बचबाक अपेक्षा हिनका सं कएल जाइत अछि। 'पातक मनुक्ख'क रूपांतरण मे सेहो ई ओही त्रुटिक लेल दोषी छथि।

लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'लौंगिया मिरचाइ' आ 'बकलेल' दू टा महत्त्वपूर्ण सामाजिक विडंबना कें केंद्र मे राखि कए लिखल गेल अछि। समृद्ध परिवारक बेटीक विवाह जखन कोनो ईमानदार, कर्मनिष्ठ आ शिष्ट परिवार मे भ' जाइत अछि, तखनुक दुतरफा समस्या पर 'लौंगिया मिरचाइ' आ उच्च शिक्षा प्राप्त पुत्रक द्वारा बाप-भाइक बहिष्कार आदिक घटना सं संबद्ध 'बकलेल' नाटक प्रशंसित भ' सकैत अछि, लोकप्रिय भ' सकैत अछि, मुदा विश्वसनीय नहि। एकर उपकथा सभ मे अविश्वसनीयता भरि कए एहि नाटकक प्रभावोत्पादकता कें बाधित कएल गेल अछि। 'लौंगिया मिरचाइ' मे किछु घटनाक्रमक असहज आ असमय संयोजन सं बचल जइतए तं

एकर कथावस्तु श्रेष्ठ प्रभावोत्पादकता द' सकैत छल। 'बकलेल' नाटक मे अविश्वसनीयता अपेक्षाकृत बेसी ठाम बजरैत अछि। मुदा, दुनू नाटकक कथातत्त्व अनटच्ड समस्याक आड़ि पर बुनल गेल अछि, जकरा लल्लन चलताउ शीर्षक द' कए झुझुआन क' देलनि अछि। सात वर्षक बकलेल बालक गणित पर रामानुजम जकां तर्क नहि क' सकैत अछि। भयानक रूपें टी.बी. ग्रस्त लोक ईंटा नहि ऊघि सकैत अछि।

कुल मिला क' ई तं स्पष्ट होइत अछि, जे आजुक नाटककार कें विषयक विस्तार खूब देखल छनि, मुदा अगुताइ मे ओ ओकर कथातत्त्व कें सायास अविश्वसनीय बना दैत छथि, जाहि सं बचबाक अपेक्षा अछि।

मैथिली गजल : स्वरूप आ संभावना

मैथिली गजलक वर्त्तमान स्थिति आ संभावना पर विचार करैत, गजलक पृष्ठभूमि पर विस्तृत चर्चा करब आवश्यको नहि, आ से हमर अभीष्टो नहि। तखन, एक बेर ओम्हर हुलकि लेब, युक्तिसंगते बुझाइछ।

मूल रूप सं, हेबनि धरि, गजल उर्दू-फारसीक रचनात्मक विधा मानल जाइत छल। हिन्दी मे दुष्यन्त कुमार कें हमरा बुझने गजलक पिता कहल जएबाक चाहिअनि। उर्दू-फारसी मे तं एतेक अधिकार पूर्वक कोनो एक व्यक्ति कें श्रेय द' देब कठिन अछि। काल निर्धारण पर सेहो जं दृष्टिपात कएल जाए, तं उर्दू-फारसी मे गजलक प्रशस्ति शताधिक वर्ष सं अछि, हिन्दी मे एकर प्रादुर्भाव वर्त्तमान शताब्दीक पांचम-छठम दशक मे मानल जाएत, मुदा, मैथिली गजलक प्रारंभ जीवन झाक रचना मे वर्त्तमान शताब्दीक पहिल आ दोसर दशक मे भ' गेल छल। स्पष्ट अछि, जे मैथिली गजल हिन्दीक अपेक्षा वृद्ध किंतु उर्दूक अपेक्षा शिशु अछि। तथापि, उर्दू तं दूर, हिन्दीओक गजल जकां क्षीण स्वागतक पिरही एकरा नहि भेटि पओलैक अछि। ओना ईहो बात ध्यान राख'क थिक, जे हिन्दी गजल कें सेहो एखन धरि मंचेक चीज बूझल जा रहल अछि आ तहू मे, जाहि गीत मे कनेक प्रेमपरक व्यथा, नायिकाक सौंदर्यक मदिरा, आंखिक बंकिम कनखी आदिक चर्चा हो, तकरहि टा गजलक संज्ञा देल जा रहल अछि। आ, मैथिली मे तं सहजहिं। एहि साहित्य मे तं सभ सं पैघ विडंबना ई अछि, जे अशक्य पहलमान जकां अखाड़ा कें नकारि देबाक प्रवृत्ति ओहि समस्त व्यक्ति मे समा गेल छनि, जे एकर श्रेय लेबा सं चूकि गेलाह। चूंकि एकर श्रेय हुनका नहि भेटि सकलनि, तें ओ कहैत छथि, जे ई किछु थिकिहे नहि।

जतए धरि 'गजल'क अर्थ 'प्रेमिकाक आंचर' आ मैथिलीक गजल-रचना मे तकर चित्रणक अभावक बात उठैत अछि, ताहि प्रसंग दू टा बात ध्यातव्य थिक। पहिल, जे भाषा विज्ञानक अर्थ-संकोच आ अर्थ-विस्तार प्रक्रिया सं आ सामाजिक मान्यताक हिसाब सं कोनहु शब्द कें आशातीत अर्थ भेटि जाइत अछि। एकटा शब्द

'स्याही' (कारी रंग) सं जं हम लाल आ हरियर दुनू रंगक रोशनाइक बोध प्राप्त क' लैत छी, तखन बिना प्रेमिकाक अलक-कपोल-कटि वर्णनक एहि साहित्यिक विधा कें हम गजल किऐक नहि कहब ? दोसर बात ई, जे आइ धरिक समस्त लक्षण ग्रंथक रचना लक्ष्य-ग्रंथक रचनाक पश्चाते भेल अछि। तय बात अछि, जे ओहि समयक रचना-विधानक आधार पर गजलोक अनुशासनावली बनाओल गेल हैत। स्पष्ट ईहो अछि, जे प्रारंभ मे विशुद्ध रूप सं ई उर्दू फारसी मात्रक विधा प्रभेद छल आ ओना तं हेबनि धरि, मुदा प्रारंभिक काल मे आओरो बेसी, ई संप्रदाय ऐय्याशी, सुरापान, सुंदरीक सान्निध्य आदिक बेसी बुभुक्षु रहैत छल। ओना जं मोटा-मोटी कही, तं श्रेयष्कर हैत, जे ओहि समयक संपूर्ण समाजे एहि दिश बेसी आकृष्ट छल, आ तें आन साहित्यिक विधाक संग-संग एहू विधा-प्रभेद मे शृंगारिक-चित्रण होइत रहल। समय बीतल, समाज बदलल, परिवेश बदलल, संस्कृतिक एकटा जोरगर परिवर्तन आएल। पैदल चल' वला आदमी हवाइ-जहाज सं चलए लागल, चंद्रमा कें देवता कहनिहार लोकक पुत्र-पौत्र चंद्रमा पर सं भ्रमण क' आएल आ ई परिवर्तन समाज कें बहुत रास वरदानक संगे आओरो बेसी अभिशाप द' गेल। ई द' गेल, शोषण, बेरोजगारी, कुंठा, आत्मदमन, समस्या, भूख, असुरक्षा, सांप्रदायिक दंगा, प्रजातांत्रिक सरकार, जातीय दंगा, अपनत्वक विगलन आदि-आदि। आब एतए विचारणीय अछि, जे प्रत्येक गजलकार अही माटि पानि मे जनमल-बढ़ल-पोसल रहैत छथि। हुनका नजरिक सोझां मे इएह समस्त अभिशाप सिनेमाक रील जकां घुमैत रहैत अछि, तखन हुनका कोनो सुनिर्तंबिनीक कटाक्ष कोना नीक लागओ ? भूखक धाह सं जरैत पेटक चमड़ी कें, प्रेमिकाक आंचर कतेक शीतलता देत ? तें गजलक मतला

जहर केर घोंट भरि सजनी जं पीबी अहांक हाथें हम
तं सत्ते जीबि लेब जिनगी अमर भ' अहांक हाथें हम

नहि राखि कए ई लोकनि रखैत छथि

हमर विषपान सं जुनि होउ प्रमुदित, हम ने एसगर छी
अहां केर शान ढाहत मृत्यु हमरे, हम ने एसगर छी

गजल कें मात्र प्रेमिकाक आंचरक अर्थ द' कए एकरा प्रेम-विरहक अभिव्यक्तिक माध्यम कहनिहार विद्वान लोकनि एकरा संगें एकटा आओरो अन्याय कएलनि। आ से ई, जे एकर 'फार्म' क संग-संग एकर वर्ण्य-विषयक सेहो निर्धारण क' देलनि (ई बात भिन्न, जे ई निर्धारण लक्षण ग्रंथक पृष्ठ पर उल्लिखित नहि भ' कए, किछु आलोचकक माथे मे उल्लिखित अछि)। मुदा एतए विचारणीय बिंदु ई अछि, जे जं कथा, कविता, उपन्यास, नाटक आदि समस्त विधाक वर्ण्य-विषय, समाजक बदलैत परिवेश-परिस्थितिक संगें बदलि गेल, तखन बदलैत भाषा-संस्कृति आ परिवेशक संगें गजलक वर्ण्य-विषय किएक नहि बदलओ। दोसर बात ईहो, जे अन्यान्य समस्त

भाषाक गजल एकर साक्षी अछि, जे प्रेमक अतिरिक्त, देशभक्ति, जन-दशा आदि सभ बिंदु कें एहि मे समाहित कएल गेल अछि। बहादुरशाह 'जफ र'क गजल केर एकटा शेर अछि

हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की
तख्ते-लंदन पर चलेगी तेग़ हिन्दुस्तान की

ओना, एकर अर्थ ई नहि, जे आब 'प्रेम', गजल अथवा आनो साहित्यिक विधा-उपविधाक चीज नहि रहि गेल अछि। जें कि जीवने प्रेमक प्रतीक थिक, प्रेमो, साहित्यक वर्ण्य-विषय छल, अछि, आ रहत। मुदा, संगहि ईहो कहब आवश्यक, जे जनजीवनक एक-एक बिंदु सेहो, गजलक वर्ण्य-विषय हैत। एतए हम, सियाराम झा 'सरस' सं पूर्णतः सहमत छी, 'आजुक तीत-मीठ साहित्यिक अनुभूतिक सफल अभिव्यक्ति हेतु एक सशक्त माध्यमक रूप मे गजलो किएक ने?'

हमर एकटा धारणा अछि, जे कोनहु साहित्यिक कृति कें मान्यता भेटैत छैक आलोचना साहित्य सं। प्रमाण-स्वरूप अनेक उदाहरण ताकल जा सकैत अछि। गजलक संग एकटा ईहो दुर्भाग्य अबैत रहल अछि। वर्तमान शताब्दीक पहिल दशक सं मैथिली मे गजल लिखाओल जाइत रहल अछि, मुदा एकर समालोचना पर कहिओ, कोनो विद्वानक लेखनी नहि उठलनि। फलस्वरूप सात दशक धरि एकरा अपन संज्ञा नहि भेटि सकलै आ सहानुभूतिक आसनी टा पबैत रहल। आठम दशक मे आबि कए एहि पर पहिल बेर कलम उठौलनि तारानन्द वियोगी। 'मिथिला-मिहिर' मे एहि पर यथेष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त कएल गेल। पाछां एकाध टा आओरो निबंध आएल। मुदा ताहि मे ई देखल गेल, जे ओ लोकनि गजलक प्रति आग्रही छथि, किंतु व्यक्तिपरक द्वेष हुनका जकड़ने छनि, तें एहि फेर मे अपन निबंध मे गजल पर चर्च करबा सं बेसी शब्द व्यक्तिए लेल खर्च कएलनि। पुनः रामदेव झाक आलेख आएल। एहि निबंध मे दू टा अनर्गल बात ई भेल जे गजलक पंक्ति लेल, छंद जकां मात्रा निर्धारित करए लगलाह आ किछु एहेन व्यक्तिक नाम मैथिली गजलकारक सूची मे जोड़ि देलनि, जे कहिओ कोनो गजल नहि लिखलनि। मात्रा निर्धारण प्रायः रामदेव कोनो खास रचनाकारक खास गजलक मात्रा गनि कए कएने हेताह। मुदा हमरा बुझने गजलक लेल मात्राक कोनो बंधन नहि अछि। एकरा लेल आवश्यक शर्त रदीफ, काफिया, मतला आ शेरक अतिरिक्त आओर किछु नहि अछि। एकर अतिरिक्त, मैथिली गजल पर आओर कतहु जं किछु चर्च भेल अछि, तं से थिक एम्हर प्रकाशित एक-दूटा गजल-संग्रहक भूमिका अथवा पत्रिका मे गजल-सवक्तव्य छापबाक प्रयोग।

ओना हिन्दी-मैथिलीक सफल गजलकार नरेन्द्रक अनुसार 'गजलों के मुंह-कान, नाक-नक्श, कद-काठी, चाल-ढाल या बोली-वचन पर मुझे कोई बहस नहीं करनी है कि वह बुर्का डालती है या धोती, हनुमान चालिसा पढ़ती है या कलमा।...बहस

मुझे केवल उसकी सोचों पर करनी है, लगावों पर करनी है और कारगुजारियों पर करनी है। यानी, गजलों को अभी भी, बिकाऊ-अंदाज़ मे शोषकों की विलासिता के लिए मुजरा गाना चाहिए। बचकाने और भावुक प्रेम-प्रसंगों में प्रेम-पत्र का कोटेशन बनना चाहिए। फैशनपरस्त, लंपट-व्यभिचारों में शिलाजीत की गोली बननी चाहिए। भोले-भाले निरीह को कैबरे-हाव-भाव और वाग्मैथुन द्वारा बीमार बनाना चाहिए। या जनता के बीच आकर सामान्य जीवन व्यतीत करना चाहिए।...यह एक बहस का मुद्दा है...'

मुदा, नरेन्द्र तं एकटा प्रश्ने टा ठाढ़ कएलनि अछि, हम एहि बहस मे अपन भागीदारी सं ई कहब, जे निश्चित रूप सं गजल कें जनताक बीच आबि कए सामान्य जीवन व्यतीत करबाक चाही। एहि जीवन प्रक्रिया मे एकरा प्रेमिकाक भ्रू-विलासक प्रसाधन गृह मे सेहो जाए पड़तैक, खेतक आड़ि पर सेहो जाए पड़तैक, संपूर्ण समाजक छल-छद्म, आचार-विचार, नीति-अनीति सभ देखए पड़तैक आ एहि सभ क्षेत्रक प्रतिनिधित्व करए पड़तैक। एहेन प्रतिनिधित्व विविध काल-खंड मे विविध भाषाक, विविध रनाकारक गजल करैत रहल अछि। गालिब, फैज, मोमिन, इन्शा, जुरअत, जफर, दुष्यन्त कुमार, नरेन्द्र, महाप्रकाश, महेन्द्र, कलानन्द भट्ट, सरस, विभूति आनन्द, धीरज, नवीन, वियोगी, रमेश प्रभृति लोकनिक रचना एकर साक्षी अछि।

मैथिली मे, जीवन झाक पश्चात् गजलकार लोकनिक नामक सूची तैयार कर' मे पहिल नाम अओतनि आरसी प्रसाद सिंहक। गजल लिखैत रहलाह, मुदा अलग सं एहि प्रकारक रचनाक लेल कोनो टा चर्च नहि कएल गेल। आओर लोकनि मे सं रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मार्कण्डेय प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र, महाप्रकाश, केदारनाथ लाभ, महेन्द्र, कलानन्द भट्ट, तारानन्द वियोगी, विभूति आनन्द, राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर', नरेन्द्र, धीरज, बाबा वैद्यनाथ झा, रमेश, देवशंकर नवीन प्रभृति प्रमुख छथि। एकर अतिरिक्त किछु एहनो नाम अछि, जे पूर्वक आलोचनात्मक निबंधकारक उक्ति कें सत्य करबा लेल एकाध टा गजल सायास लिखि देलनि। एहि सूची मे किछु एहेनो नाम अछि, जिनकर गजल विशुद्ध रूप सं प्रेमिकाक निबि-बंध निहारि रहल अछि, किछु एहनो, जिनकर गजल जेठक रौद मे हरबाहक संगें खेतक रेह मे दौड़ि रहल अछि, ओकर भूख-प्यास आ थकानक अनुमान क' रहल अछि, बेकारी-भुखमरीक चट्टान त'र दाबल लोक कें निकाल'क प्रयास क' रहल अछि; आ किछु एहनो, जिनकर रचना एहि समस्त क्षेत्र मे दौड़-बरहा क' रहल अछि। जे किछु हो, मुदा गजल लिखा रहल अछि। ओना एहि मे सं किछु गोटए एहनो छथि, जे गजल लिखबा काल दू टा असावधानी राखब रचना-कर्म जकां अनिवार्य बूझि लैत छथि। पहिल, जे अपन भाषाक शब्द-सौष्ठव कें बिसरि जाइत छथि आ जाहि अभिव्यक्ति लेल मैथिली मे पर्याप्त शब्दावली अछि, तकरहु लेल अन्य भाषाक शब्द-प्रयोग मे पाछू नहि हटैत छथि। महेन्द्र आ विभूति आनन्द, तकर अपवाद थिकाह। दोसर

नग्नता, नकल, प्रगतिशीलता

नवंबर 1981क प्रथम सप्ताह मे टोकियो मे एशिया, अफ्रिका आ अमेरिकाक अंतर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन भेल छल। भारतक प्रतिनिधित्व प्रसिद्ध कथाकार काशीनाथ सिंह क' रहल छलाह। जापानीक प्रसिद्ध लेखक तथा आलोचक एवं भारतक अनन्य प्रेमी, तातियो वातानवे, काशीनाथ सिंह कें कहलथिन जे ओ हुनका ओ चीज देखेबा हेतु ल' जा रहल छथि जे भारत मे दुर्लभ अछि। उत्सुकतावश काशीनाथ सिंह गेलाह। मुदा एहेन दुर्लभ चीज देखेबा लेल हुनका एकटा सिनेमा घर मे आनल गेलनि, जतय बिना कहानी, संवाद आ अभिनयक दृश्य परदा पर भेटैत रहलनि। भरि हॉल दर्शक। परदा पर नांगट जनानीक देह। पुरुषक ओहि पर पाशविक अत्याचार। मूड़ीक बलें उनटा कए लटकल नांगट जनानीक संवेदनशील अंग, आ गुप्तांग पर मोमबत्ती बरका क' ठोपे-ठोपे खसएबा मे आनंदित होइत परिवार।...

ई घृणित दृश्य सब देखि काशीनाथ सिंहक मोन तिलमिलायल जाइत रहनि। मुदा ताहि पर घीढार करैत, तातियो वातानवे पूछि देलकनि जे जं भारतो मे एहिना सिनेमा अथवा दोकान सब मे कॉफी पिअबैत नांगट, शिक्षित छौंड़ी, सब पर नजरि पड़ए लागए, तं केहेन सोचबै ?

काशीनाथ जी चिकरैत, डपटैत मात्र दू चारि शब्द बाजि सकल छलाह हमरा देशक पवित्र संस्कृति एहि अश्लीलता कें बर्दाश्त नहि क' सकैत अछि !

यूरोपक कहानी सुनबैत वातानवे पुनः कहलखिन जे आधुनिकीकरणक परिणति यैह सभ छियै। तें भारत कें ओतहि रह' दिऔ जत' ओ छै, अन्यथा ई सभ देखबा लेल आंखि आ मनःस्थिति कें एडजस्ट क' लिअ'। तखन हुनका बनारसक हनुमान घाट पर डा. ईवान इलिचक उक्ति मोन पड़लनि मात्र भारत ! जं एखनहुं संसार कें कोनो देश बचा सकैत अछि, तं ओ थिक भारत। देखबाक अछि जे आधुनिकता एहि पर केहेन रंग चढ़बैत छै। अपन एहि भूमिका कें बिसरि जं ईहो ओहि देशक नकल केनाइ शुरुह क' देलक तं डर होइत अछि।

मुदा वातानवेक भविष्योक्ति आ डॉ. इलिचक डर आब भारत मे साकार होअए लागल अछि। पाश्चात्य संस्कृतिक अश्लीलता, उद्दंडता आ भ्रष्टता सं दग्ध चिंतक लोकनि एक दिस भारतक पवित्र संस्कृति मे आबि क' शीतलता प्राप्त कर' चाहैत छथि तं दोसर दिस अपन पवित्रता, शीतलता कें हीनताक निशानी बूझि भारतीय एकरा त्यागि ओहि उष्णता मे तेजी सं प्रवेश क' रहल अछि।

नारीक नग्न शरीर देखबाक रुग्न मानसिकता एतुक्का पुरुष मे तेजी सं समा रहल अछि। ब्लू फिल्मक बाजार एत' गर्मे टा नहि, अपितु खौलि रहल अछि। धनक बलें निर्धन जनानीक इज्जति, देह, यौवन कीनब; बाट चलैत भिखमंगनी, निरीह इत्यादि कें धनक प्रलोभन द' कें ओकर देहक मात्र भोगे टा नहि, अपितु कुभोग करब, एतुक्का पुरुषक हवस भेल चल जा रहल अछि। नशा सेवन क' कए नारीक भोग मे पाशविक अत्याचार करबाक प्रवृत्ति तीव्र गतिएं बढ़ि रहल अछि।

ई सभटा पाश्चात्य संस्कृतिक नकल मे फिरीसान, बताह मानसिकता थिक। नारीक अस्तित्व कें प्रधानता देनिहार, पवित्र संस्कृतिक धनी, सभ्यता मे विश्वक आन कोनहुं देश कें धिक्कार देनिहार, एहि भारत मे पुरुष वर्ग द्वारा नारीक एहेन रद्दी प्रस्तुतीकरण भ' रहल अछि, पुरुष ओहि नारी समाजक अस्तित्व कें बिसरि रहल अछि जकरा पेट मे ओ कीटाणु सं जीव बनल, अपन संक्रमणकालक नौ मास बितौलक, जकरा स्तन कें चूसि क' आइ एहेन बलिष्ठ भ' गेल, जे ओकरहि पर अत्याचार क' रहल अछि। ई सभ आर किछु नहि, मात्र एतबा कहैत अछि, जे एतुक्का नस्ल मे पुरुषक बीमार मानसिकता आबि गेल अछि।

मुदा एहि सभ टा कुप्रवृति कें संरक्षण भेटि रहल छै, व्यवस्था आ बाजार द्वारा तैयार कयल एकटा विशेष नारी वर्ग द्वारा। जकरा पाछां निर्दोष नारीक सेहो पैघ समूह अछि। ई नारी समाज स्वयं अपन अस्मिताक प्रति जबावदेह नहि अछि। ओ ओहेन सभ्यताक नकल मे बेचैन अछि, जकरा सं उबिया क' डॉ. इलिच भारतक संभावित दुर्दशाक बात सोचने रहथि। भारतक नौजवानक ई आकर्षक चेहरा, मस्त शरीर, कांति, तेजस्विता, चारित्रिक पवित्रता सब टाक पाछां रहस्य अछि ओकर 'माइक दूधक'। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कयल गेल अध्ययनक अनुसार प्रत्येक माइक दूध मे व्यापक रूप सं कीटनाशक औषधि रहैत छै, जकरा पीबि क' हमरा देशक बच्चा स्वस्थ आ बलिष्ठ होइत छल ! मुदा आब एत' माइक दूध पीबाक सौभाग्य पचहत्तरि प्रतिशत बच्चा कें भेटैत छैक कहां ? एहि संबंध मे लोक मे भ्रामक धारणा ई रहैत छै, जे सब शहरी माय अपन यौनाकर्षण कें कायम राख'क लेल बच्चा कें दूध नहि पीब' देबाक एकटा फैशन बना लेने अछि। मुदा बात ई छै, जे सामान्य स्थिति मे जं माइक स्तन मे दूध रहतै तं ओकरा बिना बच्चा कें पिअओने नहि रहल जा सकैत छै। एकर मुख्य कारण छै, ओकर लाचारी। प्रारंभ मे मे स्त्रीक ड्रेस एतेक लहक-चहक वला नहि छल। 'ब्रेसियर'क प्रचलन एतेक नहि छलै।

किओ नहि पहिरैत छल। सोवियत संघक वैज्ञानिकक निर्णयक अनुसार हरेक प्रबुद्ध माए कें एहेन चेतावनी देल गेल छै, जे ओ अपन बेटी कें प्रारंभिक वयस मे ब्रेसियर नहि पहिर' दैक। करीब सतरह वर्षक वयस धरि बेटीक स्तन विकासमान रहैत अछि। मुदा प्रायः 12-13 वर्षक उम्रहि सं खूब शिकस्त पहिरबाक परिपाटी देखल जाइत अछि। प्रारंभिक अवस्था मे बढ़ैत स्तन कें ब्रेसियर सं दाबि कें एना जबरदस्ती राखब ओहने अछि, जेना कोनो अंकुरैत बीया कें। एही कारण सं एकर रूप बिगड़ि जाइत छै। लगभग आठ सय स्तन-पान कराब' वाली महिलाक सर्वेक्षण सं ई ज्ञात भेलै जे, जे महिला सब बच्चा कें दूध पियाब' मे सक्षम नहि अछि, ओहि मे सं छब्बीस प्रतिशत बारह-तेरह बर्खक उम्र मे ब्रेसियर पहिरब शुरुह क' देने छल। सिन्थेटिक, पैड वला तथा रंगीन ब्रेसियरक संबंध मे, एक अमेरिकन पांच सय 'वक्ष कैंसर' रोग सं ग्रसित महिलाक जांच क' क' निर्णय देलनि-जे एहि सभक व्यवहार सं वक्षक तापमान बढ़ि जाइत अछि, जाहि सं कैंसरक डर रहैत अछि। मुदा नकलक पाछां बताह बनल ई फैशनपरस्त नारी समाज ई सभ खूब करैत अछि।

व्यापारक दिशा मे सेहो महिला लोकनि अपन अस्तित्व मेटेबा मे पाछां नहि छथि। किछु गोटा अंग प्रदर्शनक व्यापार करैत अछि, तं किछु अंग गमनक। किछु गोटा स'ख सं करैत अछि तं किछु लाचारी देखबैत। मुदा, चाहे नारीक स'ख हो अथवा लाचारी, ई सभ नारीक अपना प्रति अन्याय छियनि। ई कोन स'ख जे ई प्रदर्शित करए जे नारी, पुरुषक भोग्य वस्तुक अलावे आर किछु नहि थिक ? ओ कोन लाचारी जकरा नारी पसीना बेचि के' नहि मेटा सकैत अछि, ओकरा खाली देहे बेचि क' मेटा सकैत अछि ?

विज्ञापनक बाजार मे नारी उच्च राशि प्राप्त क' क' अपन नग्न-अर्द्धनग्न शरीर देखबैत अछि। आ ई फोटो जनाना सं मर्दाना कोनो वस्तु हो, ओहि पर सटैत अछि। दमित इच्छा शक्ति वला उपभोक्ताक बीमार मानसिकता प्रेरित भ' क' कीनैत अछि। एहि सं ओ मॉडलिंग कर' वाली, व्यवस्था, बाजार आकि ओ नारी ई कखनहुं नहि सोचैत अछि जे, एना केला सं समाज मे हमर महत्व घटैत अछि। लोक ई बुझि लैत अछि जे नारी देह मूरै-भांटा जकां बिकाए वला वस्तु थिक। लिपिस्टिकक मॉडलिंग मे स्त्रीक हैब आवश्यक अछि, मुदा ट्रकक टायरक प्रचार मे अर्द्धनग्न छौंड़ीक ठाढ़ हैब ?

आखिर नारी मात्र सुन्नरि आ समर्पिते टा किएक अछि ? ई विद्रोही आ गुणवती किएक नहि अछि ? आकर्षित करबा लेल एकरा सुंदरताक अलावे आरो बहुत किछु छै। लक्ष्मीबाई कें, मीराबाई कें, इन्दिरा गांधी कें, सुन्नरि जनानीक रूप मे के जनैत छै ? मोटा-मोटी अपना देशक महिला समाज अपन अस्तित्वक अभेला अपनहि क' रहल अछि। नकलक पाछां अपने संस्कृति कें छोड़ि आन संस्कृतिक नर्क मे प्रवेश कयने चल जा रहल अछि। पवित्रता त्यागि अश्लीलता कें अपनौने जा रहल अछि।

निकट भविष्य मे एहि फूजल बाजार मे, नारीक एहि अधोगति कें रोकब असंभव लागि रहल अछि।

एम्हर आबि क' भारतक बुद्धिजीवी लोकनि 'नारीवाद'क झंडा उठौलनि अछि। सिमोन द बुआ क पोथी 'द सेकेंड सेक्स' पढ़ि क' आ पश्चिमक 'ब्रा बर्निंग' जुलूसक समाचार सं प्रेरणा ल' क' नारीवादक नारा बुलंद करब प्रारंभ कयलनि अछि। एते धरि जे साहित्यो सृजन मे नारीवादी साहित्यक आरक्षण प्रारंभ कयलनि अछि। हिन्दी मे ई स्वर कनेक बेसिए फैशन सं आयल अछि। बल्कि, हिन्दीक जे साहित्यकार अपेक्षाकृत पैघ स्त्रीभक्षी छथि, से ई स्वर बेसी जोर सं बजैत छथि आ लिखैत छथि। हमरा ई कहबा मे संकोच नइं होइत अछि जे 'द सेकेंड सेक्स' पोथी सं बहुतो दिन पूर्व महादेवी वर्माक पोथी 'शृंखला की कड़ियां' लगभग ओही मुद्दा पर प्रकाशित छल, तखन ई चर्चा नइं होइत छल। कारण तय अछि, जे भारतक बुद्धिजीवी कें स्पून फीडिंगक अभ्यास छैक, थोड़ेक स'ख सेहो। पश्चिमी देश सं आयल प्रधानमंत्री राजपथ (दिल्ली) सन सड़क (पद्मिनी नायिकाक जांघ सन चिक्कन-चकमक) पर कार सं जाइत काल कहि देलकै जे भारत मे गंदगी बड्ड अछि, तं दिल्लीक सफाइ होअय लागल। जं ओ प्रधानमंत्री कोनो झुग्गी कॉलोनी अथवा भारतक कोनो गामक अन्नहीन-क्रियाहीन टोल (?) पर जइतथि तं की कहितथि ?

भारतक राजनीतिज्ञ सं मिसियो भरि कम एतुक्का कथित साहित्यकार आ बुद्धिजीवी नइं छथि, जिनकर आचार संहिता मे एहेन दिग्भ्रमित नारी सभ कें समेटि क' बाट पर अनबाक बात लिखल हो। प्रगतिक अइ उन्मुक्त बाट पर ई बुद्धिजीवी लोकनि हमरा देशक नारी कें अस्तित्वबोधक पाठ तं नहि पढ़ा सकलाह, नारीक बौद्धिक आ मानसिक विकास तं नहि क' सकलाह, ओकरा लड़बाक अवगति सिखा क' तालीम क' लेलनि, अर्द्धनग्न भ' क' मॉडलिंग करबाक निर्लज्जता सिखा लेलनि। अर्थात्, पारिवारिक स्नेह सं टूटल रहत महिला, तं परिवार सं घृणा राखत; नग्नताक प्रति रुचिशील रहत महिला, तं ओहि स्त्रीभक्षी कें बेस सुअवसर भेटैत रहतनि; रूप, राशि, प्रतिष्ठा अर्थात् स्त्री, धन आ प्रशस्ति सं घेरायल पुरुष अपना कें गौरवशाली बुझैए। कृष्ण सन गौरवशाली। सोलह सय गोपी सं घेरायल, कौरव पांडव कें लड़बैत, धर्मयुद्ध करबैत, दोसरक खानदान कें नष्ट करबैत...। अर्थात्, अइ स्त्री कें कतहु बाट नइं...

ewY;kadu

असावधनी, जे कतोक गजल मे छंद भंगक बाहुल्य रहैत अछि। मात्राक सीमा गजल मे भने नहि हो मुदा मात्रा सुनिश्चित क्रम मे तं अबस्से रहबाक चाही। ताहि क्रमक निर्वाह बेसी रचनाकार नहि क' पबैत छथि। एहि दुनू असावधानीक कारणें रचनाक अस्मिता कमजोर भ' जाइत अछि। रचनाकार कें एहि सं बचबाक चाहिअनि। ओना किछु नाम एहनो गनाओल जा सकैत अछि जे गजल लिखबाक लौल करैत छथि, बल्कि रचनाधर्मिते अपनएबाक लौल करैत छथि। मैथिलीक संपादक लोकनि (किछु संपादक) ततेक बेसी उदार छथि, जे हिनका लोकनि कें मनवांछित मान्यता द' चुकल छथि। आ ईहो कहब आवश्यक, जे गजलकारक सूची एतबे सं पूर्ण नहि भ' गेल। जिनकर नाम नहि गना सकलहुं, तिनका सं कोनो दुश्मनी अथवा पूर्वाग्रह नहि अछि।

जहां धरि गजलक मान्यताक प्रश्न अछि, हम तं एकरा श्रव्यकाव्य मे पद्यक एकटा उपविधा मानैत छी। एकर स्थापनाक अस्वीकृति लेल पूर्व मे एकटा कारणक चर्च तं कएल, दोसरो कारण अछि; आ से थिक गजल संग्रहक अभाव। प्रायः अलग सं गजल संग्रह क' कए कालानन्द भट्टक 'कान्ह पर लहास हमर' विभूति आनन्द क 'उठा रहल घोघ तिमिर' सरसक 'शोणिताएल पैरक निशान' तारानन्द वियोगीक 'अपन युद्धक साक्ष्य', रमेशक 'नागफेनी' आ एकटा संपादित गजल संग्रह 'लोकवेद आ लालकिला'क अतिरिक्त कोनो गजल संग्रह नहि अछि। 'अवान्तर' कविता संग्रह मे मायानन्दक किछु एहि तरहक रचना सब छनि, जकरा ओ 'गीतल' कहैत छथि। यद्यपि ई गजले थिक। 'गीतल' तं मायानन्दे शुरूह कएलनि आ हुनकहि धरि ओ सीमित रहल। ओहू रचना सभ कें हम गजले मानैत छी। एतद्रिक्त मात्र पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भ' कए अपन असंगठित प्रभान्वितिक कारणें सम्हरि कए क्षमता देखब' मे सफल नहि भ' सकल अछि। ओना एतए एकटा प्रश्न उठाओल जाएत, जं मौलिक संग्रहक अभाव मे कथा आ उपन्यास कें मान्यता भेटि चुकल छल, तखन एकरा किएक नहि ?

वस्तुतः कथा, उपन्यास आ कविता साहित्यक मौलिक आवश्यकता छल। आवश्यकता ईहो थिक, मुदा दारुण भूख सं आक्रांत व्यक्ति कें एकटा मिठाइ खोआ दी, तं हुनकर भूख मरि जाइत छनि आ पुनः बड़ी काल धरि भरि मनसुबा सं नहि खा होइत छनि। सैह स्थिति एहू ठाम गजल आ लघुकथाक संग भ' रहल अछि। ओना एकर मतलब ई नहि, जे गजलक स्थापना-मूलक बात कें घोंकैत-घोंकैत हम आन विधा सभक अवमानना क' रहल छी। तखन एतबा अवस्से विशेष महत्त्वक बात थिक, जे मैथिली साहित्य मे जन-जीवनक संग अंतरंगता, आन विधाक अपेक्षा गजले मे शीघ्र आ मौलिक रूपें आबि सकल। 1920-35 ई. हिन्दी साहित्य मे छायावादक काल थिक। अही अंतराल मे रहस्यवाद कें नांघैत हिन्दी कविता 1936-52 ई. क बीच प्रगतिवादक क्षेत्र मे विचरण केलक। 1936 मे वामपंथी साहित्यकार

लोकनि द्वारा प्रगतिशील लेखक संघक स्थापना भेल। तारसप्तक प्रकाशित भेल। मुदा मैथिली मे एहि सभ तरहक चित्रण हौंच-पौंच ढंग सं 1958 धरि होइत रहल। आ तखन 'स्वरगंधा' प्रकाशित भेल। मुदा, गजल मे आधुनिक वातावरणक चित्र आनबा मे रचनाकारक अनुभूति कें एतेक सीढ़ी पार नहि करए पड़लैक। एक्कहि बेर अपन पूर्ण तेवरक संगें आबि गेल। ई गजलक विशेष पहुंच केर बात बूझल जएबाक चाही।

हमरा लोकनिक वर्तमान समाज मे मूल रूप सं एहेन व्यक्ति कम अछि, जे आर्थिक दृष्टिएं समृद्ध हो। मुदा, विडंबना ई थिक, जे ई मुट्ठी भरि लोक, विशाल जन-समुदायक शोषक बनल ठाढ़ अछि। वस्तुतः उत्पादन आ वितरण एही वर्गक हाथ मे अछि। अपार धनराशि सेहो अही वर्गक हाथ मे अछि। आ तें धर्म, संस्कृति, साहित्य आ कानूनक विधान-निर्माता सेहो इएह लोकनि छथि। अस्तु, ई लोकनि एहि तरहें पाप आ पुण्यक परिभाषा सुस्थिर कएलनि, जाहि सं हिनकर विपुल धनराशि पर किनकहु नजरि नहि पड़ए। पूंजीवादक ई विशाल नागराज फेन काढ़ने असंख्य लोक कें छाहरि देबाक भ्रम द' रहल अछि। एकटा ब'ड़क गाछ पचास टा आमक गाछक जगह छेकि कए ठाढ़ अछि। एकरा छाहरि मे आन कोनो लता, वृक्ष नहि बढ़ि सकत। इएह एहि समयक यथार्थ थिक। आ गजल एही यथार्थक चित्र थिक। एकर स्वरूप आ संभावना दुनू उज्ज्वल अछि। गजलकार कें उपर्युक्त किछु असावधानी सं बचए पड़तनि आ समालोचक कें एहि पर लेखनी उठाब' पड़तनि। मुदा सभ सं पैघ विडंबना तं ई थिक जे, जे लोकनि गजलक आंदोलन चलौलनि, सैह सभ आब गजल सं विमुख भ' गेलाह अछि। विभूति, वियोगी, रमेश आदि सभक गजल लेखन एखन ठप्प छनि।

पुरान आ नव युगक सेतु

मैथिली साहित्यक इतिहास मे परिमाणात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टिएं वर्तमान शताब्दीक विशेष महत्व अछि। बीसम शताब्दीक पहिल चतुर्थांशक उत्तर भाग आ द्वितीय चतुर्थांशक पूर्वभाग मे मैथिली साहित्यक जाहि रचनाकार लोकनिक द्वारा एहि साहित्यक देहरि नव ढंगें झाड़ल-बहारल गेल, ताहि मे तंत्रनाथ झाक स्थान अग्रगण्य छनि। यद्यपि काव्य-विषयक आधार पर अपन आन समकालीन कविगण जकां बहुत आधुनिक नहि छथि; मुदा पुराने विषय पर अपन दृष्टिकोणक कौशल सं ततेक कलात्मक काव्य साधना कएने छथि, जे कृति स्वतः अपन पारंपरिक धारा सं फराक भ' जाइछ। यात्री जकां ई आपादमस्तक जनवादी नहि भ' गेलाह, किरण जकां देवता लोकनि कें हुनकर सामर्थ्यहीनताक बोध नहि करौलनि, सुमन जकां पौराणिक विषय पर आओरो पुरान विचारधारा रखैत रचनाशील नहि रहलाह; रहलाह अपन साफ आ सोझ मान्यताक संग, अपन नूतनतावादी दृष्टिकोणक संग, अपन मौलिक चिंतनक संग, पूर्वाग्रहहीन, सर्वत्र एकरस, एकरंग। विचारक आ दृष्टिकोणक वैषम्य कतहु हिनकर रचना मे नहि अबैत अछि।

काव्य साधनाक लेल कोनो रचनाकार लग एटा फरीछ दृष्टिकोण हएबाक चाही। दृष्टिकोणेक अनुसार कोनो घटना विशेषक प्रति व्यक्तिक धारणा बनैत अछि। वर्तमान शताब्दीक तेसर दशक प्रायः हिनकर रचनाशीलताक स्थापना काल रहल हेतनि। एहि समय मे भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' बेस आधुनिक दृष्टि सं साहित्य मे अवतरित भ' चुकल छालाह। एहि समय धरि यद्यपि मिथिला अंग्रेजी शासनक अंतर्गत छल, तथापि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश मे आ व्यक्तिक मानसिकता मे परिवर्त्तन आबि गेल छलैक। रचनाकार लोकनि सेहो अपन पुरान विचारधारा त्यागि आधुनिक होअ' लागल छलाह। से, शिल्प आ कथ्य, दुनू दृष्टिएं। अर्जित अनुभूति कें प्रभावोत्पादकताक संग अभिव्यक्ति देल जाए लागल, भावोद्रेक कें कोनो बान्ह-छान मे बान्ह'क प्रक्रिया घटए लागल, नव-नव छंद विन्यास सं रचना होअए लागल।

भुवनजी तकर अग्रदूत भेलाह। 1936 मे भुवनक कविता-संग्रह 'आषाढ़' प्रकाशित भेल, जकर, भूमिका मे कवि परंपरा सं मुक्तिक घोषणा कएलनि आ नव ढंगें काव्य सृजन मे लागि गेलाह। मैथिली कविता मे भाव आ शिल्प-दुनू स्तर पर ई नव-नव प्रयोग करए लगलाह। व्यक्तिक अंतःपक्ष हिनका रचना मे स्थान पाब' लागल। मैथिली कविता, कीर्त्तन-भजन, नख-शिख वर्णन, रति-विलास आ राज-प्रवासक चौकठि सं बाहर आबि गेल। मुदा, दृष्टिकोणे एहने चीज थिक, जकरा कारणें यात्री पूर्ण साहसक संग अपन रचना-प्रक्रियाक एकटा दिशा निर्धारित कएलनि, शब्द-योजना, विषय-वस्तु आ अभिव्यक्ति शैली तीनू अर्थ मे। सुमन परंपराक खुट्टी मे बान्हल 'उत्तरा' आ 'दत्तवती' लिखैत-लिखैत त'रे-त'र 'हलधरो' लिखि लेलनि। संस्कृत मे मैथिलीक कविता लिखैत रहलाह। मैथिली कें दुरूह-सं-दुरूहतर बनबैत रहलाह। एहि सभ सुअवसर, कुअवसरक अछैत, तंत्रनाथ झा अपन संतुलित विचारधाराक संग दृढ़ रहलाह। अपन चयनित बाट मे अग्रसर रहलाह। संपूर्ण साहित्य एकर प्रमाण थिक, जे ई 'मुसरी झा' कथाकाव्य मे जतबे आधुनिक आ ढोंगक प्रति व्यंग्यात्मक छथि, 'कृष्णचरित' मे सेहो ओतबे। 'कीचक वध' अथवा 'कृष्णचरित' मे जतबे पारंपरिक छथि, अपन आनो कविता मे ततबे। ई नहि कहल जा सकैए, जे हिनका पर किनकहु प्रभाव नहि छनि; मुदा ई कहब अनुचित नहि हैत, जे ई सभक प्रभाव सं मुक्त छथि, किंतु अपना दृष्टिकोण सं ताल-मेल बैसओला पर उपयुक्त स्थान सं प्रेरणा ग्रहण अवश्य करैत छथि। हिनकर अही प्रभावमुक्तता आ प्रेरणाग्राह्यताक फल थिक, हिनकर रचनाक उत्कर्ष। इएह दूटा बात हिनकर कृति कें पारंपरिक रहितहु आन पारंपरिक रचना सं फराक करैत अछि। हिनकर प्रमुख रचना थिक 'कीचक-वध', 'कृष्णचरित', पराशर (महाकाव्य); 'नमस्या', 'मंगल पंचाशिका' (कविता संग्रह), एकांकी चयनिका (एकांकी संकलन)।

'कीचकवध' तंत्रनाथ झाक ओहेन कृति थिकनि, जकर महत्व सभ अर्थें, सभकाल मे, अनेक कृतिक बराबर रहत। मैथिली साहित्यक इतिहास मे एहि कृतिक महत्व, विषय लेल कम, उपस्थापन शैली लेल सर्वदा अक्षुण्ण रहत। महाभारतक षड्यंत्र आब हमरा लोकनिक लेल इतिहास भ' गेल अछि। मैथिलीक आधुनिक कालक रचना सभक प्रारंभिक स्रोत सभ विधा मे पुराणे, महाभारत रहल अछि। खास क' कए महाकाव्यक स्रोत तं रामायण, महाभारत अछि। संभव अछि, एहि विवशताक कारण महाकाव्यक शास्त्रीय अनुशासन हो। जे से...। मुदा, तंत्रनाथ झा महाभारत सं पांडवक अज्ञातवासक एकटा प्रसंग कें उठाकए कीचकक वध केर कथा ताहि कौशल सं कहने छथि, जे ओ शाश्वत मूल्यक चीज भ' गेल अछि। एकर प्रस्तुतिक कलात्मकताक कारणें ई आजुक सामाजिक आ राजनीतिक माहौल लेल सेहो प्रासंगिक भ' गेल अछि। अमिताक्षर छंद मे तंत्रनाथ झा, विराट राज मे पांडवक अज्ञातवास काल मे भेल कीचकवधक कथा कें नौ सर्ग मे प्रस्तुत कएलनि अछि।

'कीचक-वध' महाकाव्य चरित्र-चित्रण, अभिव्यक्ति कौशल, उपस्थापन चातुर्य आ घटना संकलनक दृष्टिएं मैथिलीक श्रेष्ठ महाकाव्य साबित होइत अछि। यद्यपि अलंकार, रस आदिक निरूपण मे कवि पौराणिकताक उपेक्षा नहि कएने छथि, मुदा छंदक वैविध्य मे अद्भुत वैशिष्ट्य, रस-अलंकार आदिक निरूपण मे कलात्मक उत्कर्ष, शब्द संयोजन मे समकालीनता आदिक कारणें ई आन महाकाव्यक अपेक्षा बेसी सफल भ' पाओल अछि। कवि एहि पुस्तक मे अपन समन्वयात्मक स्वरूप मे संतुलित ढंगें ठाढ़ छथि आ समन्वयक एहि बिंदुक चयन ई ततेक सावधानी सं कएने छथि, जतए सं संदेहक कोनो टा गुंजाइश नहि रहि जाइत अछि। एक दिश अपन पात्रक सौकुमार्य कें ठोस धरातल प्रदान कएने छथि तं दोसर दिश ओकर मनोविश्लेषणात्मक चित्रण सं कृति कें नवीनता देने छथि। महाकाव्यक लेल शास्त्रीय समस्त स्थापनाक प्रतिपालन करैत महाकवि, कथाक महाभारतीय मर्यादा कें अक्षुण्ण रखबा मे सेहो सफल छथि आ प्रस्तुति मे युगानुकूल वातावरणक पुट देबा मे सेहो। अर्थात्, सूक्ष्म वर्णन कौशलक प्राच्य परंपरा आ शिल्पगत विन्यासक पाश्चात्य परंपरा दुनू कें संश्लिष्ट क' कए कृति कें उत्कर्ष प्रदान कएलनि अछि। माइकेल मधुसूदनक मेघनादवध'क शिल्पक झांकीक कारणहिं प्रायः हिनका मैथिलीक 'माइकेल' कहल जाइत छनि।

'कीचकवध' महाकाव्यक प्रमुख वैशिष्ट्य थिक कथावस्तुक चयन मे महाकविक कौशल आ कृति मे पात्रक चारित्रिक अंकन। नारी कें आदिकालहि सं सूक्तिवाक्य मे पूज्या कहल जाइत रहल अछि आ व्यवहार मे ओकरा असूर्यम्पश्याक, भोग्याक रूप मे देखल जाइत रहल अछि। कवि, एहि पोथी मे सैरन्ध्री कें मध्ययुगीन भारतीय नारी जकां भोग्या नहि, अपितु पुरुषक जीवन-पथ आलोकित केनिहारि सहचरिणीक रूप मे चित्रित कएने छथि। ई चित्रण नारीक प्रति हिनकर दृष्टिकोण निर्धारित करैत अछि। नारीक प्रति हिनकर उदार आ श्रेष्ठ धारणाक साक्ष्य, नारी-चित्रणक एक-एक पंक्ति मे भेटैत अछि, जतए सैरन्ध्रीक आत्मविश्वास, शौर्य आ साहस कें चित्रित करैत लिखैत छथि, 'शार्दूली की कखनहुं पाबए त्रास/जम्बूकक ? की कतहु ज्वलित अंगार/तृणचय सकए झांपि ? की चम्पकवास/भ्रमर तुच्छ कए सकए कतहु उपभोग ?' एहि ठाम नारीक लेल व्यवहृत एक-एकटा बिंब स्पष्ट करैत अछि, जे नारीक प्रति हिनकर धारणा महान छनि आ पुरुषक लेल तुच्छ बिंबक प्रयोग हिनकर व्यावहारिक यथार्थ बोध कें द्योतित करैत अछि। एक दिश जं नारीक सौंदर्य, दक्षता, क्रियाशीलता, एकनिष्ठता, धर्म-परायणता, पातिव्रत्य, स्वाभिमान, साहस आदिक प्रति कवि जाग्रत छथि; तं दोसर दिश कीचक सन दुष्ट पुरुषक कामुकता, धृष्टता, विवेकहीनता आदिक प्रति घृणित भाव रखैत छथि, तं सुदेष्णाक दया, सहिष्णुता, सहानुभूति आदि सद्गुणक संग हुनकर ईर्ष्या भावक चर्चा कर' मे सेहो नहि चूकैत छथि।

कनेको टा अवसर भेटलनि, तं प्रकृति कें बड़ा जाग्रत रूपें उठेबाक प्रयास सेहो कएलनि अछि। से खाहे 'कीचकवध' मे राजा विराटक जनपदक चर्चा करैत काल हो, कोनो पात्रक लेल बिंब उपस्थित करबाकाल हो, मुक्तक काव्य लिखबाक हो अथवा 'कृष्ण-चरित' मे विविध दृश्य-परिदृश्य उपस्थित करबाक हो। वर्षा-ऋतुक प्रति तं कवि बेसी उदार भ' जाइत छथि। वर्षाक प्रति ई औदार्य, कविक जनसंश्लिष्टताक परिचायक थिक।

तंत्रनाथ झाक दोसर महत्वपूर्ण कृति थिकनि 'कृष्ण चरित' महाकाव्य। साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित ई कृति, महाकविक अंतिम अवस्थाक प्रतिफल थिक। बारह सर्ग मे विभाजित एहि कृति मे मंगलाचरणक पश्चात् गुरु संदीपनिक आश्रमक परिवेश, व्यवस्था, अनुशासन, शिष्टता आदि सं ल' कए गुरुकुल मे कृष्ण-बलरामक आगमन, अध्ययन आ शिक्षार्जन समाप्तिक पश्चात् गृहगमन धरिक कथा कें अत्यंत सावधानी सं गुंफित कएने छथि। अपन अनेक मौलिकता आ अनेक वैशिष्ट्यक कारणें 'कृष्णचरित' महाकाव्य सेहो मैथिली साहित्यक इतिहास मे नव स्वरूप बना कए रखने अछि। कृष्ण परंपरा मे अनेक रचना मैथिली साहित्यहु मे भेल अछि। मुदा से बाल कृष्ण आ युवा कृष्ण पर बेसी। किशोर कृष्ण पर अपेक्षाकृत कम रचना भेल अछि, तें कृष्ण चरितक नूतनता आ भिन्नता पाठक कें बेसी प्रभावित करैछ। खास क' कए महाकाव्यक कथा-विन्यास आ वर्णन कौशल एकरा आओर बेसी नूतन आ आधुनिक बना दैत अछि। परंपरा आ आधुनिकताक कौशलपूर्ण समन्वय महाकवि रंग आ पानि जकां कएने छथि। ताहू मे हिनकर सफलता, हिनकर तीक्ष्ण दृष्टिसंपन्नताक परिचायक थिक।

कृष्णक आने वयस खंड जकां कैशोर्य सेहो बेस वैविध्य सं पूर्ण अछि। मुदा गुरु-कुलक कथा कहबाक क्रम मे आश्रम मे कृष्णक आगमन सं ल' कए गृहगमन धरिक कथा अत्यंत छोट सन काया मे कहि देल गेल, अवसर भेटितहि पात्रक चारित्रिक विकास, वर्षा वर्णन, प्रकृति वर्णन, नगर वर्णन... आदि कोनहुं तत्व कें नहि छोड़ल गेल ई कोनो प्रकांड शिल्पीयहि सं संभव अछि। कोनो प्रसंगक वर्णन उठौलनि आ जतए जतबे आवश्यक, ततबे कहि क' चुप भ' गेलाह। 'कृष्ण चरित' महाकाव्य मे मौलिक रूपें महाकविक उद्देश्य, कृष्णक शिक्षण-कालक चित्रण रहलनि, मुदा प्रसंगानुकूल जतेक पात्र आएल छथि, किनकहु चित्रण मे, कवि कंजूसी नहि कएने छथि। जे जतबे काल लए कथासूत्र मे आएल छथि, हुनका अपन संपूर्णता मे देखाओल गेल अछि। चाहे ओ गुरुपत्नी होथु अथवा देवकी; कुलपति होथु अथवा गुरुपुत्र कें ताक'क क्रम मे आएल ब्राह्मण...सभक चारित्रिक विकासक सीमा खूब विस्तार पओलक अछि। घटनाक विन्यास आ पात्रक औत्सुक्यक चित्रण रसगर, सुदामा आ कृष्णक मैत्रीक वर्णन सेहो पूर्ण रूपें चर्चित भेल अछि।

लोक व्यवहार आ लोकजीवन सं कविक संश्लिष्ट संबंधक सर्वाधिक आ

प्रभावकारी उदाहरण थिक, सातम सर्ग मे खेती-बारी, घर-आंगन, वनिता-ललनाक विरह, पावनि-तिहार, विधि-व्यवहार, आचार-विचार, व्रत-उपासना आदिक वर्णन मे सर्वांश रूपें मिथिलाक नारीयहुक आ पुरुषहुक प्रतिनिधित्व। पितर पक्षक चर्चा हो अथवा सुखरातीक, जितिआ हो अथवा भ्रातृद्वितीया...पूर्ण रूपें फरिछाकए कएने छथि।

मनुष्यक मनोवेगक कोन प्रश्न, जखन जीव-जंतुक मनोवेगक चर्चा प्रारंभ करैत छथि, तं ओतहु अपन चमत्कारिक स्वभाव सं पृथक नहि रहैत छथि। 'नमस्या' मे संगृहीत कविता शीर्षक 'वर्षा-घोष' घोर-वृष्टिक कारण व्याप्त वातावरणक दृश्य-चित्र थिक, जतए कोन-कछेर मे उपोउप पानि भरल अछि, मेघ गरजि रहल अछि, ठनका ठनकि रहल अछि, जनपद अस्त-व्यस्त अछि, मुदा बेंग खुशी सं हर्षनाद क' रहल अछि, मनुष्यक पराभवक ओकरा कोनो ज्ञान नहि, कोनो संवेदना नहि। कविताक एहि लघुकाया मे वर्षा, इन्द्र, बेंग, सांप, गर्जन, तर्जन...आदि-आदि समस्त वस्तु प्रतीक अर्थ मे आएल अछि।

तंत्रनाथ झाक एकटा सर्वप्रचलित, सर्वप्रशंसित कविता थिक 'मुसरी झा'। एहि कविताक स्थान मैथिली साहित्य मे हरिमोहन झाक 'कन्यादान' जकां अछि। जकरा गामघरक हरबाह-चरबाह धरि मोन रखने अछि। ई मोन रहबाक कारण मात्र एहि कविताक सहजता आ पदलालित्य नहि, एकर विषय सेहो थिक। आधुनिक काल मे आबि कए रूढ़िक, अंधविश्वासक, धर्म आ पाखंडक जे स्वरूप पसरल छल, जे कि थोड़-बहुत एखनो अछि, से नव दृष्टिकोणक लोक कें नहि रुचलैक। आ तें पाखंडक पर्दाफाश करैत ई कविता लोक कें बेसी चहटगर लगलैक।

अपन रचना मे उपहासात्मक दृश्य आन' लेल महाकवि अन्योक्ति रीतिक प्रयोग करैत छथि। ई अन्योक्ति रीति हिनकर 'वर्षा घोष', 'मुसरी झा', 'प्रयाणालाप' सन-सन किछु प्रमुख कविता मे आएल अछि। यद्यपि हिनकर गद्य रचना परिमाणात्मक रूपें बड्ड कम अछि, मुदा 'एकांकी चयनिका' हिनकर पांच गोट एकांकीक संग्रह थिक। ई एक्केटा कृति अपन गुणात्मकताक कारणें आन अनेक कृतिक बराबर अछि। हिनकर एहि समस्त एकांकीक मूल मे सामाजिक विडंबना अपन सूक्ष्म रूपें बैसल अछि। जकरा एकांकीकार दू दिशा देने छथि। पहिल दिशा थिक हास्य-व्यंग्य; जतए व्यक्ति वास्तविकता सं आंखि मूनि कए फैंटेसी मे जीबए चाहैत छथि आ एहि फैंटेसीक क्रम मे अपन मूल बाट बिसरि जाइत छथि। सफलताक लेल सर्वप्रथम चाही उद्देश्यकामना आ तदुपरांत तदुद्योग। मुदा एकटा एहेन युवक, जे मात्र फल प्राप्तिक सपना बुनैत रहैत छथि आ फैंटेसी मे जीबैत रहैत छथि, तिनकर मनोदशा कें अतीव सावधानी सं लेखक अपन प्रशंसित एकांकी 'कओलेजक प्रवेश' मे गुंफित कयने छथि। व्यंग्यपूर्ण उपहासात्मक शैली, सहज शब्दावली, कॉलेज परिसर मे नवागंतुक छात्रक कल्पनालोकक निर्माण आदि-आदि बिंदुक प्रस्तुति मनमोहक ढंगें आएल अछि। 'उपनयनक भोज' एकांकी मे गामक भोजनभट्टक लोलुपता, तदर्थ

षड्यंत्र, ग्रामीण जनताक अंधविश्वास आदि-आदि कें अत्यंत सहज ढंगें चित्रित कएलनि अछि, मुदा, लेखकक उपहासात्मक रुखि नुकाएल नहि रहि पबैत अछि, ओहो ओतबे सहजताक संग उभरैत अछि। एकांकीक रचना मे लेखक सामाजिक विडंबना कें एकटा दोसरो दिशा देलनि अछि, आ से थिक 'आत्मसंघर्ष'। हिनकर एकांकी संग्रह मैथिली साहित्यक पहिल एकांकी संकलनक थिक।

मुक्तक सं प्रबंध काव्य धरि, कथाकाव्य सं एकांकी धरि...जे किछु रचना हिनकर छनि, ताहि मे ई, सर्वांश मे ने तं परंपराक विरोधी छथि आ ने पोषक, आधुनिकताक देखौंस मे बताह नहि छथि। मुदा एहि सं धकज'रो नहि उठैत छनि, तें पाखंडक चित्रण मे हाथ नहि कंपैत छनि। वस्तुतः जे छथि, से संतुलित विचारक संग। ने जनवादक मशाल ल' कए अपने घर डाहि लैत छथि, आ ने मुहूर्त्त देखि कए नित्य क्रिया मे जाइत छथि। तंत्रनाथ झा, युगीन समस्त तंत्र-कुतंत्रक सद्-असद् पक्षक नैयायिक छथि...।

मधुप आ द्वादशी

मैथिली साहित्य मे मुक्तक-काव्य लिखबाक परंपरा विद्यापतिए सं तथा प्रबंध-काव्य लिखबाक परंपरा मनबोधहि सं प्रारंभ भेल अछि। काशीकान्त मिश्र 'मधुप' एहि विधा मे एकटा नव प्रयोग कएलनि। ई प्रयोग थिक, कविताक माध्यमे कथा कहबाक परंपरा बनाएब। अगहन 1940 ई. मे लिखल कविता 'नवान्न' हिनकर एहि परंपराक प्रायः पहिल कविता हैत। एही तरहक बारह गोट कविताक संग्रह 'द्वादशी' प्रकाशित अछि। एहि मे 1940 सं 1950 धरिक कविता संगृहीत अछि।

ई कालावधि मिथिलांचलक सामाजिक परिवेश कें अद्‌भुत ढंगें प्रभावित कएने छल। विदेशी शासन सं त्रस्त जनमानसक हृदय मे विद्रोही भावनाक उदय सं ल' कए स्वतंत्रताक प्राप्ति अही कालावधि मे भेल। मधुप जनवजीवनक एहि प्रतारणा कें लगीच सं देखलनि। अर्थाभावक जांत मे पिसाइत जनसमूहक अस्मिता, ओकर भावनाक एक-एक चीत्कार कें सुनलनि। सामंती प्रथा सं प्रतारित निम्नवर्गीय लोकक दुर्दशा देखलनि। ई तकरा अपन कविताक कथ्य बनौलनि। एहि समस्त कविता मे कविक विचारोत्तेजना, हिनकर चिंतन-शैली, हिनकर यथास्थितिक अंकन सभ पर विचार करबा सं पूर्व कनेक ओहि अवधिक सामाजिक, साहित्यिक परिवेश पर चिंतन क' लेब अपेक्षित बुझाइत अछि।

कोनो रचनाकारक रचनाधर्मिता युगीन वातावरण आ सामाजिक परिस्थितिक वाहक होइत अछि। मधुप सेहो ओही परिवेशक अवलोकन कएलनि, जाहि परिवेशक अवलोकन ओहि समय किरण, सुमन, यात्री, भुवन प्रभृति लोकनि कएलनि। 1949 अबैत-अबैत यात्रीक 'चित्रा'क प्रकाशन भेल। निश्चित रूप सं एहि मे संगृहीत कविता 1947 सं पूर्वक लिखल थिक, जे मधुपक 'द्वादशी' संग्रहक कविता सभक समकालीन थिक। 1936 सं भुवनक सोलह गोट कविताक संकलन 'आषाढ़' सेहो प्रकाशित भ' चुकल छल। 1943-1944 ई. मे 'मिथिला मिहिर' मे भुवनक किछु कविता 'काल-प्रवाह', 'अन्तर्नाद', 'युगवाणी' इत्यादि प्रकाशित भेल। जाहि मे कवि

समाज मे व्याप्त आर्थिक विषमताक प्रति अपन प्रबल आक्रोश कें व्यक्त कएलनि अछि, 'मुख मे ज्वालामय प्रगति गान' सं 'समताक शंख' फुकबाक आह्वान कएलनि अछि। 1938 ई. मे हिन्दी साहित्य मे रोमांटिक युगक अंत सेहो कहल जाइत अछि। पंत केर युगवाणी (1937) तथा ग्राम्या (1940) मे वस्तुवादी चित्रण खूब भेल, जखन कि कविता बहुत उच्च श्रेणीक नहि अछि। निरालाक 'भिक्षुक' (1921) तथा 'तोड़ती पत्थर' (1935) वस्तुवादी चित्रणक संग-संग श्रेष्ठताक सेहो बोध करबैत प्रकाशित भ' चुकल छल। 1943 ई. मे अज्ञेयक संपादकत्व मे 'तार सप्तक'क प्रकाशन भ' चुकल छल तथा 1951 मे प्रकाशित होअ' वला 'दूसरा सप्तक' मे संग्रहणीय कविताक रचना भ' रहल छल। बंगला साहित्य मे प्रसिद्ध त्रैमासिक पत्रिका सुधीन्द्रनाथ दत्तक 'परिचय' (1931) यूरोपीय साहित्य (अंग्रेजी आ फ्रेंच) सं बंगलाक पाठक कें परिचय करएबाक क्रम मे नव कविताक स्थापना भ' चुकल छल। 1933 ई. मे इंगलैंड मे 'नव कविताक दल' कहि कए एकटा नव दल गठित भ' चुकल छल। एतेटा पैघ परिवेश मे मधुपक मानसिकता स्वच्छंद विचरण करैत छलनि आ अही वातावरणक चित्रण, कवि अपन एहि संग्रह मे कएलनि।

एहि समयक कविताक मूल प्रवृत्ति रहल यर्थाथक चित्रण। यथार्थ कें दू रूपें एहि समय मे चित्रित कएल गेल अछि। पहिल रूप थिक जे निम्नवर्गीय लोक कें, शोषित समुदाय कें अपन दुर्दशाक, अपन शोषणक अभिज्ञान होइत छनि आ ताहि पर ओ व्यथित भ' कए अपन दुर्दशाक गान करैत अछि तथा दोसर रूप थिक जे एहि शोषित समुदाय कें अपन दुर्दशा देखि कए अस्तित्वबोध होइत छनि, स्नायु मे शक्तिक आभास होइत छनि, जाहि सं हुनका शोषकक ढहैत अस्तित्व, जर्जर बुझाए लगैत छनि आ ओ क्रांतिक आह्वान करैत छथि, अपन सामर्थ्यक दोहाइ दैत छथि। सूक्ष्मता सं अवलोकन कएला उत्तर मधुप आ भुवन, किरण, यात्रीक रचना मे अंतर भेटैछ। जखन यात्री कहैत छथि, 'फूसि ब्रह्मा-विष्णु दश दिक्पाल/फूसि श्रुति-स्मृति/...सत्य थिक मानव समाजक क्रमिक उन्नति/क्रमिक वृद्धि-विकास/सत्य थिक संघर्षरत जनताक ई इतिहास...' तखन भुवन कहैत छथि, 'गौरवक गर्व-गढ़ ढाहि देब/नहि क्षमा करब, प्रतिशोध लेब...की कए सकैत अछि लघु निर्बल/देखत लोचन भरि स्वार्थी, खल/ठेहुन टेकत तेजो हिटलर/..., समताक शंख हम फूकि देब...' आ जखन 'माटिक महादेव' कविता मे किरण कहैत छथि, 'बलवान मानवक हाथक बल सं/बैसल छह तों सराइ पर...' तखन मधुप कहैत छथि, 'सविषाद हास मे चन्द्रमाक/ओ घसल अठन्नी बाजि उठल/हम कतए जाउ/अवलंब पाउ/के शरण, घसल जनिकर अदृष्टि...' एहि संपूर्ण कविता मे उद्‌वेलित होइत कविक मार्क्सवादी चेतना एतए परास्त भ' जाइत अछि आ ओ भाग्य (अदृष्टि) क हथउठाइ पर आश्रित भ' जाइत अछि। द्वादशी संग्रहक प्रायः सभ कविता मे करुणेक चित्रण अछि। कविताक समाप्ति सेहो नोरहि सं होइत अछि। एहि संग्रहक बारहो कविता मे निम्नवर्गीय

चरित्रक संग कविक संवेदना ई साबित करैत अछि जे कवि कें समाज मे पसरल कुरीति, अर्थ-संकट, अभाव, समस्या आदि विशेष रूपें प्रभावित कएने छनि। जनसाधारणक दुर्दशाक हेतु हिनका मोन मे सहानुभूति छनि। मुदा किरण, यात्रीक रचना मे जेना शोषणक परंपराक प्रति व्रिदोह छनि, रचनाक पंक्ति-पंक्ति मे क्रांतिक आगि उठैत छनि, भावक बसात पर विद्रोहक झंडा फहराइत छनि तेना मधुपक रचना मे नहि। मधुप शोषित वर्गक लेल केवल कानइ छथि, अनुनय विनय करै छथि, ओकालति करै छथि। हिनकर सर्जना, हिनक विचार द्रोहात्मक नहि भ' कए हकन्न कनैत परिस्थिति कें यथावत स्वीकारि लैत छनि। हिनकर पात्र शोषणक प्रतिरोध मे झंडा उठौने संघर्षरत नहि भ' कए समस्याक आगां गरदनि झुका लैत छनि, आत्म-समर्पण क' दैत छनि। चाहे ओ 'नवान्न' क नीरस झा होथि अथवा 'होरी'क मदनबाबू, 'दौनिबाह'क सुकना हो अथवा 'सेवाक फल'क जितना गोंढ़ि...सब समयक दास थिकनि। समय सं संघर्ष करब किनकहु नियति नहि भ' पबैत छनि। सब, समस्याक आगू अपन प्राणांत क' दैत छनि। नीरस झा सन प्रबुद्ध, शिक्षित पात्र सं ल' कए बुचनी आ सुकना सन निरक्षर व्यक्ति सभक संघर्षशील चेतना मेटाएल छनि। अर्थात् कवि यथार्थक पहिल पक्ष मात्र कें अपना रचना मे साकार क' सकलाह। यथार्थक इएह चित्रण रचना कें विद्रोहात्मक नहि बना कए आक्रोशात्मक बना दैत अछि। आक्रोश आ विद्रोह मे सूक्ष्म अंतर अछि। उदय दुनूक होइत अछि असंतोषहि सं, मुदा एहि असंतोष कें देखि जकर पौरुष जागि उठैत अछि, कोनो पुरान स्थापित मान्यता अथवा विश्वास सं मोह भंग भेला पर जकरा आत्मबोध होइत छैक, जकर भुजबल प्रतिशोधक हेतु फड़कि उठैत अछि, ओ विद्रोही कहबैत अछि आ जे अपन क्रोध कें ओकालतिक जामा पहिराबैत अछि, विलाप-प्रलापक परदा दैत अछि, विद्रोहक झंडा नहि उठा पबैत अछि ओ आक्रोशी होइत अछि। विद्रोह नहि करब महाकवि मधुपक पात्र कें कारुणिक बना दैत अछि, दयनीय बना दैत अछि, सहानुभूति पएबा योग्य बना दैत अछि। कविक लेखनी सं चित्रित पात्रक दशा पर पाठक 'आहा' कहबा लेल बाध्य भ' जाइत छथि।

ई तं भेल महाकविक एहि कविता संग्रहक ओ पक्ष जकरा कारण कविक मार्क्सवादी विचारधारा कमजोर पड़ैत अछि, मुदा एकरा कारणें ई नहि सोचबाक थिक, जे कथाकाव्यक ई संग्रह निंदनीय अछि। संग्रह कैक दृष्टिएं प्रशंसनीय अछि।

कोनहु रचनाक आलोचना मे ओकर आपादमस्तक ऑपरेशन होइत अछि। ओहि ऑपरेशन मे शोणितो बहराइत अछि आ पीजो बहराइत अछि। समुद्र मंथन मे अमृतो बहाराइत अछि आ विषो बहराइत अछि। सफलतम मार्क्सवादी विचारधाराक इएह अभाव एहि रचना-मंथनक अमृत नहि भ' सकल, मुदा तें चन्द्रमा, ऐरावत, लक्ष्मी, इत्यादिक अभाव नहि अछि। मैथिली साहित्यक सेवा मे ई अपन अनेक पोथी सं मैथिलीक भंडार भरैत रहलाह अछि। जाहि मे सं प्रमुख थिक अपूर्व रसगुल्ला,

टटका जिलेबी, शतदल, त्रिवेणी, ताण्डव, त्रिकुशा, कोबर गीत, राधा विरह (महाकाव्य), झंकार, विद्यापति (महाकाव्य) इत्यादि। एक दिश जं शृंगार रस सं ओत-प्रोत हिनक रचना पाठक कें सराबोर क' दैत अछि तं दोसर दिश करुण रस सं परिपूर्ण रचना सभ सेहो हृदय मे साधारणीकरण क' कए ओकरा रचनाक पात्रक संग एकात्मकता स्थापित करबा मे पूर्ण सहयोग दैत अछि। गीत-रचना मे चमत्कार पूर्ण अलंकारिक भाषा-शैलीक प्रयोग करब, हिनकर प्रवृत्ति जकां बुझाइत अछि। अनुप्रास ओ यमक अलंकारक बाहुल्य, पांडित्यपूर्ण शब्द-विन्यासक छटा इत्यादि उपस्थित करबा दिश हिनक विशेष ध्यान रहलनि अछि। अपेक्षाकृत अपन आन रचनाक तुलना मे द्वादशी मे बेसी सरल होएबाक चेष्टा कवि कएने छथि, मुदा एकदम सहज भ' गेल छथि से नहि। तखन छंदबद्ध रचनाक अपेक्षें ई बेसी स्पष्ट अछि। स्पष्टताक सभ सं पैघ कारण अछि रचना मे कथातत्वक सहज प्रवाह। कथातत्व कें कवि एतेक मार्मिक आ नाटकीयताक संग उपस्थित कएलनि अछि, जे पढ़बा काल परिस्थिति जन्य कोनो व्यवधान उपस्थित भेलहुं पर एकाग्रता भंग होयबाक संभावना नहि रहैछ। ओना एहि बारहो कविता मे सं अधिकांश कविता पांडित्यपूर्ण शब्द-विन्यास आ अलंकार बाहुल्यक कारण दुरूह जकां साबित होम' लगैत अछि, मुदा तुरंतहि कथातत्व मे करुण रसक हिलोर मारैत धारा, विवशताक सजीव चित्रण, दैन्य-कुंठा-आत्मवेदना आ संत्रासक अविकल उपस्थापन पाठक कें घीचि कय बाट पर ल' अबैत अछि। 'घसल अठन्नी' कविता मे करुणाक चित्र कवि जतेक मार्मिक ढंगें उपस्थित कएने छथि, से स्पृहणीय अछि। मधुपजीक रचनाक सब सं बलगर पक्ष थिक हिनकर वर्णन शैली। अपन वर्णन शैलीक कारण ई कोनहु रचना मे ततेक ने नाटकीयता ल' अबैत छथि, जे पाठकक समक्ष ओ घटना-चित्र स्पष्ट रूपें उपस्थित भ' जाइत अछि आ पाठक कें रसबोध मे कोनहु टा कमी नहि रहि जाइत छनि। कविता शीर्षक 'नवान्न' मे नीरस झाक चित्र उपस्थित करैत ओकर अल्प वेतनक बखरा कें देखबैत छथि। घर घुरला पर ओकर मनोदशा कें चित्रित करैत छथि, 'बच्चाक माइ कें की कहिअनु/ओ हमर दुःख कें की बुझती ?/चौबीस टका अइ छमाहीक/आधा किरानियें कें देलिऐ/आधा सं डिप्टी साहेब केर कैलहुं पूजा...'

संकलनक बारहो कथाकाव्य 'नवान्न', 'दौनिवाह', 'पापक परिणाम', 'होरी', 'कोनो घर कानब कोनो घर गीत', 'मधुर-मिलन', 'घसल अठन्नी', 'तृप्त-पिपासा', 'सेवाक फल', 'लाइ पर बज्र', 'कोजागराक मखान' तथा 'पुरस्कार' इत्यादि करुणा सं परिपूर्ण अछि। अंत प्रायः सब कविताक करुणहि सं भेल अछि, 'तृप्त-पिपासा'क अलावे। 'तृप्त-पिपासा'क कावेरी एखन मिथिलांचलक घर-घर मे अछि। कावेरीक हृदय मे उठैत अंतर्नाद मिथिलांचलक समस्त कुमारि बेटीक अंतर्नाद थिकै। कावेरीक पिता जगन्नाथ बाबू आ शशिकान्तक पिता श्यामनन्दन बाबूक सेहो कोनो कमी नहि अछि, कमी अछि मात्र शशिकांत सन विद्रोही युवकक, जिनका हृदय मे एहेन बात

उठैत छनि, 'सन्तति विक्रयी पिताक बात/मानबो मानवोचित नहिएं/पशु जकां मनुष्यक हो विक्रय/ओ जरौ राष्ट्र पात्रक कारी...।' आ अंत सेहो, एहि कविताक मिलने सं होइत अछि। संग्रहक सब सं सुकोमल कविता इएह अछि।

एहेन प्रायः पाओल गेल जे कवि प्रकृति चित्रणक बेसी आग्रही छथि, संग्रहक अधिकांश कविता मे तं प्रकृतिक सजीव चित्र अछिए, आनो-आन ठाम प्रकृति-चित्र घिचबा मे कवि आगू रहै छथि। द्वादशीक प्रायः सभ कविता मे ई प्रकृति कें कोनो ने कोनो रूप मे अवश्य उपस्थित कएलनि अछि। 'सेवाक फल', 'घसल अठन्नी', 'दौनिवाह', 'कोनो घर कानब कोनो घर गीत', 'कोजागराक मखान' इत्यादि कविता मे समाजक दुष्चरित्रताक नांगट चित्र उपस्थित कएल गेल अछि। शोषकीय प्रवृत्ति, अस्पृश्यताक भावना, निम्नवर्गीय लोकक प्रति क्रूरता इत्यादिक चित्र स्पष्ट भेल अछि। समस्त कविता अभाव, दैन्य, दुष्चरित्रता, शोषण, अनीति इत्यादिक 'शो-पीस' थिक।

नवतुरिए आबओ आगां

कोनो रचनाकारक वैराट्य रचनाक संख्या सं नहि, रचनाकारक दृष्टिफलक केर विस्तार सं आंकल जाइत अछि। इएह कारण थिक जे मैथिली मे मात्र तीन उपन्यासक बलें यात्री जतेक महान लेखक छथि, ततेक दर्जन आ कि ताहू सं बेसी पोथी लिखि-छपा क' ढेरिया देनिहार लेखक नहि।

यद्यपि कोनो उपन्यासक रीढ़ ओकर कथा तत्वे होइत अछि, परंतु उपन्यासक महत्व कथाक घटना-क्रमक उत्तेजनात्मक तत्व सं नहि, ओकर उद्देश्य सं प्रतिपादित होइत अछि। रचनाकार साहित्य सृजन 'स्वांतः सुखाय' लेल अवश्य करैत अछि। मुदा ओकर सुखक परिकल्पना वैयक्तिक सुखक ठठरी पर नहि होइत अछि। कोनो महान लेखकक 'स्व' संपूर्ण समाज आ परिवेश मे व्याप्त रहैत अछि। समाज-सुख ओकर वैयक्तिक सुख होइत अछि, वैयक्तिक पीड़ा कें ओ जन-समूहक पीड़ा बना क' देखैत अछि, जेना 'सरोज स्मृति' अथवा 'चतुरी चमार' निरालाक मनःलोक मे आकार पओने हैत। जेना कबीरक मोन मे 'सुखिया सब संसार है, दुखिया दास कबीर' अथवा 'चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय' सन-सन भाव उठल हैत। यात्रीक सुख आ दुख अही भावक छल, हुनकर 'स्वांतः सुखाय' समाजक जागरण लेल प्रतिबद्ध भावनाक सुख छल। जनशक्तिक प्रति आस्थावान यात्रीक मोन मे ई भरोस छलनि जे आगिक लुत्तीक कमी समाज मे नहि अछि, ओहि लुत्ती पर पड़ल छाउर कें हटायब आ आगि कें सुनगायब ओ अपन धर्म बुझलनि। एहि आगिक बेगरता कबीरक ओत' सेहो छल आ परवर्ती समस्त प्रतिकामी रचनाकारक ओत' सेहो। अही आगि कें विविध नजरिएं देखल गेल आ कहल गेल 'हो कहीं भी आग, लेकिन जलनी चाहिए'। यात्री ई आगि जरा क' आधुनिक प्रगतिशील (?) जकां मशालबाजी आ नाराबाजीक नाटक नहि कर' चाहैत छलाह। यात्रीक आगिक ई परिकल्पना मसीहा बनबा लेल नहि, समाज कें आलोकमय करबाक लेल छल। आगि

सं निकलल आलोक आ ऊष्मा जं उचित ढंगें 'लोक' धरि पहुंचि गेल, तं बुझू जे आगि सार्थक भ' गेल। आगिक चकाचौंध बला लपट आ आगिक दाहक ताप आम नागरिक लेल उपयुक्त नहि थिक। से जं उपयोगी हेबो करय, तं ओ अन्हार पसार', मे लिप्त मुट्ठी भरि नरपिशाचक आंखि चोन्हराब' लेल अथवा ओकर पाप-व्यूह जराब' लेल। यात्री अही 'सुख' आ अही 'आगि'क अन्वेषक वर्गक पुरोधा छथि, पुरोधा रहलाह अपन रचनाकर्म मे सेहो आ अपन जीवनधर्म मे सेहो।

यात्रीक उपन्यास पर चर्चा करैत काल लोक कें ई बात ध्यान मे राखि लेबाक चाही, जे 'नवतुरिया' आ 'बलचनमा' शुद्ध क' क' मैथिलीक उपन्यास थिक। हिन्दी बला जं 'नई पौध' आ 'बलचनमा'क चर्चा करैत छथि तं करैत रहथु। ई हुनका लोकनिक समस्या थिक जे ओ एहि दुनू पोथी कें हिन्दीक रचना प्रमाणित करबा लेल कोन हथकंडा अपनाबथि, प्रकाशन वर्षक आश्रय लेथि अथवा यात्रीक हस्तलिपि मे ओकर पांडुलिपि प्रस्तुत करथि। मूल बात ई थिक जे ई दुनू पोथी मैथिली मे लिखल गेल, हिन्दी मे दुनूक अनुवाद छपल अछि। लेखकक हाथें अनूदित सामग्री जं लक्ष्य भाषाक साहित्य भ' जाय तं एखन धरि 'खट्टर काका' कें हिन्दीक रचना किएक नहि मानल गेल ? बात अवांतर नहि हो, तं एत' ई पूछबाक उचित अवसर अछि जे हरिशंकर परसाईंक आलावा हिन्दीक स्वातंत्र्योत्तर काल मे हरिमोहन झाक समक्ष ठाढ़ होमय बला व्यंग्यकार कए टा छथि ?...

ओना, सत्य पूछल जाय तं हमरा नजरि मे यात्रीक सभ टा उपन्यास मैथिलीक भने नहि हो, मिथिलांचलक अवश्य थिक। ई मैथिली पाठक-प्रकाशक-लेखकक दुर्भाग्य थिक जे यात्री कें अपना शरीरक रक्त-मांस-मज्जा बाहर देब' पड़लनि। आ हिन्दी समालोचनाक सौभाग्य थिक, जे अनकर दालि-चाउर पर ठकुराइन बनल। कहल जयबाक चाही जे मिथिलांचलेक तीन टा उपन्यासकार यात्री, रेणु, राजकमल हिन्दीक कथा साहित्य मे नव अलख जगौलनि। मुदा अइ विवाद मे पड़ब एखन अभीष्ट नहि...।

मैथिली मे यात्रीक मात्र तीन टा उपन्यास अछि 'पारो' (1946), 'नवतुरिया' (1954), 'बलचमना' (1967)। ओना हिन्दी मे 'नई पौध' (1953) आ 'बलचनमा' (1952) पहिने छपि चुकल छल। मैथिलीक समस्त अध्येता परिचिते छथि जे मैथिली मे प्रकाशनक समस्या सभ दिन सं रहल अछि ?

'पारो'क प्रकाशन सं पूर्व 'निर्दयी सासु', 'पुनर्विवाह', 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'सुशीला', 'मनुष्यक मोल', 'चंद्रग्रहण', 'अगिलही' आदि महत्वपूर्ण उपन्यासक प्रकाशन भ' चुकल छल। चन्द्रग्रहण (1932) क अतिरिक्त प्रायः सभ उपन्यास मे वैवाहिक समस्या, नारी जातिक दीनता, विवाह मे कौलिक मान-मर्यादाक दखलंदाजी सं जीवन-क्रमक सांसत इएह सभ चित्रित होइत रहल। किरण केर उपन्यास मे प्रायः पहिल बेर उपन्यास लेखनक जड़ि नव माटि पकड़बाक नव तरहें चेष्टा कयलक।

यात्रीक 'पारो' कें एहि सामाजिक स्थितिक समक्ष ठाढ़ होयबाक छलैक जतय पैंतालीस बर्खक वयस मे लोक अपन बेटीक उमेरक कन्या सं विवाह करबा मे संकोच नहि करैत छल, जतय नेनपने सं स्त्रीगण कें ई शिक्षा देल जाइत छैक जे 'नांगर रहउक कि आन्हर, लुल्ह रहउक कि अधबैसू, पति थिकैक साक्षात परमेश्वर' (पारो, पृ. 38)। जतय बेटी कें माइ, बिना कोनो अपराधक, अलच्छ आ अशुभ कथा कहय। जतए बेटाक मान-सम्मान रत्न जकां आ बेटीक मोल टल्हा जकां हो, जतय बेटीक बढ़ैत उम्र देखि क' माय बूझय जे हमर कर्म जरल अछि, जतय कोनहुना ककरो संग बेटीक विवाह भ' गेनाइ उद्धार भ' जायब मानल जाए, जतय एक टा बेटा जन्माब'क प्रतीक्षा मे जनी जाति कें दस-दस टा बेटी जन्माब' पड़ैक...सैह छल मिथिला। ओना, आब पचास-साठि बर्खक समय बीत गेलाक बाद, शिक्षा आ मानसिक सामर्थ्यक थोड़ेक वृद्धि भेलाक बाद स्थिति कनेक बदलल अवश्य अछि, मुदा मौलिक चिंतन मे एखनहुं बहुत अंतर नहि भेलैक अछि।

तं, अही चरित्रक मिथिला मे 'पारो' उपन्यासक पृष्ठभूमि तैयार होइत अछि। ओ समय छल जे समवयसी वरक आकांक्षा-अभिलाषा सामान्य घरक बेटी नहि करैत छल। प्रतीक्षा कयल जाइत छल, नजरि खिराओल जाइत छल जे कोनो धन-पशुक घरनीक अकाल मृत्यु भेल होइक, कहुना हुनक धन-बीत सम्हार' लेल, हुनकर बाल-बच्चा कें पोस' लेल, हुनकर विधवा पीसि आ बूढ़ मायक सेवा-टहल लेल, हुनक पैशाचिक वासनाक तृप्ति लेल लोक कोनहुना अपन बेटी कें सेट क' लिअए। बेटी एतय सं पठाओल तं जेतीह रानी बनि क' राज कर' लेल, मुदा पहुंचिते देरी ओतय भ' जेतीह बहिकिरनी, भनसिया, कठपुतरी, ओछाओन, पिकदानी...आदि।

'पारोक' 'पार्वती' अही अस्तित्वक संग मिथिला मे एक प्रकांड पंडितक घर मे जन्म लेलथि। बिरजूक पीसि सन माइ छलथिन पारो कें। पिताक देहावसानक पश्चात मायक माथ पर बोझ भ' गेलि। बिरजू सन भावुक पिसिऔत भाइ छनि जे परंपराक बान्ह-छेक मे ओझरायल प्रगतिशील छथि। विचार सं बिरजूक तुलना मे पारो कनेक बेसिये प्रगतिशील, कल्पनाशील आ परिवर्तनक आग्रही छथि। मुदा तैयो पंद्रह बर्खक पारोक लेल जाहि ब'रक प्रति पारोक माय प्रार्थना करैत छलीह, से 'दुतीय वर, अवस्था पैंतीसम (मुदा अवस्था छलनि पैंतालीस)। पढ़ल लिखल मामूली, जमीन-जजात पर्याप्त। दलान पर गोर चारिएक बखारी। जूति चलै छनि सतमाइएक, ओही दिस सं वैमात्रे बहिनि मात्र ताहू बेचारोक कपार दुरागमनक उपरांते जरि गेल छलनि। सासुर मे खगता कथुक नहि, तइयो माइए लग रहै छथिन्ह, आर किछु नहि खाली तीर्थ करबाक वै छनि। थिकाह ओ लोकनि गामक डीही, बुधवारे बघांत। चुल्हाइ चौधरि नाम थिकैन्ह, सोनमनि चौधरिक बालक। मातृक ककरौड़, मातृमातृक पिलखबाड़। बहिनोइ छलथिन्ह से सौराठहिक आ सतमाय थिकथिन्ह सुखसेनाक। महेशपुर पांजि छनि। देख' सुन' मे से महाभव्य, खैबा-पीबा

मे भोगीन्द्र। एहन घर-वर पड़ले पाबी।'

से, एहेन घर-वर पारो कें भेटिए गेलनि। जाहि वर कें परमेश्वर मानबाक शिक्षा हुनका देल जाइत रहलनि, पारो हुनका सर्वथा नरपिशाच मानैत रहलीह। आ तइ नरपिशाच लेल एकटा बेटा कें जन्म द' क' पारो परलोक गेलीह। चुल्हाइ चौधरि दोसर कोनो पारो कें कीन-बेसाहि क' घर अनबा लेल, ओकरा रानी आ कि बहिकिरनी आ कि धौरबी बनब' लेल मुक्त भ' गेलाह। जं अइ उपन्यास कें आओर आगू बढ़ाओल जाइत तं फेर सं कोनो पारो आ कि साबो आ कि लच्छो केर कथा तैयार भ' सकैत छल।

अइ व्यवस्थाक बीच गौरवान्वित आ अइ नाली मे सह-सह करैत कीट-जीवन बितब' वला मैथिलक लेल, 'पारो' सजीवन बूटीक रूप मे आयल। जतय पंद्रह बर्खक धीया लेल पैंतालीस बर्खक दुती वर कें कन्याक माइ एना महिमामंडित करथि, ततय यात्री 'पारो' सन उपन्यास लिखबाक साहस कयलनि, ई कनी टा बात नहि छल। जाहि उपन्यास (समाज) मे बिरजूक पीसा आ पिताक अलावा एको टा पुरुष पात्र दू-तीन सं कम विवाह नहि कयलनि, ताहि समाज मे 'पारो' आ 'बिरजू' सन प्रगतिशील विचारक पोषक कें परंपराक आगू विवश देखायब स्वाभाविके छल।

'पारो' सं पूर्व वैवाहिक समस्या पर केंद्रित जतेक साहित्य सृजन मैथिली मे भेल छल अथवा भ' रहल छल, से मूलतः ओहि समयक स्त्री दुर्दशा, जाति पांजिक कारण बहुविवाह, बाल-विवाह, सासु-पुतौहुक आपसी व्यवहार आदि सं संबंधित स्थितिक संकेत मात्र छल। 'पारो' मे पहिल बेर नवताक संकेत अंकुरित भेल। संपूर्ण उपन्यास मनोवेगक चित्रण मे सफल भेल अछि। घटनाक चित्रण कम अछि, घटना सं उत्पन्न मनोभाव कें चित्रित करबा मे यात्री बेसी यत्न केलनि अछि। अइ मनोभावक उदये ई साबित करैत अछि, जे समय आ समाज बदलि रहल अछि, जं समाज नहिओं बदलल अछि, तं समयक अनुसार समाज कें बदलि जयबाक चाही। पारोक प्रकाशनक पांच दशक बादो आई जाहि मिथिला मे प्रेम-विवाह अपन स्थायी आ स्वीकृत स्थान नहि बना सकल अछि, ताहि प्रेम-विवाहक संभावना दिस यात्री स्वतंत्रताक पूर्वहि संकेत कयने छथि। इस्लाम धर्मक कोनो वयःसंधिक बालिकाक मोन कें पढ़बाक प्रयास कयल जाय तं स्पष्ट बूझि पड़ैत अछि ओकर भाव 'अपन जाहि पितिऔत, ममिऔत, मसिऔतक संग हम नंगटे माटि मे लोटाएल छी, सतघरिया आ कनियां-पुतरा खेलाएल छी, से बालक सभ आब जवान भ' रहल अछि आ ओ सभ हमरा मे आब अपन मित्र नहि अपन पत्नी होयबाक संभावना ताकि रहल अछि आ 'खुदा' सं प्रार्थना क' रहल अछि जे ओकर पिता कें हमरा पिता सं बात चलेबाक सद्बुद्धि होउक।' जें कि ई संभावना हिंदू धर्मावलंबन मे नहि अछि, तें पारोक पुछला पर 'भाइए बहिन मे जं बियाह-दान होइतैक तं केहेन दिब होइतै ! कत' कहां दनक अनठिया कें जे लोक उठा क' ल' अबैए से कोन बुधियारी ?'...बिरजू

ओकरा डांटि दैत अछि।

'पारो' जखन प्रकाशित भेल छल, तं खूब हो-हल्ला मचल छल। नेत ई, जे यात्री अनर्थ कयलनि। ममियौत-पिसियौत मे प्रेम संबंध देखा क' कुकर्म कयलनि। 'सुरमा सगुन विचारै ना' कथा पर राजकमल चौधरी पर सेहो एहने आक्षेप छल। मुदा ओहि समयक मैथिलीक पाठक ई नहि बूझि सकलाह जे 'पारो' भाई-बहिनिक प्रेम कथा नहि थिक, असल मे ई कथा थिक मिथिलाक मानवीय दारिद्र्यक, मैथिलक मानसिक अयोग्यताक, बेटी-पोतीक उमेरक कुमारि संग बियाह करबाक राक्षसी वृत्तिक, अइ बियाहक दलाली खा क' मौज-मस्ती कयनिहार घटकराजक नीयतक...। भाइ-बहिनक प्रेम तं एहि उपन्यास में प्रसंगवश आयल अछि। ओना ताहू पर जं सोचल जाय, तं विचारणीय बात ई थिक जे जं कोनो व्यक्तिक माइ, पितिआइन, बहिन, भाउज, भावहु...कोनो तरहक यौन-संबंधक परहेज वाली स्त्री अथवा परदा राख' वाली स्त्री संग कतहु अत्याचार भ' गेल हो, स्त्री ओत' नांगट आ बेहोश पड़ल हो, तं की ओ व्यक्ति एहि सामाजिक शिष्टाचारक विचार कर' लगताह जे भावहुक शरीर मे स्पर्श नहि करब, आ कि माइ-बहिन कें नांगट नहि देखब, ओकर स्पर्श नहि करब, ओकर यौनांग छुआ जायत ? मैथिलीक पाठक कें भाग मनेबाक चाही, जे जाहि पाखंडक समय मे यात्रीक समवयसी आ समकालीन लेखकगण जखन मैथिली मे कीर्तन-भजन आ रति-समागमक कविता-कथा लिखैत छलाह, ताहि विकराल समय मे यात्री 'पारो' लिखबाक साहस कयलनि। 'किरण' ओहि समयक अपवाद रहथि, तकर प्रमाण 'चंद्रग्रहण' (1932) उपन्यासक विषय आ शिल्प अछि।

असल मे 'पारो' मैथिल समाज मे विवाह विसंगति आ बेटीक प्रति अमानुषिक व्यवहार मेटेबाक लेल तथा राजनीतिक शिथिलता तोड़' लेल एकटा प्रभावी स्वर थिक। यद्यपि राजनीतिक गतिविधिक कोनो सकारात्मक प्रतिफल कतहु नहि देखाओल गेल अछि। मुदा नव पीढ़ी ओहि दिश सक्रिय अछि, पुरान पीढ़ी एहि गतिविधि कें 'हु ले ले ले' कहि क' एकरा प्रति अपमानजनक धारणा प्रकट करैत अछि। मुदा आन दू पक्ष पर्याप्त स्पष्टताक संग आ अपन परिणामक संग सोझां अबैत अछि। संपूर्ण उपन्यास पढ़ि गेलाक बाद बिरजू कें डरपोक कहल जाय, प्रगतिशील कहल जाय आ कि पाखंडी कहल जाय से तय करब कठिन भ'ओ सकैत छल। मुदा यात्रीक तीनू उपन्यास पारो, नवतुरिया, बलचनमाक विषय विस्तारक प्रक्रिया पर ध्यान देला सं तय भ' जाइत अछि, जे यात्रीक 'बिरजू' एकदम सं 'यात्री'ए जकां पटु आ प्रवीण अछि। बिरजू कें एतबा बोध छैक जे एखन लोह नीक जकां गरमायल नहि अछि, एखन एकरा पीटब व्यर्थ जायत। तें जखन-जखन उपन्यास मे रूढ़िवादी गप उठल अछि, बिरजू मात्र ओकर शालीन प्रतिकार कयलक अछि। पीसि जखन पारो कें डांट-डपट करैत छथि, पारो कें अभागलि आ आओर की-की ने कहैत छथि, पौती-पथिया बुनबाक लूरिवाली बालिकाक प्रशंसा करैत

आधुनिक समयक युवतीक निंदा करैत छथि, तं बिरजू हुनका शालीनताक संग सभ बातक जवाब दैत अछि। घटनाक विरोध तामसक संग कतहु नहि करैत अछि। ओना जं समग्रता मे देखी तं यात्रीक कोनो पात्र भाषण आ आचरण सं तमसाइत नहि देखाइत अछि। जहिना यात्रीक संपूर्ण तामस हिनकर भाषाक व्यंग्य मे ढरि जाइत अछि, तहिना यात्रीक पात्र केर तामस सेहो ओकर कूटनीति मे बदलि जाइत अछि आ कार्यसिद्धिक बाद ओकर असरि सोझां अबैत अछि। बिरजू संपूर्ण कथा मे बेसी ठां नाराजे रहैत अछि। मुदा सभ ठां परिस्थिति विपरीत रहलाक कारणें निकलि जयबाक बाट ताकि लैत अछि। ध्यातव्य थिक जे पारोक वर जखन राति मे पारो संग समागम लेल जबरदस्ती करैत छथि आ पारो लहू-लुहान भ' क' पड़ा जाइत अछि, वर तैयो पारोक जान छोड़बा लेल तैयार नहि छथि, निसभेर नीन सं जागल बिरजू जखन एहि दृश्य सं परिचित होइत अछि, तखन चौधरि कें पब्लिकली फज्झति करबाक बदला हुनका धोपि क' विदा करैत अछि आ पारो कें शांत भ' क' समझाब' लगैत अछि।

ई सभ टा परिस्थिति यात्रीक दीर्घ रणनीतिक संकेत थिक। कहल जयबाक चाही जे समयानुकूल विकासक प्रक्रिया मे समाजक विकासमान परिस्थिति पर यात्रीक तीनू उपन्यास, तीन टा अलग-अलग उपन्यास नहि थिक, बल्कि तीन खंड में लिखल विकास-परंपराक इतिहास थिक। मिथिलाक विकास वृक्षक थरि बान्हल कृति थिक 'पारो'। एतए सं पृष्ठभूमि बना क' यात्री आगू बढ़ल छथि।

दोसर दृष्टिएं विचार करी तं मिथिलाक समस्त जनपदक लोकाचार समृद्ध आ समादृत भाषा मे एत' प्रभावी ढंग सं चित्रित भेल अछि। 'पारो' रजस्वला भ' गेलीह अछि ई बात खोलि क' कहबाक कोनो विवशता यात्री कें नहि भेलनि। पारो कहैत छनि जे तेरहमे मे पंद्रहमक भ' गेल छी आ पीसि कहलकनि जे खीराक बीया बढ़िम्मा छलैक तैयो किए नहि जनमलै। आ, ई संकेत पर्याप्त भ' गेल। बलात्कारक सूचना देबा लेल पारो शोणित सं भीजल नूआ छुआ देलकनि, घटना संप्रेषित भ' गेल। मजदूर वर्गक जे महिला बिरजू कें नेनपन मे बेटा जकां संबोधित करैत छलनि, से सभ दीअर जकां व्यवहार करैत छनि; पढ़' लिख' लागल बिरजू तं गामक भाउज सभ आब पिरही पर बैसा क' गप कर' लागलनि।...अइ सभ दृष्टांतक संग 'पारो' मैथिल जनपदक जीवन-प्रक्रियाक कोलाज थिक, जतय चूल्हि-चिनबार, अध्ययन-अध्यापन, खेती-बाड़ी, पशु-पालन व्यवस्था, घटकैती, विवाह नीति, सामाजिक प्रेम-घृणा, राग-द्वेष, विवाह- द्विरागमनक विधि-व्यवहार, राज-काजक स्थिति, कोट-कचहरी, नोकर-चाकर, सौतिया डाह, 'टोल-पड़ोसक हस्तक्षेप सं पारिवारिक झंझटिक निबटारा, क'र-कुटुमक सहयोग सभटा अपन-अपन मूल्यवत्ता आ अपन-अपन वैशिष्ट्यक संग एहि उपन्यास मे उपस्थित अछि। पारो गर्तगामी मैथिल जनपदक लेल एक टा ललकार थिक, जे सभ कें सीढ़ी देखा क' ऊपर अयबाक प्रेरणा दैत अछि।

ममियौत-पिसिऔतक प्रेम-संबंध पर एते तं अबस्से कहल जयबाक चाही, जे 'दोनों तरफ लगी है आग बराबर-बराबर'। मुदा बिरजू कें ई स्पष्टतः प्रदर्शित अथवा संकेतित करबाक साहस नहि होइत छैक, बिरजू कतहु परिलक्षित नहि होमय दैत अछि। मुदा पारोक चिट्ठी कें असंख्य बेर पढ़ैए। मनोवैज्ञानिक चित्रणक सहारा सं ई बात यात्री स्पष्ट क' सकलाह अछि। मुदा बिरजूक प्रेमक उत्कर्ष कतेक अलौकिक अछि, जे ओ पारोक जीवनक सुखमय-सुरमय माहौलक इंतजाम मे व्यस्त रहैत अछि। दोसर दिस पारोक प्रेम मे साहस अछि। जतय बिरजू परंपरा कें आहत नहि करबाक नेतें सभ आचरण करैत अछि, ओतहि पारोक प्रतिबद्धता जीवन-मूल्य सं जुड़ल अछि, परंपरा जं जीवनक सुख-सौरभ, आकांक्षा-अभिलाषा, जिनगीक सहजता कें आहत करए', तं ओहि परंपरा कें आहत करबा मे पारो कें कोनो शास्त्रीय मतक सुरक्षा मान्य नहि। ओहुना, स्वतः प्रमाणित अछि जे जोखिम उठेबाक दुस्साहस हमरा ओतय स्त्री कें जतेक अछि ततेक पुरुष कें नहि।

सर्वांशतः 'पारो' ई तय करैत अछि जे विवाह संबंधक उद्देश्य जखन प्रेमे थिक, आ प्रेम-प्रसंग मे निषेधाज्ञा आ वर्जनाक गुंजाइश नहि अछि, तखन ई शास्त्रीय विधान जीवनक सहजता लेल कोना ग्राह्य। एकटा विकृत आ घृणास्पद परंपराक समानांतर ममियौत-पिसियौतक ई प्रेम-प्रसंग राखि क' उपन्यासकार पाठकक विवेक कें उद्बुद्ध करबाक प्रयास कयलनि। अहू थाप सं जें कि मैथिल जनपदक आंखि नहि खुजल तें 'नवतुरिया' आयल।

'पारो'क प्रकाशनक पश्चात देश स्वतंत्र भेल। मुदा मिथिला मे व्यापत बेमेल विवाह, बेटी बेचबाक प्रथा, साठि बर्खक बूढ़ संग टाकाक लोभें आ कौलिक श्रेष्ठताक लोभें पंद्रह बर्खक बेटी/भतीजी/पोती/नातिन कें बियाहि देबाक हरक्कति बन्न नहि भेल। स्वातंत्र्योत्तर काल मे देश केर आन-आन भाषा सभ मे जतय सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक उत्थानक तकनीकी प्रक्रिया, शोषण-उत्पीड़न आ सामंतशाही तथा बेकारी-बेरोजगारी, अर्थाभाव-अन्नाभावक कुटिल नीति पर विचार होअए लागल छल, राजनीतिक जागरणक बात होइत छल, ततए मिथिलाक लोक बेटी बेचबाक धंधा मे विर्त्त छल। एहेन विकराल समय मे ओहि बेटीक माइ आ 'यात्री' दुनूक व्यथाक कल्पना कयल जा सकैत अछि। यात्रीक स्थान पर जं कोनो शार्ट-टेम्पर्ड अकबाली सामाजिक कार्यकर्त्ता रहितथि तं ओ मिथिलाक एहेन कुटिल कीट सभ कें नांगट भ' क' गरिअबितथि अथवा कोनो अंग्रेज सिपाही जकां गोली सं दागि दितथि। मुदा यात्री तं से नहि छलाह। ओ तं नीतिपूर्ण ढंग सं समाज कें बदल' चाहैत छलाह।

'नवतुरिया' मैथिली मे लिखल हिनकर दोसर उपन्यास थिक। अहू उपन्यासक केंद्रीय कथा वैवाहिके समस्या थिक। मुदा अइ उपन्यासक नायक कोनो एक टा युवक नहि, पूरा युवाशक्ति थिक। जतय 'पारो' मे समस्या ताकि क' ओहि पर अंगुरी राखि देब' धरि यात्री सीमित रहलाह ओतहि 'नवतुरिया' मे समस्याक विकल्प धरि

पहुंचलाह। खोखा पंडित सन निविष्ट लोक जे, बड्ड स'ख सं अपन नातिनक नाम 'विश्वेश्वरी' रखलनि, उच्चारण मे एहि नाम कें कियो ठेंठ करैत 'बिसेसरी' कहय तं ओहि पर कुढ़ि उठथि। से खोखा पंडित, संस्कृत आ व्याकरणक निविष्ट विद्वान खोखा पंडित, जमीन पर अनधिकृत कब्जा कर' मे, गारा-गारी कर' मे, स्वार्थ-सिद्धिक लेल अपन बाल-बच्चा, बेटा-बेटी, नाति-नातिनक गरदनि काट' मे कनियो नहि लजएलाह। उपन्यासकार क्षुब्ध छथि। एहि चरित्रक विश्लेषण ततेक शानदार ढंगें उपन्यास मे भेल अछि जे पाठक छगुंता मे रहताह जे जं खोखा पंडित विद्वान, तं कुटिल-कसाइक की परिभाषा ? जाहि नातिनक नामक उच्चारणक प्रति खोखा पंडित एतेक सचेत छथि, ताहि विश्वेश्वरीक जीवनक प्रति ओ एतेक दानवीय आचरण कोना करैत छथि, जे चौदह बर्खक नातिनक विवाह पचपन बर्खक बूढ़ चतुरा चौधरि संग तय करैत छथि, जे पांच-पांच विवाह पूर्वहि क' चुकल छथि !

'बमपार्टी' आ एहि पार्टीक नेता दिगम्बर मल्लिक आ एहि युवावर्गक आन सदस्य महेश्वर झा, गोनउड़ा, हेहुआ, बलभद्र मिश्र, वाचस्पति...हिनका सभक शालीनता, प्रगतिशीलता, उग्रता, हिनका सभक विद्रोही स्वर, अनाचारक प्रति हिनका सभक विरोध...ई सभटा चित्र एहि उपन्यास मे भकरार भ' क' सोझां आयल अछि। अइ समय धरि हिन्दी मे हिनके उपन्यास 'रतिनाथ की चाची', 'बाबा बटेसरनाथ', 'बलचनमा' आदि आबि चुकल छल।भारतक बृहत् परिदृश्य मे जीवनक एहि प्राचीन कुरीति सभ कें बिसरि क' लोक पैघ-पैघ विसंगति सभ पर विचार कर' लागल छल, स्वाधीनताक छओ-सात बर्ख बितलाक बादो भारत मे स्वाधीनता सन कोनो बात बुझाइत नहि छल।

असल मे मनुष्य वैयक्तिकता सं मुक्त भेने बिना व्यापक सामाजिक संदर्भ सं जुड़ि नहि पबैत अछि। तें आत्महितार्थ मनुष्य सामाजिक अनुशासन स्वीकार करैत अछि। मुदा जखन परिस्थिति ओकरा विवश क' दैत छैक, विक्षुब्ध-कुंठित-अपमानित आ समाज उपेक्षित क' दैत छैक, तखन ओ विद्रोह करैत अछि। स्वाधीनता संग्राम सं पूर्व भारतक नागरिक जे सभ सपना देखने छल, मुक्ति कामनाक जतेक पैघ महल बनौने छल, तकर पूर्ति स्वातंत्र्योत्तर भारत मे नहि भ' सकल। आर्थिक वैषम्य, बेकारी, अराजकता, अनैतिकता, अमानवीयता, सन विकृत दृश्य सोझां आब' लगलैक। ई समस्त स्थिति भविष्यक प्रति लोक कें आश्वस्त नहि क' सकल। पूरा देश पुनः ओहि स्थिति मे चल गेल, जतय एक दिस सकल सामर्थ्य सं परिपूर्ण अधिंसख्य जनता व्यवस्थाजन्य सुविधा सं वंचित छल, ओतहि मुट्ठी भरि अधिकार प्राप्त व्यक्ति अपन सुख सुविधा जुटब' मे लिप्त छल। स्वाधीनता प्राप्तिक बादक उपन्यासक वस्तु, विषय आ नायक इएह परिस्थिति, एहने घटना आ एहने व्यक्ति भ' रहल छल। ई समस्त स्थिति मिथिलो मे विद्यमान छल, मुदा ओत' ओहू सं पूर्वक समस्या ओहू सं विकराल मुंह बौने छल। यात्रीक स्थिति तं ई छलनि जे पहिने पोन पर फाटल

धोती मे चेफड़ी लगा क' झंपताह, तखन ने अंगना मे टाट लगब' दिस विर्त्त हेताह।

नवतुरिया उपन्यास अइ विकराल स्थितियो मे समकालीन आन विषय धरि केंद्रित नहि भ' पबैत अछि से बहुत गोटे कहत। मुदा यात्री व्यूह मे बाझल आ घेरायल अभिमन्यु जकां एक संग कतेक लड़ाइ लड़ि रहल छथि तकर संकेत 'पारो' मे सेहो देल गेल अछि, 'नवतुरिया' मे सेहो आ 'बलचमना' मे तं सहजहिं। 'नवतुरियाक' विषय पुरान अवश्य अछि, मुदा नवशक्ति पर यात्रीक आस्था एक टा नव निर्माणक संकेत थिक। विश्वेश्वरीक प्रस्तावित व'र चतुरा चौधरि कें घुरा क', विवाह रोकि पुनः कन्याक अनुकूल वर वाचस्पति सं विवाह करौनिहार 'बम पार्टी'क नेता आ ओकर सदस्य सभक नैतिक उत्कर्ष कें एके संग कैकटा ओर-छोर देखौने छथि। 'पारो' मे जतय सभ टा अनैतिक स्थिति कें जेना-तेना सेदि मारि क' चलबाक आग्रह देखाओल गेल, पैंतालिस बर्खक अधबेसू संग पंद्रह बर्खक पारो नित्य प्रति बलत्कृता होइ लए चले गेल, पारो संतानवती भेल, मुदा स्वयं नहि रहल...ई सभटा अघट घटल, उपन्यासक नायक अथवा उपन्यासकार किछु नहि क' सकलाह। मुदा 'नवतुरिया' मे ओ सभ किछु क' सकलाह, जे ओ कर' चाहैत छलाह अथवा जे हुनका करबाक चाही छल।

खोखा पंडित, घटकराज, चतुरा चौधरि, मुखिया...सभ कें यात्रीक नवतुरिया पानि पिआ देलकनि, सभ कें नाक मे कौड़ी बान्हि देलकनि, सामाजिक आ वैधानिक दुनू तरहें हिनकर तरुण वर्ग कुटिल पुरान पीढ़ी कें पराजित-अपमानित आ सचेत कयलकनि अछि। मुखियाक बैमानी पर प्रहार भेल, घटकराजक घिनौन कृत्य पर प्रहार भेल, पंडितजीक कुकर्मक तांता टूटल, चतुरा चौधरि बिन बियाहे घुरलाह आ विश्वेश्वरीक विवाह समाजवाद मे निष्ठा रखनिहार युवक वाचस्पति सं भेल।

तरुण पीढ़ीक ई विजय आ प्रसंगवश आयल अनेक घटना, उपघटना, युवाशक्तिक संघटन ई सभटा, उपन्यासकारक भावी संकेत कें द्योतित करैत अछि आ हुनक प्रगतिकामी चेतना कें पुष्ट करैत अछि। जतय 'पारो' मे सद्-असद् दुनू तरहक पात्र अपन-अपन मान्यता मे साफ छल, ककरो मोन मे कोनो द्वंद्व नहि छलैक, ओतहि 'नवतुरिया' मे आबि क' परिस्थिति एक धाप आगू रखलक। एतय नवतुरिया एकदम संशयमुक्त आ साहसी भ' गेल। संगहि वृद्ध आ अराजक पीढ़ी द्वंद्वग्रस्त होमय लागल अछि। मुखिया, पंडित, घटकराज आ चतुरा चौधरि चारू अंतर्द्वंद्वग्रस्त सेहो छथि। हिनका लोकनि कें मोन मे आब संशय प्रवेश कर' लागल छनि। भखरैत पराक्रम कें समेटबाक उद्यम मे व्यक्त भने नहि होथि, मुदा मोन मे संशय होइत छनि।

दोसर दिस यात्रीक नवतुरिया आब पूरा पूरी समाजक कमान अपना हाथ मे ल' नेने छनि। ओ आब पारिवारिक आ वैयक्तिक शोषण सं ल' क' राष्ट्रीय राजनीति धरिक प्रति, वैयक्तिक अंतर्दमन सं ल' क' सामाजिक अनाचारक प्रति, अधिकार

हरण सं कर्त्तव्य बोध धरिक प्रति, सचेत रहैत छनि। तें आब 'बलचनमा' सन 'पकठोस' राजनीतिक स्वर वला पात्रक अवतरण मिथिला मे अनर्गल नहि हैत। आब आन कोनहु तरहक पुरान आ रूढ़िग्रस्त समस्या हो तं ओकरा नवतुरिया देखि लेत। 'बलचनमा' आगू बढ़ए...

'बलचनमा' क प्रकाशन मैथिली मे 1967 मे भेल। हिन्दी में 1952 मे ई छपि चुकल छल। सन् 1967 धरि तं देशक स्थिति की सं की भ' गेल छल। मुदा कालजयी कृतिक समय कहियो समाप्त नहि होइत छैक। डॉ. त्रिभुवन सिंह यथार्थवादी साहित्यक परिभाषा निश्चित करैत बलचनमा कें यथार्थवादी उपन्यास घोषित कयने छथिः 'यथार्थवादी साहित्यक सभ सं पैघ विशेषता इएह होइत अछि जे ओ समाजक मूल मे सक्रिय क्रांतिकारी शक्ति सभ कें चीन्हि क' ओकरा द्वारा बढ़ाओल आंदोलनक उल्लेख करैत पूंजीवादक नाश आ निम्न वर्गक विजय मे पूर्ण आस्था व्यक्त करय, जाहि सं निराशा तथा जीवनक दा हारल निम्न स्तरक लोक में आशाक संचार हो आ ओ लोकनि अपना कें ओहि योग्य बना सकथि, जे समाजक विषम परिस्थिति सभ सं वीरताक संग संघर्ष क' सकथि (हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ. 33)।' अइ अर्थ मे बलचनमा सुच्चा यथार्थवादी उपन्यास थिक।

हेबा लेल अइ उपन्यास मे सामंती वर्गक महिला, मलिकाइनक क्रूरताक चित्रण; मुखियाक अप्राकृतिक मैथुनक हरक्कति, दलित वर्गक दैन्य, सामंत वर्गक कुकर्म, समाजक सामान्य रहन-सहन सभ स्थितिक चित्रण भेल अछि। मुदा मूल रूप सं ई उपन्यास बलचनमाक जीवन-कथाक बहन्ने मैथिली पाठक कें सामर्थ्य देबाक कैप्सूल, दिशा देखेबाक मशाल आ संग रखबाक लेल हथियार थिक। स्वातंत्र्योत्तर भारतक जे दशा छल, निम्न वर्गक लोकक जे स्थिति छल, तकर चित्रण एहि उपन्यासक शरीर थिक, मुदा आत्मा थिक ओइ दैन्य मे सुनगैत लुत्ती, जे बलचनमाक हृदय मे सुनगैत अछि। भारतक गरीब, शोषित आ पीड़ित जनताक स्वर थिक बलचनमा। ताकय चाही तं एतय यथार्थवाद, आंचलिकता, मनुष्यवाद, कृषि आंदोलन, दलित आंदोलन, सामंती शक्तिक पराभव, सामाजिक वैषम्यक समाप्तिक उद्यम सभ भेटि जायत। एहि उपन्यास मे श्रमशील समाजक प्रति आस्था व्यक्त कयल गेल अछि। लेखक श्रमक प्रति आस्था रखनिहार समाजक निर्माण हेतु आग्रही छथि। हिनकर निर्णय छनि, जे किछु भ' जाउक, कमासुते टा खायत। आ, अइ लेल किसान-मजदूर कें संगठित आ संघर्षशील होयबाक आह्वान कयल गेल अछि। जमींदार सं डटि क' रहबाक आ एहि संघर्ष मे जुटल रहबाक स्थितिक निर्माण प्रारंभहि सं लेखक कयने छथि।

तुलना करबा लेल लोक 'बलचनमाक' तुलना 'गोदानक' होरी सं करैत कह' लगैत अछि जे बनलचमा होरी जकां परिस्थितिक दास नहि होइत अछि, धार्मिक अंधविश्वास आ पारंपरिक रूढ़ि मे बाझल नहि रहैत अछि, अपन बांहि पर भरोस

रखैत अछि आ संघर्षक बलें अपन अधिकार हस्तगत कर' चाहैत अछि, अर्थात बलचनमा होरी सं आगू अछि। हमरा बुझने लोक कनेक त्रुटि क' रहल अछि। असल मे बलचनमा, होरी सं नइं, गोबर सं आगूक चरित्र थिक। गोबरक चरित्र विकास मे होरी द्वारा जे-जे बाधा पहुंचल छलैक, तकर गुंजाइश यात्री पहिनहि समापत क' दैत छथि, बलचनमाक पिता प्रारंभहि मे संसार छोड़ि देने रहैत अछि। तहिना बलचनमाक माइ आधुनिक भारतीय नारीक प्रतीक 'धनिया'क विकास क्रमक रूप मे सोझां अबैत अछि। आ तखन तुलनात्मक ढंगे बलचनमा कें 'गोबरक समाधि परक अंकुरी' कहल जायब उचित थिक।

मलिकाइन, फूल बाबू, मुखिया, छोटकी, मलिकाइन, गुनमंती, सुखिया नोकरनी, सबूरी मंडल, दामो ठाकुर, छोटे मालिक, हमीदा, सादुल्ला खां, बंभोला झा, माइ, दादी, रेबनी, रामखेलावन आदि पात्रक मदतिएं 'बलचनमा'क कथा मे विकास आयल अछि। श्रम, कृषि, ईमानदारी, निष्ठा नैतिकता, विवेक, मानुषिकता, मानव-मूल्यक श्रेष्ठता, मानवीय संबंधक उत्कर्ष सभ टा एहि उपन्यास मे नायक आ सहयोगी चरित्रक चरित्रांकन मे व्यक्त भेल अछि। ओकर समस्त जीवन-चर्या, दैनिक क्रियादिक संगें ततेक मनोरम ढंगें ई सब तत्व व्यक्त अछि जे सभ एके संग विकास आ प्रगतिशीलताक प्रति उपन्यासकारक आग्रह, मिथिलाक सामाजिक प्रगति, समाजक बदलैत मनःस्थिति, मिथिलाक जनपद मे बसल लोकाचार, सभक परिचय दैत अछि। चरित्र चित्रण मे यात्रीक लेखनी कें महारत प्राप्त छनि, ओ तं जखन कवितो मे, जतय एकाध पंक्ति सं बेसीक गुंजाइश नहि रहैत अछि, ततहु अपन नायकक चरित्र घीचि दैत छथि, तखन उपन्यासक कोन कथा। खाहे बलचनमा हो अथवा ओकर माइ, दादी, मालिकाइन, जमींदार केओ होउ, सभक चारित्रिक उत्कर्ष आ क्षुद्रता जीवंत भ' उठैत अछि।

'पारो' आ 'नवतुरिया'क तुलना मे 'बलचनमाक' विषय भिन्न अछि, तें स्वभावतः कथा आ चरित्रक संग ट्रीटमेंट सेहो भिन्न अछि। मुदा जेना कि यात्रीक स्वभावक मूल दिशा श्रम, नैतिकता आ मनुष्यताक पक्षधरता दिश जाइत अछि, तें अहू मे से स्पष्ट अछि। नेनपने सं बलचनमा निर्द्वंद्व आ अपन चरित्र एवं संधान दिस उद्यत रहैत अछि। कृषि, पशुपालन, श्रम आ सामाजिक व्यवस्थाक प्रति आस्था, यात्रीक भाषा मे टपकैत रहैत अछि। 'पारो' सं प्रारंभ भेल यात्रीक उपन्यास-यात्रा हल 'बलचनमे' पर किएक अटकि गेल एहि प्रश्नक जवाब मैथिलीक पाठक, प्रकाशक आ कथित महंत-मठाधीशे द' सकैछ।

ओना, एतबा अवश्य भेल, जे यात्री अपन परवर्ती उपन्यास लेखकक लेल बाट बनौलनि आ तें सभ तरहक विषय पर उपन्यास लिखल जाय लागल। नवतुरिया सं ओ जाहि तरहक अपेक्षा कयने छलाह, से हुनकर नवतुरिया देखा देलकनि, मुदा पुरनका तूर एखनहुं हारि मान' लेल तैयार नहि अछि। देखा चाही...

दृष्टिकोण आ काव्य वस्तुक सीमा

1911 ई. मे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ आरसी प्रसाद सिंहक जन्म भेल। विचित्र साम्य अछि, जे दुनू गोटए हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषा मे सृजनशील रहलाह; दुनू गोटए अपेक्षाकृत मैथिली मे परिमाणात्मक स्तर पर कम लिखलनि; कालक्रमे दुनू गोटए मैथिली मे साहित्य अकादमी सं पुरस्कृत भेलाह; मुदा, यात्री जकां, आरसी प्रसाद ने तं दुनू भाषाक विविध विधा मे रचनाशील रहलाह, ने हिन्दी मे यात्री जकां जमि सकलाह। यात्री जकां आधुनिको हैब हिनका सं संभव नहि भ' सकलनि, ने भाषाक स्तर पर आ ने विषयक स्तर पर। प्रायः इएह कारण थिक, जे परवर्ती पीढ़ी मे अपन काव्य दिशाक कोनो प्रभाव-स्रोत ई नहि छोड़ि सकलाह।

आरसी प्रसादक पहिल प्रकाशित रचना थिक 'शेफालिका', जे 'भारती' पत्रिकाक सातम अंक मे 1937 ई. मे प्रकाशित भेल। ई समय देशक नागरिक लेल परतंत्रता प्रतारणाक समय छल। मुदा, आरसी प्रसाद अहू विकराल समय मे छंद, शब्दाडंबर, शृंगार, वाक्‌जाल आदिक संग मैथिली साहित्य मे प्रवेश कएलनि।

साहित्य आम जनताक लेल जीवन-संधान-पथ मे किरणमालाक काज करैत अछि आ साहित्यकार ओकर पथ प्रदर्शक होइत छथि। अथवा एना कही, जे साहित्यकार जन सामान्यक दृष्टि होइत छथि, समाजक सजग प्रहरी होइत छथि। ई तथ्य शाश्वत सत्य थिक आ आरसी प्रसाद एहि बात सं नीक जकां परिचित रहल हेताह। हिन्दी मे 1938 ई. मे हिनकर कृति 'कलापी' आएल। हिन्दीयहु मे 1936 ई. मे मुल्कराज आनन्द आ सज्जाद जहीरक उद्योग सं प्रेमचन्दक अध्यक्षता मे प्रगतिशील लेखक संघक अधिवेशन भेल। छायावादक गर्भ सं नवीन सामाजिक चेतनाक निस्सरण भेल। प्रगतिशील विचार धाराक काव्यसृजन प्रारंभ भ' चुकल छल। किंतु बाट प्रशस्त भ' गेलाक अछैतो, आरसी अपन भक्ति-भावना, कीर्त्तन-भजन, प्रेम-परिकल्पना मे लागल रहलाह।

1958 मे हिनकर कविता मैथिली मे संकलित भ' कए आएल 'माटिक दीप'।

ताधरि हिन्दी मे पांच-छओ गोट पोथी आबि गेल छलनि। 1958 धरि हिन्दी मे तीसरा सप्तक' प्रकाशित भ' चुकल छल। हिन्दी कविता छायावाद, प्रगतिवाद आदिक चौकठि नांघि कए प्रयोगवादक आंगन मे विचरण करैत छल। 1949 मे 'चित्रा' आ 1958 मे 'स्वरगंधा'क प्रकाशन मैथिली कविता कें हिन्दीक समानांतर चलबाक सामर्थ्य द' चुकल छलैक, मुदा आरसी प्रसाद अपन प्राचीन आसन पर बैसल रहलाह। 'माटिक दीप', हिनकर ओहि मान्यता सं आगू नहि ससरल। 1967 ई. मे हिनकर दोसर कृति आएल 'पूजाक फूल'। 1960 सं 1967 धरिक तीस गोट कविताक संग्रह मे अधिकांश कविता 1967 ई. क थिक। एहि संग्रहक प्रायः तीन-चारिटा कविता एहेन हैत, जाहि मे देशक प्रति समर्पण आ भक्तिभाव प्रदर्शित अछि, एकाध टा जीवनोपदेश सं संबद्ध सेहो, अन्यथा समस्त कविता मे ओएह कीर्त्तन-भजन आ विरह-प्रेम आदि अछि। सन् साठिक पश्चात् हिन्दी आ मैथिली दुनू साहित्यक कविता मे आओरो नवता आएल। हिन्दी मे नई कविता आ मैथिली मे नव कविताक युग क्षिप्र गतिएं प्रारंभ भेल। राजकमल, नव ढंगें कविताक परिभाषा देलनि, 'कविता आब नहि अछि नायिका भेद, नख-शिख, सिंगार/कविता नहि अछि रति विपरीतक उलटल ग्रीवाहार/कविता थिक जनजीवनक अग्निप्राण जयघोष'। मुदा कवि आरसी प्रसाद ओतहि अवस्थित रहलाह। रोजी-रोटी लए भोतिआइत जन-जीवनक अंतःपक्ष कें नहि पढ़लनि। स्वतंत्रता प्राप्तिक पूर्वक जनजीवनक अभिलाषाक प्रति अपन रचना मे संवेदनशील नहि भेलाह आ ने स्वातंत्र्योत्तर जनजीवनक शोषण-उत्पीड़नक प्रति साकांक्षे भेलाह। मुदा...

मुदा, दोसर दृष्टिएं आरसी प्रसाद सिंहक मादे ई नहि कहल जा सकैए, जे ई मनुष्यक संवेदना सं सर्वथा निरपेक्ष रहलाह। वस्तुतः मानव जीवनक व्यथा कें मात्र ओकर समस्ये टा सं नहि आंकल जा सकैए। एहि समस्त परिस्थितिक अछैतो मानवीय संवेदना सं प्रेमतत्व कें नहि काटल जा सकैत अछि। राजकमल चौधरी, जाहि मानवीय अंतरंगता, ओकर आत्मदमन, ओकर आत्मशृंगार आदिक चर्चा कएने छथि, ताहि मे प्रेमतत्वक महत्व न्यून नहि अछि। आरसी प्रसाद अपन रचना-संसार मे एहि प्रेम-तत्त्व कें प्रच्छन्न रूपें देखने छथि। यद्यपि हिन्दी साहित्य मे प्रेम मार्ग आ भक्ति मार्ग भारतेन्दु पूर्व आ मैथिली मे मनबोध सं पूर्वक चीज थिक। मुदा आरसी प्रसाद एहि दुनू तत्त्व कें अपना साहित्य मे नव दृष्टिकोणें चित्रित कएने छथि।

हिनकर रचना मे 'प्रेम' अपन विस्तृत आयामक संग आएल अछि आ अही प्रेम सं हिनकर भक्ति भावना, शृंगार वर्णन आ प्रकृति चित्रण निस्सरित भेल अछि। एहि तीनू दिशा मे प्रस्फुटित हिनकर उद्‌गार पूर्ण औदार्यक संग कोमलकांत भावनाक सरल-सहज-सरस अभिव्यक्ति पओलक अछि। एहि समस्त चित्रण मे कवि अपन अंतस् कें अभिव्यक्त करबा मे जाहि तरहें सफल भेल छथि, से हिनकर कला आ साहित्यक प्रति समर्पण; छंदशास्त्रीय, अलंकारशास्त्रीय ज्ञानक उत्कर्ष; कल्पनाशीलताक

चातुर्य आ रचनाशीलता परिपक्वताक द्योतक थिक।

आरसी प्रसाद, वस्तुतः देशदशा आ समाज सापेक्षता कें किछु हद धरि अपन सृजन-संसार मे अनलनि अछि। 'अभियान', 'स्वदेश-वन्दना', 'बाजि गेल रणडंक' आदि किछु एहेन कविता अछि, जाहि मे देशक प्रति कविक समर्पण भाव अपन सुच्चा स्वरूप मे वर्णित भेल अछि, 'आकाश-दीपक', 'आधुनिक' आदि किछु एहेन कविता अछि, जाहि मे समाजसापेक्ष क्रिया-अभिक्रिया कें चित्रित कएल गेल अछि। नवीन गीतिमयता आ मानवीय प्रेम भावनाक चित्रण हिनकर कविताक विशेषता थिक।

हिनकर भक्ति-रचना कें दू कोटि मे बांटल जा सकैत अछि। पहिल कोटि मे ओ रचना सभ अबैत अछि, जतए कवि निर्लिप्त भावें अपना कें निरीह, अशक्य आ शरणागत बना कए अपन उपास्यक प्रबल सामर्थ्यक, क्रिया-कलापक, पूर्व शौर्यगाथाक संग जागतिक समस्या, अपन विवशता, दैन्य आदिक चर्चा करैत छथि। हिनकर एहि कोटिक रचना मे 'मंगलाचरण', 'गोहारि', 'शरणार्थी', 'अश्रुमोचन' आदि कविता सभ अबैत अछि; जतए कवि अपन अनाशक्त समर्पण, उत्कट आस्था अदिक संग ओही देवता कें समस्त सृष्टिक कारण मानैत, हुनकहि शरण मे रत रहए चाहैत छथि। ई समर्पण, विषयक दृष्टिएं यद्यपि हिनकर अंधविश्वास, भग्न क्रियाशीलता आदिक द्योतक हैत, मुदा, कविताक संरचनात्मकता कें अपन समर्पणक उद्वेग मे आंच नहि लागए देलनि अछि। संस्कृत बहुल शब्द वाक्य-विन्यासक अछैतो कविताक श्रुति माधुर्य, अक्षुण्ण अछि। भक्तिपरक हिनकर दोसर कोटिक रचना, 'वीणा वादिनी' कविताक कोटिक रचना थिक। जतए कवि अतिशय उदार भ' जाइत छथि आ 'स्व' सं समष्टि मे प्रवेश करैत देशक निमित्त प्रार्थना करैत छथि। प्रकारांतर सं हिनकर एहि कोटिक रचना मे छायावादक संस्कार ताकल जा सकैत अछि। भक्तिपरक हिनकर दुनू कोटिक रचना मे कवि उपासक आ उपास्यक अभेद्य संबंध स्थापित करबा मे सफल भेल छथि। भक्ति मे पूर्ण वात्सल्यक समावेश करबा मे सक्षम भेल छथि।

प्रेमपरक रचना मे कविक अभिव्यक्तिक सराहना, कतबो कएला पर न्यून हैत। यद्यपि एहि कोटिक बहुत रास रचना मे कवि शब्द-विन्यास मे संस्कृतानुरागी भ' गेल छथि, भावोद्रेकक अनुमाप ताहि तरहें असीम भ' उठल अछि, जे हिनकर ई अनुराग, रससंप्रेषण मे बाधक नहि बनैत अछि। सम्यक् रूपें कवि आरसी प्रसाद सिंहक रचनाक अवलोकन सं ई तथ्य सोझां अबैत अछि, जे हिनकर कविता मे भावनात्मक प्रेम जैव रूप मे सभठाम विद्यमान रहैत अछि, आ कविक काव्यकौशलक स्पर्श सं सब ठाम अपन मौलिक स्वरूप मे जीवंत भ' उठैत अछि। एक दिश अपन किछु कविता मे विभाव, अनुभाव कें उपस्थित क' कए तत्क्षण प्रेमभाव अंकुरित करबैत छथि, तं दोसर दिश पूर्व संचित प्रेम मे वियोगक स्थिति उत्पन्न क' कए

कामदग्धा नायिकाक अंतरेच्छा कें उत्कर्ष दैत छथि। प्रेमपरक कविताक एहि वर्गीकरणक पहिल कोटि मे हिनकर कविता 'गीत', 'प्रतीक्षा' आदि अबैत अछि। एहि दुनू कविता मे राति सं भोर होइत अछि। दुनूक नायिका राति कें अपना-अपना दृष्टिकोणें देखैत छथि। एक कें संयोग छनि, दोसर कें वियोग। कवि, दुनूक मनोभाव कें अपन वाक्चातुर्यक बल पर पूर्ण जीवंतता प्रदान कएलनि अछि। 'प्रतीक्षा'क नायिकाक 'मानक माली रहल मनोरथ बाग उजड़ैत राति भरि', आ 'गीत'क नायिकाक 'लूटल मनसिज चोर रे तन, मन, धन, मान' दुनू भावना कविक काव्य-कौशल सं अनुप्राणित भ' उठल अछि। हिनकर दोसर कोटिक प्रेमपरक जे कविता सभ अछि, ताहि मे मुख्य अछि 'कोना रहि सकै छी', 'घटा देखि कारी', 'एकटा प्रेम-पात' आदि। कविवर आरसी प्रसादक एहि कोटिक कविताक संप्रेषणीयता असीम अछि। कवि एहि कविता सभ मे विरहिणी नायिकाक दग्ध हृदयक कोन सं उठल उद्वेग कें अतीव मर्मस्पर्शी बनौने छथि।

कविक एहि कोटिक कविता कें विश्लेषित करबा काल उदात्त प्रेम आ व्यवस्थाजन्य अभाव दुनू कें ध्यान मे राखि कए चलए पड़त। जे प्रश्न आधुनिक कविताक प्रेक्षण मे मोन मे बेर-बेर उठैत रहैत अछि, तकर साकार स्वरूप हिनका कविता मे उपस्थित अछि। आ ई प्रश्न थिक, जे की व्यवस्थाजन्य विद्रूपता, शोषण, अनाचार प्रपंच, अभाव, बेकारी...एहि समस्त वस्तुनिष्ठताक कारणें आजुक मानव-जीवन सं प्रेम अलोपित भ' गेल ? ...जं से नहि, तं आजुक कविता मे प्रेमतत्वक लेल प्रसंगानुकूलो जगह किएक नहि ? जखन कि आजुक साहित्य समकालीन मानव-जीवनक अनुकृति थिक। कवि आरसी प्रसादक एहि कविता सभक नायिका कें विपन्नता सं बेसी दुःख विरह दैत छनि। हिनका लेल 'प्रिय' क अभाव सभ सं पैघ विपन्नता थिकनि। कविक एहि तरहक चित्रण मनुष्यक रागात्मक संबंधक उत्कर्ष कें आओरो बेसी उंचाइ दैत अछि। नायिकाक एकाकीपनक दर्द कें चित्रित करबा काल कविक उपमान सभ अद्भुत चित्र उपस्थित करैत अछि 'लतरि गेल पानो/फुटल अछि मखानो/सोहनगर लगै अछि गायक बथानो/पोसल छ'ल पड़वा, से भ' गेल जोड़ा/हमहि एसगर, आब चलि आउ अपने'। नारी सुलभ लालसा थिक ओकर मातृत्व, पियाक संग ओकर वास... आ तकरा कवि सद्यः प्रसूता गाय आ जोड़ा पड़बाक उपमान सं द्योतित कएने छथि। पड़वाक जोड़ीक प्रेम अति प्रगाढ़ होइत अछि, जे प्रायः कोनहुं परिस्थिति मे संगहि रहए चाहैत अछि आ गायक मात्सर्य प्रायः सभ प्राणी सं बेसी भावुक होइत अछि। एहि तरहक बिंब उपस्थित करबाक कौशल, कविक अगाध साधनाक द्योतक थिक। से, ई नायिका अही पड़वा जकां सभ किछु बर्दाश्त क' लेतीह, '...मगर, जं अहां, तं, फाटलो पटंबर/करब हम गुजर...'। प्रेमक एहि उत्कर्ष कें कवि अपन आनो कविता मे व्यक्त कएने छथि, जतए नायिकाक मोन प्राण कें मन्मथ आहत कएने छथिन आ प्रवासी पियाक हेतु प्रलाप मे लागल छथि। ओहि वेदनामय

भावनाक एक-एक क्षण पहाड़ बुझाइत छनि। 'अहां संग रहबै ओना तं हजारो/अभावक अन्हरिया बिहुंसि खेपि देबै' सन पंक्ति मे नायिकाक जे समर्पण देखाइत अछि, तकर संपूर्ण विकास अगिला पंक्ति सभ मे होइत अछि 'प्रणय जं प्रलय धरि परीक्षा करय तं/परीक्षा अनल मे सदा दहि सकै छी/मुदा जं घटा पथ-विजन मे न मानय/कहू, मौन-मन हम कोना रहि सकै छी ?'

एकर अलावे कविक किछु कविता व्यक्ति परक छनि, जाहि मे कवित्वक आवा मे पूर्ण रूपें भावना पाकि नहि सकल अछि। मुदा शब्द-विन्यास सं अर्थोत्कर्ष देबाक प्रवृत्ति कें कवि ओतहु नुका क' नहि रखलनि। 'ललित-स्मृति', 'सान्त्वना' आदि एहने कविता सभक प्रतिनिधित्व करैत अछि। ओना 'आकाश दीपक', 'आधुनिका', 'मैथिली' सन-सन कविता कें सेहो व्यक्तिपरक मानल जा सकैए, मुदा एहि कविता सब मे कविक अनुभूति ततेक उत्कर्ष प्राप्त क' लेलकनि अछि, जे ई कविता सभ आब व्यक्तिवादी नहि भ' कए वर्गवादी भ' गेल छनि। ग्रामीण परिवेशक कोनो हरजाहि बालाक चरित्र निरूपण, आधुनिकताक रंगीनी कें अंगीकार कर' मे आ तज्जन्य नाटकीयता आन' मे अपन मौलिकता बिसरि जाए वाली आधुनिकाक प्रवृत्ति, मिथिलाक ललनाक सौंदर्य, गांभीर्य आदिक चित्रण एहि कोटिक कविताक मूल भाव अछि। 'प्रश्न-उत्तर' आ 'विद्यापति वन्दना' सेहो व्यक्तिपरके कविता थिक; मुदा महापुरुषक प्रति भक्ति भावना आ ताहि संगें स्वदेश गरिमाक चित्रण एहू कविता सभ कें शाश्वतता प्रदान करैत अछि।

प्रकृति-प्रेम, कविक हार्दिक उद्गार कें सर्वाधिक प्रभावित कएने अछि। इएह कारण थिक, जे प्रकृति परक कविताक रचनाकाल मे कवि अपेक्षाकृत बेसी मुखर भ' जाइत छथि। 'मेघ पड़ै छै' आ 'पावस-प्रसंग' कविता हिनकर सर्व प्रसिद्ध कविता थिकनि, जकरा सभ वर्गक लोक, लोक गीत जकां कंठ मे रखने अछि। निश्चित रूप सं कविताक एहि सफलता आ प्रशस्तिक कारण, कविक जीवनानुभूतिक प्रति परिपक्व दृष्टिकोण आ कल्पनाशीलताक श्रेष्ठतम कौशल थिक। हिनकर एहि कोटिक कविता सभ मे सं किछु प्रमुख अछि 'पुरिबा बसात', 'शारदीया', 'वर्षागम', 'मधुयामिनी', 'वसन्त आह्वान', 'फागुन' आदि। पुनः ईहो कहब आवश्यक प्रतीत होइत अछि, जे प्रेमक प्रति हिनकर उदार भावनाक गहनता असीम अछि। इएह कारण थिक, जे प्रकृति चित्रण करबा काल सेहो ई नैसर्गिके प्रेम मे बन्हाएल रहैत छथि। शृंगार ओतहु हिनकर पछोड़ नहि छोड़ैत छनि। आ, तें मुक्त रूपें ई प्रकृतिक संग नहि रहि पबैत छथि। प्रकृतियहु कें हिनका प्रेमक उद्दीपनक रूप मे लेबए पड़ैत छनि। ओहि प्रकृतिक छटाक बीच कोनो प्रेम रससिक्त नायिकाक हृदयोद्गार कें चित्रित कर' लगैत छथि अथवा ओहू मे हिनका विरहिनीक आंखि, कामोत्तेजक पवन, मनसिजोद्रेक सं बेसम्हार भेल मोन, मन्मथक बाण सं क्षत-विक्षत भेल नायिका भेटैत छनि। कविक एहि भावना सभक एकाध टा चित्र एना अछि 'कारी-कारी घटा उठै

छै, पाकल जामुन रंग केर/चमकै छै बिजुरी बिजुवन मे, सुधि न रहै छै अंग केर/छने इजोत अन्हार छने मे, बुझि ने सांझ कि भोर रे...'

एहि समस्त चित्रणक अलावे कवि थोड़ बहुत 'गजल' सेहो लिखने छथि, मुदा से सशंकिते भावें। गजलक जे धारा एखन मैथिली मे चलि पड़ल अछि, ताहि सं भिन्न। हिनकर कृति 'सूर्यमुखी' कें साहित्य अकादमीक पुरस्कार सेहो देल गेल।

विधात्मक तोड़फोड़क कथा

युग परिवर्तनक पहिल चोट मानव जीवन पर मुख्यतया दू दिशा सं पड़ैत अछि। पहिल तं ई, जे देशक राजनीतिक स्थिति बदलि जाइत अछि आ दोसर, जे सामाजिक परिवेश उधेसल चल जाइत अछि। अइ उधेसबाक क्रम मे ततेक व्याकुलता रहैत छैक जे लोक आधुनिकताक चकाचौंध मे अपन जमीन बिसरि जाइत अछि, बेचैनी मे कतोक नव-नव पद्धतिक अनुसरण क' लैत अछि। अइ बेचैनी मे बेसी काल इएह होइत अछि जे मनुष्यक अपन थाती हेरा जाइत छैक, दोसर जमीन पर कलमी गाछ जकां पल'बढ़' लगैत अछि, जेना नव धनाढ्यक बालकनी मे गमलाक माटि मे गुलाबक डारि बढ़ैत अछि, फुलाइत अछि। अही क्रम मे संयोगवश किछु अपनहुं विरासत ओकरा संग रहि जाइत छैक, मुदा से संयोगवश, सायास नहि। अइ संयोगवशता आ प्रयत्नशीलताक प्रतिफलन मनुष्य कें जाहि प्रकारक जीवन दैत छैक, से एकटा खींचा-तानी वला जीवन होइत छैक। गमलाक जीवनक संकुचन जखन-तखन मनुष्य कें बेसी आसान बुझाइत छैक। मिथिलांचल मे प्रायः इएह होइत रहल अछि।

युग परिवर्तन सं मिथिलाक मानव जीवन पर इएह द्विमुख चोट पड़ल आ एकर अनुषंग आनो कैक तरहक उनट-फेर भेल। अही उनट फेरक स्थिति मे अपन जमीन तकैत आ गमलाक सुख दिश आकर्षित होइत मानसिक द्वंद्वक धरातल पर गोविन्द झाक रचना संसार बसल अछि। संसारक कोनो भाषाक रचना किएक ने हो, ओकर मूल उद्देश्य आइ इएह थिक जे सामान्य जनजीवन कें ओकर दुर्दशाक दारुण्य ओ देखा दिअए, ओकरा ओकर शक्तिक बोध करा दिअए। विजयदेव नारायण साहीक प्रसिद्ध व्याख्यान 'साहित्य आ साहित्यकारक दात्यिव' मे अइ विषय पर फैल सं विचार कएल गेल अछि। भारतक विभिन्न भाषा कें समेटैत अपन एकटा वक्तव्य मे यू.आर. अनंतमूर्ति कहैत छथि जे भारत देशक साहित्य बाइस भाषा मे एके बात कहि रहल अछि। तमिल उपन्यासकार सु. समुत्तिरम केर 'एक घेरे से बाहर' देखी अथवा ललितक 'पृथ्वीपुत्र' अपन उद्देश्य मे ई कतहु अलग नहि

अछि। जेना कि उपर चर्चा भेल अछि, सामान्य जनजीवनक सर्वांगीन फलक समाजनीति आ राजनीति अही दुनू सं प्रभावित, प्रताड़ित आ नियंत्रित होइत रहैत अछि। देरिदा आ हावरमासक चर्चा करैत भारतक विभिन्न भाषाक साहित्य मे उत्तर संरचनावाद आ उत्तरआधुनिकता पर विचार होअए लागल अछि। मैथिली समाज मे एखन धरि ठीक सं आधुनिकतो नहि आबि सकल अछि। सामाजिक जीवनक आचार संहिताक निर्मातागण एखन धरि मैथिल कें एकटा सुलभ आ मनोनुकूल जीवन जीबए देब' लेल तैयार नहि छथि। ओ वर्ग जे समाज कें अपना नियंत्रण सं चलब' चाहैत अछि, वास्तविक अर्थ मे ओ नियंत्रण प्रताड़ना थिक। एहना मे मैथिल समाज पर उत्तरआधुनिक दृष्टिक कोन कथा, आधुनिक दृष्टि सं विचार करब सेहो एखन अपराध थिक। कहबा लेल मिथिला मे आ मैथिल मे बहुतो परिवर्तन आएल अछि। मुदा से परिवर्तनक भ्रम थिक। एहना मे मैथिली साहित्य जतेक आधुनिक भ' सकल अछि, से मैथिलीक रचनाकारक तीक्ष्ण प्रतिभा, प्रखर जीवनदृष्टि आ प्रगतिशीलताक प्रति, जीवनक गतिकताक प्रति अदम्य साहसक फल थिक। गोविन्द झा अपन वयसक आठम दशक मे आबियो कए ततबा प्रगतिकामी आ आधुनिक छथि जतबा आजुक कोनो युवा रचनाकार छथि।

कोनो रचनाकारक दायित्व चारि स्तर पर बनैत अछि सामाजिक चेतना, पारिवारिक चेतना, मानवीय चेतना, ब्रह्मांडव्यापी चेतना। गोविन्द झाक सृजनशीलताक, दायित्व अइ चारू स्तर पर बेस सावधान छनि। पूर्व मे जाहि समाजनीति आ राजनीति केर चर्चा कएल अछि, ताहि प्रसंग मे ई स्पष्ट क' देब आवश्यक अछि जे केंद्रीभूत भ' कए हिनकर रचना संसार मे राजनीतिक सजगता नहि छनि। मुदा जे छनि, अर्थात् समाजनीतिक सजगता, से ओही राजनीतिक दबावक अनुषंग थिक अथवा ओकर प्रतिफल थिक। बिहारक वर्तमान राजनीतिक स्थितिक सूत पकड़ने गोविन्द झाक बाल्यकालक राजनीतिक स्थिति धरि चल जाउ, तं स्पष्ट भ' जाएत जे देशक अइ उपेक्षित भूखंड मिथिलाक सामाजिक परिवेश की छल आ एखन की अछि.. . ।

गोविन्द झाक पहिल कथा सन् 1947 मे प्रकाशित भेल। जं प्रकाशन वर्षक आधार पर गणना कएल जाए तं उनचास वर्षक सृजन-यात्रा मे हिनकर उपलब्धि पर ध्यान देब' पड़त। मैथिली कविता धारा मे हिन्दीक तर्ज पर अथवा अपन मौलिक दृष्टि सं प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नव कविता आदि आंदोलन आएल। मुदा मैथिली कथा साहित्य मे अइ तरहक कोनो आंदोलनक चर्चा नइं अछि। हिन्दीक 'नई कहानी' जकां मैथिली मे कोनो 'नवकथा' अथवा 'नूतन कथा' आदि पदबंधक प्रचार-प्रसार नहि भेल। नामवर सिंह अपन पुस्तक 'कहानी, नई कहानी' मे लिखैत छथि, 'रूप आ शिल्पक नवीनता सामान्यतः लोकक ध्यान सब सं पहिने आकृष्ट करैत अछि ...शिल्प कें ल' कए नव प्रयोग करबाक प्रवृत्ति आजुक कविए जकां कथाकारो मे

अछि आ कविता जकां किछु कथो मात्र प्रयोगक लेल लिखल गेल।... शैलीक अतिरिक्त कथाक आंतरिक रूपो मे बहुत परिवर्तन भेल अछि। अइ बीच कथाक रूप एतेक विस्तृत भ' गेल अछि जे बहुत रास निबंध, स्केच आ रिपोर्ताजो कथाक सीमा मे आबि गेल अछि। कौखन अइ साहित्य-रूपक सीमा एक-दोसराक भीतर एते दूर धरि चलि जाइत अछि जे ओकरा अलगाएब कठिन भ' जाइत अछि। एक्के रचना कखनहुं स्केच थिक आ कखनहुं निबंध। ...जे छोट-सन बात पुरान कथाकार लेल अपर्याप्त छल, ओकरे नव कथाकार कथाक लेल पर्याप्त मानि लेलनि अछि आ फेर ओकरा भीतर सं ओ लोकनि कथाक लेल कथानकक विभिन्न दिशाक विकास कएलनि अछि।'

मैथिली कथा साहित्य मे साहित्य-रूपक ई सीमा हरिमोहने झा तोड़ि देने छलाह। हुनकर गद्य लेखन पर जं ध्यान देल जाए तं अइ सूक्ष्म पठनक दर्शन भ' सकैत अछि। हुनकर अनेक निबंध अछि जकरा कथा कहबा मे कोनो भांगठ नहि। अहिना हुनकर कथोक प्रसंग कहल जा सकैत अछि। तात्पर्य ई, जे जं हिन्दी जकां मैथिलीयहु मे कथा-आंदोलन ताकल जाए तं शिल्पक स्तर पर आ विषयक स्तर पर 'नई कहानी' क तर्जक कथा हरिमोहन झाक रचना संसार मे भेटि जाएत। मुदा जें कि मैथिली मे अइ सभ प्रकारक आलोचना नइं लिखल गेल अथवा मैथिलीक कथाकार लेखन कार्यक संग-संग झंडा ल' ल' कए जुलूस नइं बहार कएलनि, तें मैथिली कथा, मात्र मैथिली कथा रहि गेल। बहुत भेल तं कतहु-कतहु 'आधुनिक मैथिली कथा' लिखा गेल।

सीमाक ई अतिक्रमण आ विधाक ई तोड़-फोड़ गोविन्द झाक गद्य लेखन मे बेस जकां देखाइत अछि। आइ सभ भाषा मे एहेन रचनाकारक कमी नहि अछि जे निरंतर अपन पोथीक संख्या बढ़ब' मे आम-तेतरिक कोन कथा, गूलरि-कठजामुनक कथा लिखि-लिखि ढेरि लगा रहल छथि। पोथीक अइ तरहें बढ़ैत कंकोरबियान देखि कए एकटा विद्वान कहने छथि पहिने लोक एगारह गोट पोथी पढ़ि कए एक गोट पोथी लिखैत छल आ आइ लोक एक गोट पोथी पढ़ि कए एगारह गोट पोथी लिखैत अछि। ओना सत्य तं ई अछि जे आब ओहो एक गोट पोथी पढ़बाक आवश्यकता लोक नइं बुझैत छथि। एक गोट पोथी देखि कए एकैस गोट पोथी लिखए बैसि जाइत अछि। गोविन्द झा मैथिली लेखनक ओहेन रचनाकार मे सं छथि जे असंख्य पोथी पढ़लाक बाद एक गोट पोथी लिखए सोचैत छथि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा पर समान अधिकार रखनिहार रचनाकार गोविन्द झाक दखल आनो-आन भारतीय भाषा साहित्य आ लिपि पर छनि। उनचास वर्षक सृजन संधान मे मात्र दू गोट कथा संग्रह (सामाक पौती, नखदर्पण), तीन गोट नाटक (बसात, रुक्मिणी हरण, अंतिम प्रणाम), एक गोट जीवनी (उमेश मिश्र), एक गोट उपन्यास (विद्यापतिक आत्मकथा) तथा एक गोट मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोश प्रकाशित छनि। अइ मे सं

कैकटा पोथी अथवा पोथीक अंश भिन्न-भिन्न भाषा मे अनूदितो छनि। ओना लिखबा लेल ई ढेरी रास कविता सेहो लिखलनि। मुदा जें कि कविता प्रकाशित नइं करौलनि, कविक रूप मे नइं जानल गेलाह। बहुत कम लिखि कए मान्यताक अइ शिखर पर पहुंचि जाएब, गोविन्द झाक रचनाधर्मिताक स्तर कें रेखांकित करैत अछि।

विषयक स्तर पर पूर्वहु कहल जा चुकल अछि जे हिनकर रचना संसार बेसी काल समाज, परिवार आ व्यक्तिक चारू कात घुमैत रहैत अछि। राजनीतिक परिवेश पर हिनकर लेखनी नहिए जकां चलल अछि। जं कतहु चललो अछि तं नव धनाढ्यक फोंक अहंकार आ ओहि वर्गक सांस्कृतिक विकृति कें उघार कर' लेल संक्षेप मे ओकर कुरूपता, ओकर वीभत्सता उजागर क' देने छथि। ई कहब आवश्यक होएत जे एहि कार्य मे हिनका पर्याप्त सफलता भेटलनि अछि आ तकर मूल श्रेय हिनकर कथा शिल्प कें जाइत अछि। हिनकर कथा लेखनक बेसी विषय मिथिलाक सांस्कृतिक ह्रास, मानव मूल्यक लोप, अमानवीय वातावरणक निरंतर वृद्धि पर केंद्रित अछि। अइ क्रम मे हिनका बेसी काल इतिहास, पुराणक नायक मोन पड़ैत रहैत छनि। अपन अति प्राचीन परंपरा आ समकालीन जीवनक विकृति कें मिलाकए कथाकार गोविन्द झा एकटा ईमानदार अन्वेषक जकां विकृतिक प्रेरणादायी सूत्र तकैत रहैत छथि। हिनकर अधिकांश कथाक अभिव्यक्ति शिल्प, कथावाचनक शिल्प मे अछि जाहि मे वाचक अपन अनुभव सुनबैत रहैत अछि। ई शिल्प, एक्के संग कथाक कथ्य आ शिल्प दुनू पर विचार कर' लेल बाध्य करैत अछि। हिनकर कथाक कथावाचक आओर कियो नहि, कथाकार स्वयं छथि, जे प्रथम पुरुष एक वचन मे बात कहैत रहैत अछि। कथा मे अपन अनुभूत घटनाक विवरण सुनबैत कथाकार सतत अपना कें आम जनताक स्थिति मे पेन्ट करैत बुझाइत रहैत छथि। गोविन्द झाक करीब-करीब समस्त कथा हिनकर मित्र, कुटुंब आदिक संग घटल हिनकर घटना जकां अछि। एहेन कथा कमे अछि, जाहि मे स्वयं कथाकारक उपस्थिति नहि हो। जाहि कथा मे हिनकर अपन उपस्थिति रहैत छनि, ताहि मे ई अपना कें सतत अकचकाएल, क्षुब्ध, उपेक्षित, पिछड़ल, आधुनिकताक (?) छूति सं दूर, विकृतिक संक्रमण सं बांचल, अत्याधुनिक आ सुविधासंपन्न नहि रहि पएबाक अपन स्थिति पर किंचित क्षुब्ध मुदा संतुष्ट, तिलिस्मी ढंगें व्यवस्थाक यांत्रिकता मे प्रवेश पाबि लेनिहार कुटुंबादिक चातुर्य पर छगुंतित मुदा स्वयं तेहेन नहि भ' पएबाक कनेको मलाल नहि, एहि चमत्कारक संग सुविधा संपन्न भेल कुटुंबादिक आंखि पर चढ़ैत चर्बी आ ओकर बदलैत मोन पर व्यथित, अइ सुविधा संपन्न लोक द्वारा असहाय व्यक्तिक उड़ाओल जाए वला मखौल पर द्रवित...प्रस्तुत कएने छथि। कथा मे हिनकर एहि तरहें निजी उपस्थिति कथाकारक जीवन दृष्टिक चित्रणक अलावा आओर किछु नहि थिक। अभिप्राय ई नहि जे ई आधुनिकताक प्रति कोनो उपेक्षाभाव आ परंपरा तथा पाखंडक प्रति अपेक्षाभाव रखैत छथि। असल मे आधुनिकताक प्रति बेस झुकाव हिनकर सृजन

आ जीवन मे बुझाइत अछि। मुदा आधुनिकताक विकृतिक पाछू बेतहाशा दौड़बा मे अपस्यांत नहि रहैत छथि, ओकर विकृत आ विद्रूप आचरण अथवा एप्रोच सं परहेज रखैत छथि। तहिना पारंपरिक रूढ़ि, पाखंड, धर्मांधता सं सेहो असंक्रमित रहए चाहैत छथि। किंतु हिनकर एहनो एप्रोच भेटैत अछि जाहि सं स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ई सर्वथा परंपराक प्रति नकार बोध सं आक्रांत नहि छथि। परंपरा मे एखनहुं एहेन बहुत किछु भरल अछि, जे बहुत उपयोगी आ आजुक जीवन कें सहज बनएबा मे अत्यावश्यक साबित भ' सकैत अछि।

गोविन्द झाक कथा लेखनक फलक विस्तार हरिमोहन झा सं रमेश धरिक कथा लेखन मे ताकल जा सकैत अछि। कथ्य आ शिल्पक समस्त सीमाबंध कें तोड़ैत आ विधात्मक बन्हेज कें फानैत हिनकर कथा संसार इतिहास, पुराण, गीता सं ल' कए बम, पिस्तौल, तमंचाक उपयोग धरि पसरल अछि। जादू-टोना, झाड़-फूक, पीढ़ीक संघर्ष, युवा पीढ़ीक प्रगतिकामनाक प्रति सदयता, मानवताक समर्थन, अमानवीयताक प्रति घृणा, धार्मिक पाखंडक खंडन, असहाय वर्गक प्रति सदाशयता, सांस्कृतिक थाती कें सुरक्षित राखि सकबाक प्रयास हिनका कथा मे अपन संपूर्ण शक्तिक संग उपस्थित रहैत अछि। सभ सं पैघ बात जे गोविन्द झाक कथा लेखन एकटा सकारात्मक एप्रोचक कथा संसार थिक जतए अधिकांश कथाक परिणति एकटा सुखद निर्णय पर होइत अछि। संपूर्ण विपरीत परिस्थितिक अछैत कथाक अंत एकटा निर्णय सं होइत अछि आ ओहि निर्णयक एकटा तार्किक आधार होइत अछि। ओ निर्णय चाहे आधुनिकतावादी युवावर्गक पक्ष मे हो अथवा परंपरावादी बुजुर्गक पक्ष मे, ओकर तार्किक आधार सर्वथा मानवीय सरोकार आ मानवाधिकार सं प्रेरित रहैत अछि। एतए एहि मानवाधिकार शब्दक अर्थग्रहण कोनो राजनीतिक सूत्र सं नहि कएल जएबाक चाही।

चर्चा भ' चुकल अछि जे गोविन्द झा एकटा सफल कथाकारक संग-संग एकटा सफल भाषाविद् सेहो छथि। आ तकर उदाहरण हिनकर कथाक भाषा शिल्प भ' सकैत अछि। कथाक शिल्प निर्माण मे गोविन्द झा कतेक चिंतन कएलनि से तं ओएह कहताह मुदा कथा स्वयं जे स्पष्ट करैत अछि ताहि मे शब्द प्रयोगक स्तर पर तं ई साफ देखाइत अछि जे बहुभाषाविद् हएबाक कारणें कतोक ठाम संस्कृत, अंग्रेजी अथवा हिन्दीक शब्द आबि टपकल अछि। मुदा शब्दानुशासन ततेक साधल छनि जे ओकर प्रयुक्ति कोनो ठाम अवैध अथवा अनुपयुक्त नहि बुझाइत अछि। कैकटा कथाक प्रतीकात्मकता हिनकर गद्य कें काव्यमय बनबैत अछि, जे ओकरा बेर-बेर पढ़बाक लेल बाध्य करैत अछि। सस्पेन्स ('एक दुर्लभ जंतुक खोज' सन आओरो कैकटा कथा), निरंतर जिज्ञासा बढ़बैत रहबाक कला, संयोगवशताक तिरस्कार, चित्रणक काव्यात्मकता, संवादक नाटकीयता ई सब मिलि कए कथा कें रोचक, प्रभावोत्पादक आ आकर्षक बनबैत अछि। कहल जा चुकल अछि, जे जाहि विषय

पर कतोक रचनाकार निबंध लिख' लगताह ओहि विषय पर गोविन्द झा बेस आकर्षक आ मनलग्गू कथा लिखि कए प्रस्तुत क' सकैत छथि।

भाषाक स्तर पर हिनकर कथा सभ मे अपूर्व आकर्षण छनि। ओना कहबा लेल किछु पूर्वाग्रही एहनो भेटि जाइत छथि जे कहैत छथि 'गोविन्द झाक कथाक विषये की रहैत छनि जे ओकरा पढ़ल जाए'। ओहेन पाठकक लेल इएह कहल जएबाक चाही जे हुनका अपन सोच विकसित करबाक चाही। आधुनिकता मात्र आगू दौड़ि कए चल जाएब नहि थिक। दौड़ैत काल मोन राख'क चाही जे हम जाहि जमीन पर दौड़ि रहल छी, से जमीन कतेक ठोस अछि। गोविन्द झा सतत् अपन जमीनक निस्सनता मोन रखैत छथि आ निरंतर आगू लेल डेग उठौने रहैत छथि। अइ क्रम मे अपन आंखिओ खोलने रहैत छथि जे अगिला डेग जतए राखब ओतुक्का जमीन कतेक ठोस अछि। ओहि पूर्वाग्रही कें ई मानि क' चल'क चाही जे गोविन्द झा लेस्बियन एटीच्यूड पर आकि आधुनिकतम सभ्यता मे पत्नी बदलबाक प्रवृत्ति पर तं कथा नहि लिखताह। जाहि संसार सं हुनका ने तं कोनो सरोकार छनि आ ने राखए चाहैत छथि, ताहि पर ओ रचना किएक करथु ? समकालीन समय मे बहुतरास वयसाहु लोक एहेन छथि जे किशोर वयसक प्रेमी जकां प्रगतिशीलता आ आधुनिकताक कहरिया बनल फिरैत छथि। एक राति लेल पत्नी बदलि कए स्वाद बदलबाक प्रवृत्ति अथवा एहेने बहुतरास आधुनिक (विकृत) प्रवृत्ति कें ओहो पसिन नइं करताह। मैथिलीक वर्तमान लेखन मे गोविन्द झा सभ सं जेठ पीढ़ीक रचनाकार छथि। परिष्कृत परंपराक रक्षा आ उपयोगी आधुनिकताक अनुगमनक आग्रही रचनाकार गोविन्द झा अइ बातक समर्थक छथि जे ओ संपूर्ण आधुनिकता आ संपूर्ण परंपरा शिरोधार्य हएबाक चाही जे एकटा स्वस्थ समाजक निर्माण करए आ आब' वला पीढ़ी कें एकटा पारदर्शी तथा पवित्र संस्कारक सीख दिअए। ई बात कतहु हिनकर वक्तव्य मे नहि अछि, ई हिनकर रचनाक नवनीत थिक।

आब आबि कए गोविन्द झाक उनचास-पचास वर्षक लेखन पर चर्चा कएल जा रहल अछि मैथिली साहित्यक ई विडंबने थिक। एहेन विडंबनाक मैथिली मे कमी नहि अछि। कांचीनाथ झा 'किरण' क प्रसंग सेहो इएह कहल जा सकैत अछि। तिकड़म तंत्र मे जं ईहो सुरेन्द्र झा 'सुमन' जकां पटु रहितथि तं आइ धरि हिनको कतोक पोथी छपल रहितए आ कतोक पुरस्कार लुटने रहितथि। मैथिली मे बिना संकलित पुस्तक अएने चर्चा नहि होइत अछि आ से अएलनि बहुत बाद मे। फलस्वरूप तीस बर्ख पुरान रचना पर लोक आधुनिक यंत्र सं विचार करब शुरुह कएलक। ओना मैथिली मे विचारे कहां होइत अछि ? दोसर, जे गिरोहवाद हावी रहल, गोविन्द झा कहिओ गिरोह बनौलनि नहि...।

अपन परिवार, मित्र, कुटुंबक संग बिताएल जीवनक एक-एक तंतु मे गोविन्द झाक ओतए कथाक खजाना संगृहीत अछि। आ तकरा संगहि हिनकर प्रखर भाषा

शिल्प, श्रेष्ठ रचना-कौशल सेहो अछि। नाटकीय प्रस्तुति कथाकारक अभिव्यक्ति कें अद्भुत रूपें सशक्त आ प्रभावोत्पादक बनौने अछि। शैल्पिक स्तर पर विधात्मक तोड़-फोड़ हिनकर सृजन संसारक आयाम कें जतेक विस्तार देने अछि, से सहज रूपें ककरहु लेल आकर्षणक विषय भ' सकैत अछि। मिथिलांचलक सर्ववर्गीय, सर्वदलीय आ सर्वजातीय जन समुदाय मे युग परिवर्तनक विकृति, सुकृति जाहि-जाहि विधिएं अपन प्रभाव छोड़लक, आधुनिकताक विकृतिक चोट जतए-जतए पड़ल आ सुकृतिक फूल जतए-जतए फुलाएल, परंपरा आ आधुनिकताक खींचा तानी मे जे-जे नस जतेक तनाएल, नैतिकताक जाहि सीमा धरि हनन भेल, प्रगतिक नाम पर आ नव-नव योजनाक नाम पर पछिला उनचास वर्षक स्वाधीन भारत मे जतेक बकवासपूर्ण कार्य भेल, मानवीय संवेदनाक ह्रास आ मानवीय संबंधक विगलन जाहि तरहक क्षुद्र तथा तात्कालिक स्वार्थक लेल भेल   से सबटा विलक्षण भाषा-शिल्प मे गोविन्द झाक कथा-संसार मे संचित अछि। हिनकर कथा अनुभूत सत्यक सहज संवादक पेटारा थिक, जतए ने तं फोंक कल्पनाक कतहु गुंजाइश देखाइत अछि आ ने संयोगवसात कोनो घटनाक अवतरण। चांस उत्पन्न क' कए कथा मे चकाचौंध अनबाक प्रवृत्ति हिनका ओतए कतहु नहि देखाइछ। आम जन-जीवन सं कथाकारक सरोकार कें चिह्नित करैत गोविन्द झाक कथा, सतत कथा जकां आगूक कथा जानि लेबाक जिज्ञासा बढ़बैत रहैत अछि, कविता जकां फेर-फेर पढ़बाक तगेदा करैत रहैत अछि।

जर्जर अतीत सं मुक्तिक कथा

कथाकार ललित केर संपूर्ण कथा संसार बहिरंग मे मार्क्सवादक स्थूल मांसलता, अंतरंग मे फ्रायडक सूक्ष्मता आ लक्ष्य मे उपनिषदीय अमृत-पुत्र हएबाक आधारभूत संरचना पर ठाढ़ अछि। कहबा लेल तं ललित, राजकमल, मायानन्दक नाम एक संग कहि कए मैथिली मे काज चलि रहल अछि। स्वयं ललित सेहो अइ तीन मे एक नाम और जोड़लनि   उग्रानन्द। मुदा हिनका सब गोटए मे मौलिक भिन्नता अछि। ललित-राजकमल-मायानन्द   कनिएं आगू पाछूक संग एक समय मे रचनाशील छलाह से भिन्न बात, मुदा तीनू कें कतहु एक आरि-खेत नइं छनि। राजकमल आ ललित कें तं एकदम्मे नइं। एके घटना कें तीनू, तीन नजरिएं देखलनि। कथा पात्रक जीवनक सौविध्य लेल जे कोनो सामाजिक मान्यता राजकमलक ओतए बाधक होइत अछि, राजकमल ओकरा तोड़ि ताड़ि कए आगू बढ़ि जाइत छथि, मान्यता रहए ताख पर, मुदा ललितक स्थिति से नइं छलनि। हुनका अंत अंत धरि समाज पर थोड़ेक विश्वास छलनि, यद्यपि हिनको ओतए समाजक घिनौन रूप बहुत अछि, मुदा हिनका तैयो समाजक सत्य-शिव-सुंदर रूपक आवश्यकता छनि। अपन पात्रक जीवनक सौविध्यक बाट आ समाजक किछु श्रेष्ठ अवधारणा हिनका ओतए समानान्तर चलैत अछि। राजकमल जकां ई एकट्ठे नकार बला स्थिति मे नइं छथि। अइ क्रम मे कही तं मायानन्द हिनकर बेसी लगीच छनि। ओना मायानन्दक पात्र सब डेरबुक बड्ड होइत छनि, समाज भय हिनका ओतए बड्ड रहैत छनि। एक्के टा प्रसंग, 'पृथ्वी पुत्र' उपन्यास मे बिजली आ कल्पनाथक देह संबंधक लेल जाए   जं ई प्रसंग मायानन्दक ओतए रहितनि, तं दुनू खूब गुलछर्रा उड़बितए, आ ककरो भाफो नइं लगितइ; राजकमलक ओतए रहितनि, तं ओ दुनूक बिआह करा देने रहितथिन, सठम्-साठ्यम समाचरेत, अर्थात् तों समाज भ' कए हमर सुख-सुविधाक ध्यान नइं रखबें, तं हम व्यक्ति भ' कए अप्पन नियम-केदा अपना लेब। मुदा ललित एहेन स्वेच्छाचारी नइं भेलाह, ओ समाज कें समाजक ठाम रह' देलखिन्ह आ सामाजिक

मान्यता सं इतर काज कएनिहार अपन कथा पात्र कें अपना ठाम। हिनकर रचना मे व्यक्ति-सुविधा जतेक फैल सं स्थान आ मान्यता पौने अछि, आ से बिना कोनो हो-हल्ला मचौने, से लगैत अछि कथाकरक अद्‌भुत धैर्य, इच्छाशक्ति आ साहस तथा लक्ष्य प्राप्तिक आस्थाक परिचायक थिक। सागर जकां शांत-धीर आचरण, नदी जकां प्रवहमान-सलिल भाषा, अर्जुनक तीर जकां एकलक्ष्य संधान, नित नव विषयक अनुसंधान ई सब मिलिकए ललितक कथा संसार कें एकटा आकर्षक फलक दैत अछि, आ सत्ते हिनकर कथा सब मांसल, सूक्ष्म आ उपनिषदीय अमत-पुत्र बनि पड़ल अछि।

से ललित जखन बादक समय मे लिखब बंद क' देलनि, तं तकर कारण पुछला पर कहैत छथि, '...अद्यावधि हमरा मैथिलीक दलबंदी कोनो स्थान नइं देलक। साहित्य अकादमीक संग्रह मे हमर कथा नइं, अन्य भाषा मे अनूदित होब'वला ग्रंथ मे हमर रचना कें कोनो स्थान नइं...किऐ लिखू ? पाइक प्रयोजन नइं, जीविकाक साधन नइं। तखन प्रोपर प्लेसमेंट, ताहू सं आउटकास्ट ? की अइ दमघोंटू बंध्या स्थिति मे अहां लिखब चालू राखि सकैत छी' (विभूति आनन्द कें इंटरव्यू मे देल वक्तव्य)। ई वक्तव्य पढ़ि कए नइं लगैत अछि, जे मैथिलीक अइ चर्चाकार आ संकलक सभक पतिया-प्रायश्चित सात जनम धरि गोंत-गोबर गिरियो क' नइं छुटतै ? अरे बाप रे, हत्यारा थिकथि ई सब... । जखन ललितक हत्या क' दै जाइ गेलखिन्ह, तखन आओर किनकर नइं करताह ? खैर...

ललित वस्तुतः एकटा कथाकार नइं, मैथिली कथा आंदोलनक पुरोधा छथि। मैथिली कथा लेखन कें प्रौढ़ बनएबाक पहिल प्रयास ललितेक ओतए भेल अछि। बिआह-दान, दिअर-भाउज आ उचिती-डहकन सं मुक्ति ललितेक ओतए मैथिली कथा कें भेटलैक। आम जनजीवन, निम्नवर्गीय-निम्नजातीय जनजीवन, जीवन-यापनक विस्तृत वृतांत, परंपरा सं वर्जित जीवनांश आदिक प्रवेश पहिल बेर हिनकहि कथा मे भेल, राजकमल कें घीचि कए मैथिली मे अनबाक श्रेय हिनकहि छनि, मायानन्द कें 'भांगक लोटा' सं विमुख क' कए सही दिशा दिश प्रेरित करबाक श्रेय हिनके छनि।

ललितक कथालेखन वस्तुतः एकटा चमत्कार देखएबाक कथा थिक। कोनो दैवी आ कि जादूगरीक चमत्कार नइं। मात्र ई जे कथा अहां कें सम्मोहित कएने नेने चल जा रहल अछि, चलल जा रहल अछि, अहां मोने मोन सोचि रहल छी, गुनिधुनि मे छी आब की हेतै ? आ कि अचानक ब्रेक, जाः, कथा खतम। 'प्रतीक्षा' कथा पढ़ब शुरू करू आ देख लिअ', प्रतीक्षा टा किऐ प्रतिनिधि, रमजानी, स्वप्न भंग आ कि 'पृथ्वी पुत्र' उपन्यासे किऐक ने हो...सभक समाप्ति स्थल पाठक कें एक टा नव प्रारंभक सनेश देलक अछि।

जे बात राजमोहन झा अपन निबंध 'ललित अर्थात...' मे कहि चुकल छथि, तकरहि फेर सं दोहरएबाक प्रयोजनक नइं छल। मुदा ओही सं दोसर निष्पत्ति निकलैत

अछि, तें बात ओतहि सं प्रारंभ करए पड़त। ललितक कथा भूमि विराट छनि, अत्यधिक उदार छनि। हिनके समकालीन राजकमल आ मायानन्दक विषय-संसार जतेक घनीभूत अछि, ततेक हिनकर नइं। हिनकर विषय-संसार विस्तृत छनि। हिनकर कोनो कथा आपस मे एक दोसरा सं कोनो तरहें संबद्ध नइं रहैत अछि। सब कथा एक दोसर सं अलग, आ भिन्न भूमि पर ठाढ़ अछि। मैथिली कथा मे पहिल बेर हिनके ओतए अवर्ण जातिक आ निम्न वर्गक कथानायकक प्रवेश भेल, आ से प्रवेश एतेक वैराट्‌यक संग, एतेक विस्तृत जीवन-फलकक संग, आ ताहू मे सवर्ण-संभ्रांत वर्गक पात्र कें कात-करट लगौने ई ललितक शैली आ लेखन दृष्टिक उत्कर्षे थिक, जे अइ प्रयोगक स्थापना भ' गेल। ललितक लेखन काल 1950-1964 धरिक अवधि थिक। भारत स्वतंत्र तं भ' गेल छल, मुदा मिथिलाक जनपद मे लेखनक विषय लेल अहू समय धरि पुराने आ जड़िआएले समस्या सब प्रबल छलैक। ताहि समय मे यौन अतृप्ति, यौन कुंठा, अंतर्जातीय यौन संबंध, सरकारी तंत्रक अराजकता, सामंत विरोधी बात आदिक चर्चा सामान्यो वार्तालाप मे सर्वस्वीकृत नइं छल, साहित्य मे तकरा प्रमुखता देब, पैघ साहसक काज छल। ई साहस ललित कएलनि, आ जेना कि ओहि समयक विभिन्न लेखकक संस्मरणात्मक लेख सभ सं स्पष्ट होइत अछि, ललित अपना संग एकटा जोरगर आ सहसगर पीढ़ीक निर्माण सेहो क' लेलनि। ई दीगर बात थिक जे किछु 'खखड़ी' (फोंकिल आ पाखंडी) सभ सेहो हिनका समय मे किछु जनोन्मुख कथा गढ़ए लागल छल, जिनकर चरित्र बाद मे आबि कए स्पष्ट भेलनि। मुदा, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र, उग्रानन्द प्रभृतिक संग हिनकर पीढ़ी, मैथिली कथा कें बेस जकां अद्यतन कएलकनि।

तइ पीढ़ी मे जं राजकमल आ मायानन्दक रचनाक भावभूमि सघन आ ललितक विस्तृत छनि, तं तकर मूल कारण लेखकक निजी जीवन-दृष्टि आ आत्मबोधे थिक। राजकमल, मायानन्द जतए सेक्टर विशेष कें पकड़ि कए ओकर सर्वपक्षीय चित्र घीचि लेबए चाहैत छलाह। ओतहि ललित कम समय मे नमहर दूरी नापि लेबाक अगुताहटि मे (मुदा हड़बड़ी मे नइं आ कोनो अधखड़ू नइं) अपन क्षेत्र कें पर्याप्त विस्तृत कएलनि। ओना अइ पीढ़ीक संग पैघ दुर्भाग्य तं रहल, जे राजकमल रहबे नइं केलाह, ललित रहिओक' नइं रहलाह, आ मायनन्दक कथा लेखन विरल भ' गेल, मुदा, एखनहुं ई बात कहल जा सकैत अछि, जे ललितक रचना संसार जतेक विस्तृत अछि, तकर अवलोकन आबहु लोक कें कर'क चाहिअनि। कथा हो कि उपन्यास, ललितक रचनाक आकार बड़ छोट होइत छनि, एकदम उचित थिक, रचना छोटे हएबाक चाही, मंत्र शैली मे, मंत्र छोट होइत अछि, सूत्र छोट होइत अछि, कुंजी छोट होइत अछि, ओकर प्रभाव विराट होइत अछि, ओकर व्याख्या विस्तृत होइत अछि, ओ प्रकाश आ ज्ञानक एकटा विशाल बाट केर ताला खोलैत अछि। रचनाक छोट हएबाक कारणें हालहि मे राजेन्द्र यादव अपन एकटा लेख मे बाबा

यात्री पर फब्ती कसलनि अछि, मुदा हमरा जनैत, जाहि रचनाकार कें पाठकक संबंध मे अन्यथा धारणा भरल रहैत छनि, जे पाठक कें बूड़ि बुझैत छथि, से की तं रचना कें मोट करबा लेल वाक्‌जाल बढ़बैत छथि अथवा अपन उद्देश्यक व्याख्या मे अनेरे पृष्ठ खर्च करैत छथि। मैथिली मे एहेन रचनाकार नइं छथि। मैथिलीक रचनाकार अपन पाठकक ज्ञान क्षेत्र पर पर्याप्त आस्थावान रहैत छथि।

ललितक समस्त रचना मंत्र शैली मे अछि, आ हिनकर रचना संसार कथा सृजनक नवीन भूमिक पायलट सर्वेक्षण थिक, आ एकटा संकेतो थिक : 'आगूक समयक रचनाकार लोकनि ! देखैत जाउ, कतए-कतए कथा अछि ?' आ अइ मंत्रक उपयोग आगूक कैकटा रचनाकारक सृजन मे भेल अछि। रमानन्द रेणु, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, सुभाषचन्द्र यादव, विभूति आनन्द, तारानन्द वियोगी आदि कथाकारक ओतए ओइ मंत्र, सूत्रक व्याख्या देखल जा सकैत अछि।

भावभूमिक विस्तृति ताक' लेल हिनकर कथा लेखन कें कैक दृष्टिएं देखबाक प्रयोजन अछि। एकदम ढलान पर बहैत लक्ष्य केंद्रित जलधारा सन बहैत आ पसरैत भाषा (बाढ़िक उद्दाम प्रवाह सन नइं, जे बाटक सबटा माटि खंगहारि कए ल' जाइत अछि), जनपदीय शब्द समूहक चयन, शुद्ध पंचकोशीक भौगोलिक परिवेश, समाज सं उपेक्षित-तिरस्कृत आ अस्वीकृत व्यक्ति आ तकर जीवन-यापन पर केंद्रित विषय, तदनुकूल वृत्ति-वातावरण, तदनुकूल चरित्र आ घटनाक संघटन...सभ अर्थें तकैत हिनकर रचनाक विस्तृति देखैत बनैत अछि। स्वयं कथाकार कहने छथि जे हिनकर कथा मे 'प्रेम अछि (लड़ाइ पर), दुर्दम्य क्रूरता मे मनुष्यता अछि (जंगल ओ रस्ता), दुर्दांत दस्युक रक्तलिप्त मन-प्राण मे कोनो प्रेयसीक स्नेह भरल अछि (स्वप्न भंग), कथाक मार्मिकता कें बूझ' लेल पाठक स्वतंत्र अछि।' सत्ते, ललितक कथाक आयाम हिनकर भिन्न-भिन्न कथाक विषय आ चरित-नायकक प्रस्तुतिक आधार पर गनल जा सकैत अछि।

बेसी तं कतेक गनल जाए, पृथ्वीपुत्र क 'बिजली' आ सारंगियाक 'बेला' कें अथवा 'प्रतीक्षा' आ 'मुक्ति'क पत्नी कें नजरि पर ल' कए देखी तं स्त्री जाति द्वारा एतेक सूक्ष्म, सार्थक आ तार्किक विवरण प्रस्तुत करब कनिए टा बात नइं थिक। 'बिजली' विवाहित अछि, मुदा कल्पू मिसर संग ओकर दैहिक संबंध जतेक साहसी, निर्लिप्त, निर्द्वंद्व आ ईमानदार (प्रबल इच्छा शक्ति आ आत्मीय स्वीकार शक्तिक अर्थ मे) अछि, तकर रहस्य-लोक कें अनुभव कएल जा सकैए, एकर व्याख्या असंभव अछि। बेला नृत्यांगना थिक, हरिचरण ओकरा संग 'संगत' करैत अछि, मुदा जाहि प्रतिबद्धता, विचारधारा आ ग्लानिबोधक संग, दुनियाक मुंह पर थूक फेकि कए ओ मरल, तकर व्याख्या कोन शब्द मे हो ? 'मुक्ति' कथा मे पत्नी जाहि हालत मे रुग्ण आ अशक्य पति सं मुक्त होइत अछि आ 'प्रतीक्षा' मे जाहि तरहें स्वयं रुग्न आ अशक्य पत्नी, पति कें मुक्त करैत अछि...अइ दार्शनिक विषय कें कोना,

आ के व्याख्यायित क' सकत ? असंभव अछि...

चेखब कें उद्धृत करैत राजकमल चौधरी एक ठाम लिखने छथि, जे उत्तम कोटिक कथा अपन समाप्ति थल सं शुरुह होइत अछि। ललितक समस्त कथा असल मे समाप्त भेलाक बादे शुरुह होइत अछि। कारण, जा धरि कथा चलैत अछि, ता धरि तं ललितक घटनाक्रम, भाषा आ शैली पाठक कें एतबा अवसरे नइं दैत छैक जे ओ किछु सोचि सकए। घोड़ा आ सवारक संबंध अपना पाठकक संगे ई बनौने रहैत छथि। जा धरि कथा चलैत रहत, कथाकार सवार रहताह, पाठक हिल नइं सकैत छथि, आ जखन कथा समाप्त हएत, तं कथाकार लगाम पकड़ने रहताह, अहां सोचैत रहू, जेना-जेना कथा अहांक भीतर भीजैत जाएत, अहां सोचैत रहू। आ, ई चिंतनशीलता मात्र स्त्री पात्रक वैचित्र्ये टाक लेल नइं, पुरुख पात्रक विवशताक लेल सेहो चालू रहत। सर्वशक्ति-संपन्न कल्पू मिसरक संस्कार सामंती छनि, बिजलीक संग 'यूज एंड थ्रो' वला फरमूला लगा सकैत छला, कोनो स्वजातीय स्त्री कें बियाहि कए आनि सकैत छलाह, आ कि बिजलीए कें बियाहि कए घर बसा सकैत छलाह...। गजब बात अछि, जे ललितक कथाक चरित नायक अथवा नायिका मे समस्त क्षुद्रताक अछैत एकटा संपूर्ण मानवता जीबैत रहैत अछि। अर्थात समाजक यथार्थ सं उद्‌भूत क्षुद्रता सत्य थिक, अइ विकराल स्थिति मे नैतिकता आ मानवताक अवगाहन सुंदर थिक। आ जें कि सत्य आ सुंदर दुनू विद्यमान अछि, तें ई सबटा कथा 'शिव' (कल्याण) केर सनेश सेहो दैत अछि। संपूर्ण अराजकताक अछैत एकटा संशोधित संस्करणक समाजक स्थापना हिनकर कथा मे भेटैत रहैत अछि। 'पृथ्वी पुत्र' मे बिसेखी, गेनालाल, सरूप, छत्तर, जंगबहादुर, बेनी आदि चरित्र जाहि तरहें ललित अंकित कएने छथि, क्षुद्रता, उदारता, स्वीकृति, मान्यता, विवशता आदिक उपचार जाहि ढंगें भेल अछि, भाउजक संग सरूपक बियाह, बिजली आ बेनीक वाक्‌संघर्ष; पंच समुदाय, खेती-बाड़ी, चौर्य कर्मक व्याख्या, पुलिसिया वृत्तिक सूक्ष्मतापूर्ण अध्ययन जाहि तरहें प्रस्तुत कएने छथि, तकर व्याख्या कोनो दर्शन शास्त्रक व्याख्याक संगें संभव अछि। 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासे टा नइं, ललितक समस्त कथाकृतिक मूल्यांकन, जं राष्ट्रीय क्षितिजक कोनहुं भाषा साहित्यक तुलना मे कएल जाए, तं रचना अपन मनोविश्लेषणक प्रधानता आ समाजशास्त्रीय दृष्टिाकेणक आधार पर अगिला पांत मे ठाढ़ होएत। भारतीय साहित्यक कोनो भाषा मे एहेन रचना कम अछि।

सन् सतहत्तरिक आम चुनावक बाद जयप्रकाश आंदोलनक परिणतिक कारिख-चून लागल मुंह देखि भारतक युवावर्ग कें जाहि मोहभंगक सामना करए पड़ल छलैक, ललितक कथा-सृजन मे तकर संकेत छठमे दशक मे भ' गेल छल। 'उड़ान' कथाक कथावाचक आ गिरधर भाइक माध्यमे जाहि विचारधारा आ जाहि कर्मधाराक गप भेल अछि से अइ बातक प्रमाण थिक। मोन मे क्रांतिक आगि अइ पात्र सब कें छैक, मुदा अभाव आ बेकारी कोन तरहें ओकरा लोकनि कें तोड़ैत

अछि से देखि क्षुब्ध होअए पड़ैत अछि। पात्रक पतितपन आ पतितपनाक बीच मे 'कमल' जकां फुलाइत एकटा संभावना, मनुष्यता आ नैतिकताक एकटा किरिण कोना बिहुंसि उठैत अछि ई ललिते क' सकैत छलाह। कहब अनुचित नइं होएत, जे प्रभास कुमार चौधरीक ओतए जे सामंत वर्ग नांगरि सुटका लेलनि अछि आ धूमकेतुक ओतए जे पतित वर्ग कें पावन हएबाक गरिमा भेटि गेल अछि, से ललितेक कथा चिंतनक विस्तार आ ओइ चिनगी सं उठल धधरा थिक।

हिनकर 'रमजानी' कथा मे 'किसान युग' सं 'मशीन युग' मे प्रवेश ताकल गेल। सत्य तं ई थिक, जे ई 'मशीन युग'क आवाहन नइं, व्यापार दिश झुकावक आवाहन छल, जतए पारंपरिक स्रोत पर आश्रित कृषिकर्म आ राजा-दैवीय आपादाक कारणें व्याप्त अविश्वसनीयता सं पराभूत मानव अपन आ अपन पशु मित्रक श्रम पर विश्वास कएलक। जं आन कोनो समृद्ध साहित्यक आलोचना कर्म जकां मैथिलीक आलोचना कर्म समृद्ध रहितए, तं स्वातंत्र्योत्तर काल मे विकसित समस्त आलोचनात्मक टूल्स केर उपयोग, ललितक कथा संसारक मूल्यांकन लेल कएल जा सकैत छल। समाजशास्त्रीय आलोचना पद्धति सं जं ललित केर कथा कृतिक मूल्यांकन हो, तं तय होएत, जे क्रूर आ निकृष्ट सामाजिक पद्धति सं बदहाल भेल मानव कोना-कोना दुर्वृत्ति दिश उन्मुख होइत अछि, ओइ दुर्वृत्ति मे ओ कतेक ईमानदारी सं आ कतेक-क्रूरता सं प्रोफेशनल बनल रहैत अछि, आ ओहि प्रोफेशनलिज्मक अछैत ओ कोना अपन मानवता कें बचौने रहैत अछि, आ सब सं ऊपर, जे एहेन भयावहताक अछैत रचनाकार कोन उद्योग सं एक नवनिर्माणक जोगाड़ फिट करैत रहैत अछि ! 'प्रतिनिधि' कथा मे मनुष्यक दानवता, सर्पवृत्ति आदि कोन तरहें उगैत अछि आ ओही दानवताक बीच 'नेकी कर दरिया मे फेक' कोना अपन प्रबलता अक्षुण्ण रखैत अछि !

ललितक कथा कर्म मे चर्चा खाहे कृषिकर्मक हो अथवा दुष्कर्मक, अपन विवरण आ दृष्टांत मे कथाकार एकदम अद्यतन आ पूर्ण रूपें सावधान तथा व्याख्यात्मक रहैत छथि। पटुआक खेती हो अथवा चौर्य-वृत्ति हो, पाकेटमारी हो आ कि आने कोनो घटना, सौंसे रचनाक पाठक पश्चात लगैत रहैत अछि, जे कथाकार अइ कर्मक सूक्ष्मतम जानकारी रखैत छथि। एहि सूक्ष्मतापूर्ण चित्रणक परिणाम ई होइत अछि, जे कथा अपन जमीन पकड़ने रहैत अछि। अपन वातावरण आ अपन जमीन सं उखड़ि गेलाक बाद, मनुष्य आ विचारधारा दुनू डगमगा जाइत अछि। ललित, अपन कोनो रचना आ रचनाक पात्र कें अइ दुर्घटनाक शिकार नइं होअए देलनि अछि।

आइ जखन ललित नइं छथि, तखनहुं हुनकर कृतिकर्म हमरा लोकनिक सोझां राखल अछि। हुनक मूल्यांकन अइ समस्त आधार पर कएल जाएबाक चाही। एखन धरि जं ललित पर कम लिखल गेल, तं से एकटा गोलैसीक प्रमाण थिक। अइ गोलैसी सं बाहर आबि कए हुनकर मूल्यांकन हएबाक चाही। हमरा तं 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास धरि मे संपूर्ण 'विरचनावाद' आ संपूर्ण उत्तर आधुनिकतावाद देखाइ पड़ैत

अछि। मुदा ताहि सं की, मैथिलीक मठाधीश ई मान' लेल तैयार कहां छथि ?

मनोवैज्ञानिक सत्यक कथा

स्वतंत्रता प्राप्तिक समय धरि राजकमल चौधरी पंद्रह-सोलह बर्खक भ' गेल छलाह। ई उम्र एकटा तरुणक उम्र थिक। मणीन्द्र नारायण चौधरी अर्थात् राजकमल चौधरी नामक तरुण मे अही वयस मे असाधारणता, संवेदनशीलता परिलक्षित छल। उपेक्षा, शोषण, तिरस्कार, असंतोष, आक्रोश...इत्यादि सभ झांट-बिहाड़ि सं टकराइत; सभ अतिक्रमण कें भोगैत, एकटा क्रांतिपूर्ण मिजाजक लेखकक अवतरण भेल, सैह छथि राजकमल चौधरी।

मैथिली साहित्यक आदिकाल सं आइ धरिक इतिहास मे विविध शताब्दीक विविध दशकक विविध साहित्यकारक साहित्य मे काव्यधारा कैक बेर अपन करौट फेरलक अछि, मुदा राजकमल चौधरीक रचनाधर्मिता मे साहित्य करौट नहि फेरिकए एक्कहि बेर, सुरफुरा कए उठि गेल, क्रांतिक स्वर आ विद्रोहक नाराक संग सचिवालयक किरानी मणीन्द्र चौधरी, राजकमल चौधरी बनि गेलाह। जे अपना कें कार्यालयक ललका सालुक मे बान्हल फाइल सं सर्वथा मुक्त रखबाक आग्रही छलाह। ई राजकमल चौधरी अपन असमयक बौद्धिकताक कारणें देशदशा सं अवगत छलाह। स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् देश केहेन हो तकर एकटा मोटा-मोटी रूपरेखा आने जनता जकां हिनकहु मे छलनिहें। असाधारण व्यक्तित्वक लोक, हिनकर चिंतन किछु अजूबा ढंगक रहल हेतनि। इएह चिंतन पारंपरिक संस्कारक इनार सं निकालि कए हिनका उन्मुक्त वातावरणक पोषक राजकमल चौधरीक रूप देलक। स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् पूर्व रचल स्वप्न महल कें ढहैत देखलनि, मनुष्यक अंतस्तल मे जे एकटा नव ढंगक उत्साह छल, शोषण सं मुक्ति पएबाक एकटा कल्पना छल; एहि सब तरहक धारणाक क्षय भ' गेल। पहिने समाज पर अत्याचार विदेशी करैत छल आ पाछां स्वदेशी करए लागल। सामाजिक जन-जीवनक एहि अवमूल्यन कें राजकमल लगीच सं चिन्हलनि। देश मे मात्र टोपी बदलि कए रहि गेल, एकर अलावे आओर कोनो नव बात नहि भेलैक। ई सभ स्थिति तरुण राजकमलक मोन कें व्यथित क' कए राखि देलकनि।

आ हिनकर असाधारण प्रतिभा अपन तरुणाइए मे एहि सभ स्थिति पर गंभीर चिंतन करय लागल, एहि सभ स्थितिक मार्मिक पक्ष कें देखए लागल। स्वतंत्रता नामक कोनो चिड़िया, जे समाजक किछु खास वर्गक चीज छल आ समाजक अति न्यून संख्याक लोकक हेतु आनल गेल छल, राजकमल कें पसिन नहि पड़लनि। सामाजिक प्राणी मोन मे ओएह निराशा, ओएह कुंठा, ओएह असंतोष देखि ई व्यथित भ' उठलाह। आ एकरा ई स्वतंत्रता प्राप्ति नहि कहि कए टोपीक बदलाव अथवा सत्ताक हस्तांतरण बुझलनि। मनुष्य मे व्याप्त एहि असंतोषक निवारण ताक' लगलाह। एहि चुनाव तंत्र, एहि अफसरशाही कें बदलबा लेल आवश्यक छल जन-जागरण, जनता मे, जनताक विचारधारा मे आमूल-चूल परिवर्तन; वस्तुमूल्य, अर्थमूल्य, नीति-मूल्य, वचन-मूल्य मे असाधारण परिवर्तन। चूंकि परिवर्तन एखन तुरंत भेले छल (चाहे केहनो हो) आ ताहू सं पैघ बात जे, नेता, अफसर, पुलिस, शिक्षक, कर्मचारी, पत्रकार, सभ अपन कर्त्तव्य सं विमुख भ' कए सत्ता पक्षक लल्लो-चप्पो मे लगि गेल छल, जाहि सं समाजक पथ-निर्देशक तत्त्व, नीति निर्धारक तत्त्व नांगर भ' गेल छल। एहि परिस्थिति मे आवश्यक छलैक जे समाज कें केओ निर्देशक भेटैक। आब ई भार सम्हार' जोगर मात्र साहित्यकारे टा बांचल छलाह जे जन-जीवन कें उचित निर्देश द' कए उचित बाट पर चलबा लेल प्रेरित क' सकैत छलाह। एकटा साहित्यकार, सैकड़ो सिपाहीक काज करैत अछि। कोनो साहित्यिक संवेदना, चिंतन आ रचनाधर्मिता सं संपन्न व्यक्ति राइफल ल' कए युद्ध मे उतरि जाए अथवा मशाल ल' कए जुलूस मे चल जाए तं ओ मात्र एक व्यक्तिक काज क' सकत, मुदा जं ई व्यक्ति कलम ल' कए साहित्य मे उतरि जाथि तं अगणित 'लाठी' तैयार करबा मे हिनका कोनहु परेशानीक सामना नहि कर' पड़तनि। राजकमल चौधरी मे रचनाधर्मिता रहनि, संवेदनशीलता रहनि आ एहि वस्तुस्थितिक विश्लेषण कर' योग्य क्षमतो रहनि, तें ई सभ काज छोड़ि कए लेखनी पकड़लनि आ जनताक अंतःपीड़ा, ओकर मोह-भंग, ओकर आंतरिक वेदना, ओकर असंतोषक कारण, ओकर दुःस्थितिक चित्र कें अंकित कर' लेल जनताक समीप चल अएलाह, जतए सं ई वस्तुस्थितिक मार्मिक चित्रण करबा मे अपूर्व सफलता प्राप्त कएलनि। ई सफलता, हिनकर उदारवादी विचार, संपूर्ण जन-मानस मे 'स्व' केर चित्र तकबाक प्रवृत्ति, समाजक सर्वांगीन दुःस्थिति कें अपना संग जोड़ि कए, ओकरा भोगि कए चित्रित करबाक परिचायक थिक। संपूर्ण समाजक एहि विकृति कें देखि कए, राजकमल सन विद्रोही रचनाकारक चित्रण केहेन भ' सकैत छल, से ताहि समय मे कल्पना करबा योग्य गप रहल होएत, मुदा आइ देखबा योग्य गप थिक। समाजक एक-एक तंतु रोग सं जर्जर भ' गेल छल। व्यवस्था कुंठाग्रस्त भ' गेल। चतुर्दिक शोषण-प्रपंच-अनास्था-कुव्यवस्था-अविश्वास-असंतोषक दुर्गंध पसरल जाइत छल। मुदा सामाजिक प्राणी निश्चिंत छल, निर्विकार छल, ओकरा लेल ई कोनो अनहोनी गप नहि छल, ठीक

ओहिना, जेना पाइरिया रोग सं ग्रसित मनुक्ख कें अपन मुंहक दुर्गंध अपना नहि लगैत छैक। राजकमल अही दुर्गंध कें, अही रोग कें प्रकाश मे आन'क प्रयास सतत करैत रहलाह। सूतल जनमानस कें ओकर दुर्दशा सं परिचित करबैत रहलाह। राजनीतिज्ञक दृष्टिबोध एतबा बुझि गेल छल, जे आब जनता कें मात्र प्रपंचहि टा सं खुश कएल जा सकैए आ अइ प्रपंच सं परिचय कराकए जनमानसक आंखि खोलब ई अपन कर्त्तव्य बुझलनि। आ एकटा सफल सर्जनक (ठेठ मे सार्जन) रूप मे हमरालोकनिक समाजक तंतु-तंतु कें चीड़ि कए ओकर भीतरी-रोगक डाइग्नोसिस प्रस्तुत कएलनि।

जनमानस कें दृष्टिबोध देबा लेल एतबे यथेष्ट अछि, जे ओ अपन रोग जानि जाए आ रोगक मूल जानि जाए। समाजक जागरण-पथक पहिल सीढ़ी इएह थिक। राजकमल अपना जिनगी मे इएह करैत रहलाह। परंपरा सं अबैत साहित्य-धारा युगीन दुःस्थिति, शोषण, कुव्यवस्था, अनाचार, स्वार्थ-नीति, मानवीय अवमूल्यनक चित्रण नहि क' पबैत छल। ई भारी बोझ उठाब' मे प्राचीन काव्यधारा नंगराए लागल छल। तें राजकमल एहि वाहक कें हटाकए, एकरा कपार पर सं एहि बोझ कें उतारि कए नव काव्यधाराक स्थापना कएलनि, जे एहि गंभीर चिंतनक भाव-बोध कें उघि सकबा मे समर्थ छल। विरोध अनेक तरहें भेल, मुदा जेहेन हुनकर प्रबल इच्छाशक्ति छल, तेहने हुनकर स्थापित साहित्यधारा...कोनो विरोध, कोनो निंदाक बिना परवाहि कएने बढ़ैत रहल...बढ़ैत रहल...बढ़ि गेल।

ओना तं राजकमलक समस्त साहित्यिक विधा मे इएह मोह-भंग, इएह दृष्टि बोध, इएह आत्मदर्शन, इएह जिनगीक कटु सत्य व्यक्त भेल अछि, मुदा, मैथिली साहित्य मे खास क' कए सर्वाधिक सफल विधा कथा-साहित्य रहल अछि। कहबा लए तं अनेक आलोचक लोकनि हिनका बेसी सफल कवि रूप मे मानैत छथि, मुदा हमरा दृष्टिकोणें हिनकर कथा आ कविता दुनू उपरौंझ क' रहल अछि।

भारतीय अन्यान्य साहित्य जकां मैथिली साहित्य कें सेहो, कथा विधा विरासत मे संस्कृतहि सं भेटलैक अछि। मुदा, राजकमलक कथा-साहित्य संस्कृत सं प्राप्त मरौसी खिस्सा मात्र नहि, बल्कि दीर्घकालीन कथात्मकताक विकास परंपरा, पाश्चात्य कथा-साहित्यक प्रभाव आ हुनकर अपन असली जीवन-दर्शन तथा पकिया अनुभूतिक चित्रणक त्रिवेणी थिक। अपन कोनो कथा लिखबा सं पूर्व राजकमल जिनगीक जटिलतम-गहनतम खोह मे मात्र हुलकी मारैत नहि प्रतीत होइत छथि, बल्कि ओकर वास्तविक स्थितिक भोक्ता लगैत छथि। मानवीय संवेदनाक एक-एक तीत-मीठ कें चाखि कए राजकमल अपन प्रत्येक कथा प्रस्तुत करैत बुझाइत छथि।

थातीक रूप मे संस्कृत साहित्य सं प्राप्त कथा-साहित्य प्रारंभहि सं जीवनक एकटा विशेष अंगक रूप मे स्वीकारल जाइत रहल अछि। प्रत्येक बच्चा अपन माइ-बाप-बहिन सं कोना तन्मयतापूर्वक कथा सुनैत अछि, सैह कथाक गुण कें प्रदर्शित

करैत अछि। सुनबा काल, कथाक प्रारंभ होइतहि ओ सब किछु बिसरि, अपन ध्यान कें कथाक घटना पर केंद्रित क' लैत अछि। अपना कें कथाक घटनाक प्रति अति सचेत राखैत अछि। मोने-मोन एहेन धारणा बना लैत अछि जे, कथाक ई घटना प्रायः ओकरा सोझहिं मे घटि रहल हो। कथा सुनलाक बाद ओकरा जे हार्दिक प्रसन्नता रहैत अछि, से ओकर पूर्वक मनोविकारक शमन क' दैत अछि। गल्प, आख्यायिका, किंवा छोट-छोट कथा लिखबाक प्रथा प्राचीन कालहि सं चल आबि रहल अछि। एहि कथनक पुष्टि धर्म-ग्रंथ मे वर्तमान आख्यायिका सं होइत अछि। काया-कल्प सं छोट रहितहु ओ प्रासंगिक कथा सभ उच्च कोटिक अछि। महाभारत, उपनिषद सभ मे ई जनशिक्षाक लेल उपयुक्त साधन बुझल गेल अछि। ज्ञान आ तत्त्वक एहि बात कें एतेक सहज रूप मे बुझा देबाक उद्देश्यहि सं प्रायः प्राचीन ऋषि एहि माध्यम कें अपनौने हेताह। ओ एहि दृष्टांत द्वारा मात्र आध्यात्मिक आ नैतिक तत्त्व-निरूपण करैत छलाह। अभिप्राय मनोरंजने टा नहि रहैत छलनि।

एम्हर आबि कए आख्यायिकाक अर्थ बहुत व्यापक भ' गेल। प्रेम-कहानी, भ्रमण-वृत्तांत, अद्‌भुत घटना, एते धरि जे मित्रक बीच भेल गप-सप कें सेहो आख्यायिकाक माध्यमे कहल जाए लागल। जतए प्राचीन आख्यायिका कुतूहल-प्रधान होइत छल, अध्यात्म विषयक होइत छल ओतए वर्त्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आ जीवनक यथार्थ तथा स्वाभाविक चित्रण कें अपन ध्येय बुझलक। ओहि मे कल्पनाक कमी आ अनुभूतिक बाहुल्य रहैत अछि। एतबे नहि, वस्तुतः अनुभूतिए रचनाशील भावना सं अनुरंजित भ' कए कथा बनि जाइत अछि।

अनुभूतिक आधार पर यथार्थ भोगिकए ओकरा रचनाशील भावना सं अनुरंजित कएनिहार मे राजकमल अग्रगण छलाह। हिनकर कथा मे कल्पना कें जगह पएबाक गुंजाइश नहि रहैत छलैक। हिनकर मान्यता छलनि, जे कल्पना क' कए कोनो घटनाक वास्तविक आ मार्मिक चित्रण नहि कएल जा सकैए। ओना तं वर्तमानो काल मे साहित्यक प्रत्येक विधाक रचना मे कोनो-ने-कोनो तरहें मनोरंजनक उपयोगिता रहिते अछि, संगहि-संग ई जीवनक गहन जटिलताक अंग सेहो बनि गेल अछि। साहित्य मे जीवनक प्रत्यक्ष दर्शन उपस्थित करब खास क' कए राजकमलक लेखनीक स्वाभाविक धर्म छलनि। हिनकर कथा मे मनोरंजनक तत्त्व सं बेसी विश्वसनीयताक आग्रह देखल जाइत अछि। हिनकर कथा मे मनोरंजकताक उद्देश्यें समाजक कल्पित किंवा सतही चित्र-चरित्र नहि उपस्थापित कएल गेल अछि, अपितु विश्वसनीयताक धरातल पर समाजक नग्न आ कुत्सित चित्र कें दत्तचित्त भ' कए प्रस्तुत कएल गेल अछि। अपन कथाक माध्यमे ई पाठकक आगां समाजक वर्तमान परिस्थितिक चित्र कें ततेक प्रभावोत्पादक ढंग सं प्रस्तुत केलनि जे पाठकक मोन तिलमिला जाइत अछि। मैथिली मे अपन पहिल प्रकाशित कथा 'अपराजिता'क शीर्षक सं कथावस्तुक अंतरंग तादात्म्य उपस्थित कएने छथि। अपराजिताक संज्ञाधारी असली

तत्त्व एहेन की अछि जकर गुण नाम कें सार्थक करैत अछि... ?...एहि प्रश्नक गंभीर तथा खोजपूर्ण उत्तर 'अपराजिता' मे भेटैत अछि। कोशी आ वागमतीक तांडव मे भयाक्रांत जनताक स्थितिक चित्रण, सहजहिं पाठकक सोझां मे अषाढ़-साओनक बाढ़िक दृश्य उपस्थित क' दैत अछि। वेद मे नदी कें मनुक्खक सेविका, मनुक्खक पत्नी कहल गेल अछि। तकरा पर विरोधाभास प्रस्तुत करैत राजकमल व्यंग्य कसैत छथि 'बहुओ भ' क' कोशी आ वागमती अपराजिता अछि...' बाढ़िक कष्ट सं ग्रसित, अधोगति सहैत जनता, आ जनता पर पुलिसक लालफीताशाहीक प्रहारक चित्र उपस्थित केने छथि। पुलिसक अनाचारक उपस्थापन मे कहैत छथि 'फेर पुलिस आबि-आबि कए हमरा सभ कें तंग कर' लागल। जकरा संग पाइ-कौड़ी छलैक से पाइ-कौड़ी द' कें पुलिसक ठोकर सं बचल रहल। रातिखन क' युवती सभ गाड़ीक डिब्बा सं बिलाए लागलि।'

मैथिली मे तीन दर्जन सं बेसी कथा राजकमलक प्रकाशित छनि, जाहि मे मनुष्यक बाह्य सं बेसी अंतरंगक वर्णन अछि। कथा चाहे 'ललका पाग'हो कि 'सांझक गाछ'; 'ननदि भाउज' हो कि 'वैष्णव'; 'फुलपरासवाली', हो कि 'आवागमन' सभ ठाम नायकक मनोवेग आ मनोभाव कें पढ़बाक चेष्टा राजकमलक कथा मे अछि। मनुष्यक एक-एक टा अभिक्रिया ओकर मनोवेगहि सं निर्देशित होइत अछि। अर्थात्, एक-एक टा हरक्कति सं मनुष्यक ओहि कालक मनःयात्रा कें व्याख्यायित कएल जा सकैए। मनोविश्लेषणे हिनकर शिल्प कें नूतनता देलकनि अछि से कहब प्रायः अनर्गल नइं होएत। 'खरीद-बिक्री' कथा हो आ कि 'सुरमा सगुन विचारै ना' आ कि आने कोनो कथा हो, हिनकर नायकक मानसिके यात्रा चलैत रहैत छनि। असल मे मैथिली मे अइ सत्य कें पहिल बेर राजकमले चौधरी चिन्हलनि, जे उत्तम कोटिक कथा मनोविश्लेषणेक धरातल पर लिखल जा सकैए। 'एकटा चम्पाकली : एकटा विषधर' कथाक चम्पाकली भरि कथा मे मानसिके द्वंद्व सं परेशान रहैत अछि। हिनकर कोनो कथाक पाठ काल कथाक पात्रक व्यस्तता देखि कए स्वयं पाठक परेशान भ' जाइत छथि। एकहि संगें, पात्र कें मस्तिष्क मे अपन असली उद्देश्य पर नजरि राखए पड़ैत छनि, तदनुकूल घटनाक मायालोक गढ़ए पड़ैत छनि, जे शिकार कहीं हमर लक्ष्य कें बूझि नइं जाए, शिकारो अपना मोने अपन लक्ष्य तय कएने रहैत अछि। तदनुकूल हरक्कतिक नाटक करैत रहैत अछि। शिकार आ शिकारीक ई मानसिक द्वंद्वक चित्रण जाहि वैशिष्ट्यक संग हिनका ओतए उपस्थित अछि, तकर विधिवत व्याख्या तं नइं भ' सकल, मुदा परवर्ती मैथिली कथा लेखन मे ओ प्रविधि प्रस्फुटित भेल। आ से गंगेश गुंजन, राजमोहन, प्रभास आ तकर बादोक कथाकारक रचना संसार मे व्यक्त भेल अछि।

'साहित्य का उद्देश्य' (पृष्ठ-44) मे प्रेमचन्द कहने छथि, 'कथा ध्रुपदक ओ तान थिक जाहि मे गायक महफिल शुरू होयबा सं पूर्वहि अपन संपूर्ण प्रतिभा देखा

दैत अछि। एक क्षण मे चित्त कें एतेक माधुर्य सं परिपूरित क' दैत अछि जतेक राति भरि गीत सुनला सं नहि भ' सकैत अछि।' राजकमलक कथा मे ओ क्षमता रहैत अछि जे कम सं कम समय लगाकए पाठक बेसी सं बेसी आनन्द प्राप्त क' लैत अछि। कोनहु कथाकारक छोट सं छोट कथा अपन क्षीण काया सं पाठक कें संतुष्टि तखनहिं द' सकैत अछि जं ओ रचनाकार अपना रचना मे कल्पनाक तिरस्कार केने होथि आ विश्वसनीयताक प्रति आग्रह देखओने होथि। कथाकार कें समाजक पर्यवेक्षकक संग-संग स्वयं भोक्ता सेहो होएबाक चाही राजकमल एहि मे विश्वास करैत छलाह। ओ कतहु सहृदयता वा भावुकतावश अपन पात्रक संग सहानुभूतिक वर्षा नहि कयलनि। अपन आंतरिक वेदना कें मार्मिक ढंग सं उपस्थित करैत रहलाह। सतत् अपन पात्रक कछमछी आ औनाहाटि कें अपन हृदयगत भाव सं संबद्ध कयलनि। प्रत्येक साहित्यकार पहिने समाजक इकाइ होइत अछि। समाजक प्रतिबिंब कोनो ने कोनो रूप मे हुनका जीवन मे रहिते टा अछि। पेशा आ सामाजिक स्तर दुनू सं एक रहितहुं 'किरतनियां' मे चन्नरदासक कामुकी नजरि किरतनियां पर अटकल रहैत अछि। आ प्रयास करैत अछि जे कहिआ किरतनियांक नानी मरि जाए, किरतनियांक एसगर भ' जाए, जे हम ओकर शीशा सन देहक भोग करब शुरू क' दी। शीशा सन झलकैत देह वाली किरतनियांक देह भीख मांगैत काल बाटक उड़ैत गर्दा सं मलीन भ' जाइत छैक, मुदा ओकर नानीक लहास लग दयावान लोक द्वारा फेकल रैजकी कें गनि कए दूनूक जाहि रूपक क्रिया-कलाप होइत अछि तकर मनोविश्लेषण करैत लिखैत छथि, 'एह ! तीन टाका मे त' हम दुनू आठ दिन ताड़ी पी लेब।' छोट-सं-छोट काया मे एतेक गंभीर बात कहि देनाइ हिनकर स्वाभाविक धर्म भ' गेल छलनि।

राजकमलक प्रायः सभ कथा मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित अछि। कथा 'एकटा चंपाकली एकटा विषधर' मे टाकाक कारण दशरथ झा द्वारा अपन कुमारि बेटी चंपाक तारुण्य कें आठम-सातम दशक मे पैर रखनिहार शशि बाबूक हाथ मे सौंपबाक धारणा बनाएब, चंपाकली सन अपन चंपाक विवाहक प्रस्ताव शशि बाबूक सोझां राखि दशरथक स्त्री जखन शशि बाबूक आगां ठाढ़ रहैत छथि, तखन शशि बाबू कें दशरथ झाक स्त्री मे कोनो भयावह विषधरक बोध हैब...ई सभ मनोवैज्ञानिक सत्य थिक, पेटक हेतु देह बेचब, कामुकतावश असहाय अबलाक शीलहरण करब ई सभ सामाजिक यथार्थ आ मनोवैज्ञानिक सत्य थिक। पलंग पर बैसल शशि बाबू लग चंपा द्वारा चाहक प्याली आनब आ ओहि कालक हुनका चंपाक स्थितिक आभास हैब कतेक मनोविश्लेषणात्मक अछि, 'चंपाक हाथ थरथरा रहल छनि...चंपाक अंग-अंग कांपि रहल छनि। सौंसे कपार घाम सं भीजल...' एहि घटना सं, शशि बाबूक दिमाग मे उठैत प्रश्न हुनका मथि कए राखि दैत छनि। पलंग पर ओंगठल शशि बाबूक सोझां मे नीचां पीढ़ी पर बैसल दशरथ झाक

निहोरा-मिनती करब, चंपा कें बड्ड अखरैत छैक। ओ सोचैत अछि, '...बाबूजी पलंग पर किएक नहि बैसल छथि।...कोन स्वार्थक कारणें एखन शशि बाबूक लेल चाह बनाओल जाइत अछि ?' कथा 'ननदि-भाउज' मे टहलि-बूलि कए घुरल, चिंतित पदुमा कें देखि रामगंजबालीक दिमाग मे ई प्रश्न उठब जे आइ बंगट नहि भेटल हेतनि, भरिसक दुनू ननदि-भाउज कें आब भुखले रहय पड़त, सर्पदंश सं मुइल बंगटक संग रति-प्रसंग कएला सं पदुमाक आतंकित हैब ई सभटा मनोविश्लेषणात्मक दृश्य थिक। कथा 'वैष्णव' मे चारि बर्ख सं अपन विधवा पुतौहुक संग जीवन व्यतीत कएनिहार श्रीमंत बाबूक चरित्रक उपस्थापन जेहन फरीछ क' कए राजकमल प्रस्तुत कयने छथि से अपूर्व छनि। पुतौहु द्वारा परसैत काल थारी मे माछ चल अयबाक कारण जिनगीक हरेक क्षेत्र मे मान्यता प्राप्त रूटीन कें तोड़ि देनिहार श्रीमन्त बाबू बिगड़ि उठैत छथि, मुदा चारि बरख सं सूतल ज्वालामुखी एकहि बेर जगजियार भ' कए फुटैत अछि। ओ कमलपुरवाली अपन ससुरक सभ कुकर्मक बखिआ उघारैत छथि। ई सभ दृश्य अपन-अपन गरिमाक संग विविध ठाम उपस्थित भेल अछि। 'बाबू साहेबक टीक' मे बाबू साहेबक जीवंत चरित्र-चित्रण भेल अछि। शहरी चटक-मटक सं रंगल युवती होस्पीटलक नर्स बरमा कें देखिकए ओकर शरीरक भोग करबाक पाछां, ओकरा संग बियाह करबाक पाछां अपन पैतृक संस्कार बिसरि जाइत छथि। मृग-मरीचिका मे पड़ल बाबूसाहेब ओहि छौंड़ीक कहला पर अपन टीक कटाबैत छथि, पुनः जखन कामुकताक खुमारी टुटैत छनि तं ओ कटलहा टीकक गेठरी घाट पर ताकए दौड़ैत छथि। आर्थिक जर्जरता मे टूटल परिस्थितिक नारीक भोग आजुक पुरुष कोन तरहें करैत छथि, ओकर लाचारीक फायदा ई कुकर्मी समाजक तथाकथित संभ्रांत लोक कोना लैत छथि, ताहि वस्तुक सजीव चित्रण तीन चारि वाक्य मे 'खरीद-बिक्री' मे शरणार्थीक मुंह सं कराकए वर्णन शैलीक उत्कृष्टता देखौने छथि। एहिना हिनक सभ कथा मे समाजक कोनो ने कोनो यथार्थक उद्घाटन होइत छनि। हिनकर सभ कथा यथार्थक पोषक, दृष्टांतक रक्षक आ अभिव्यक्तिक सुंदरताक हेतु महत्वपूर्ण अछि। कथा मे चित्रांकन सं नव रूपें मनोविश्लेषणक प्रभाव देखबैत छथि। जीवनक आवश्यकताक प्रति निष्ठा, समस्याक समाधान वा तकर प्रयोगक प्रति आग्रही राजकमल सगरे रहलाह अछि।

मार्क्स, एंजिल्स आ फ्रायड चिंतकक चित्रण सं प्रभावित राजकमल अपन सभ कथा मे सत्यक नग्न चित्र प्रस्तुत करैत रहलाह एहि तीन चिंतकक भावनाक स्पष्ट चित्र अपन कथा मे प्रस्तुत केलथि। हिनक कथा शीर्षक 'ललका पाग' कें सर्वाधिक लोकप्रियता भेटलैक। जे किछु हो, जीवनक यथार्थ मूल्यक चित्रण कर' मे, कर्त्तव्यबोधक प्रति साकांक्ष रह' मे आत्मानुचिंतन मे वा नग्न वर्णनक पक्षपात मे, हिनकर कथा सभक विशेष महत्व अछि। कम सं कम शब्दक प्रयोग क' कए बेसी सं बेसी बात कहि देबा मे ई माहिर छलाह। हिनका मे शब्दब्रह्माक गुण छलनि।

परंपरा सं प्रगति धरिक अनुशीलन

लिखबा काल, लेखक कें जे किछु हाथ लागि जाए, ओ सबटा सार्थके नइं होइत अछि, ठीक तहिना, जे किछु छूटि जाए, ओ सबटा निरर्थके नइं होइत अछि। ऐतिहासिक विकास, वैज्ञानिक प्रगति आ सामाजिक परिवर्तनक क्रम मे विरोधी शक्तिक पारस्परिक संघर्ष सं जिनगीक नवल-नूतन आयाम परिलक्षित होइत रहैत अछि। समय परिवर्त्तनक अइ धारा मे बहुत रास एहेन सामाजिक अंतर्विरोध सब उठैत अछि, जे ध्यातव्य होइत अछि, व्याख्येय होइत अछि। स्वाधीनताक तत्काल बादक जे समय छल, अर्थात छठम दशकक प्रारंभ, से मैथिली कथाक विचित्रताक समय छल। मैथिलीक संपूर्ण कथा धारा, हास्य-करुण रसक सरिता में डूबल छल, मिथिलाक वैवाहिक पाखंड मे ओझराएल छल। अही समय मे ललित-राजकमल-मायानन्द सन सबल कथाकारक टीम मैथिली मे प्रगट भेल। आ, मैथिली कथा अपन रूढ़ भ' गेल परिधान सं बाहर आबि गेल। अपना समयक विसंगति कें सूक्ष्मता सं जं कथाकार ताकि लिअए, तं सैह ओकर सार्थकता थिक। ई टीम, से ताकि लेलक। निरर्थक आ उपेक्षित साबित भेल विषय आ व्यक्ति, अइ कथाकारक टीम लेल सार्थक आ अपेक्षित भ' गेल। ललित, जतए सामाजिक रूपें अपैत भेल व्यक्तिक मनोभाव कें चीन्हए बूझए लगलाह, ओकर हीनवृत्तिक पृष्ठभूमि ताकए लगलाह, राजकमल अइ समस्त हीनवृत्तिक उत्स ताकि ओकर भर्त्सना करए लगलाह आ दोसरक माथ पर बोरसि राखि कए घूर तपनिहार कें नांगट करए लगलाह, ओतहि मायानन्द, सामाजिक आ पारिवारिक संबंधक तनाव, पाखंड, विसंगति आदि कें उघार करए लगलाह। अइ त्रिपुंडक तीनू शाखा तीन दिशाक अनुसंधान क' कए अपना-अपना गतिएं दिशा संकेत देबए लगलाह। ई कहब आवश्यक होएत, जे भाषाक प्रवाह, शिल्पक नूतनता आ विषयक चमत्कारपूर्ण अनुसंधानक अछैत अभिव्यक्तिक आंतरिक धारा मे मायानन्द पर हरिमोहन झा, मनमोहन झा आ बंगलाक शरदचन्द्रक असर

छलैन्हें। मुदा, से कोनो दोष नइं थिक। हिनकर पहिल कथा संग्रह 'भांगक लोटा' (1951) तं हास्ये कथाक संकलन छल। किंतु ओइ हास्यहु मे समयक यथार्थ आ जीवन-यापनक विसंगति ठाम-ठाम अपन गर्वोन्नत माथ उठौने अछि, विवश जकां नइं, जोश आ होश आ साहस सं। जे-से...

'आगि, मोम आ पाथर' (1960) दोसर कथा संग्रह थिक आ 'चन्द्रबिन्दु' (1983) तेसर। सन् 1960 में 'बिहारि, पात पाथर' आ सन् 1965 में 'खोंता आ चिड़ै' उपन्यास सेहो आएल। सन् 1959-60 क लिखल हिनकर कविता सभक एकटा संकलन 'दिशांतर' 1965 मे प्रकाशित भेल। अइ संकलनक परिशिष्ट मे किछु गीतो अछि। सन् 1988 मे हिनकर गीत-गजलक संग्रह 'अवान्तर' प्रकाश मे आएल। 'माटी के लोग सोने की नैया', 'प्रथमं शैल पुत्री च', 'मंत्रपुत्र' तथा 'पुरोहित' चारि टा हिन्दी उपन्यास राजकमल प्रकाशन सं आएल। पहिल हिन्दी उपन्यासक पृष्ठभूमि ग्रामांचल थिक आ शेष तीनूक मानव सभ्यताक विकास सं प्रारंभ भेल शृंखला। 'मंत्रपुत्र' हिन्दी सं पूर्वहि मैथिली मे प्रकाशित भ' गेल छल आ अइ पर साहित्य अकादमी सम्मान सेहो देल गेल। मुदा, पुस्तकक गिनती कराएब मायानन्द मिश्रक मूल्यांकन नइं थिक। हिनकर असल मूल्यांकन थिक 'बीजारोपण'। ज्योतिरीश्वर सं ल' कए एखन धरिक मैथिली साहित्यक परंपरा सुदृढ़ स्थिति मे चलैत रहल अछि, सब भाषाक साहित्यक दृष्टि-संपन्न इतिहास लिखाइत रहल। मैथिली मे एखन धरि कोनो तार्किक दृष्टिक इतिहास नइं लिखल गेल। खास क' कए काल विभाजनक तं कोनो दृष्टिए नइं देखाएल। मायानन्द मिश्र ओइ पहिल व्यक्तिक नाम थिक, जे काल विभाजन पर सुनियोजित दृष्टिएं सोचलनि। एहि सं बेसी तार्किक आ सुचिंतित काल निर्धारण एखन धरि आन नइं क' सकल छथि ! आगू की हएत, से के कहत... ! मैथिली मे गीति काव्यक प्राचीन परंपरा अछि। विद्यापतिए सं प्रारंभ भेल ई परंपरा बीच-बीच मे विरल आ कि सघन रूपें चलैत रहल अछि। मुदा विद्यापतिक गीत मे लोक-जीवनक मोनक कोमल आ सुकुमार भावनाक उत्कृष्ट प्रस्फुटन जाहि तरहें भ' रहल छल, से बिचला दौर में लुप्त जकां भ' गेल छल, तकर नवारंभ फेर सं मायानन्देक ओतए संभव भ' सकल 'नभ आंगन मे पवनक रथ पर कारी कारी बादल आएल'। मायानन्दक गीत शैली मैथिली मे ततेक लोकप्रिय भेल, जे हिन्दीक संगीतकार शैलेन्द्र तक कें प्रभावित होअए पड़लनि।...जाहि समय मे हिन्दी में प्रगतिवाद, प्रयोगवादक पश्चात नई कविता, अकविता...नाना तरहक काव्यांदोलन चलि पड़ल छल, मैथिली मे सोमदेव 'सहगतबाद' कें स्थापित कए' मे लागल छालाह, ताहि समय मे मायानन्द मैथिली काव्य मे अभिव्यंजनावादक व्याख्या क' रहल छलाह। हिनका संपादन मे बहराइत पत्रिका 'अभिव्यजना' मे अइ प्रकारक कविता प्रकाशित कएल जाइत छल। हिनकर मान्यता छलनि जे अइ प्रकारक कविताक स्वभावे टा नवीन नइं, ओकर अभिव्यंजना प्रणाली

सेहो, सर्वथा नवीन, आकस्मिक आ आकर्षक होइत अछि। आगू आबि कए अपन संग्रह 'दिशांतर' क भूमिका मे समकालीन कविताक व्याख्या जाहि चमत्कारपूर्ण शैलिएं कएलनि से ओहि समयक आ प्रायः एखनुको पाठकक लेल नव कविता कें बूझ'क हेतु जादुई छड़ी थिक। राजकमलक 'स्वरगंधा' (1959) क प्रकाशनक पश्चात कीर्त्तन-भजन आ रति-समागम पर कविता लिखनिहार कवि लोकनि ओकर निंदा कएलनि, मुदा जखन आगू आबि कए मायानन्दक 'दिशांतर' आ सोमदेवक 'कालध्वनि' देखलनि, तखन हुनका विरोध करबाक अपन क्षमता पर संदेह होअए लगलनि। 'दिशांतर' संकलनक कविता सब जतेक महत्वपूर्ण अछि, ओइ समयक काव्यधाराक सूत्र पकड़' लेल ओकर भूमिका ताहू सं बेसी महत्वपूर्ण। मंचक माध्यमे मैथिली भाषाक अस्मिताक लेल जाहि तरहक आंदोलनात्मक रुखि मायानन्द ठाढ़ कएलनि सेहो प्रशंसाक बात थिक। मैथिलीक उपलब्ध सरकारी संसाधनक उपभोग मे एखन मैथिलीक कर्त्ता धर्त्ता जतए दिल्लीक साहित्य अकादमी सं ल' कए पटनाक मैथिली अकादमी आ चेतना समिति मे मधुमाछी जकां लुधकल अछि, ओतए मायानन्द हालहु मे जखन किछु भाषा कें संविधानक आठम अनुसूची मे जोड़बाक चर्चा सुनलनि तं धांइ सं दिल्ली पहुंचलाह आ सबटा राजनेता सब कें मैथिलीक अस्मिता आ संविधान मे एकरा जोड़बाक औचित्य सं सहमत क' गेलाह। एहेन भाषानुरागी, एहेन गीतकार, मैथिलीक एहेन सिपाही, इतिहासदृष्टि आ काव्यदृष्टि एहेन सं संपन्न मायानन्द, जखन 'भांगक लोटाक' प्रकाशनक बाद अपन कथा सृजनक बाट ताकि लेलनि, तखन जाहि कथादृष्टिक कथा सब आएल, से मैथिली कथा साहित्यक पायोनियर संधान साबित भेल।

मायानन्दक कथा संसार कुल मिला कए मध्यवित परिवारक आर्थिक-मानसिक तनाव आ पीढ़ीक द्वंद्व पर केंद्रित रहल अछि। ओना, कहब आवश्यक अछि, जे आठम दशकक अंत अबैत-अबैत हिनकर कथादृष्टि एक बेर फेर अंगेठी-मोड़ लेलक, अर्थात राजनीतिक सूक्ष्मता आ राजनीतिक जोड़-तोड़क गुणसूत्र एतए व्याख्यायित होअए लागल। मुदा ओहि सं पूर्वक हिनकर कथा दांपत्य जीवनक कटु-मधुक स्मृति आ पुरान पीढ़ीक अतीत स्मरणक व्याख्या थिक।

'चन्द्रबिन्दु' कथाक पंडित लक्ष्मीकांत झा अपन दुनू पुत्र रमाकांत आ निशिकांत कें उच्च शिक्षा द' कए उच्च पदस्थ क' देलनि, देश-दुनियां बदलि गेल, लोकक जीवन क्रम बदलि गेल, मुदा लक्ष्मीकान्त खुट्टी गाड़ने अपन पुरान आ जड़ मान्यताक संग जीबैत रहि गेलाह। पीढ़ीक इएह संघर्ष 'उत्तरचरित' कथा मे सेहो व्याप्त अछि। धरणीधर झा अपन बालसंगी काशीकांतक संग बैसि कए जखन वार्तालाप करैत छथि, दुनू अपन-अपन बेटा-पुतहु द्वारा कएल गेल सेवा-बरदासिक प्रशंसा मे पुल बन्हैत अछि, मुदा भीतरे-भीतर अपना कें भाग्यहीन कहैत अछि। एक, दोसरक फूसि कें सत्य बुझैत अछि आ दुनू अपन-अपन सत्य कें फूसि बना कए अभिव्यक्त

करैत अछि। चकित कर’ जोगर बात ई थिक जे अइ पीढ़ीक अंतरालक एहेन मार्मिक व्याख्या मोन कें हिला देबा मे, आ दुनू पीढ़ीक पाठक कें नव ढंगें प्रशिक्षित करबा मे सफल भेल अछि। दू मे सं कोनो पीढ़ीक बदमाशी कतहु नइं देखाइत अछि। नव पीढ़ी कें पुरान पीढ़ीक प्रति पर्याप्त आदर छैक, पुरान पीढ़ी कें नव पीढ़ीक प्रति पर्याप्त प्रेम छैक, मुदा दुनू अपना-अपना समयक मान्यताक संगें जीबए चाहैत अछि। नव पीढ़ी पाखंड त्यागि रहल अछि, मुदा पुरान पीढ़ी रुढ़ि कें पकड़ने अछि, जकरा ओ अपन परंपरा आ धर्म मानैत अछि। नव पीढ़ी पुरानक संग यथासाध्य समझौता क’ कए अपन मान्यताक संगें आगू जाए चाहैत अछि, मुदा पुरान अपन पुरान पिजड़ा मे घूरि जाए चाहैत अछि। ऐतिहासिक विकासक क्रम मे इएह अंतर्विरोध मनुष्यक जीवन-यापन मे नव-नव आयामक दर्शन करबैत अछि आ मायानन्द अइ अंतर्संघर्षक व्याख्या मे सार्थक आ सफल योगदान देने छथि।

हिनकर दोसर कोटिक कथा थिक जाहि मे दांपत्य जीवनक तनाव रेखांकित होइत अछि। मुदा ई हिन्दीक नई कहानीक दांपत्य तनाव नइं थिक। ई तनाव शुद्ध मैथिलीक आ शुद्ध मिथिलाक थिक, जतए चिनबार पर राखल डेकची (गोल पेनक कारणें) कनेक ठोकर लागि कए हिलैत अछि आ दस बेर हिल कए अपनहि स्थिर भ’ जाइत अछि। अर्थाभाव, मनोरथक अभिव्यक्ति, श्रमजन्य थकान, छोट-छोट लालसाक अपूर्ति, साड़ी, चप्पल, गहना आदिक ठोकर सं दांपत्य जीवनक ई डेकची हिनकर कथा मे हिल उठैत अछि आ स्वयमेव थिर भ’ जाइत अछि। दांपत्य जीवनक ई वृत्त कोनो अर्थे रहस्यात्मक नइं अछि। जं एतए कोनो रहस्य अछियो, तं ओ रहस्य ‘ओपेन टु ऑल’ अछि, पति-पत्नी कें जीवन जीबाक लालसा छैक, दुनू कें प्रेम लुटएबाक लालसा छैक, कर्म करबाक लालसा छैक, अधिकार लेल नारा लगएबाक ने प्रयोजन छैक, ने लालसा। आइ नारीवादक नाम पर भारतवर्ष मे खूब नारेबाजी भ’ रहल अछि, जे एतुक्का पारिवारिक जीवन कें तहस-नहस क’ देलक, अइ विकराल स्थिति मे जं मिथिलाक पारिवारिक संबंध आ मानवीयता बचल रहत, तं मायानन्दक अइ कोटिक कथाक कारणें, फ्रांस सं उठल सिमोन द’ बुआक नारा सं प्रभावित कोनो छद्म नारीवादी स्त्री-पुरुषक कारण नइं। ‘हंसीक बजट’, ‘काल रेत’, ‘गाड़ीक पहिया’ आदि अही कोटिक कथा थिक, जतए अल्प वेतनभोगी परिवारक संपूर्ण लालसा कें घोकरी लगबए पड़ैत छैक। भरि मास मोन बंटने रहैत अछि, मुदा मासक अंत होइते जखन ओछ भेल तौनी जकां ओ अपन लालसा कें एंड़ी सं चोटी धरि नइं झांपि पबैए तखन, ओ ठेहुन मोड़ि कए अपन लंबाइ घटा लैए। अर्थतंत्रक अइ चाक पर दांपत्य जीवनक थुम्हा आकार ग्रहण करैत अछि। सौंसे कथा मे पत्नीक छोट-छोट मनोरथ आ पतिक पैघ विवशता लटा-पटी करैत रहैत अछि, तहिना पति-पत्नीक लटापटी सेहो चलैत रहैत अछि आ अंत मे दुनू पाटी एक दोसराक सुख-शांति लेल, एक दोसराक तृप्ति लेल, एक दोसराक पूर्णता लेल समागमरत

जोड़ी जकां एकाकार भ’ जाइत अछि।

हिनकर तेसर कोटिक कथा शुद्ध मानवता आ संबंधक निर्वाह मे त्यागक महत्वक व्याख्या थिक। ‘टुटैत कीलक जांत’, ‘एकटा सुखी लोकक डायरी’ अही कोटि मे अबैत अछि। ओना सूक्ष्मता सं देखल जाए, तं दुनू एके कथाक दू खंड थिक। पहिल मे जतए केंद्रीय शक्तिक अनुपस्थितियो मे जांत निके ना अपन दायित्व निर्वाह करैत जा रहल अछि, ओतहि दोसर कथा मे एकसरे कील दूरस्थ घुमैत जांत कें शक्ति द’ रहल अछि। वैयक्तिक लालसा, लोभ, लिप्सा, ऐश-आराम कें तिलांजलि दैत अइ दुनू कथाक केंद्रीय आ परिधीय पात्र अपन-अपन दायित्व निर्वाह मे एकटा दुर्धर्ष संघर्ष मे जुटल अछि। संपूर्ण अभाव आ लिप्साविहीन जीवन जीबि लेबाक अइ सफलता मे ई कथा सब उत्कट मानवीय प्रवृत्तिक सनेश छोड़ैत अछि। ‘सतदेवक कथा’ आ ‘ट्रान्सफर’ प्राचीन परिपाटीक शिल्प मे लिखल कथा थिक, जाहि मे सनेस तं विलक्षण देल गेल अछि, मुदा एकर शिल्प ततेक व्याख्यात्मक आ एक सीमा धरि उबाउ अछि, जे एकर प्रभावान्विति धरि पहुंचैत-पहुंचैत थकानक अनुभव होअए लगैत अछि। अपंगता आ गरीबी आ अशिक्षाक कारणें नेनपन सं उपेक्षित व्यक्ति कोन सीमा धरि अक्खड़, अहंकारी आ बाद मे प्रेम केनिहारक प्रति घृणा भाव कें पोसैत अछि आ अंततः आदर भेटला पर आत्महत्या करैत अछि, तकरे विवरण ‘सतदेवक कथा’ मे आ परिश्रम, प्रेम, निष्ठा, व्यापार, प्रतिष्ठा, सरकारी विसंगति आदिक संयुक्त प्रभाव सं उत्पन्न विकृत स्थितिक चित्रण ‘ट्रान्सफर’ कथा मे भेल अछि।

‘रंग उड़ल मुरुत’ युग परिवर्तनक प्रतिनिधित्व कर’वला कथा थिक। मिलाकए देखी तं ललितक ‘रमजानी’ सं एकर तुलना कएल जा सकैए। मुदा एतबा तं संपूर्ण तुलना सं स्पष्टे अछि, जे जतए ललितक नायकक संपूर्ण मंडल आधुनिकता आ प्रगतिक आग्रही छनि ओतहि मायानंदक पुरान पीढ़ी अपन रूढ़ि पर अड़ल रहैत छनि। मुदा स्वयं मायानन्दक झुकाव नवपीढ़ी दिश देखल जाइत छनि। यद्यपि अइ कथा मे जं कथाकार तटस्थ रहितथि, अर्थात् जखन अर्जुन पंडित प्लास्टिकक खेलौना सब कें इनार मे फेकि आएल, ओतहि कथाक अंत क’ दितथि, तं ई कथा परिवर्त्तन संघर्ष कें बेसी निखारि सकितए। पलास्टिकक खेलौना जं प्रगतिक परिचायक थिक, तं माटिक मुरुत पारंपरिक कलाक। पारंपरिक कलाक सुरक्षा सेहो साहित्यसेविए लोकनिक दायित्व थिकनि। संपूर्ण कथा मे मायानन्द सांस्थानिक शिक्षाक दारुण अभावक अछैतो लोककला कें जाहि तरहें वंशानुगत विकसित कएलनि अछि, से कथाक अंत अबैत अबैत एक रती झूस भ’ जाइत छनि।

आठम दशक भारतक राजनीति मे उथल पुथलक दशक छल। मायानन्द अपना टीमक एहेन रचनाकार मे सं छथि, जे गद्य-पद्य दुनू मे रचना कएलनि; हिनकर रचना काल सब सं नमहर रहल आ तें ई समयक अनुसार अपन जीवन-दृष्टि आ

समय बोध कें सदति काल चोखगर करैत रहलाह। ई बात अलग सं कहबाक प्रयोजन नइं अछि, जे राजनीतिक बोध सरि भ' कए पहिल बेर मैथिली कविता आ कथा मे सेहो, मायानन्देक ओतए आएल। आठम दशकक राजनीतिक हलचलक दुष्प्रभाव मिथिलाक युवक कें डरपोक आ भविष्यक प्रति निराश तथा शंकित बना देलक, प्रौढ़ पीढ़ी कें बैमान आ बुजुर्ग पीढ़ी कें शुक्राचार्य (कुकृत्यक ज्ञानदाता) बना देलक। ई स्थिति, मायानन्दक कथा 'भय प्रगट कृपाला'(माटिपानि, दिसंबर-1984), 'दीन दयाला' (माटिपानि, जनवरी-1985), 'कौशल्या हितकारी', 'माध्यम', 'भैरव' (रचना, अगस्त-1984), 'हर्रे लगे न फिटकिरी' (बसात, दिसंबर-1985), 'जिंजीर' (मिथिला मिहिर, कथाअंक, सितंबर-1987) आदि कथा सब मे देखल जा सकैत अछि। मैथिली कथा साहित्यक लेल ई दुखद प्रसंग थिक जे एहेन प्रगतिकामी, विकासमुखी आ अहू वयस मे अपना कें बदलि सकबाक ऊहि रखनिहार कथाकार मायानन्दक लेखन आब कमि गेलनि अछि। हिनके पीढ़ीक कथाकार बलराम छनि, आन बातक लेल जं तुलना नहिओं होअए, तं बलराम जकां लेखन विरल करबा लेल मैथिली पाठक हिनका दोषी मानैत रहतनि।

गतिशील भाषा, जनपदक शब्दावली आ विवरणात्मक शिल्पक कारणें मंच सं साहित्य धरि, सामाजिक वार्तालाप सं अध्यापन धरि प्रशंसित होइत रहलाह। मुदा कथा मे ई कतोक ठाम अति विवरणात्मक भ' गेल छथि। कथाक वातावरण कें अनूदित करबा काल ततेक लीन भ' गेल छथि, जे ओकर 'डिटेल्स' कनेक बेसी कहा गेल छनि। 'सतदेवक कथा' आ 'ट्रान्सफर'क जं चर्चा करी, तं कैक ठां बुझाएत जे कथाक लक्ष्य दिश जाइत-जाइत कथाकार किछु अवांतरो कहि देबाक लोभ संवरण नइं क' सकलाह अछि। मुदा हिनकर भाषा हरिमोहन झा जकां संचरण मे अत्यंत तरल आ मुलायम, गुदगुदी लगबै बला आ प्रभाव मे अत्यंत नोछराह छनि, तकरे परिणाम थिक जे ओहि अवांतरो बात सब कें पाठक कथाक भरसहा मानि लैत अछि।

मायानन्द मिश्रक साहित्यक मूल्यांकन नइं भेल अछि, से सत्य बात थिक, मुदा मैथिली मे मूल्यांकन भेले किनकर अछि ? एतबा कहल जा सकैत अछि जे बहुमुखी प्रतिभा आ कैक फ्रन्ट पर एके संग क्रियाशील रहलाक कारणें मैथिलीक रतिगामी मठाधीश, हिनकर जतेक उपेक्षा करए चाहैत छलाह, ततेक क' नइं भेलनि। आइ, जखन 'विश्व-शांतिक द्रौपदी केर चीर/खिंचने जा रहल अछि/आन्हरक संतान' आ 'कौरवी-लिप्सा निरंतर आइ बढ़ले जा रहल/दिन-राति' आ 'वृद्ध सभ आचार्य केर प्रज्ञा गेलनि हेराय', तखन, अइ विकराल स्थिति मे मायानन्दक क्षिप्र आ तीक्ष्ण लेखनक आवश्यकता मैथिली साहित्य कें छैक आ एहि आवश्यकताक पूर्ति मायानन्दक कें करबाक चाहिअनि।

कंस सं डेराए गेलहुं बलराम ?

स्वातंत्र्योत्तर कालक मैथिली कथालेखन मे बेस प्रतिभावान लेखक सभ जुटल छलाह। ललित, राजकमल, मायानन्द, धीरेन्द्र, सोमदेव, रामदेवक नाम ल'ओ कए अइ पीढ़ीक पूर्णता बिना बलरामक नाम नेने नइं भ' सकैत अछि। अगस्त 1955 मे हिनकर पहिल कथा 'दृष्टिदोष' वैदेही मे प्रकाशित भेल। एखन धरिक सूचनाक अनुसार करीब तीन दर्जन हिनकर कथा प्रकाशित भेल अछि। 'संदर्भ', मार्च 1986 मे प्रकाशित कथा 'कागचेष्टा'क बाद हिनकर कोनो कथा देखबा मे नइं आएल। मैथिली अकादमी आ साहित्य अकादमी सं प्रकाशित प्रतिनिधि कथा संकलन सब मे हिनकर 'औनपी', 'पुरान डीह परक न्यों' आ 'झुनझुना' संकलित कएल गेल। कथापरक लेख जे किओ लिखए लगलाह, से हिनकर नाम आ कथा पर चर्चो कएलनि। मुदा ई बात चकित करैत अछि, जे सब किछुक अछइत बलराम कथा लेखन मे लगातार सक्रिय किऐक नइं छथि। ओना ई सत्य बात थिक, जे एम्हर आबि कए हिनकर चर्चा-बर्चा कम भ' गेल आ अलग सं हिनका पर चर्चा कहिओ नइं भेल। मुदा ई तं मैथिली आलोचकक प्रवृत्ति थिक। मैथिलीक आलोचक एहि ज्ञान सं अपरिचित छथि, जे उपेक्षा आ अचर्चा, कोनो प्रतिभावान लेखकक हत्यो क' सकैत अछि। स्वस्थ समालोचना कोनो समर्थ रचनाकार कें आओर बेसी सामर्थ्यशाली बनबैत अछि, से ज्ञान जाहि साहित्यक आलोचक कें नइं हो, तकर वक्तव्य आ तकर लेखनक काग्निजेन्स लेब कोनो अर्थें उचित नइं थिक। ओहुना, बलराम अपनहि पीढ़ीक कथाकारक हालत देखि लेथि, किनका पर की चर्चा भेल अछि ? ललित आ राजकमल पर किछु भ'ओ सकल, तं से कहिआ, कोन स्थिति मे, आ किनका द्वारा ? तें, जं बलरामक कथा-लेखन सुस्त अछि, तं एकर सर्वाधिक जिम्मेदारी स्वयं बलरामक थिकनि।

पेशा सं संस्कृत विश्वविद्यालयक अधिकारी, रुचि सं साहित्यकार, स्वभाव सं ईमानदार अर्थात् हरिश्चन्द्रक गुरु आ तखनहुं जं चाहब, जे चर्चा मे रही, से कोना होएत ? मैथिलीक आलोचकक मुंह सं रोटीक टुकड़ी ठकि कए खएबा लेल लेखक के भढ़िया बनब आवश्यक छैक भने ओ कारकौआ होथि, हुनकर प्रशंसा करिअनु, हुनकर बनि कए रहू आ कहिऔ आहा हा...अहांक गायन जे विलक्षण अछि ! एक टा गाबि कए सुनाउ ! तखन ओ गौताह, रोटीक टुकड़ी खसि पड़लनि तकर कोनो

कथाशिल्पक विश्वकर्मा

बीसम शताब्दीक सातम दशक मैथिली साहित्यक लेल अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। किछु महत्वपूर्ण बात मे सं पहिल ई थिक जे अही दशक मे 'मिथिला मिहिर' सन पत्रिकाक पुनरारंभ भेल। फलतः अइ दशकक प्रतिभाशाली रचनाकार सभ कें अपन बात आम नागरिकक सोझां रखबाक पर्याप्त अवसर भेटलनि आ तें अइ दशक मे मैथिली मे तीक्ष्ण आ सूक्ष्म दृष्टिक कथाकारक एकटा झमटगर पीढ़ी तैयार भेल। राजमोहन झा अही पीढ़ीक श्रेष्ठ कथाकार छथि, जे अपन विशिष्ट जीवन-दृष्टि, विलक्षण विषय बोध, आ प्रभावशाली कथन शैलीक कारणें अपन संपूर्ण पीढ़ी मे बेछप छथि आ अपना तरहक एसगर कथाकार छथि। मैथिली मे जं हिन्दी अथवा कोनो आन भाषा साहित्य जकां तटस्थ आलोचकक परंपरा रहितए, तं मैथिली कथा लेखनक अइ काल कें कोनो ने कोनो नाम द' कए आगू बढ़ाओल जइतए, मैथिलीक 'नव कथा' अथवा आने कोनो कथा कहि देल जइतए। ओना नीके भेल जे से सब नामकरण नइं भेल आ आइ धरिक मैथिली कथा लेखन बिना नामेक चलल आबि रहल अछि। 'कथा' कथा होइत अछि, ओ ने नव होइत अछि, ने पुरान होइत अछि।

ओना, ई विडंबने थिक, जे जाहि समयक गप ई भ' रहल अछि, ओहि समय मे मैथिली मे आलोचनाक नाम पर थोड़ेक प्राध्यापक वर्ग सब किछु-किछु चर्च-बर्च कतहु-कतहु करैत छलाह, जाहि मे सं गनल-गूथल दू-चारि गोटए कें छोड़ि कए प्रायः किनकहु मे साहित्यिक बोध विकसित नइं छलनि, अहंकार बोध परमान चढ़ल छलनि आ अपना कें ओ लोकनि सृजनकर्त्ताक भाग्यविधाता बुझैत छलाह। ने तं एना कोना होइतैक जे ललित, राजकमल, मायानन्द, धीरेन्द्र, सोमदेव, हंसराज, बलरामक पीढ़ी स्वातंत्र्योत्तर कालक जाहि मायालोक, पाखंड आ फरेब सं सावधान कएलक; राजमोहन, प्रभास, गुंजन, रेणु आदिक पीढ़ी मैथिली कथालेखन मे नव-नव आयाम तकलक, भारतीय राजनीतिक आंतरिक अस्थिरता आ बाहरी आक्रमण सं प्रभावित जनजीवन पर पड़ल जाहि दुष्परिणाम सं परिचित भेल, तकरा व्याख्यायित करबाक पलखति समीक्षक लोकनि कें नइं भेटलनि ?

मैथिली साहित्यक ई विडंबने थिक, जे एतए आलोचना साहित्यक कोनो आवश्यकता नइं बूझल जाइत अछि। आलोचनाक गणना जं कएल जाए, तं बी. ए., एम. ए. क कक्षा मे प्राध्यापक द्वारा लिखाओल प्रश्नोत्तर अथवा कोनो नव पोथी अएला पर या तं ओहि पोथीक भूमिका, संपादकीय, आशीर्वचन आदि अथवा कोनो पत्रिका मे ओइ पोथीक सरंगोलिया समीक्षा, अथवा जं कोनो लेखक मरि गेलाह आ कोनो संपादक कोनो तरहें हुनकर सरोकारी भेलखिन, आ ओ विशेषांक निकालए लगलाह, तं ओइ मे विरुदावली, ओतहु रचनाक समालोचना नइं इएह परंपरा अछि। एम्हर आबि कए गोधियांवादी परंपराक स्थापना भेल अछि, तकरा तत्वावधान मे किछु पान-परसाद आलोचनाक नाम पर देखाइत अछि।

राजमोहन झा मैथिली मे अइ सब पान परसाद सं वंचित रहलाह। हमरा मोन पड़ैत अछि, जे एम.ए.क कक्षा मे एकटा मैथिलीक प्राध्यापक राजमोहन झाक संकलन 'एक आदि : एक अंत'क पहिल कथा 'ज्वारभाटा'क विवेचन करैत बाजल छलाह एकटा कन्फ्यूज्ड लेखक द्वारा लिखल कन्फ्यूज्ड नायकक कथा थिक 'ज्वारभाटा'। हम एखनहुं छगुंता मे छी, ओहू समय मे छलहुं। मुदा ओहि समय से हमरा आ हुनका मे 'तुम क्लास' आ 'आप क्लास'क अंतर छल, तें बहुत सार्थक विरोध नइं क' सकल रही। जाहि मैथिली मे एहेन ईर्ष्यालु आ प्रतिभाहीन शिक्षकक बहाली होइत अछि, ताहि मैथिलीक अध्येता कतेक कन्फ्यूज्ड भ' सकैत छथि, सहजहिं कल्पनाक विषय थिक।

मैथिली मे चर्चा-बर्चाक परंपरा चुल्हा-चिनबार धरि कनेक बेसिए अछि। मनुष्य केर वैयक्तिक समस्या आ चारित्रिक छवि कें उबारबाक आ डुबएबाक ठीका कोनो एकटा समूह ल' लेताह आ ओहि छविक कसौटी पर हुनकर साहित्यक परीक्षण करताह। सेहो परीक्षण कतहु-कतहु मौखिके क' लेताह। राजमोहनक कथा लेखनक चर्चा करैत किछु गोटए कहताह जे 'हिनकर कथा मैथिली भाषा मे अवश्य लिखल अछि, मुदा ई मैथिलीक कथा नइं थिक।' ...कारण रोचक अछि 'हिनकर कथाक बैकग्राउंड जे थिक, से मिथिलाक नइं थिक।' आब अइ मतिछिप्पू वक्तव्यवीर लोकनि कें के बुझएतनि, जे महाश्वेता देवीक संपूर्ण सृजन-संसार छोटानागपुरक आदिवासीक जीवन पर केंद्रित अछि, मुदा ओ बंगलाक साहित्य थिक, बोधिसत्व मैत्रेयक उपन्यास 'झुनिकेर पेट्टो मुक्तो' दक्षिण भारतक समुद्री जीवन पर लिखल अछि, मुदा ओ बंगलाक उपन्यास थिक, 'आवारा मसीहा' शरतचन्द्रक जीवन पर अछि, मुदा ओ हिन्दीक उपन्यास थिक...। जे मैथिली मे एखन धरि, आलोचना दृष्टि आ आलोचनाक प्रतिमान अंकुरित नहि हेबाक मुख्य कारण थिक अइ वृत्ति मे

संलग्न व्यक्ति मे ईमानदारी आ तटस्थताक दारिद्र्य, अध्ययनशीलताक दुर्भिक्ष, रूढ़ि आ पाखंडक गुलाम हेबाक प्रवृत्ति। ओना, प्रतिभाक अभाव तं मूल कारण थिकहे। मुदा, कतोक बेर अभ्यास आ श्रम सं सेहो प्रतिभा विकसित होइत अछि। मैथिलीक आलोचना आ इतिहास लेखन दिश उद्यत हेबा मे आ स्वस्थ आलोचनाक प्रतिमान स्थापित करबा मे मैथिली मे इएह बाधक तत्व सब अछि।

आखिर की कारण थिक, जे चारि दशक धरि दत्तचित्त भ' कए मैथिलीक सेवा मे जुटल रहनिहार कथाकार राजमोहन झाक गिनती एखनहुं आलोचक सब मात्र पंतियानी मे लैत छथि। 'एक आदि : एक अंत' (1965), 'झूठ-सांच' (1972), 'एकटा तेसर' (1984), 'आइ काल्हि परसू' (1993), 'अनुलग्न' (1996) पांच गोट कथा संग्रह आ 'गल्तीनामा' (1983), 'भनहि विद्यापति' (1992) 'टिप्पणीत्यादि' (1992) तीनटा निबंध-समीक्षादिक पुस्तक प्रकाशित भेलाक बाद राजमोहन झा पर अलग सं चर्चा करबाक फुरसति मैथिली साहित्य मे नइं निकालल जा रहल अछि !

साहित्य आ मानवीयता कें सर्वस्व समर्पित कएनिहार राजमोहनक कथाक परिवेश एक खास स्वाद-गंध आ तेवरक अछि। अइ पीढ़ीक समस्त कथाकारक प्रायः ई विशेषता थिकनि, लगैत अछि, जेना मंत्रालय जकां सब गोटे अपन-अपन पोर्टफोलियो बांटि नेने होथि आ किनकहु अधिकार क्षेत्र मे आन कियो दखल नइं दैत होथि।

राजमोहन झाक निबंधे लेखन सं जं बात शुरुह कएल जाए, जे हुनकर ई मुख्य विधा नइं छिअनि, तं एकटा स्थिति साफ-साफ सोझां अबैत अछि, जे एकदम साफ-साफ, शुद्ध-शुद्ध, दोषमुक्त, निष्कलुष समाजक आ परिवारक कल्पना हिनका मस्तिष्क मे बैसल अछि। कनेको टा त्रुटि, दाग, पाखंड, बैमानी, अहंकार, नीचता व्याप्त अछि, तं चुट्टा सं ओकरा उठाकए बाहर क' देताह। साहित्य आ साहित्यकारेक दाग निकालए लगलाह, तं देख लिअ', तीनू टा निबंध संग्रह सोझां अछि।

अइ स्वभावक राजमोहन, कथा लेखन कें अपन मुख्य धाराक रूप मे अपनौलनि। यद्यपि प्रारंभ मे किछु कवितो लिखने छथि आ स्वयं एक दिन सामान्य बातचीत मे कहने छथि, जे 'हमरा लेल अनुभूतिक अभिव्यक्ति लेल कथा सर्वशक्त माध्यम थिक। कविता मे बहुत रास रॉ मैटेरियल रहि जएबाक गुंजाइश रहैत अछि। जखन कि कथा मे एकर अवकाश नइं होइत छैक।' ई तथ्य आन तरहें अलग सं विचारणीय थिक, मुदा एतए ई बात कतेक महत्वपूर्ण अछि जे आइ धरिक अपन रचना-संसार मे राजमोहन मध्यवर्गीय समाजक बेचैनी, युयुत्सा आ मोनक व्याकुलता कें रेखांकित करबा मे संलग्न रहलाह आ निरंतर कथाक कथन एवं कथन-शैली कें कुम्हारक घैल जकां ठोकि-बजा कए दुरुस्त-तंदुरुस्त करैत रहलाह। दोषमुक्त समाज आ दोषमुक्त व्यक्तिक परिकल्पना मे राजमोहनक रचना संसारक ओर-छोर सतत अन्वेषी बुझाइत रहल। प्रमाणित सत्य थिक जे एक मनुष्य अइ धरती पर आत्मबुभुक्षा, यौन पिपासा आ आत्मसुरक्षा इएह तीनटा प्रवृत्ति ल' क' अबैत अछि। मनुष्यक आन तरहक प्रदूषण तं समाज मे होइत अछि। लोभ, मोह, लिप्सा, अहंकार, भय, द्वेष, अराजकता आदि सब एतहि सिखैत अछि। अर्थात् मनुष्य अबैत तं अछि एकटा निष्कलंक आ निष्कलुष जीवक रूप मे, मुदा एतए ओ तरह-तरह केर अवगुण सं युक्त भ' जाइत अछि। मानव जीवनक समस्त त्रासदीक मूल कारण इएह प्रदूषण थिक। 'एक आदि : एक अंत' कथा संकलन सं ल' क' 'अनुलग्न' धरिक समस्त कथा मे राजमोहन मानव जीवनक आ तकर आत्मस्थापनक सूक्ष्मतम तंतु सब कें पकड़बाक सफल प्रयास अही मान्यताक संग कएने छथि। अपना पर रहस्यमयताक आरोप कें स्पष्ट करैत राजमोहन स्वयं कहने छथि, '...अपन दुख वा पीड़ा कें ककरो आगां व्यक्त करबाक कोनो प्रयोजन वा सार्थकता हम नहि बुझैत अयलहुं अछि।...एकटा सामान्य सुखी पारिवारिक जीवन बितयबाक अवसर भेल रहैत, तं ई रहस्यमयताक प्रश्न नहि उठैत...।' मात्र ई दू पांती, राजमोहनक रचना संसारक प्रायः एक-एकटा रहस्य कें केरावक छिम्मिड़ि जकां खोंइचा अलगा क' राखि दैत अछि। कोनो सृजन केर ब्रह्मा, अपन सृजन मे मात्र ओएह क' पबैत अछि, जे ओकर संपूर्ण अनुभव लोक आ मनःलोक मे अर्जित रहैत छैक। राजमोहन, एकटा व्यवस्थित पारिवारिक जीवन नइं बिता सकलाह, ई स्थिति हुनका मस्तिष्क मे 'परिवार' आ 'घर'क एकटा विस्तृत स्वरूप अंकित कएलकनि आ हिनकर कथा तें मनुष्यक 'जीवन', 'घर' आ 'संबंध' कें प्रमुखता सं स्पष्ट करैत अछि। जीवनक प्रति आसक्ति, दांपत्य जीवनक त्रासदी आ संबंधक बिखराव इएह तीन टा हिनकर कथाक मूल स्वर थिक।

कौखन चर्चा होइत रहैत अछि, जे राजमोहन जखन कखनहुं संबंधक बिखरावक गप करैत छथि, तं अपन कथाक स्त्री पात्र कें सर्वथा दोषी ठहरबैत छथि। ई वक्तव्य हड़बड़ी मे देल गेल वक्तव्य थिक। असल मे, राजमोहन अपना पीढ़ीक सर्वथा बेछप कथाकार छथि। नान्हि टा कथ्य कें ततेक सूक्ष्मता आ सावधानीक संग, ततेक उत्कृष्ट शैली मे ई चित्रित करैत छथि, जे प्रेक्षक कें कतोक बात पकड़ाइत नइं छनि। कोनो संबंधक बिखरावक स्थिति हिनकर कथा मे मात्र दू कारणें उपस्थित होइत अछि मिथ्या आडंबर आ निरर्थक अहंकारक कारणें। अपन मौलिकता सं कटबाक प्रवृत्ति, मोने-मोन गुड़-चाउर खाइत रहबाक प्रवृत्ति, उदार आ ईमानदार दृष्टि सं एक दोसराक समक्ष अपना कें नइं खोलबाक आ एक दोसरा पर विश्वास नइं करबाक प्रवृत्ति। अइ बिखरावक जड़ीभूत कारण होइत अछि। ई प्रवृत्ति सब मैथिलक मौलिक प्रवृत्ति थिक आ राजमोहनक कथाक पात्र हरदम अही अवगुणक शिकार भेलनि अछि। छोट-छोट नासमझी सं हिनकर पात्र सभ सर्वदा घोर त्रासदी मे पड़ैत रहल अछि, अशक्य मोंछ कें ठाढ़ करबाक फेरी मे संपूर्ण जीवन कें त्रासद बनबैत रहल

अछि। अर्थात् राजमोहनक कथा अइ बातक प्रमाण थिक, जे स्वातंत्र्योत्तर कालक मैथिल कोयला हंसोथैक फेरी मे हीरा गमबैत रहल अछि। मैथिली मे राजमोहनक कथा अपना तरह एसगर संसार बनबैत अछि, जतए कथा-तत्व कम आ विवरण-तत्व बेसी अछि। सत्य पूछी तं, कथाक शैली मे राजकमल जतेक तरहक सूत्र छोड़ि गेलाह, ताहि मे एकटा सूत्रक समग्र व्याख्या हिनकहि ओतए भ' सकल आ ई बिना घटनाक्रमक विस्तार कएने, स्थितिक 'डिटेल्स' कें उजागर करबा मे संलग्न रहलाह। एतहि सं मैथिलीक आधुनिक कथा-शैलीक दोसर डेग उठल अछि। पहिल डेग राजकमलक ओतए उठल छल।

मात्र शैलीक बल पर संपूर्ण रचना कें कथाक पूर्णता देबाक ई व्यवहार भारतक आनो आन भाषाक साहित्य मे कम ठाम भेटैत अछि। छठम दशकक मोह भंगक पश्चात्, विज्ञान आ भौतिकताक आक्रमण सं मिथिलाक जनता जाहि तरहें मूलोछिन्न भेल, तकरे विवरण आ ओहि मूलोछिन्नताक कारणक अन्वेषण थिक राजमोहनक कथा। अइ क्रम मे मनुष्यक आचार-विचार, रहन-सहन, आहार-व्यवहार, रीति-रेवाज विकसित हेबाक बदला प्रदूषित भ' गेल। स्पष्ट अछि, जे प्रदूषण कोनो स्थिति कें सर्वांश मे आहत करैत अछि तें 'ज्वारभाटा', तें 'दंश', तें 'भोजन', 'घर', 'अनर्गल', 'पहिल मृत्यु' आदि कथाक स्थिति बनैत अछि। ई प्रदूषण समाज आ जीवन कें अइ तरहें प्रभावित कएने अछि, जे कतहु आ कोनो तरहें मनुष्य अपना कें सुरक्षित अनुभव नइं करैत अछि। असुरक्षाभाव, आतंकबोध, भयबोध हरदम मनुष्य मे व्याप्त रहैत अछि, आ सएह राजमोहनक कथा मे मुखरित होइत रहल अछि।

राजमोहनक कथा सामान्यतया प्रथम पुरुषक वक्तव्य मे भेटत, जेना कथा वाचकक संस्मरण हो। 'भोजन', 'घर' आकि 'सांप छुछुन्नरि' सन कोनो कथा उठा लिअ', तं ई बात स्पष्ट भ' जाएत। 'भोजन' एकटा दंपत्तिक दैनिक जीवनक दिनचर्या व्यक्त करैत, विपरीत विचारधारा आ विपरीतमुखी वेवलेंग्थक चिंतन-चित्र व्यक्त करैत अछि। जड़ि सं उखड़ल वर्तमान मात्र कें केंद्र बुझनिहारि पत्नी द्वारा, पतिक भावुकता आ ओकर श्रेष्ठ चिंतनशीलता उपेक्षाक कथा व्यक्त करैत अछि। पति अपन पत्नी ममताक उग्रता आ मूलोच्छिन्नता सं परिचत रहैत ओकरा अपन सब अनुभूति अत्यंत सोचि-गुनि कए कहैत अछि। मुदा पत्नीक उद्दंड अल्हड़पन (निर्दोष अल्हड़पन तं गुणे होइत अछि) ओकर उपेक्षा क' जाइछ। ई कथा आधुनिक समाज मे परिवारिक सुखानुभूतिक घेंट पर नारीवादक तरुआरिक (विकृतिक) असरि द्योतित करैत अछि। 'सांप-छुछुन्नरि' जं एकटा पैद्य पदाधिकारीक द्वैध चरित्रक आत्मप्रशंसी प्रवृत्तिक व्याख्या थिक, तं 'घर' एकटा यात्रीक यात्रा मे भोगल मानसिक व्यथा। दुनू कथा थिक तं छोट सन घटनाक व्यापक व्याख्या, मुदा सही अर्थ मे ई दुनू कथा भोक्ताक मानसिक चरित्र चित्रण थिक। मनोविश्लेषण, दोषमुक्त परिवेशक कल्पना आ औचित्यपूर्ण शिष्टाचार, राजमोहनक कथाक मूल लक्ष्य होइत अछि आ अइ गति सं हिनकर समस्त कथाक वितान आगू बढ़ैत रहल अछि।

हिनकर कोनो कथा आजुक अतिक्रांतिकारी नायकक कथा जकां कूथि कए नइं चिकरैत अछि। कथाकारक स्थितिबोध, संबंधबोध आ समाजबोधक ई उत्कर्ष थिक, जे समस्त विपरीत परिस्थितिक अछैत हिनकर पात्र चिकरा-भोकरी, लाठी-फरसा, उठा-पटक नइं करैत अछि। कथाक नायक कें, अर्थात् कथाकार कें एतबा बोध छनि, जे साहित्य सं समाजक निर्माण होइत अछि, तें स्वस्थ समाजक निर्माण हेतु अइ परिस्थिति सभक दुष्परिणाम देखाएब पर्याप्त होएत। अर्थात् नानाविधि समस्या कें सहैत, समाजक हित मे जेना राजमोहन अपना जीवन मे गुम्मी लधने छथि, अपन व्यथाक प्रचार नइं करैत छथि, तहिना हिनकर पात्र समस्त त्रासदी भोगलाक बादो शिष्ट आ धीर रहैत अछि। समाज हित मे चुप रहैत अछि। मुदा कथा तं बहुत किछु कहिए दैत अछि। आ, प्रायः इएह कारण थिक, जे राजमोहनक संपूर्ण रचना-संसार पाठक कें हिला कए राखि दैत अछि। कथा समाप्तिक पश्चात् पाठक क्रोधित नइं होइत अछि, व्यथित होइत अछि। उत्कृष्ट समाज-दृष्टि आ रचना-दृष्टिक प्रबुद्ध कथाकारक ई अवदान विचारणीय अछि। कोनो खास कथा अथवा किछु कथाक नाम गनाएब आवश्यक नहि अछि। कोनो कथा उठा लिअ' नखलिस्तान, युद्ध-युद्ध-युद्ध, एकटा तेसर, केंचुआ, भीड़ मंहक एकसर यात्री, कायर, दर्द, चक्रव्यूह, आदंक, चिंता आ चिंता, खोज...जकरे शुरू करी, ई स्वरूप ओतहि भेटत। राजमोहन केर शब्द प्रयोग पर थोड़ेक आरोप लगाओल जाइत छनि। हम अइ बात सं सहमत छी। शुद्धतावादीक छवि प्रस्तुत कएनिहार राजमोहन कें शब्द-प्रयोगक संबंध मे सेहो सावधान रहबाक चाही। कतोक ठाम हिनका लेखन मे मैथिली सं अलग ओहेन शब्दक प्रयोग होइत अछि, जकरा लेल मैथिली मे बेस उपयुक्त शब्द अछि। मुदा लगैत अछि, ईहो प्रदूषणेक फल थिक। जे-से, राजमोहनक रचना-संसार व्यापक समालोचनाक अधिकारी अछि। कहि नहि, मैथिली मे कहिआ होएत !

परंपराक रक्षक मुदा नवांसंक आग्रही

फरवरी 1967 मे राजकमल चौधरीक अध्यक्षता मे सुपौल मे तय भेल छल, जे रामकृष्ण झा 'किसुन'क संपादन मे मैथिली नव कविताक एकटा प्रतिनिधि संकलन प्रकाशित हो। मुदा ई प्रकाशित भेल सन् 1971 मे, अर्थात् राजकमल आ किसुन दुनू गोटेक अवसानक पश्चात्। हिन्दी मे सप्तक (तार, दूसरा, तीसरा) जहिना प्रमाण-पत्र दात्री पुस्तक मानल गेल, तहिना जं 'मैथिलीक नव कविता' कें मानल जाए, तं कोनो अनुचित नइं होएत। ओना प्रकाशनक जे दुर्दशा मैथिली मे आइ धरि रहल अछि, तकरा कारणें मैथिली साहित्यक काल निर्धारण अथवा कोनो कृतिक ऐतिहासिकता प्रमाणित करब कठिन अछि। तथापि...

अइ संकलन मे जाहि सोलह गोट कवि लोकनिक रचना संकलित अछि, ताहि मे सं एकटा प्रमुख कवि छथि गंगेश गुंजन। गंगेश गुंजन, गीत, गजल, कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, नुक्कड़ नाटक आ किछु लेख आदि...सब लिखने छथि, मुदा जें कि मैथिली साहित्यक माफिया सब कें साधबाक अवगति नइं छनि अथवा मैथिलीक 'नटवरलाल', 'सुखराम' आदिक चोरि-चपाटी मे समर्थन देबाक नैतिकता (?) नइं छलनि, तें कोनो खेमा मे चर्चित नइं भेलाह। कोनो उपकारी पद पर नोकरी करैत होइ, पदस्थापना ओतए होअए जतए धरि पहुंचब मैथिलीक लेखक-आलोचक लेल सहज आ खर्चमुक्त हो, नेत-धरम कें ताख पर राखि हुनका लोकनि कें लाभान्वित क' सकबाक सकरता होअए...अर्थात्, कोनो बैबें अहां हिनका लोकनि लेल उपयोगी वस्तु होइअनि, तं ई अहां कें प्रतिभावान आ अहांक रचना कें स्तरीय मानताह। जें कि गुंजन मे, ने तं अनिवार्य योग्यता छलनि, ने वांछनीय, तें मैथिलीक आलोचक आ लेखकक नजरि मे नइं बसि सकलाह। 'कर्म करू, परिणामक चिंता जुनि करू...' वला प्रवृत्ति राखि कए मैथिलीक आलोचक लोकनिक लेल ई महत्वपूर्ण रचनाकार किएक हेताह ?

गुंजनक रचनात्मक यात्रा कुल चालीस वर्षक अछि। सन् 1961 मे हिनकर पहिल रचना प्रकाशित भेल छलनि। स्पष्ट अछि, जे अभ्यास ताहू सं किछु पूर्व सं करैत हेताह। आइ धरि मैथिली आ हिन्दी दुनू मे लगभग एगारह गोट पोथी प्रकाशित छनि। मैथिली मे दूटा कथा संग्रह, एकटा नुक्कड़ नाटक आ एकटा हिन्दी मे कविता संग्रह प्रकाशित छनि। ब्रज किशोर वर्मा मणिपद्म केर उपन्यास 'नैका बनिजारा'क हिन्दी अनुवाद आ 'मिथिलांचल की लोक कथाएं'क संपादन सेहो कएने छथि। मुदा गंगेश गुंजनक महत्व जान' लेल हुनकर पुस्तकक संख्या महत्वपूर्ण नइं अछि, महत्वपूर्ण अछि ओहि पुस्तकक गुणवत्ता।

'जाइत काल किछु नहि क' गेलाह पिता हमरा नाम, घर ने खेत-खरिहान। कहि गेलाह : बाट चलैत काल सतत् चलिह' बाम, तकर रखिह' ध्यान।' जाहि रचनाकार कें विरासत मे ई सनेश भेटैत हो, जे रचनाकार स्वभाव सं मुलायम आ मान्यता मे अक्खड़ हो, तिनकर रचना संसारक आयाम सेहो निर्णायकक लेल एहने श्रमसाध्य होएत। यात्री आ राजकमलक पश्चात् मैथिली मे जे पीढ़ी क्रियाशील भेल, ताहि मे गंगेश गुंजन अत्यंत महत्वपूर्ण रचनाकार छथि। हिन्दी मे नव भावबोधक कविता जखन लिखल जाए लागल तं ओतहि सं दू जातिक कविताक विकास भेल, एकटा जाति छल अज्ञेयक कविताक आ दोसर जाति छल मुक्तिबोधक कविताक। मैथिली मे सन् 1949 (चित्राक प्रकाशन) आ सन् 1959 ('स्वरगंधा'क प्रकाशन)क पश्चात् एहेन कोनो दू जातिक कविता उल्लेखनीय नइं रहल। यद्यपि जाति दू अवश्य छल एकटा जाति छल, यात्री, राजकमलक कविताक; जे अपन आ परवर्ती पीढ़ी कें दिशा संकेत दैत छल आ ओकर संघर्ष कें समर्थन दैत छल आ दोसर जाति छल, सुमन, अमरक कविताक; जे कीर्तन, भजन, रति शृंगारक विषय पर तुकबंदी क' कए मंच पर थपड़ी लुटैत छल। ओइ कविता सब कें देश-दुनियां, लोक-वेद सं कोनो मतलब नइं छलैक। स्वभावतः सुमन, अमर कें अनुयायी नइं भेटलनि। मुदा यात्री, राजकमलक कविताक चिनगी अगिला पीढ़ी मे बेस जकां प्रज्वलित आ प्रस्फुटित भेल। गंगेश गुंजन अही पीढ़ीक कवि छथि, कथाकार छथि, हिनका हिन्दी साहित्यक ओर-छोर सेहो देखल छनि। आ कहबाक चाही, जे हिनकर रचना-संसार मे, गद्य-पद्य दुनू मे, एकहि संग अज्ञेयक कलावाद आ मुक्तिबोधक वस्तुवाद दुनू उपस्थित अछि।

ओना रचनाक विवेचन लेल व्यक्तित्वक विवेचन आवश्यक नइं होइत अछि, मुदा जं जानकारी रहए, आ व्यक्तित्वक आलोक मे रचनाक चर्चा सेहो भ' सकए, तं अनुचित नइं हो। गंगेश गुंजन सदति काल, दोसर कें महत्व आ सम्मान देबाक लेल तत्पर रहलाह अछि, अपन हानियो क' कए दोसर कें प्रतिष्ठा देबा मे रुचिशील रहलाह अछि। मुदा कोनो दुष्कर्म, कोनो अनिष्ट, अन्याय कें सहबाक क्षमता हिनका नइं रहलनि अछि। रोचक ई अछि, जे अइ दू प्रवृत्ति मे सं कोनो हिनका त्याज्य

नइं। अइ प्रवृत्तिक असरि हिनकर रचना पर सेहो पड़लनि अछि। आगि उगलब, मुदा ओहि आगि सं किनकहु अनिष्ट नइं हो, सेहो ध्यान राखब इएह प्रवृत्ति गुंजनक रचना संसारक रहल अछि, खाहे ओ पद्य हो आकि गद्य। ई स्थिति प्रायः अत्यंत मानवतावादी रहलाक कारणें मैथिलीक लोक कें पसिन नइं पड़लनि। गुंजन बीसम शताब्दीक सातम दशक मे अपन महत्व साबित तं क' लेलनि, मुदा यथास्थितिवादी पीढ़ीक वर्चस्व आ संबंधवादी खेमाक षड्यंत्रक कारणें अचर्चित रहि गेलाह।

ई तथ्य, सब कें स्वीकारि लेबाक चाही जे, मैथिली मे दीर्घ कविता (हम एकटा मिथ्या परिचय) आ नुक्कड़ नाटक (बुधिबधिया) क संभावना सर्वप्रथम हिनके अनुसंधान थिकनि। 'नवगीत' एकटा विधाक रूप मे हिन्दी मे नीक जकां विकसित भेल। केदारनाथ सिंह सन महत्वपूर्ण कविक लेखनी सं सेहो ई विधा निःसृत भेल अछि। मैथिली मे ई परंपरा ताकल जाए तं गुंजन सं पूर्वहु मायानन्द, भुवन आ ताहू सं पूर्व भेटि सकैत अछि, मुदा गुंजन अहू चरित्रक पद्य मे पर्याप्त योगदान देने छथि। 'दुखक दुपहरिया' गुंजनक किछु गीत-गजलक संकलन हालहि मे प्रकाशित भेल अछि। अहू निबंध मे गुंजनक संपूर्ण साहित्य पर विस्तार सं चर्चा भ' सकत, तकर गुंजइश नइं अछि। मात्र हुनकर प्रवृत्ति मूलक किछु बात राखल जा रहल अछि, जकर व्याख्या आगू भ' सकैत अछि।

ई कहब अप्रासंगिक नइं होएत जे हिन्दी आ मैथिली मे अबाध गति सं रचनारत आ प्रकाशनरत गुंजन जं परवर्ती काल मे हिन्दी मे प्रकाशन कम क' देलनि तं से मातृभाषाक प्रति उत्कट अनुरागे छल। वृत्ति सं सदति काल आकाशवाणी सं संबद्ध रहलाह अछि। रचना मे ध्वनिक महत्व पर सावधान रहबाक हिनकर प्रवृत्ति संभवतः हिनकर वृत्तिगत प्रभावक फल थिक। हिनकर 'उचितवक्ता' कथा संग्रह कें, वर्ष 1994 क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार देल गेल, ई ओतेक महत्वपूर्ण बात नइं थिक। कारण, आइ भारतीय भाषाक कोनो साहित्य मे पुरस्कारक जे राजनीति चलि रहल अछि, ताहि मे पुरस्कार कोनो रचनाक महत्व साबित नइं क' सकैत अछि।

वस्तुतः कोनो रचनाकार कोनो विधाक गुलाम नइं होइत अछि। असल बात होइत अछि जे उक्त विधा मे रचनाकारक घनत्व, जनसंबंध कें कोन स्तर तक प्रमाणित क' सकल अछि। गुंजन वास्तविक अर्थ मे युगीन जन-जीवनक जटिल जीवन पद्धति सं उपजल कुटिलता, त्रासदी आ विडंबनाक सोझराएल कथा शिल्पी छथि, जिनकर गद्यो मे एकटा लयात्मकता आ पद्यो मे एकटा कथात्मकता अनुगुंफित रहैत अछि।

ओना तं आइ संपूर्ण साहित्ये व्यवस्थाक विरोध करैत अछि आ श्रमिक वर्गक पक्षपात करैत अछि। आजुक साहित्य जं ईमानदार अछियो, तं तकर कारण इएह थिक। ताहि मे व्यवस्थाक विरुद्ध ढाढ़ भेल गुंजन पैघ डिडीर कें मेटा कए छोट करबाक फेर मे कहिओ नइं रहलाह, छोट डिडीर कें पैघ करबाक गुंजाइश तकैत रहलाह अछि। हिनकर साहित्य मेहनती वर्गक दोहइ दैत अछि, ओकर अस्तित्वक अनुसंधान करैत अछि आ ओकर अस्मिता बनएबाक न्यों पुख्ता करैत अछि। हिनकर सभ पात्र अपन शक्तिक समीक्षा करैत अछि। व्यवस्थाक यांत्रिकता मे ताल ठोकैत सोंसि-नकार सं गुंजनक पात्र डेराइत नहि अछि। एकांत मे बैसिकए बनावटी नोरो नइं बहबैत अछि, एते धरि जे सीमान पर ठाढ़ भेल कुकूर जकां ओ भूकितो नइं अछि, ओ इत्मीनान सं अपन जीवन प्रक्रिया मे लागल रहैत अछि। ओकरा अपन शक्ति आ अपन कार्य पद्धति पर पूर्ण आस्था रहैत छैक। अभिप्राय ई नहि जे गुंजनक पात्र कें क्रोधाग्नि नइं छैक। से तं छैके, मुदा ताहि हेतु सभ सं पहिने ओ अपन आलस्य सं संघर्ष करैत अछि। ई कहैत, एतए जं कबीर मोन पड़ैत छथि, तं बेजाए कोन ? कबीर जीवन पर्यंत ओहि रक्तभोजी समुदायक तिरस्कार कएलनि आ अपन युद्ध मे, अपन संधान मे, अपन मान्यताक संग अग्रसर रहलाह। विषयक स्तर पर गुंजनक साहित्य जं एक दिश कबीरक स्मरण दिअबैत अछि, तं भाषा शिल्पक स्तर पर अज्ञेयक।

हिनकर कृति मे खाहे ओ पद्य हो अथवा गद्य अथवा नाटक, सभठाम गहन जीवन-दृष्टि परिलक्षित अछि। बारह गोट कथाक संकलन 'उचितवक्ता' मे अइ शीर्षकक एकोटा कथा नइं अछि, मुदा अइ नामक सार्थकता ओइ समस्त कथा आ रचनाकारक तीक्ष्ण दृष्टि मे अछि, जे बेपिरीत पड़ाइत मनुष्यक पतन, राजनीतिक लोलुपता आ संक्रमणक कीड़ा जकां पसरैत हैवानीक पाछू आकर्षित लोक सभ कें गंभीरता सं देखैत-गुनैत अछि। 'संगी' सन कथा, जकर केंद्रीय सरोकार प्रेम सं अछि, मनुष्यक आदिम प्रवृत्ति आ समकालीन विवशताक संश्लिष्ट सूत्र तकैत अछि आ 'अपन समांग' सन कथा युगीन अन्हर-बिहाड़ि मे सुखाएल पात जकां फड़फड़ाइत मानवीय संबंधक खंडित अस्मिता कें चिन्हैत अछि। ई महत्वपूर्ण बात थिक जे गुंजन अपन रचनात्मकता लेल आन कोनो चीज सं बेसी आवश्यक 'मनुष्य' कें मानैत छथि। 'मनुष्य, जे आइयो किछु ताकि रहल अछि, ओहि मनुष्यक परिचय हम स्वयं ताकि रहल छी...।' हिनकर संपूर्ण रचना-संसार अही मनुष्य आ अही मनुष्यक परिचय तकैत अछि। 'हम एकटा मिथ्या परिचय' वैह तकैत अछि, 'अपन समांग' वैह तकैत अछि, 'मनुक्ख आ गोबर' वैह तकैत अछि आ आनो आन रचना वैह तकैत अछि।

ओना तं प्रकाश, सत्यता, यथार्थ, खुशहाली इत्यादि हर्षातुर उपादान आम जनजीवन मे कमे भेटैत अछि। गुंजनक कविता मे अन्हार, मिथ्या, परिचय, स्वप्न, दमघोंटू वातावरण, पीड़ा, बौक-बहीर लोक, प्रतीक्षारत लोक, अपमान, निराशा, ताप, रौद आदि शब्दक व्यवहार अधिक ठाम होइत अछि। रचनाकार अपन चारू कात छिड़िआएल जाहि सूत्र सं अपन रचनाक विषय लैत अछि, ओही मे अपन व्यक्तित्वो गढ़ैत अछि आ ओही मे अपन दृष्टि कें मांजैत अछि आ ओही परिवेश मे अपन

काव्यपुरुषक छवि निर्मित करैत अछि। एहना स्थिति मे ई अकारण नइं भेल अछि, जे हिनकर साहित्य मे एहेन बिंब आ प्रतीक प्रयुक्त भेल अछि आ ई प्रयुक्ति अपन स्थान विस्तार सं बनबैत अछि। जं संदर्भपूर्वक अइ प्रयुक्तिक व्याख्या कएल जाए तं स्पष्ट होएत ई सब शब्द हिनकर रचना मे अपन विराट् शक्तिक संग उपस्थित अछि। गुंजनक रचना सं अपनैती करैत ओहि दृष्टांत आ संदर्भ सं परिचित हएब आवश्यक अछि, अन्यथा हड़बड़ी मे मैथिलीक पाठक कें निर्णय देबा मे देरी नइं होइत छनि, जे गंगेश गुंजनक रचना मे अर्थोत्कर्ष जटिल अछि। असल मे गंगेश गुंजनक अनुभव संसार एकटा नव क्षितिज पर बनल अछि। स्पष्ट अछि जे किछु पुरातनवादी लोक कें ई संसार प्रेषित नहि भेलनि। अइ संप्रेषण विमुख स्थितिक दायित्व ओ लोकनि अपन अज्ञान कें कोना देताह ? तं कहि देब आसान भ' गेलनि जे गुंजनक रचनाक संप्रेषण बाधित अछि।

अंत मे ई कहब आवश्यक अछि, जे गुंजन अपन व्यवहार मे एक दिश अपन पारंपरिक धरोहरिक रक्षक प्रतीत होइत छथि तं दोसर दिश मानवीय संवेदनाक बात उठला पर सर्वथा एकटा नव धरातल पर नव परंपराक न्यों रखैत देखाइत छथि। आ नवारंभक आग्रही ई अहू अर्थ मे देखाइत छथि जे हिनकर काव्य पुरुष सब ठाम अपन जर्जर रूढ़ि कें त्यागि कए अपन जीवनक सुखमय बाट लेल नव संसारक खोज क' लैत अछि आ नव बाट पकड़ि लैत अछि। ई काज 'आइ भोर'क नायक सेहो करैत अछि, 'पहिल लोक'क नायक सेहो आ एक सीमा धरि 'अपन समांग' आ 'बुधिबधिया'क नायक सेहो।

जे-से, गुंजनक साहित्य अही नव धरातलक खोज मे एकटा नव प्रकाशक काज करैत अछि।

कथा संसार मे कथाकारक जीवनी

प्रायः देखल जाइत रहल अछि, जे लेखक अव्यवस्थित जातिक लोक होइत अछि। ई अव्यवस्था हुनकर जीवन-यापन सं ल' कए लेखन धरि मे व्याप्त रहैत छनि आ एहि अव्यवस्थाक दुष्परिणाम ओहि लेखकक परिवार, समाज तथा हुनकर मूल्यांकनकर्त्ता धरि कें भोगए पड़ैत छनि। मुदा प्रभास कुमार चौधरी एकटा एहेन कथाकारक नाम थिकनि जे व्यवस्थाक अनुपालन मे सर्वदा-सर्वथा उत्कर्ष पर रहलाह। व्यवस्थाक अर्थान्विति एतए अभिधा मे अछि। भारतीय कोनो भाषाक रचनाकारक जीवन आ लेखनक मूल्यांकन कएल जाए तं ई बात सोझां आओत जे, जे लेखक अपन रचनाशील जीवन मे सफल आ यशस्वी छथि, जे सामान्यतया अपन नौकरी-पेशा मे दायित्वहीन आ असफल व्यक्ति साबित होइत छथि। मुदा प्रभास बीमा कंपनीक नौकरी करैत एहेन सर्वसफल प्रबंधन अधिकारी साबित भेलाह, जिनका सं हुनकर समस्त अधीनस्थ अधिकारी प्रेरणा लैत छलाह। ठीक तहिना लेखन-जीवन मे सेहो हिनकर छवि रहलनि आ अपन समस्त अनुवर्ती पीढ़ीक रचनाकार कें प्रभावित कएलनि। प्रभास मात्र एकटा चीज मे असफल रहलाह, आ से असफलता थिक जे ई अपन उदारता सं मैथिलीक एकोटा रचनाकार कें प्रभावित नइं क' सकलाह, कारण जे रहल हो।

सन् 1956-57 मे वैदेही मे प्रकाशित कथा 'धरती कुहरि उठल' आ 'प्रतीक्षा' तथा सन् 1961 मे मिथिला मिहिर मे प्रकाशित कथा 'बाहर इजोत : भीतर धुआं' सं प्रभासक कथा लेखनक समधानल संधान शुरू होइत अछि। भारतीय राजनीतिक परिदृश्य लेल ई समय विचित्र तरहक समय छल। हिन्दीक रचनाकार सब अपन रचनाकर्म मे अइ बिंदु पर चौकस छलाह, हिन्दी कविता मे 'साठोत्तरी' शब्दक आविर्भावक भूमिका बनि रहल छल। तीसरा सप्तकक प्रकाशन भ' चुकल छल। कहानीक क्षेत्र मे नव परिदृश्यक निर्माण भ' चुकल छल। प्रभासक अध्ययनशीलताक

आयाम आ लेखन दृष्टि विराट छलनि। ओ देश-दशाक सब तरहें अवलोकन करैत आ आन-आन साहित्य सं परिचय रखैत बहुत क्षमतावान रचनाकारक रूप मे अपन उपस्थिति दर्ज कएने छथि। स्पष्ट अछि जे चीनी गणराज्यक धोखा, पाकिस्तानक सीमा संघर्ष, देश मे राजनीतिक द्वंद्व आदिक व्याप्तिक पश्चात् राजनीतिपरक कथाक रचना होइतए। मुदा मिथिलाक से दशा तखन धरि नहि छल। एहू समय धरि मिथिला प्राचीन रूढ़ि सं, निर्धनता, निरक्षरता, अकाल, बाढ़ि आदि प्रतारणा सं, आर्थिक आ शैक्षिक परतंत्रता सं, थोड़ेक सामंती स्वभावक दुष्परिणाम सं, अनुदार आ विषम सामाजिक परिवेश सं उबरि नइं सकल छल। एहेन बात नइं छल जे मिथिला राष्ट्रव्यापी राजनीतिक-आर्थिक-साहित्यिक समस्या सं प्रभावित नइं छल। असल मे जखन स्थानीय समस्या विकराल रहैत अछि, तखन राष्ट्रीय समस्या दिश लोकक ध्यान कम जाइत अछि। ओहुना घर बहारलाक बादे किओ अंगना आ दलान बहारबाक चेष्टा करैत अछि। कथाकार प्रभासक प्रवेश-काल एहेन दारुण छल !

अइ विकराल समय मे प्रभासक कथा-लेखन प्रारंभ भेल। ई समय, मैथिली कथाकार लेल एक दिश अइ तरहें चुनौतीपूर्ण छल तं दोसर दिश सुखकर ई छल जे अही समय मे मिथिला मिहिरक पुनर्प्रकाशन प्रारंभ भेल। फलतः पर्याप्त जोश-खरोशक संग एकटा सशक्त पीढ़ी कथा लेखन मे जुटल।

प्रभासक पहिल कथा संग्रह 'नव घर उठय : पुरान घर खसय' 1964 मे प्रकाशित भेल। एगारह गोट कथाक ई संग्रह मैथिली पाठकक बीच खूब समादृत भेल। एकर बाद पांचटा उपन्यास 'अभिशप्त' (1970), 'युगपुरुष' (1971), 'हमरा लग रहब' (1977), 'नवारंभ' (1979) तथा 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी' (1981) प्रकाशित भेल। आ कतोक बर्खक बाद 1988 मे हिनकर 28 गोट कथाक संकलन 'कथा-प्रभास' प्रकाशित भेल, जाहि मे दशकवार अपन रचनाकर्मक डाटा कथाकार स्वयं प्रस्तुत कएने छथि। फेर एकटा बेस गतगर संकलन 'प्रभासक कथा' प्रकाशित भेल। पहिने कहल जा चुकल अछि, जे प्रभासक प्रबंधन जीवन, वृत्ति आ लेखन तीनू मे कतेक उत्कृष्ट छल, तकर प्रमाण 'कथा-प्रभास'क लेखकीय वक्तव्य थिक। जे कोनो मूल्यांकनकर्त्ता हिनकर रचना संसार पर काज करब शुरुह करताह, तिनकर चारि अना समस्या प्रभास सवयं हल क' देने छथिन्ह।

विद्यापति, यात्री आ राजकमलक बाद प्रभासे एकटा एहेन रचनाकार छथि, जे भाषांतर मे सेहो ख्यात छथि। गंगेश गुंजन सेहो भाषांतर मे ख्यात छथि। ओना अनुवादक माध्यमे आब तं कतोक रचनाकार आन-आन भाषा मे पहुंचि चुकलाह अछि। मुदा प्रारंभिक समय मे प्रभास, गुंजन आ राजमोहन, हिन्दी मे मूलो लेखन करैत छलाह। जे-से...

प्रभासक कथाक मूल केंद्र मध्यमवर्गीय मैथिल समाज थिक। जीवनक अधिकांश भाग नगर-महानगर मे बितएलाक बादो हिनकर मोन हरदम गाम, घरक टोल-टापर, डीह-डाबर, सर-कुटुम, पिता, बाबी, नानी, मौसीक बीच घुमैत रहलनि। ई बात विशेष रूप सं उद्धरणीय थिक, जे आन कोनो भाषा साहित्यिक रचनाकार जखन प्रवासी भ' जाइत छथि तं हुनका लेखन मे गाम-घर नॉस्टेल्जिया जकां उपस्थित होइत छनि। मुदा प्रभासक ओतए गाम-घर, समाज-परिवार अपन संपूर्ण क्षमताक संग जीवित रहैत अछि। सहज चरित्र, आकर्षक कथन शैली, जनपदीय चरित्रक भाषा शिल्पक आश्रय सं सामान्य जन-जीवनक इच्छा-आकांक्षा, स'ख-मनोरथ, जीवन-संघर्ष कें चित्रित करबाकाल प्रभास एकटा शास्त्रीय गायक जकां सावधान रहैत छथि। अनुष्ठानपूर्वक आ चैन सं कथा कहबाक पद्धति प्रभासक रहलनि अछि, जे एकटा विशाल पाठक वर्ग अर्जित करबा मे सफल भेल अछि। प्रभास प्रायः अइ गूढ़ तथ्य सं अवगत छलाह जे मात्र घटना सूचित क' देब ने तं पाठक कें संतुष्टे करत आ ने जनपदीय विसंगति मेटएबा लेल ओकरा उद्वेलिते करत। तें, ओ घटनाक्रम आ पात्रक 'डिटेल्स' कें गंभीरता पूर्वक रेखांकित कएलनि। समय-सीमा आ पृष्ठ सीमाक अनुशासन सं कथा या तं विकलांग भ' जाएत, लूल्ह-अपंग भ' जाएत अथवा गोंग। कथा जं बजंता नइं रहए, हथगर-गोड़गर नइं रहए, तं तकर प्रयोजन की ? प्रभासक समस्त कथा आ उपन्यास बजंता अछि, हथगर अछि, गोड़गर अछि।

अपन रचना संसार मे कैक ठाम प्रभास फैंटेसी प्रेमी आ जीवन-मूल्यक स्तर पर चित्रण मे असहजताबोधक दृश्यक चितेरा बुझाए लगै छथि। 'एकालाप' कथा आ 'नवारंभ' उपन्यासक एकाध प्रसंग कें अइ कथनक पुष्टि हेतु देखल जा सकैत अछि। मुदा, मूल कथाक अन्वितिक उत्कर्ष हेतु तथा मानवीय सपना, कल्पना आदिक चित्रण हेतु प्रभासक लेल कोनोटा पद्धति त्याज्य नइं रहलनि अछि। असल मे, ई स्थिति जे प्रभासक कथा शिल्प मे आएल अछि, तकर मूल कारण थिक मिथिलांचलक लोक-संस्कृति आ लोक-संवेदना सं हिनकर आत्मिक लगाव। हिनकर एक-एकटा कथा-कृतिक स्वभाव ई स्पष्ट करैत अछि जे नानी, बाबीक कथा-पिहानी सुनबाक आदति सं आ तकरहि प्रेरणा सं हिनकर कथाकारक जन्म भेल अछि। लोक कथा, लोकोक्ति आ मुहावरा हिनकर कथा-संवेदनाक सोइरी-घर थिक। निम्नवर्गीय कथा-पात्रक प्रति हिनकर झुकाव सेहो अही गुणसूत्रक परिणाम थिक। 'प्रतीक्षा' (1957) सं 'पतिबरता' आ 'अष्टावक्रक शेषकथा' (1997) धरि मे प्रभासक लिखल लगाति एक सय कथा मैथिली कें भेटलैक, जकर वस्तु आ शिल्पक आयाम बहुत विस्तृत अछि। 'क्लांत', 'सुभद्रा-हरण', 'सूर्यास्त', 'धमकी', 'पिता', 'बाबी', 'ढेप', 'मलाहक टोल', 'भयाक्रांत', 'युद्ध विराम', 'उत्तर काण्ड', 'एकालाप', 'इन्द्रधनुष', 'स्थानांतरण', 'बजंताक पोता', 'विकलांग', 'बाढ़ि', 'पतिबरता', 'एकटा दुराचारक कथा', 'जगबा काल', 'टुस्सा आ बांझी', 'गय बिढ़नी : तोहर डंक', 'एक त्रिभुज : चारि कोण' आदि कथा सब हिनकर कथा सृजनक विविध पक्ष कें द्योतित करैत अछि आ अपना अपना समय मे बेस चर्चित रहल अछि।

प्रसंगवश एकटा घटना मोन पड़ैए, एकटा इन्टरव्यू मे मैथिलीक एकटा ख्यातिनाम विभागाध्यक्ष प्रश्न कएने छलाह 'राजकमलो सेक्स पर लिखै छल आ प्रभासो सेक्स पर लिखैए, दुनूक सेक्स-आकर्षण मे की अंतर ?' प्रश्न अहिना, एन-मेन अहिना अपमानजनक क्रियापद मे पूछल गेल छल। ओहि समय मे तं हम क्रोधों आगि उगल' लागल रही, मुदा आइ, जखन कि ने तं ओ प्रश्नकर्त्ता जीवित छथि आ ने ई दुनू लेखक, तखन ओइ प्रश्न कें मोन पाड़ैत प्रश्नकर्त्ताक दृष्टिकोण पर दया अबैत अछि, अहूं सभ कें दया अबैत होएत ! ओना प्रभास कें पढ़ैत काल राजकमले टा किऐ, ललित, मंटो, चुगताई, शरत्, मोपासां, गोर्की सब स्मरण अबैत रहैत छथि।

प्रभास मैथिली साहित्यक एकटा एहेन तुष्ट-दुरुस्त-समदर्शी आ उद्यमी कथाकार छथि, जे कोनो तरहक कुंठा, उपेक्षा, अपमान आदिक आहार स्वयं नइं रहलाह, लोभ-लालच कहिओ नइं दाबलकनि, रचनाकर्मक बलें धन लाभ या यश लाभ केर तिकड़म नइं रचलनि (ई दीगर बात थीक जे रचनाक बलें हिनका बड़ बेसी यश भेटलनि), मुदा तें आन किनकहु कुंठा, उपेक्षा आकि अपमानक सहन सेहो नइं कएलनि। उपलब्धि आ ज्ञानक जाहि शिखर पर पहुंचि गेल छलाह, तकर एकन्नी धरि एखन जे व्यक्ति सब नइं पहुंचलाह अछि, सेहो अहंकार मे सांढ़ जकां डिकरै छथि। प्रभासक प्रभूत प्रशंसक छथि, मुदा तिकड़मबाजी, क्षुद्र विचार आ बैमानी आ अहंकार मे 'दरभंगा स्कूल'क प्राचार्य हेबाक योग्यता रखैत छथि। व्यक्तित्व मे दूरो दराज सं प्रभासक व्यक्तित्वक बसात नइं लागल छनि। जे हो...

तइ प्रभासक कथा-संसारक जखन विश्लेषण हो, तं ओकर आधार शास्त्रीय बनाए कए नइं चलबाक चाही। प्रभासक कथाक विश्लेषणक दुइए टा आधार भ' सकैत अछि समाजशास्त्रीय अध्ययन आ मानवीय (जीवन-यापन परक) अध्ययन। आन कोनहु लक्षण ग्रंथक सहारा सं अथवा रजानीतिक प्रतिबद्धतापरक नाराबाजी सं प्रभासक कथा नइं जंचा सकैत अछि। कतोक बात हिनकर कथा मे सूक्ष्मता सं अबैत अछि, जकर नोटिस लेबा काल सावधान रहबाक स्थिति अबैत अछि। प्रभासक कतोक एहेन कथा अछि जाहि मे निम्नजातीय अथवा निम्नवर्गीय स्त्री पुरुषक यौन शोषण आ श्रम शोषण सामंतवर्ग द्वारा देखाओल गेल अछि। मोट नजरि मे ओ सामंत वर्गक अत्याचार अवश्य देखाइत अछि, मुदा ई प्रभासेक कथा थिक, जतए ओ सामंत सभ डेराएल कुकूर जकां नांगरि सुटाकौने, मुदा झुकैत देखाएत। ई प्रभासेक कथा थिक जइ मे सामंत वर्गक अइ डर कें शोषित वर्ग नोट क' लैत अछि आ तखन ओकरा अपन शक्ति पर भरोस होइत अछि। प्रभासक कथा अपन मुक्तकामी शोषित कथानायक कें ई शिक्षा द' दैत अछि, जे 'भेड़िया गुर्राता है/तुम मशाल जलाओ/उस में और तुममें /यही बुनियादी फर्क है/भेड़िया मशाल नहीं जला सकता (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)।' तें कोनो 'पतिबरता' सन स्त्री, कोनो 'बजंताक पोता'सन पुरुष आकि आन कतोक पात्र हिनकर कथा संसार मे ठाढ़ भेल अछि।

कथा हो अथवा उपन्यास, प्रभासक सृजन-देवताक जे सभ सं पैघ विशेषता थिक ओ ई, जे हिनकर नायक संघर्ष-पथ पर हिलै नइं छनि। जीवन संग्राम मे बेर-बेर पछाड़ खाइत छनि, सामाजिक-पारिवारिक कुचक्र मे बेर-बेर ओझरा कए धोखा खाइत छनि, धांय भटका खसैत छनि, मुदा तत्काल उठि कए ठाढ़ होइत छनि। अपन नायक कें अथकित ऊर्जा स्रोत देबाक हिनका सन सफल आ लक्ष्य प्राप्तिक निमित्त अपन नायक कें आस्थावान बनएबा मे निपुण कम कथाकार देखाइत छथि।

उपयोगी परंपराक रक्षा आ अनुपयुक्त रूढ़िक त्याग हिनकर जीवन आ लेखन दुनूक विशेषता रहल अछि। कर्मकांडक आडंबर, धार्मिक पाखंड, पारंपरिक लोकाचारक विसंगति आदि पर हिनकर कथा तीक्ष्ण व्यंग्य करैत अछि। शोषित, सीदित वर्गक प्रति आत्मीयता आ प्रभु वर्ग कें चेतौनी, हिनकर कथा-सृजन मे मुखर भ' कए आएल अछि। एकर अलावा, प्रेम तत्व, जे स्वातंत्र्योत्तर कालक मैथिलीक प्रगतिशील रचना सं पृथक जकां होअए लागल छल; मात्र संघर्ष, भोग, आतंक, पराक्रम, सीदन, द्वेष, घृणा, भय आदि व्याप्त भेल चल जाइत छल; ताहू क्षेत्र मे प्रभासक कथा समधानल हस्तक्षेप कएलक अछि। पारिवारिक आ सामाजिक संबंधक आश्रय सं सेहो, मैत्रीक आश्रय सं सेहो आ स्त्री-पुरुषक संबंधक आश्रय सं सेहो प्रेम तत्व हिनकर कथा मे पुनर्स्थापित भ' सकल। मुदा, ई प्रेम शारीरिक उन्माद आ क्षणिक उच्छवास धरि सीमित नइं अछि। अभिप्राय ई नहि, जे हिनका सं पूर्व मैथिली मे 'प्रेम' लुप्त भ' गेल छल, बल्कि ई, जे हिनकर रचना मे 'प्रेम तत्व' अपन आयत कें विस्तार देलक।

भाषा मे प्रतीकात्मकताक उपयोग क' कए सेहो ई बेस जकां प्रभाव जमौलनि अछि। 'बाढ़ि' सन कतोक कथा तकर प्रमाण थिक। जते तरहक विषय जन्य वैविध्य प्रभासक रचना-संसार मे अछि, तकर एतेक उत्कृष्ट प्रभावान्वितिक मूल कारण हिनकर कथन-शैली, भाषा-शिल्प तथा घटना-क्रमक संग कथाकारक भाषागत हरक्कति थिक। कहल जा चुकल अछि जे लोक-शैलीक हिनकर खिसक्करी चमत्कारिक अछि आ इएह बात हिनकर भाषा मे जादू भरैत अछि।

प्रभास अपन आत्मकथा नइं लिखलनि। मुदा एखन जं किओ सावधानी सं प्रभासक रचना संसार पर काज करथि, तं बड़ आसान अछि प्रभासक जीवनी लिखब। 1957-1997 धरिक अवधि हिनकर रचनाकाल थिक। अइ अवधि मे लिखल अपन समस्त कथा आ उपन्यास मे प्रभास अपन जीवन-यात्राक समस्त नोटेबुल प्वाइंट द' गेलाह अछि। हिनकर सब कथा किछु ने किछु हिनकर जीवनीक अंश थिक। मुदा चिंताक विषय थिक जे प्रभास अपना सं संबद्ध सब व्यक्तिक जीवनी तं लिखि गेलाह, आब हुनकर जीवनी के लिखत ?

पतित नायकक पावन कथाकार

‘जखन-जखन व्यक्ति आ ओकर करिक्का छाया, ताल ठोकि क’ आमने-सामने ठाढ़ भ’ जाइत अछि जखन-जखन झूठ, सत्य कें बलात् झांपय लगैत छैक तं हमर खिस्साक शिरोदय होइत छैक।’ ई कथन थिकियनि मैथिली साहित्यक प्रखर कथाकार धूमकेतुक। धूमकेतु आब सरिपहुं धूमकेतु भ’ गेलाह अछि, अपना नाम कें धन्य क’ गेलाह अछि। डा. भीमनाथ झा लिखैत छथि, ‘धूमकेतु एकटा ज्योति-रेखा, एकटा शक्तिशाली चमक, जे आकाश-पृष्ठ पर दृढ़तापूर्वक साफ-साफ आउट लाइन क’ क’ क्षितिज कें बेधैत पाताल-प्रवेश क’ जाइछ, एकटा आतंककारी चकचोन्ही जे क्षण मे विलीन भ’ गेलो पर बड़ी काल धरि लोक कें अपन अनुभूति करबैत रहैछ। आधुनिक मैथिली साहित्य मे सेहो एन-मेन एहने एकटा रश्मिपुंज धूमकेतु छिटकलै आ कथा कविताक नीचां मोट सन लाइन खींचैत बढ़ि गेलै।’

धूमकेतु सन रचनाकारक जीवन आ लेखन आ मरण जाहि स्थिति मे भेल से मैथिली साहित्यक अकबाली रचनाकार लोकनिक लेल, जे साहित्य अकादेमी समेत अन्य सरकारी-गैरसरकारी अनुदानक अड्डा पर तस्करी क’ रहल छथि, आ सामान्य जीवन व्यतीत कयनिहार कर्मनिष्ठ रचनाकार लेल सेहो, चुरू भरि पानि मे डूबि मरबाक स्थिति थिक। भोलानाथ झा, अर्थात् धूमकेतुक पांति ‘भीख-दुख मांगि क’ पढ़लौं आ जनकपुर मे चाकरी करैत छी’ हमरा लोकनिक शिला-धर्म कें कोनहुना प्रभावित नहि करत। ओना प्रभावित ईहो बात कहां क’ सकल, जे आइ धरिक कथापरक आ कवितापरक लेख मे धूमकेतुक नाओं टा गनाइत रहल अछि! मार्च 1996 मे राजमोहन झाक मोन मे एक टा नव प्रयोग अंकुरित भेलनि तं धूमकेतुक कथा ‘छठि परमेसरी’क पुनर्मुद्रण ‘आरंभ’ पत्रिका मे कयलनि आ संगहि हरेकृष्ण झाक एक टा समीक्षा सेहो। हरेकृष्ण एहि कथा पर विस्तार सं चर्चा कयलनि। ‘आरंभक’ अगिला अंक मे एहि कथा आ समीक्षा कें केंद्रित क’ क’ तीन टा लेख फेर छपल। छओ मासक बाद अशोक द्वारा संपादित पत्रिका ‘संधानक’ प्रवेशांक आयल तं ओहि मे मोहन भारद्वाज फेर सं अपन निबंध मे ओकर तकनीकी बिंदु पर विचार कयलनि। ईहो बात सत्य थिक जे एना विस्तार सं मात्र एकटा कथा पर चर्चा मैथिलीक पहिल घटना थिक। मुदा, से धूमकेतुक लेल कोनो तारण-बोरन वला बात सेहो नहि छल।

हमर अभिप्राय ई नहि, जे ई लेख लिखि क’ हमहीं तारण-बोरनक महान कार्य क’ रहल छी। मुदा समग्रता मे ई चिंता अवश्य अछि, जे मैथिली मे आइ धरि कोनो साहित्यकार कें हुनकर उचित बखरा नहि भेटलनि अछि, किनकहु बखरा सं बहुत बेसी, किनकहु बखरा सं बहुत कम! बीच-बीच मे किनकहु जं संतोषजनक बखरा भेटि गेलनि अछि, तं तकर कारण हुनकर स्तरीय लेखन कम आ हुनकर अन्यथा सामर्थ्य बेसी। अर्थात् मैथिलीक जीर्ण पीढ़ीक आलोचक आ मान्यतादाता, लेखक कें मान्यता दैत छलखिन्ह संबंधवाद पर आ मझोला पीढ़ीक आलोचक आ मान्यतादाता, मान्यता दैत छथिन्ह गोधियांवाद, वंशवाद आ संभावित उपकारवाद पर। मैथिलीक रचनाकार ई बात बूझैत छथि, जे आब मैथिली कें पाठक छैक नहि। तीन सय पोथी रचनाकार छपा क’ बिलहि दैत छथि, कतहु सं एकटा पहुंचनामा नहि अबैत छनि, पाठक दिस सं मान्यता भेटत नहि, तें ओ ‘आलोचकं शरणं गच्छामि’ भ’ जाइत छथि। धूमकेतु ने तं अइ प्रभु-संप्रदायक कुटुम छलाह, ने चेला भ’ सकलाह आ उपकारक स्थिति मे तं नहिएं छलाह, तें उचित बखरा नहि भेटलनि, तं कोनो बेजाय नहि...।

धूमकेतु कथा, कविता आ उपन्यास तीनू विधा मे लेखन कयलनि। कम लिखलनि, मुदा गुणवत्ता मे लिखलनि। सूचनानुसार हिनकर तीन टा उपन्यास अप्रकाशित अछि ‘रने-बने’ आ ‘हम अहां’ एहि दुनू उपन्यासक सूचना लेखक स्वयं अपना परिचय-पात मे ‘मैथिलीक नव कविता’ मे देने छथि। तेसर उपन्यास ‘मोड़ पर’ एही दशक मे लिखल गेल अछि। ओना एखनहुं धूमकेतुक रचना संसारक मूल्यांकन अपूर्ण रहत, कारण कैक टा हुनकर कथो एखन धरि अप्रकाशिते अछि। तैयो प्रकाशित रचनाक अवलोकन सं धूमकेतुक जे छवि स्पष्ट होइत अछि, से कथा आ कविता, दुनू मे एक टा ‘पतित पावन’क अथवा कही तं अकादारुण बाढ़ि मे भासैत जनपद लेल एक टा मजगुत खाम्हक, जकरा बलें किओ अपन कथित नीचता कें पवित्र क’ पबैए अथवा जकरा सं गराजोड़ी क’ क’ डूब’ सं बचि सकैए।

‘अगुरवान’ एखन धरि धूमकेतुक चर्चा कर’ लेल सभ समीक्षक कें सहारा दैत रह’ वला कथा थिक आ बेस चर्चित कथा सेहो। तें बात एतहि सं शुरू करैत छी। धूमकेतु कें ‘पतित पावन’ प्रमाणित करबा मे ‘अगुरवान’क केंद्रीय पात्र बेस सहायक होइत अछि। ‘अगुरवान’ शब्द मैथिली मे ‘अगुणवान’ सं उद्भूत अछि, अर्थात् जकरा मे कोनो गुण नंइ हो। धूमकेतुक अगुरवान सौंसे दुनियाक नजरि

मे महान पातकी, चोर, बदमाश, उचक्का, पितृनिंदक सभ अछि, मुदा धूमकेतुक भाषाक विवरण पाबि क' ओ उद्धृत भ' जाइत अछि, ओकर उद्धार भ' जाइत अछि। समाजक आचार संहिता मे अगुरवान घोषित व्यक्ति मे मानवीय मूल्य कोन तरहें ताकल जा सकैत अछि, तकर प्रमाण धूमकेतुक अधिकांश कथा द' सकैत अछि।

अस्तित्व आ अस्मिताक कोन-कोन एहि कथा मे धूमकेतु स्पष्ट क' देने छथि। संपूर्ण मिथिला आ मैथिल संस्कृति एहि कथाक पंक्ति-पंक्ति मे टनाटन बाजि रहल अछि। अगुरवान छौंड़ाक स्वाभिमान आ विद्रोही तेवर, अपंग-अपाहिज पंडित कल्लर मिश्र अर्थात् अगुरवान छौंड़ाक बापक जिजीविषा, जीहक तुष्टि लेल पत्नीक जांघ अदना पुरुख लग उघार होयबाक प्रति उपेक्षाभाव, अर्थात् मिथिलांचल जकरा इज्जति कहैत अछि, बहु-बेटीक देह-यष्टि, से इज्जति नइं थिक, सभ सं पैघ इज्जति थिक पेट, सौंसे परिवारक पेट भर' लेल, परिवारक स्त्रीक पेट आन पुरुष सं भारी भ' जाय, कोनो चिंता नहि। ओछाओन पर अपाहिज जकां पड़ल पंडित अपन परिचर्या धरि मे असमर्थ छथि, मुदा बेटियो सं छोट वयसक जवान पत्नी हुनका संग सहवास लेल नइं जाइत जथिन, तकर पुरुषोचित अहंकार आ आक्रोश, पंडिताइनक दहकैत जवानी, गन्हाइत दारिद्र्य, सतबेटाक वर्जना आ पति द्वारा देह बेचि क' सुभोजन जुटयबाक अनुमति, आत्मसम्मान, सामाजिक मान्यता, व्यावहारिक विवशता...एहि समस्त जाल मे ओझरा क' पंडिताइन अपस्यांत छथि आ अंततः गर्भवती भ' जाइत छथि, फलतः सतबेटा कोदारि सं काटि दैत छनि। माट्सैब, सभ बात बुझैत छथि, मुदा थोस थाम्ह लगब' लेल हरदम अगुरवान छौंड़ा कें परबोधै छथि। ओ छौंड़ा अइ दुनिया मे मात्र एक गोटेक बात कें मोजर दैत अछि, माट्सैबक बात कें, मुदा जखन माट्सैब कनेको डंडी- पासंग मारय लगैत (नीतिवश) छथि, ओ बात काटि क' चल जाइत अछि।...ई कथाक सारांश नहि, जनपदीय जीवनक अस्तित्व रक्षा आ अस्मिताक निर्माण केर सूक्ष्मतर गुणसुत्र थिक, जकरा धूमकेतु, अइ चारि टा पात्रक आश्रय सं जीवंत कयलनि अछि। कोनो पतित मे पावन तत्वक समावेश कोना रहैत अछि, तकरा तकबाक आंखि अइ कथा मे कथाकार देलनि अछि। अगुरवानक चोर-उचक्का होयब, लुच्चा-बदमाश होयब एक टा सामाजिक हरक्कति थिक, जकरा कथाकार पंडिताइन आ पंडितक दैहिक उदारता सं जोड़ैत छथि। अगुरवानक शब्द मे 'माट्सैब, एकरा लेल हम की ने केलौं? चोर बनलौं, जीवन गार्त क' लेलौं। मुदा ई रंडिया तैयो भसि गेल।'

कोनो एकटा कथा मे समाजक एतेक बिंदु कें उठा क' एतेक छोट कथा मे सफलता प्राप्त क' लेब साधारण बात नइं थिक। भारतक समस्त आधुनिक भाषाक कथा वितान लेल ईर्ष्याक बात भ' सकैत अछि।

मुदा, ई टेक्स्ट थिक सातम दशकक, आ मिथिलाक। आइ, जखन हम नव सहस्राब्दि मे प्रवेश करबा लेल उताहुल छी आ मिथिलाक कोनो गाम भूमंडलीकरणक विकृति सं अप्रभावित नहि रहि गेल अछि, तखन जं एहि कथाक पात्र सभक विवेचन कयल जायत, तं निष्पत्ति मे थोड़ेक अंतर भ' सकैत अछि। संभव अछि जे आजुक स्थिति मे धूमकेतु पंडिताइन कें अपन देह तुष्टि लेल उदार बना दितथिन, हुनका ऊपर सतबेटाक वर्जना अथवा पंडितक स्वार्थपरक प्रेरणा नहि रहितय, पंडिताइन स्वयं अपन दैहिक आवश्यकता सं कोनो पुरुष कें अंगीकार करितथि, भ' सकैए ओ पुरुष हुनकर सतबेटे होइतय, भ' सकैए तखन स्वयं बापे-बेटा मे संघर्ष होइतय, भ' सकैए ...किछु भ' सकैए, किछु भ' सकैत छल...मुदा कोनो गर्भवती स्त्रीक हत्या मात्र पुरुषक छद्म प्रतिष्ठा आ फोंकिल पौरुषक कारण नहि होइतय।

बात एहनो नइं अछि जे धूमकेतु ततेक बेसी प्रतिक्रियावादी अथवा मर्यादावादी छलाह जे एहेन अपैत-कुपैत (?) बात सोचि नहि सकैत छलाह। 'बिड़रो' कथा तकर प्रमाण थिक। कथाक नायिकाक मनोवेग कें चित्रित करबाकाल कथाकार कतेक तल्लीन छथि, से कथाक परायणक बादे किओ बूझि सकैत छथि। कैक बेर तं एहि नायिका कें पाठक 'पारो' (यात्री) आ 'सुरमा सगुन बिचारै ना' (राजकमल)क नायिका सं आगू बुझ' लगैत छथि। कोनो टा स्त्रीत्व वाली स्त्री आ पौरुषपूर्ण पुरुषक बीच एकांत मस्तिष्क एहेन बात सोच' मे निश्चित रूप सं नहि धोखायत। आचार संहिता तं समाज कें शिष्ट करबा लेल व्यक्ति द्वारा बनाओल जाइत अछि आ समष्टि द्वारा धारण कयल जाइत अछि। आगू चलि क' वैह धर्म भ' जाइत अछि। मुदा एहि आधुनिक आकि उत्तर-आधुनिक युग मे आब मनुष्यक मस्तिष्क पर समाजक कब्जा नहि अछि। सोच' लेल ओ मुक्त अछि। तें 'बिड़रो' कथाक नायिका अपन पौरुषयुक्त भाइक सुपुष्ट आ पुरखाह देह देखि क' जं मोहित होइत छथि आ अन्हार तथा गुमार मे सुतल-सुतल अपन भाइ संग मोने-मोन प्रणय-कल्पना दिस उद्यत होइत छथि, तं ई स्वाभाविक थिक। कोनहु तरहक क्षुधा आ कामनाक अतृप्ति आचार संहिताक निर्वाह नहि करैत अछि, कम सं कम चिंतन मे तं नहिएं। ई चिंतन भने ओकरा कुंठित क' दिअय, मुदा सोच' लेल तं किओ नहिएं रोकि सकैत अछि। धूमकेतु अहू कथा मे पथभ्रष्ट चिंतन करैत कथा नायिकाक मनोवेग कें सजीव क' देने छथि। ई कथा अयना जकां नायिकाक मानसिक यात्रा कें स्पष्ट करैत अछि।

कथा चाहे 'टिटिम्हा' हो कि 'बिलाड़ि', 'कुलटा', 'लछमन' आ कि 'एक टा मूल्यहीन कथा' आ कि 'देह' कोनो हो सभ ठाम धूमकेतुक वैह पतित पावन एटीच्यूड देखाइ पड़ैत अछि। सौंसे समाजक नजरि मे जे निकृष्ट अछि, ताहि व्यक्तिक अइ निकृष्टताक आधार तत्व ओही समाज कें देखबैत ओकर असली रूप सोझां राखि देताह। आब अहीं तय करू, जे कुलटा के अछि, लछमन सन आकि अगुरवान सन चोर के अछि, मिसेज खन्ना बिलाड़ि किऐ छथि, टिटिम्हाक भैया कोना बदललाह आ भौजीक माथ कोना शांत भेलनि, 'संबंध-बंध' मे संबंधक की हाल होइत अछि ? विषयक स्तर पर धूमकेतुक संपूर्ण लेखन अत्यंत आधुनिक आ चिंतनक स्तर पर

तं बल्कि कैक बेर अपना समय सं आगू लगैत अछि। मुदा ई अपन कैक टा रचना मे अपनहि शिल्पक तुलना मे पछड़ि गेल छथि। 'अगुरवान', 'बिड़रो', 'संबंध-बंध', 'टिटिम्हा' आ 'छठि परमेसरी'क कथा शिल्प कें आदर्श मानि क' चलल जयबाक चाही। से हिनकहि टा रचना संसार लेल नहि, आनो नव-पुरान रचनाकार लेल एहि कथा सभक शिल्प अनुकरणीय अछि। मुदा 'कुलटा' कथाक कथ्य जतेक शानदार छनि, शिल्प ततबे पारंपरिक आ अप्रभावी। किछु कथा मे तं पाठकक प्रवेश सेहो थोड़े कालक लेल 'हडल रेस' भ' जाइत अछि। यद्यपि भाषा एकदम पोछल-पाछल, शब्द एकदम सं नीपल चिनबार पर सजाओल फूल सन, तथापि जं दू तीन अवतरण धरि पाठक कें कथा मे आत्मीय प्रवेश नहि भेटय, तं तकर मूल कारण ओहि कथा पर रचनाकारक विद्वताक आक्रमण भ' सकैत अछि। मस्तिष्क मे विचारक बिहाड़ि, सभटा कें उगलि देबाक छटपटाहटि, उगलि नहि सकबाक बेचैनी आ विवशता, लिखल रचना कोनो उपयुक्त पत्रिका कें पठयबा लेल डाक व्यय धरिक अभाव, लिखि क' छोड़ि देलाक पश्चात ओकर अनुपयुक्तताक पश्चाताप, घर-परिवारक खेवा-खर्चाक चिंता...एहि समस्त चिंताक जेल मे जे लेखक बाझल हो, जे घर-परिवार-समाज-साहित्य सभ लेल अपन दायित्व कें चिन्हैत हो तकर बेचैनीक कल्पना करबा योग्य नहि भ' सकैत अछि। धूमकेतु अहू बेचैनी मे किछु लिखि सकलाह, तं तकर मुख्य कारण भोलानाथ झा मे प्रविष्ट एक टा महान लेखक धूमकेतुक प्रतिभे थिक।

ओझराहटिक ई जाल आ दायित्व बोधक ई उत्कर्ष कोनो व्यक्ति कें कन्फ्यूज्ड करबा लेल, किंकर्त्तव्यविमूढ़ करबा लेल पर्याप्त होइत अछि। मुदा धूमकेतु कहियो अपन कथानायके सभ जकां कन्फ्यूज्ड नहि भेलाह। हं, हिनक भिन्न-भिन्न कथाक नायकक चरित्रांकन सं एतबा बुझाइत अछि जे अपना जीवनक कोनो डेग उठयबा मे सभ दिन समतल नहि रहलाह। ई अकारण नहि अछि, जे कोनहुं कथाक हिनकर नायक-नायिका गांधीवादी बनि जाइत अछि, कतहु फ्रायडवादी, कियो भोगवादी, कियो प्रतिक्रियावादी, कियो शोषित, कियो पराजित, कियो पश्चाताप करय लगैत अछि, कियो एम.एल.वादी आदि बनि जाइत अछि। मुदा एतबा तय अछि, जे ई समस्त पात्र हमरा समाजे सं लेल गेल अछि आ एकरा सभ कें धूमकेतु जीवन दैत काल एकदम ईमानदार आ तटस्थ रहलाह अछि। जाहि व्यक्ति कें स्थान-काल-जीवन एते तरहक तबाही देने हो, तिनकर जीवन मे एकतानता कोना आओत ? अपन संपूर्ण लेखन मे मुइल-टुटल लोक लेल अपन सहानुभूति ई बचा रखलनि।

'छठि परमेसरी' कथा 'अगुरवान' सन प्रसिद्ध भने नहि भेल हो, मुदा चर्चा एहि पर ओकरा सं बेसी अवश्य भेल अछि। धर्म, जिजीविषा, कूटनीति आदि कतोक दृष्टिएं अइ कथा पर विचार कयल गेल अछि। एक टा विद्वान कें पूछल गेलनि जे अहांक सभ सं पैघ समस्या की थिक? ओ जवाब देलखिन स्त्री आ ईश्वर। एहू कथाक सभ सं पैघ समस्या यैह दुनू अछि। ध्यातव्य थिक जे एतय 'स्त्री' कें समस्या नहि कहल गेल अछि, 'ईश्वरो' कें नहि। बल्कि समस्त समस्याक कारण। 'स्त्री' या तं बेटी होइत अछि या माइ, बहिन, पत्नी, दादी, सारि, सासु आदि। अर्थात् स्त्री इज्जति होइत अछि। इज्जति मतलब धन, वैभव, समृद्धि, प्रेम, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य...। ककरो इज्जति पर कब्जा क' लिअ', सभ किछु पर कब्जा भ' गेल। आ अशिक्षिता पर कब्जा करब आसान अछि, तें स्त्री कें अशिक्षित राखू। अशिक्षित स्त्री पर धर्मक आश्रय सं कब्जा करब सभ सं आसान अछि। वर्तमान समय मे रामानंद सागर आ बी.आर. चोपड़ा छाप सीरियल डाइरेक्टरक बाढ़ि असहज नहि अछि। 'छठि परमेसरी' अही विमर्शक उदाहरण थिक। अइ कथा मे धर्मभीरु मिथिला आ अवसर अयला पर भक्ति आ निष्ठाक संग लूप-लाइन निकालब, बाइपास ताकि लेबा मे दक्ष मैथिलक प्रवृत्ति कें प्रतीकात्मक रूप मे चित्रित कयल गेल अछि। मुदा एहि कथाक बुनावटि, एकर शिल्प जतेक मजगुत अछि, ततेक शानदार एकर विषये नहि अछि। दोकान सं घुरल गोपीनाथक जतेक समधानल चित्रण एहि कथा मे कयल गेल अछि, ओकर समस्ये ततेक महत्वपूर्ण नहि अछि। धर्म आ पूजा मिथिलाक सभ सं पैघ संकट अवश्य थिक। एहि नाम पर अपार अपव्यय मिथिला मे होइत अछि। मुदा पूजा-पाठ आ पावनि- तिहारक लघुत्तम उपाय सेहो प्रचलित छैक। हं, जोतखी जीक तिकड़म आ नीच हरक्कति तथा गोपीनाथ दुनू बेकतीक हृदय परिवर्तन, ईश्वर पर दया कर' लेल पाठक कें अवश्य विवश करैत अछि। ई कथा गोपीनाथक अभावक कथा नहि थिक आ एहि कथाक अनुसार मिथिला धर्मभीरु नहि अछि, धर्मभीरुताक नाटक करैए ई दुनू बात प्रमाणित अछि। मिथिला मे 'छठि परमेसरी' कें बड़ टोटमाह देवता मानल जाइत रहल अछि। मुदा ताहि देवता कें चढ़ाओल केरा, पांच पाइ प्रति छिम्मड़ि कमीशन पर बेचनिहार बाले, गोपीनाथक भक्ति सं चौल कयनिहार जोतखी आ महाजन तथा पाइक कारणें अपन कबुला बदलनिहार गोपीनाथ एहि बातक उदाहरण थिक, जे धर्म एकटा नाटक थिक, जकर संवाद सुविधानुसार लोक कखनहुं बदलि सकैए। ई कथा मिथिला मे हिलैत धार्मिक आस्थाक कथा थिक। ओना हरेकृष्ण झा, मोहन भारद्वाज आ अशोक एहि पर प्र्याप्त चिंतन क' चुकलाह अछि।

एकटा बात धूमकेतुक रचना पर विचार करैत अलग सं कहबाक थिक, जे अर्थतंत्रक व्यूह आ यौन लिप्साक आगि हिनकर कथा सभ मे निर्णायक स्थिति मे रहैत आयल अछि। यैह दुनू तत्व हिनकर रचना-संसारक नागर-नागरि कें संचालित करैत अछि, ओकरा धार्मिक, अधार्मिक, पापी, पुण्यात्मा, चरित्रहीन आ चरित्रवान बनबैत अछि। एकरहि कारण किओ चोर बनैत अछि आ किओ छिनारि अथवा छिनार। अर्थात् आधुनिक समयक सूक्ष्म चिंतनधारा धूमकेतुक केंद्रीय विषय रहल अछि। कविता मे सेहो धूमकेतुक नजरि अपना समाजक विसंगति पर छनि, मुदा अभिव्यक्तिक तरीका दोसर छनि। यद्यपि कविता कमे प्रकाशित छनि। तथापि जे

छनि ताहि मे पौराणिक बिंब आ मिथकीय प्रतीकक संग समाजक जर्जर स्थिति कें चित्रित कयने छथि। यौनाचार आ आर्थिक अराजकताक पौराणिक रूढ़िक संग 'मुक्ति', 'सायुज्य', 'समाधिस्थ' आदि कविता मे व्यक्त चित्र चकित करैत अछि। जतय व्यासक लेल धूमकेतु कहैत छथिः

जन्मे हुनक बोध थिकनि
जन्म लैत देरी भ' जाइत छथि
हीनचेता मांसभक्षी पाराशर गिद्धक समाज सं बाहर
ओना वीर्य-दानक महत्व ओ बुझैत छथिन।
ओत' हुनका ठीके बुझयलनि जेः
चालैन लेने अपस्यांत छी
मुदा आब ई आगि मिझाएत?
जरए दिऔक आब अइ बजार मे
कीनै जोकरक चीजे नै छैक।

आ तें बिना किछु किनने धूमकेतु चल गेलाह, मुदा बहुत किछु द' गेलाह। बहुत रास इजोत, बहुत रास बाट, बहुत रास आंखि...। प्रयोजन अछि जे हम सभ एहि बजार कें बदलि दी।

अभिमन्युक एकालाप

जखन-जखन शिष्ट जनक काव्य पंडित लोकनि द्वारा बन्हा कए निश्चेष्ट आ संकुचित भ' जाएत तखन-तखन ओकरा सजीव आ चेतन प्रसार देशक सामान्य जनताक बीच स्वच्छंद रूप सं बहैत प्राकृतिक भावधारा सं जीवनतत्व ग्रहण कएला सं प्राप्त होएत एहेन मान्यता आचार्य रामचन्द्र शुक्लक छनि। अइ 'सामान्य जनता' शब्द पर जोर दैत केदारनाथ सिंह मानैत छथि जे मुद्रण कलाक विकासक फलस्वरूप काव्यक प्रत्यक्ष श्रोता परोक्ष पाठक मे बदलि गेल छल आ कविता अपन अनुभूति एवं अभिव्यक्ति प्राणाली, दुनू मे विशेषीकरण दिश बढ़ल जा रहल छल, आचार्य शुक्ल द्वारा कविताक विकासक संदर्भ मे 'सामान्य जनता' शब्दक प्रयोग आ ओकर स्वच्छंद बहैत भावधारा सं जीवनतत्व ग्रहण करबाक बात महत्वपूर्ण थिक। आचार्य शुक्ल केर एहि मान्यता सं अजुको नव रचनाकार कोनो ने कोनो रूप मे अपना कें संबद्ध महसूस क' सकैत अछि।

वर्तमान शताब्दीक सातम दशक धरि 'चित्रा', 'स्वरगंधा', 'आत्मनेपद', 'दिशांतर', 'कालध्वनि', 'अंततः', 'सीमांत', 'हम एक मिथ्या परिचय' आदि महत्वपूर्ण कविता संकलनक प्रकाशन भ' गेल छल। हिन्दी साहित्यक परिदृश्य पर चर्चा करबा काल नामवर सिंह आ विश्वनाथ त्रिपाठी अइ बात पर सहमत होइत छथि जे 1964 मे नेहरू युगक अंत भेल। भारत-चीन सीमा संघर्ष ओहि समयक अत्यंत महान घटना छल। किछु गोटए नेहरूक मृत्युक कारण एकरहि मानलनि। अही समय मे मोहभंगक स्थिति उत्पन्न भेल। सीमा संघर्षक पश्चात् भारतक कम्युनिस्ट पार्टी पहिने दू भाग मे बंटल, फेर तीन भाग भेल। कम्युनिस्ट पार्टी सं अलग भेल एक अंश आगू आबि कए हत्याक राजनीति चलओलक, जकरा नक्सल विप्लवक रूप मे स्मरण कएल जाइत अछि। अही अंतराल मे पाकिस्तानक संग भारतक युद्ध भेल। राजनीति मे गैर-कांग्रेसवादक हवा चलल। सत्ता मे कांग्रेसक एकाधिकार समाप्त भेल। अनेक

प्रांत मे अल्पकालिक संविद सरकार बनल। एक अर्थें ई राजनीतिक अस्थिरताक युग छल। अइ वातावरण सं साहित्यक अप्रभावित रहब असंभव छल।

मैथिली साहित्य मे सेहो हिन्दीक अपेक्षा कोनो परिस्थितिजन्य भेद नहि छल। अनेक कारण सं समस्याक फलक आ विषय वस्तु विस्तृत भ' चुकल छल। नितांत पारिवारिक स्थिति, आंचलिक समाज, निजी आ मात्र क्षेत्रीय संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रेवाज आदि सं बढ़ि कए रचनाकारक दृष्टि विश्व घटना-चक्र दिश बढ़ि चुकल छल। 'चित्रा' आ 'स्वरगंधा'क प्रकाशन एकटा नव बाट प्रशस्त क' चुकल छल। तें उपर्युक्त समस्त स्थिति मैथिली साहित्यक लेल सेहो बहुत गंभीर रूप सं प्रभावी भेल। अइ अंतरालक साहित्य मे जे अनेक तरहक नकारवादी तथा उच्छृंखल प्रवृत्ति देखाइछ ओकर स्रोत निश्चित रूप सं कतहु-ने-कतहु अइ राजनीतिक वातावरणो मे अछि। यात्री, राजकमल, किसुन, सोमदेव, मायानन्द, धीरेन्द्र, गुंजन, धूमकेतु, कुलानन्द, रेणु, जीवकांत, महाप्रकाश प्रभृतिक कविता मे अइ राजनीतिक हड़कंप, सामाजिक खंडित आस्था, मानवीय अवमूल्यन, सामूहिक असंतोष आदि स्पष्ट रूपें परिलक्षित होइत अछि। अइ तथ्य सं प्रायः किओ असहमत नहि हेताह जे अइ सभ परिस्थिति सं साहित्यक भाषा मे अपार परिवर्त्तन भेल। एतबे नहि, भाषा ध ारि बोल-चालक भाषा भ' गेल, पंडिताउ नहि रहल, बल्कि भाषा मे एकटा खास प्रकारक खौंझ, चोट, प्रहार आदि आबि गेल। ओना अइ सभक बीजारोपण यात्री पहिनहि क' चुकल छलाह 'अगराही लागउ, बरु बज्र खसउ...'।

मैथिली साहित्य मे खांटी राजनीति किछु उपेक्षित भ' गेल छल, तकर गंभीरतापूर्वक पुनर्प्रवेशक काल सेहो इएह थिक।

हिन्दी कविता पर चर्चा करैत नामवर सिंहक कहब छनि, 'अइ बीच एकटा गप इहो भेल जे कविताक दुनिया मे प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नयी कविता, अकविता आदिक सीमा-सरहद एकदम टूटि गेल आ अइ प्रकारक समस्त लेबुल निरर्थक साबित भेल। परिणाम ई भेल जे आजुक कविता पर कोनो लेबुल साटब संभव नइं अछि ने विचारधाराक, ने काव्य-शिल्पक।' मैथिलीक संदर्भ मे युवा आ युवतर कविगण मे अइ बातक उदाहरण ताकल जाए लागए तं कहए पड़त जे किछु कविक कौशल मे चकित कर' वला संभावना विद्यमान अछि। उदाहरणक लेल 'समकालीन भारतीय साहित्य'क 48म अंक मे आएल मैथिली कविता पर राष्ट्रीय स्तरक टिप्पणी उल्लेखनीय अछि। मैथिलीक अइ नव्यतम पीढ़ी कें जं समाज सं अनुभूतिक अवसर, निजी प्रतिभा सं जीवनदृष्टि विकसित करबाक आधार भेटलैक अछि, तं अइ मे कोनो टा द्वैध नहि, जे अइ पीढ़ी कें अपन अग्रजक रचनाशीलता सं बहुतरास सोझराओल बाट सेहो भेटलैक अछि। हरेकृष्ण, वियोगी, नारायणजी, सारंग कुमार, विद्यानन्द, कृष्ण मोहन झा प्रभृति केर कविता मे चकित कर'वला एहने तत्व भेटैत अछि।

सामान्य जनताक बीच स्वच्छंद बहैत प्राकृतिक भावधारा साहित्यक लेल बहुत महत्वपूर्ण होइत अछि। प्रायः सभ साहित्यक सभ पीढ़ीक संग इएह स्थिति होइत अछि। कीर्तिनारायण मिश्र (जन्म 17-7-1936) मैथिली साहित्य मे बेस प्रतिष्ठित नाम अछि। ई प्रायः कविते टा लिखलनि। 1967 ई. मे 'सीमांत' (काव्य संकलन) प्रकाशित भेलनि। 'ध्वस्त होइत शांतिस्तूप'क आच्छादप पृष्ठ पर लिखल गेल अछि, 'सृष्टि सं पूर्व विध्वंस करब कीर्त्तिनारायण मिश्रक सामाजिक राजनीतिक चेतनाक संगहि काव्य-चेतनाक अभिन्न अंग बनि गेल अछि। 'सीमांत' सं 'ध्वस्त होइत शांति स्तूप' तकक काव्य-यात्रा बेर-बेर कवि द्वारा अपन कविताक प्रतिमान कें तोड़ैत आ सर्जनाक लेल उपादेय काव्य-तत्वक अन्वेषणक यात्रा थिक। ओहि तंत्र आ मंत्रक निषेध थिक हिनकर कविता, जे मानव कें नागफांस मे निरंतर बन्हैत अछि आ अंततः अपन चाकर आ चाटुकार बना लैत अछि।' समाजक सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी कवि होइत अछि। स्वतंत्रता पूर्वक स्थिति सामान्य जनजीवन मे एकटा स्वप्निल वातावरणक लालसा भरि देने छल जे स्वातंत्र्योत्तर काल मे नहि भेल। अनेक वर्ष धरि स्वतंत्र भारतक नागरिक भ'ओ कए भारतीय मनुष्य अपना कें भारतीय अत्याचारीक खेलौना बूझैत रहल। साठिक दशकक आगू-पाछू आओरो अनेक सामाजिक राजनीतिक उथल-पुथल भेल आ जनमानस पर एकर निस्सन चोट पड़ल। अनेक तरहक नीक-बेजाय अभिधारणाक जन्म भेल। अइ समस्त परिस्थिति सं कवि कें साक्षात्कार भेलनि। स्वाभाविक रूप सं सृजनधर्मी लोकनि क्षुब्ध, व्यथित आ हतप्रभ भेलाह। मोन मे आक्रोश उठलनि, विद्रोही भेलाह। अभाव, अवसरवादिता, चाटुकारिता आदि दैनिक जन-जीवनक आवश्यक अंग भ' गेल, जकरा बर्दाश्त करब कविक लेल संभव नहि रहल। आ तें मोह भंगक स्थिति मे समस्त निषेधात्मक बान्ह-छान्ह कें तोड़ि-ताड़ि कए कवि लोकनि विद्रोही भ' गेलाह। अइ तूरक कवि लोकनिक चर्चा करैत रामकृष्ण झा 'किसुन' लिखैत छथि, 'साहित्यक मैदान मे जे बहुत दिन सं शामियाना तानल अछि, तकर आब डोर सब सड़ि गेल अछि, घुनलग्गू भ' गेल अछि, ओहि मे लागल झाड़-फनूस सब झरि-झखरि गेल अछि। जं एखनो किछु व्यक्ति ओहि चिरी-चित्ती भेल शामियाना कें बड़े यत्न सं सीबाक, चेफड़ी पर चेफड़ी लगएबाक असफल प्रयास मे व्यस्त छथि तं नवकवि लोकनि कें एहेन महानुभाव पर दया होइत छनि।'

अइ परिस्थिति मे नवकवि लोकनि मात्र दया टा क' कए नहि रहि गेलाह। अपन भोगल यथार्थक अनुभूति कें नवीन शब्दावली आ नूतन अर्थवत्ता संग प्रस्तुत कर' लगलाह। स्वाभाविक छल जे पारंपरिक विचारक लोक चौंकलाह। कलह गेल अछि जे कीर्तिनारायणक 'सीमांत' क माध्यमे मैथिली मे पहिले-पहिल अकविताक चर्चा भेल। कविता सुनबाक अथवा पढ़बाक अभ्यस्त पाठकक चौंकब अस्वाभाविक नहि छल। मुदा पाठकक चौंकब कीर्त्तिनारायणक काव्य सृजन मे कोनो व्यतिक्रम उपस्थित नहि क' सकल। कारण स्पष्ट अछि जे अइ पीढ़ी कें मोहभंगक पराकाष्ठा सं साक्षात्कार भ' गेल छल। दोसर बात जे साठि सं पूर्वहि 'स्वरगंधा' प्रकाशित

भ' कए विरोधक अधिकांश अन्हर-बिहाड़ि झेलि चुकल छल। आ कीर्त्तिनारायण अपन विचारधारा, अपन जीवनदृष्टि एवं अपन जीवनानुभूतिक संग काव्य-सृजन करैत रहलाह।

साहित्यक समाजशास्त्रीय चिंतक मैनेजर पांडेयक कहब छनि, 'कविता मे जीवन-जगतक यथार्थ आ अनुभवक अभिव्यक्ति केवल प्रातिनिधिक रूपहि टा मे नहि होइत अछि, प्रतीकात्मको ढंग सं होइत अछि। सत्य तं ई अछि जे उपन्यास मे प्रातिनिधिक पद्धतिक प्रधानता भेटैत अछि तें कविता मे व्यंजनाक पद्धति प्रायः प्रतीकात्मके बेसी होइत अछि। कविता मे यथार्थ आ अनुभवक साक्षात् अभिव्यक्ति नहि होइत अछि। ओहि मे पुनर्रचित यथार्थ आ अनुभवक अभिव्यक्ति होइत अछि, तें कविता यथार्थ, जीवनक यथार्थ सं भिन्न होइत अछि, कखनहुं ओहि सं किछु बेसी कखनहुं ओहि सं किछु कम।' प्रायः इएह कारण थिक जे कविताक समाजशास्त्रीय तंतु समाजशास्त्री लोकनिक पकड़ मे नहि अबैत छनि।

एहि सभ बिंदु कें ध्यान मे रखैत कविता मे चारूभर पसरल विडंबना स्पष्ट होइत अछि आ कविक उपर पड़ैत अतिरिक्त दबावक स्तर तय होइत अछि। एहि तरहें परिवेश मे व्याप्त विकृत आ घृणास्पद स्थिति देखबाक आ सहबाक, अइ स्थिति मे जीबैत जन-समुदायक निश्चेष्टता आ अपन अस्मिताक प्रति उपेक्षा भाव अनुभव करबाक तथा अन्य वर्णित जटिलता आदि समस्त पीड़ा कें भोगैत कविक औनाहटिक कल्पना कएल जा सकैत अछि।

एहना स्थिति मे जं कीर्त्तिनारायण सृजन सं पहिने विध्वंसक स्थिति मोन मे रखैत छथि आ हिनकर कविता ताहि दिशाक बात करैत अछि, तं ई कोनो आयातित प्रसंग नहि थिक। 'सीमांत' (1967), 'हम स्तवन नहि लिखब' (1979) आ 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' (1991) अपन तीनू काव्य संकलन मे कवि निरंतर अपन जीवन-दृष्टि सं समाज आ व्यवस्थाक जांच-पड़ताल करैत रहलाह अछि। जेना कि कवि स्वयं कहैत छथि, 'परंपराक अध्ययन ज्ञान कें समृद्ध करैत छैक, मुदा परंपराक प्रति विशेष व्यामोह सं कल्पनाशीलता एवं रचना शक्तिक ह्रास होइत छैक। तें परंपरा केर ओतबय अंश हमरा स्वीकार अछि, जे नितांत जीवंत एवं अनिवार्य हो शेष हमरा लेल महत्वहीन, व्यर्थ ! परंपरा सं विद्रोह एवं ओकर अस्वीकृति हमरा लेल फैशन नहि।' परंपराक प्रति परिष्कारवादी ई दृष्टिकोण कीर्त्तिनारायणक कविता सं कनेक आओर स्पष्ट होइत अछि। हिनकर कविता मे परंपराक चर्चा किछु तेहेन खौंझ आ व्यंग्योक्ति संग होइत अछि जे साफ-साफ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे कवि कें कोनो समय मे परंपरा आ पारंपरिक मान्यता पर अतिरिक्त आस्था छलनि, ओहि सं बहुत बेसी अपेक्षा छलनि, मुदा से फलित नहि भ' रहल अछि। जेना कि पूर्वहि कहल जा चुकल अछि, कोनो महान शक्ति अथवा मान्यता अथवा अवधारणा सं जहन आस्था टुटैत अछि, तं आत्मबोध आ मोहभंग होइत अछि तथा ओहि समस्त मान्यता सं निषेधात्मक रुख तत्काल शुरुह होइत अछि। सातम दशक मैथिली साहित्यक लेल अहू कारणें बेसी महत्वपूर्ण अछि। जखन समस्त राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, राजनीतिक उथल-पुथल, सीमा-संघर्ष घटनादिक स्थिति तं छलैके; उपर सं एहि समस्त स्थितिक प्रभाव सं मिथिलांचलक लोक, लोक-संस्कृति आ लोक-मान्यता उपर्युक्त हलचलक प्रभाव सं एकटा विचित्र सन कॉकटेल बनए लागल छल। कीर्त्तिनारायणक काव्य सृजन अही स्थिति मे प्रारंभ भेल।

सन् 1967 मे अकवितावादक स्थापना भेल आ विश्लेषण कएनिहार सभ 1979 अबैत-अबैत नवकविताक गुणगान करए लगलाह आ नवकविता धरि अएबाक एकटा कड़ीक रूप मे अकविता कें स्वीकारलनि। एहि तरहें मैथिली कविता मे नव क्षितिजक निर्माण प्रक्रिया लेल अग्रसर होइत कविक अभिक्रिया ई मानल जा सकैत अछि।

रचनाकारक दायित्व कें रेखांकित करैत कीर्त्तिनारायण कहैत छथि, 'जाहि व्यवस्था मे हम जीबि रहल छी, ओ अवमूल्यन, कुंठा, कापुरुषता, संत्रास आ आक्रोशक जन्म द' सकैत अछि। यदि हम ओकरा स्वीकार नहि करैत छी तं हम अपन समयक संग, अपन परिवेशक संग, अपन स्थितिक संग इमानदार नहि छी।'

कीर्त्तिनारायणक कविताक परीक्षण अही परिस्थिति सभक आलोक मे आ कविक जीवन-दृष्टिक परिप्रेक्ष्य मे करैत ई तय होइत अछि जे कवि कें पारंपरिक पाखंड, व्यवस्थाक विद्रूपता, राजनीतिक कलुषता आ समाज मे समस्या उत्पन्न कर'वाली सत्ताक विकृत स्वरूप व्यथित करैत रहैत छनि। 'ध्वस्त होइत शांति स्तूप' संग्रहक किछु कविता कीर्तिनारायणक अही तीक्ष्ण व्यथाक प्रतिफलन थिक। अइ संग्रहक बहुतरास कविता शिल्पक स्तर पर आ एक सीमा धरि वस्तुनिष्ठताक स्तर पर सेहो कविक कद कें छोट करैत अछि। कविक अवधारणा कें आ कविक अनुभूति कें प्रभावात्मक अभिव्यक्ति देबा मे शिल्पक स्तर पर किछु कविता अपन ध्येय धरि नहि पहुंचबैत अछि। दोसर दिस बिंब योजना आ प्रतीक चयन मे किछु कविता ढील भ' गेल अछि। खास क' कए राजनीतिपरक कविता मे जखन कवि अपन निषेधात्मक एटीच्यूड उपस्थित करैत छथि तं ओतए प्रतीक आ बिंब जगमगा नहि पबैत अछि। कवि ओतए पारंपरिक अलंकार योजना सं काज निकालैत छथि, जे कविताक प्रभावोत्पादकता कें कम करैत अछि आ एक सीमा धरि ओकर धार कुंद करैत अछि।

कीर्त्तिनारायण स्वीकारैत छथि जे हुनकर बाल्यकाल या युवावस्था दुनू 'रेत' क सन्निध्य मे बितलनि अछि आ तें हुनकर रचना-प्रक्रिया रेत पर हस्ताक्षर करब थिक। ई स्वीकारोक्ति जाहि कोनो धनात्मक अभिधेयात्मकता कें द्योतित करैत हो, मुदा हमरा जनैत जं ई सत्य, तं कवि स्वयं अपन मान्यता अपन अभिक्रिया मे द्वैध उपस्थित करैत छथि। कारण, कीर्त्तिनारायण स्वयं जीवनक जटिलतम यथार्थ

सं साक्षात्कार करैत आम जनताक आंखि मे अंगुरी क' कए ओकर परिचय दिअएबा मे तत्पर रहलाह अछि, जे हुनकर कविता सं सेहो स्पष्ट होइत अछि। हल्लुक बाट अपनएबाक आ अस्थायी प्रभाव छोड़बाक उपक्रम कीर्त्तिनारायण कहिओ नहि कएलनि। तखन हिनकर अंगुरी बालु (जं रेतक अर्थ बालु थिक तं) सन हल्लुक सतह पर हस्ताक्षर कोना करत आ बालु परक हस्ताक्षर सन अस्थायी काज कोना करत ? जे-से...

कीर्त्तिनारायणक कविता मे प्रायः संबंधक अवमूल्यन, विकृति आ एक सीमा धरि हत्याक स्वरूप उपस्थित होइत रहैत अछि। अपन कतेको कविता कवि वार्त्तालाप शैली मे प्रारंभ करैत छथि आ संबोधित व्यक्तिक संग संबंधक अंतरंगता पर अंगुरी उठबैत ओकर विकृत स्वरूप कें टांगि दैत छथि। 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप', 'यातना-शिविर', 'की अहीं छलहुं', 'किसुन जी', 'जादूक खेल', आदि कविता हिनकर अही उपक्रमक उदाहरण थिक। 'पंजाबक चिट्ठी', 'जागल अछि', 'किसुन जी', 'इहागच्छ इहतिष्ठ' आदि कविता मे शिल्प आ प्रस्तुतिक आनो आन उपादान मे कवि पर महाकवि यात्रीक प्रभाव स्पष्ट देखल जा सकैत अछि।

'पंजाबक चिट्ठी', 'जागल अछि', 'की अहीं छलहुं', 'कौआ-1', 'कौआ-2' आदि कैक टा कविता मे कविक गहन जीवनानुभूतिक परिचय भेटैत अछि। ओना तं आधुनिक साहित्यिक मूल स्वर समग्रता सं व्यवस्थाक विरोध, प्रचलित मान्यताक निषेध सैह थिक। ई व्यवस्था राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, प्रांतीय, ग्रामीण, सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक, राजनीतिक, आर्थिक आ अंततः अइ समस्त कारण सं मनोवैज्ञानिक स्थिति सं संबद्ध रहैत अछि। मुदा कीर्त्तिनारायण जखन राजनीतिक (हमर मतलब अछि खांटी राजनीतिक) विषय कें छूबैत छथि तं ओकरा ओ उपयुक्त धार नहि द' पबैत छथि। मुदा समाजक व्यवस्था आ प्रशासनिक दानवता सं उद्‌भूत सामान्य जनजीवनक जटिलतम बाट कें कवि छूबैत छथि तं ओ चमकि उठैत अछि। 'पंजाबक चिट्ठी' कविक एहेन कविता थिक जकरा अनेक संदर्भक दृष्टांत स्वरूप प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि। 'मित्रक पत्र' यद्यपि अपन संपूर्ण पीड़ा नहि ध्वनित क' सकल मुदा एकर अलावा आनो बहुत एहेन कविता अछि, जे कविक मानसिक उद्वेग कें स्पष्ट करैत अछि। तय बात अछि जे आजुक विडंबना-चक्र, विज्ञानक नाइट्रोजन-चक्र अथवा महाभारतक व्यूहचक्र सं बेसी अभेद्य अछि। अइ चक्रक सूत्र कें तोड़ब एतेक कठिन अछि, जे अपन समस्त स'ख-मनोरथ, सेहंता, मान्यता, विचारधारा कें ताख पर राखि लैत अछि; अपन जीवन, अपन अंग-प्रत्यंग, एते धरि जे जीबाक महत्वपूर्ण हथियार आंखि, हाथ, पैर, स्वास्थ्य आदि सं खेलौड़ क' लैत अछि; हाथ-पैर कटा लैत अछि, जीबा लेल सभ किछु क' लैत अछि, मोन मारि लैत अछि। अइ परिस्थिति मे कीर्त्तिनारायणक कविता एक डेग आगूक बात कहैत अछि। 'पंजाबक चिट्ठी'क पत्र लेखक कें एतेक भेलाक पश्चातहु एकरा उपलब्धि मानैत अछि, जे ओकर आंखि फूजि गेलैक आ आब ओ दुनिया कें नव आंखिएं देखि सकत, नव व्यवस्था आनि सकत। जेना कि कीर्त्तिनारायण लिखैत छथि लिख' लेल जिअब, जिअ'क लेल रोटी, रोटीक लेल चाकरी, चाकरी मे बनल रह'क लेल चौबीसो घंटाक दायित्व-वहन आ दायित्व-वहनक लेल प्रबंधकक रूप मे ओ सभ काज करब अथवा कराएब अथवा ओकर सत्र-संचालन-निदेशन करब जकर हम हृदय सं विरोधी छी, जे हमर सिद्धांतक विपरीत अछि ई चक्राकार विडंबना हमर लेखन कें गीड़ि रहल अछि आ हम अपनहि आंखि सं अपन नाश-लीला देखि रहल छी।

ई आत्मकथात्मक टिप्पणी कविक मानसिक खैंचातानी आ औनाहटि कें कोन प्रवेग देने अछि, तकर कल्पना कएल जा सकैत अछि। कहब आसान अछि जे मनुष्य कें विरोध करबाक चाही। मुदा हमरा जनैत आजीविकाक उपेक्षा क' कए कविता लिख' मे लागि जाएब ओहने क्रांति होएत जेना बिना आगिक मशाल लेसब होइत अछि। अइ तरहक प्रक्रिया अपनाएब समुद्र मे सलाइ सं आगि लगाएब होएत। जीविकोपार्जनक उपेक्षा, परिवारक उपेक्षा करब होइत अछि, ई अकाट्य सत्य थिक। आ जे व्यक्ति पारिवारिक नहि होअए ओकर सामाजिक व्यक्ति हएबाक प्रवृत्ति पर नीक जकां संदेह कएल जा सकैत अछि। कीर्त्तिनारायण अइ परिस्थितिक चरमोत्कर्ष सं परिचित छथि, अपन वक्तव्यो मे आ कवितो मे। कविक उक्त स्वीकारोक्तियहिक दृष्टांत थिक 'पंजाबक चिट्ठी' आ 'मित्रक पत्र'। एहेन विकट चक्राकार विडंबना मे अथवा व्यूह मे जखन व्यक्ति कें निहत्थ क' कए छोड़ि देल जाए, तं ओकर समस्त आक्रोश आ विद्रोह एकालाप मे बदलि जाइत अछि। अइ परिस्थिति कें भोगैत आजुक समस्त प्राणी 'अभिमन्यु' थिक। कीर्त्तिनारायणक कविता आजुक अभिमन्युक एकालाप थिक। ओहि अभिमन्युक एकालाप जे खैंक भरि सांस धरि लड़ैत रहल मुदा ओकर अंतस् केर आगि नहि मिझेलै। पराजयक समस्त उपादानक संभावनाक अछइतो कीर्त्तिनारायण आ कीर्त्तिनारायणक काव्यपुरुष परास्त नहि होइत अछि। विज्ञान, युद्ध, विध्वंसक यंत्र, शस्त्रास्त्र आदि सं उत्पन्न विभीषिका, राजनेताक घरियाली नोर आ हास्यास्पद वक्तव्य एवं क्रिया; मिथिलांचलक स्थानीय समस्या आदि कविक कविता मे प्रमुखता सं रहैत अछि। जीविकोपार्जनक विवशता मे अपन माटि-पानि सं अलग रहबाक पीड़ा कोन तरहें कवि कें मथि रहल छनि, अपना अंचल मे अपन सांस्कृतिक थाती, मान्यता, लोकाचार आदिक संग होइत युगीन अतिक्रमण कोन तरहें कवि कें व्यग्र आ उद्वेलित कएने छनि, ई स्थिति 'भाषानुराग', 'किसुन जी', 'पंजाबक चिट्ठी', 'चन्द्रभागा आ मिथिला', 'मित्रक पत्र' आदि कविता मे देखल जा सकैत अछि।

सारांशतः कीर्त्तिनारायणक काव्य संसार जिजीविषाक उपादान पर विश्व भरि मे पसारल अभेद्य जाल मे बाझल अभिमन्युक एकालाप थिक, जे अपन अंतिम

सांस धरि अपन जोश कें अनत रखैत अछि।

पक्षी आ पिजराक संघर्षक कविता

'परिवेश मे, एकटा शिकंजा मे कसल मनुक्ख, जीबाक लेल आ मुक्तिक लेल छटपटाइत मनुक्ख, जखन अपन सार्थकता तकैत एकटा अयना कें टकटकी लगा क' निहारैत अछि आ ओहि रूप कें स्फुट-अस्फुट रूप मे बन्हबाक चेष्टा करैत अछि, से थिक कविता।' जीवकांतक कविता पर गप करबा काल हुनकर अइ वक्तव्य कें ध्यान मे राखब उचित होएत। मैथिली मे 1964 ई. सं जीवकांतक लेखनक आरंभ भेल अछि। यद्यपि हिन्दी मे 1953 सं लिखैत छलाह। हिन्दी मे 'तीसरा सप्तक' क प्रकाशन 1959 मे भ' चुकल छल, जखन प्रयोगधर्मी लोकनिक वक्तव्य संदर्भ होअए लागल छल। 1943 मे जिनकर एप्रोच मे संभावना ताकल जाइत छल, से दू दशकक उपरांत उपलब्धि साबित होअ' लगलाह। मैथिली कविता मनबोध, चन्दा झा आ भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क सृजनधर्मिता सं आगू बढ़िकए यात्री, राजकमलक लेखनीक संस्पर्श पाबि चुकल छल। 'चित्रा' आ 'स्वरगंधा'क प्रकाशन परवर्ती मैथिली कवि कें बेस सन अवदान द' चुकल छल। अपन काव्य सृजन प्रारंभ करबा सं पूर्व ई समस्त उपलब्धि जीवकांतक सोझां मे छलनि। मुदा संगहि ईहो छल जे हिनकर समवयस्क अनेक कवि लोकनि स्थापित भ' चुकल छलाह। एहना स्थिति मे मैथिली काव्य लेखन मे जीवकांतक अवतरण खूब पकठोस उम्र मे भेलनि अछि। कविताक अतिरिक्त जीवकांत कथा, उपन्यास आ समालोचना सेहो लिखने छथि, लिखैत छथि; मुदा 'मैथिलीक नव कविता' संकलन मे हिनका मूलतः कवि मानल गेल अछि। वास्तविकता ई अछि जे सृजनात्मक लेखनक अतिरिक्त, जीवकांत जहिना कोनो वस्तुनिष्ठ वक्तव्य दिश बढ़ैत छथि कि हुनकर द्वैध अथवा अनिर्णय साफ-साफ झलक' लगैत अछि। पुष्टि लेल अग्रज वर्ग (यात्री, मधुप, सुमन) आ अनुज वर्गक क्षमता पर देल गेल हिनकर आपत्तिजनक टिप्पणी (मैथिली नवकविता/रमानन्द झा 'रमण'/पृ.-159 मे उद्धृत) आ अही वर्गक उपलब्धि पर अन्यत्र देल गेल आस्थावान

वक्तव्य (लिखित/मौखिक) देखल जा सकैत अछि। जे-से...जीवकांतक कविता आ काव्य प्रतिभा पर गप करब अभीष्ट अछि।

नव कविता पर चर्चा करैत ई आवश्यक मानल जाएत जे काव्य यात्राक ई मोड़ अबैत-अबैत मात्र कविताक बाह्य स्वरूपे नहि बदलल, बल्कि नव-नव बिंब, प्रतीक, नव-नव शब्दावलीक अनुसंधान भेल आ गहनतम स्तर पर काव्यानुभूतिक संरचना मे अंतर आएल। अपन काव्य सृजनक मादे राजकमल वक्तव्य देलनि, 'हमर कविता हमरा आंतरिक जीवन आ हमरा अस्तित्वक रहस्य, यथार्थ आयोजना सब कें अभिव्यक्त एवं अंकित करैत अछि। यदि हमर कविता हमरा मुक्त नहि करैत अछि, तं हम ओकरा एक वक्तव्य मात्र मानैत छी; कविता नहि।' आ तदनुरूप अपन कविता मे ओ सेहो देखाइत छलाह। जीवकांत सेहो अही प्रक्रिया मे अपन काव्य सृजन मे वक्तव्यक अनुकूल उतरि गेलाह। नव कविताक काव्यानुभूतिक जाहि अंतस्संरचना मे परिवर्तन आबि गेल छल, नव कविता जाहि तरहें मनुष्यक मोन आ मानवीय क्रिया अभिक्रियाक मानसिक पृष्ठभूमि मे नव-नव बिंब प्रतीकक संग हुलक' लागल, जीवकांतक कविता ओहि समस्त दिशा सं उद्‌बोधित होइत रहल। जीवकांतक लेखनारंभक काल प्रायः नव तरहें एकटा अन्य मोहभंगक काल थिक। हिन्दीक 'साठोत्तरी कविता'क प्रारंभिक चरण सेहो इएह थिक। साठिक बाद लिखल जाए वला कविताक मादे केदार नाथ सिंहक मत छनि, '...साठिक बाद लिखल जाए वला कविता वास्तविक अर्थ मे समकालीन उपकरण सभक द्वारा समकालीन कविक दिश सं समकालीन पाठकक प्रति संबोधित कविता थिक, ओ अपना समयक कोनो प्रौढ़ एवं संपूर्ण व्यवस्था भने नहि द' पबैत हो, मुदा ओकरा प्रति एकटा सोझ आ सुच्चा मानवीय प्रतिक्रियाक अविव्यक्ति अवश्य करैत अछि। इएह ओकर उपलब्धि थिक आ एकटा एहेन समय मे, जखन सत्य बात कहब जोखिमक काज हो, एतबा कम नहि थिक...।'

अज्ञेयक प्रमुख काव्य संकलन 'आंगन के पार द्वार' कें साहित्य अकादमी पुरस्कार सं 1964 ई. मे सम्मानित कएल गेल। बंगला मे अही वर्ष सुभाष मुखोपाध्यायक काव्य संग्रह 'यतो दुरेइ जाइ' (बंगला मे) सेहो पुरस्कृत भेल। जाहि भावबोध कें दशाधिक वर्ष सं लगातार संघर्ष कर' पड़लैक ताहि भाव-बोधक कविता संकलन कें राजकीय सम्मान सं पुरस्कृत कएल गेल ई निश्चित रूपें एकटा नव स्वीकृतिक प्रति आश्वस्ति छल। 1962 ई. क राष्ट्रीय संकट साहित्य आ राजनीति दुनू मे एकहि संग बहुत रास आडंबर, मोहक आदर्श आ फोंकिल काव्याभिव्यक्तिक प्रति विशाल अनास्था उत्पन्न केलक। ...ई समस्त परीक्षण जीवकांतक नजरिक सोझां छलनि। अर्थात् मैथिली काव्य सृजन मे उतरबा काल जीवकांत कें एतेक हथियार अथवा एतेक युगबोध प्राप्त छलनि। जीवकांतक कविता अही विकराल परिस्थिति सं प्रारंभ भेल। 'नाचू हे पृथ्वी' (1971) आ 'धार नहि होइछ मुक्त' (1991) अपन दुनू कविता संग्रह मे जीवकांत नव कविताक समस्त मानदंडक संग उपस्थित छथि। जखन कवि ई बूझि रहल छथि जे हुनकर सृजन ने तं हुनका कोनो वैशिष्ट्य द' रहल छनि आ ने हुनकर परिवेश मे व्याप्त तर्कहीन स्थिति कें कोनो युक्तियुक्तता द' रहल अछि; कविक लेल स्वयं सृजनशीलते एकटा भयावह स्थिति ठाढ़ करैत अछि। आ ई भयवाहता एकटा नव तरहें मोहभंग उत्पन्न करैत अछि। ई मोहभंग स्वाभाविक रूप सं कवि परंपरागत मान्यता कें खंडित करैत अछि। जीवकांत अही खंडित मान्यताक कविक छथि जे परिवेशक स्थिति देखिकए ने तं निरपेक्ष भेल ठाढ़ रहि सकैत छथि आ ने ओहि यांत्रिकता मे समा सकैत छथि। हं, दृष्टिबोध छनि, आंखि छनि तें वस्तु स्थिति कें देखि सकैत छथि, चीन्हि सकैत छथि। अइ देखबाक आ चीन्हबाक लेल जतेक जोखिम भ' सकैत अछि, से उठब' लेल नव कविताक कवि तैयार भेलाह। मुक्तिाबोधक एकटा पंक्ति अछि 'मैंने उसे नंगे देख लिया/इसका मुझे दण्ड मिलेगा'। देखबाक आ चिन्हबाक अइ समस्त परिणति सं निश्चिंत भेल नव कविक ओतए 'स्व' (हम) शैली मे अधिकांश गप होअए लागल। जीवकांतक 'कविता एक वस्तुक अस्वीकार थिक आ दोसरक स्वीकार। मुदा, ताहू सं पैघ ओकर उपलब्धि छैक जे ओ आत्मस्वीकृति (कन्फेशन) थिक। ...हम साहित्य कें जीवन सं प्रतिबद्ध बुझैत छी। आधुनिक जीवनक विसंगति, असुविधा, पीड़ा आ यांत्रिकता कें अभिव्यक्ति देब एहि कविताक लक्ष्य अछि। तें एहि कविता मे क्षण-क्षण मे भोगल जाइत जीवनक प्रति कटुता आ आक्रोश, घृणा आ भर्त्सना, उदासीनता आ निर्वेद अभिव्यक्त भ' रहल अछि...।'

जीवकांतक कविता जीवनक प्रति अही कटुताक परीक्षण-रपट थिक। कवि अपन मौलिक दृष्टिबोधक कारणें व्यवस्था कें नंगटे देखलनि, चिन्हलनि आ अइ चीन्हि लेबाक परिणति सं बचबाक प्रयास नहि केलनि। एक वस्तुक अस्वीकृति आ दोसरक स्वीकृति अर्थात् आत्मस्वीकृति हिनकर कविता मे स्पष्ट रूपें अबैत अछि। जेना कि स्वयं जीवकांत कहैत छथि, 'कविता मे नवताक विशेषण ओकर दृष्टिबोध थिकैक। प्रत्येक तर्कसंगत वस्तु कें, खाहे ओ कतबो नवीन हो, खाहे ओ पहिलुका केहनो महत्वपूर्ण बद्धमूल धारणाक भंजन करैत हो, अपन युक्तियुक्तताक बलक कारणें ग्रहण करब नवीनता थिक।' ओ अपन सृजन मे सेहो अइ नवीनताक पक्षधर रहैत छथि। स्वानुभूति हिनकर कविता मे स्पष्ट रूप सं अबैत अछि।

प्रतिबंधक विवशता आ उन्मुक्तताक लालसा जीवकांतक कविता मे मात्र विषय-वस्तुएक स्तर पर नहि, हिनकर प्रतीक योजना मे सेहो बहुलता से निखरैत रहैत अछि। जीवकांतक संपूर्ण सृजनशीलता प्रायः अही उपादान सं युक्त रहैत अछि। नदी, पक्षी, नारी, गाछ-वृक्ष, मेघ आ बरखा बुन्नीक प्रति अतिरिक्त आग्रह हिनकर अइ दृष्टि कें पुष्ट करैत अछि। 'स्त्रीगण थिकीह चिड़ै/अनंत आकाश मे उड़बाक लेल हुनक पांखि जनमैत तं अछि/मुदा दोसरे छन ओ टूटि जाइछ/आ ओ आकाशचारी

चिड़ै धमधमा क'/माटि पर खसि पड़ैछ/पिजड़ाक फूजल फाटक/चिड़ै कें बहारे टा नहि करैत छैक/ओकरा पिजड़ा मे घुरा क' बन्नो क' दैछ।'

परतंत्रता आ पिंजरबद्धताक प्रति ई साम्य ताक' मे जतए जीवकांतक दृष्टि बीसम शताब्दीक अंतिम चरण मे जीवन-यापन करैत नागरिक आ एकैसम शताब्दी मे गरदनियां द' कए ठेल' वाली व्यवस्थाक विडंबना तकलक अछि ओतहि अइ व्यवस्था मे अपन अधोगति लेल विवश नारीक सूक्ष्मतर कारण सेहो मुदा शैक्षिक तथा आर्थिक परतंत्रताक कारणें नारीक टूटल पांखि पर गेल जीवकांतक दृष्टि कोनो नव बाट नहि तकैत छनि आ कवि एतबा कहि निश्चिंत भ' जाए चाहैत छथि जे 'बहुत रास चिड़ै आकाश लेल नहि जनमैत अछि/बहुत रास चिड़ै माटि पर गुड़कबा लेल जन्म लैत अछि/आ, बहुतो रास चिड़ै खुट्टा आ डोरी कें/सार्थक करबा लेल लेद झाड़ैत अछि'।

स्त्रीगण आ चिड़ै कें अइ तरहें एक्के पलड़ा पर तौलैत काल जीवकांतक दृष्टिक सूक्ष्मता तखन आओर बेस विवेकशील बुझाइत अछि जखन ओएह पक्षी जीववाची नहि भ' कए जातिवाची होइत अछि। गिद्ध आ बाजक रूप मे आएल पक्षी जीवकांतक संपूर्ण समाज दृष्टि, जीवन दृष्टि आ वस्तुबोध कें उजागर करैत अछि। '...ककरो गलती सं/इजोत सहसा फेल भ' जाइछ/आ आदिम अंधकार/आइओ चिड़ै सभ कें ग्रसने अछि/कोनो बहेलिया, कोनो बाज पक्षी/कोनो धामन सांप/कोनो बिलाड़ि कें देखि/चिड़ै सभ अनघोल कर' लगैछ...'।

समकालीन सामाजिक व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, व्यक्ति-परिवार-समाज-राज्य-देश धरिक पूरापूरी मैकेनिज्म मे चिड़ै, नारी, बाज, धामन, बिलाड़ि आ बहेलियाक समस्त प्रतीकात्मकता एक दिश वर्त्तमान राजनीतिक परिस्थितिक वीभत्सता, विकृति आदि पर घृणास्पद दृष्टि दैत अछि तं दोसर दिश कविक व्यंग्यक तीक्ष्णताक सीमा आंकैत अछि। आइ जखन देश मे लिंग, जाति, वर्ग आदि सं निर्लिप्त भ' कए आगू बढ़बाक अविरल निमंत्रण अबैत अछि, ओतए एखनहुं मिथिलांचलक नारीक स्थिति पिजराक सुग्गा सं भिन्न नहि भ' रहल अछि। अइ सुग्गापन सं नारी कें मुक्त होएबा मे शैक्षिक आ आर्थिक उन्मुक्ता जं कनेक मदति करतैक तं सामाजिक मान्यता आ पाखंडपूर्ण मर्यादा ओकरा ओहि काजक अनुमति नहि देत। हमरा समाजक सामान्य जनताक शोषण कोनो शोषक अही टा लेल क' पबैत अछि, जे हमरहि कोनो भाइ बंधु हमर शोषण करबा मे ओकर मदति करैत छैक। ओहि बहेलिया कें जं बाज (जे स्वयं पक्षी थिक आ अपनहि जाति सं दोसरक लेल द्रोह करैत अछि) कोनो आन पक्षी पकड़ि कए नहि आनि दैक तं ओ की लेत ?...जीवकांतक काव्य दृष्टि सामाजिक आ राजनीतिक वीभत्सता कें अइ दृष्टिएं देखलनि अछि।

मुदा, हिनकर कविता सामाजिक विडंबनाक यथास्थितिक रोदन मात्र थिक, अपन सृजनशीलता मे ई व्यवस्था परिवर्त्तन हेतु कोनो जोखिम नहि उठब' चाहैत छथि, सूचना मात्र द' कए निश्चिंत भ' जाए चाहैत छथि...

प्राचीन परंपराक वैशिष्ट्य आ रूढ़िक बीच एकटा सीमा रेखा घिचबाक लेल फिरीसान कवि जीवकांतक परंपरा-मोह आ परंपरा-भंजकता विचित्र सन द्वैध मे छटपटा रहल छनि। पौराणिक प्रसंग कें समकालीन परिवेश मे चिन्हबा मे कवि बेस सफल भेल छथि। संतान, पितर, कर्ण, भर्तृहरि, स्त्री, नदी, धार, बरखा, पक्षी, चिड़ै, इजोत, प्रकाश, सूर्य, आकाश, समय, मेघ, हरिण, जमीन, धरती, आगि, धधरा, दीप टेमी, अन्हार, थाल, बगुला, गिद्ध, धामन, चांगुर, बिलाड़ि, बहेलिया, लाल-पीयर इच्छा. ..आदिक प्रतीकात्मक प्रयोग जीवकांतक कविता मे नव-नव आ मौलिक अर्थयोजना आ संप्रेषणीयताक संग भेल अछि। ई प्रयोग हिनकर कविता कें मात्र संक्षिप्त आ आकर्षके टा नहि अपितु विषय कें मूर्त्त, ग्राह्य आ वांछित रूपें प्रभावोत्पादक एवं संप्रेषणीय सेहो बनौलकनि अछि। अपन अद्यावधिक सृजन यात्रा मे जीवकांत देशक अनेक उनट-फेरक प्रत्यक्षदर्शी रहलाह अछि। जीवकांतक कविताक आक्रोश अही उनट-फेरक प्रतिफल थिक।

वास्तविक स्थिति ई अवश्य अछि जे किताबी समालोचना करैत आधुनिक समालोचक समकालीन कविक कविता मे तिलिस्मी तागत ताक' लगैत छथि आ कहैत छथि जे फल्लां कविक कविता मे विद्रोहक स्वर मुखर नहि अछि। मुदा सन् उनैस सय सतहत्तरि ईसवीक राजनीतिक उथल-पुथल सं जखन संपूर्ण देशक समस्त राजनीतिक दल एक्जुट भ' कए कांग्रेसी अत्याचारक विरोध कएलक आ अइ विरोधक नेतृत्व लोकनायक जयप्रकाश नारायणक हाथ मे छल; अइ विरोधक सकारात्मक प्रतिफल पाबि लेलाक बाद देश मे एक बेर फेर सं नवीन शुरुआतक संग अराजकता प्रारंभ भेल। आ ई बात निःसंकोच स्वीकारि लेबाक चाही जे एक बेर फेर सं भारतीय नवयुवकक मोहभंग भेल आ युवाशक्ति अइ तरहक आंदोलन सं कान्ह छिपए लागल ई कोनो अचरजक बात नहि थिक। जतए पक्षीक जड़ि मे अइ तरहें बाज, गिद्ध आ बगुला व्याप्त रहत ओतए जीवकांतक कविता जं यथास्थिति पर कनैत रहए आ कहए जे 'शताब्दी सभक पानि बहि गेल/बांचि गेल अछि थाल/उज्जर-उज्जर पांखिवला/बगुला सभ/थाल मे/डेगाडेगी ससरैछ/आ/अपन-अपन लोल/भरैछ...' तं कोन आश्चर्य ?

मनुष्य आ बहेलिया, इजोत आ अन्हार, बरखा आ थाल, माछ आ बगुला, सुग्गा आ पिजराक अही संघर्ष सं जीवकांतक कविता जनमैत अछि, व्यवस्थाक अही कम्प्यूटराइज्ड बाजनीति पर गरजैत अछि आ कहैत अछि जे इजोतक ओरिआओन लेल लड़ाइ लड़ब बड़ जरूरी छैक।

1949 मे यात्रीक कविता संग्रह 'चित्रा' प्रकाशित भेल। 1958 मे राजकमल चौधरीक 'स्वरगन्धा' छपल। मैथिली कविताक एहि दस बर्खक यात्रा कें कवि राजकमल मनुक्खक शारीरिक सामाजिक अपराध आ पीड़ाक अनुभूति सं निकलि

कए ओकर आत्मदमनक क्षेत्र मे प्रवेश कयलनि। एहि प्रवेशक प्रतिनिधि कवि मे जीवकांत कें प्रमुखता देल गेल। किसुन, यात्री आ राजकमल कविताक जे नव आंदोलन चलओलनि; से जीवकांतक काव्ययात्राक क्रम मे आओरो सुपुष्ट भेल।

जाहि समय मे देशक नागरिकक समस्त अभिलाषा वर्ग विशेषक मुट्ठी मे फरफरा रहल छल, लोक अनुभव करब प्रारंभ कएलक जे हमरा लोकनिक ई स्वतंत्रता, वर्ग विशेषक पिजराक सुग्गा थिक; मैथिली साहित्यक कविलोकनिक पुरान पीढ़ी कें एहि पर नजरि देब आवश्यक नहि बुझाइत छलनि। यात्री आ राजकमल, एकरा नव दिशा देलनि, जीवकांत कें एहि सं बल भेटलनि।

1974 सं 1990 धरिक हिनकर प्रतिनिधि कविता 'धार नहि होइछ मुक्त' पुस्तक मे संकलित भेल। छियासठि कविताक एहि संग्रह मे अधिकांश कविता नवम दशकक थिक। जतए कविक अद्यतन आत्मपरीक्षण, आत्मगौरव, स्थितिक भयावहता, मनुष्यक कर्त्तव्य-निष्ठा, नागरिक सामर्थ्य आदि अपन सुच्चा स्वरूप मे स्पष्ट भेल अछि। जीवकांत एक दिश, अपन काव्य-सृजन मे यात्री जकां सामान्य जन-जीवनक सहज शब्दावलीक आश्रय लेलनि आ ओही परिवेशक परिदृश्य कें अपन कथ्यक कोषागार बुझलनि, तं दोसर दिश राजकमल जकां दिशाहारा जनताक अंतर्मन मे पैसि कए ओकर दुःख-दर्द सं अवगत भ' कए नूतन अभिव्यंजना शैली, नव-नव प्रयोग, कौतुकपूर्ण बिम्ब-प्रतीक योजनाक माध्यमे अपन कविता कें उत्कर्ष देलनि। सृजन कें मान्यताक देहरि सं अलगे रखलनि। प्रबल आत्मविश्वासक संग ई बुझैत रहलाह, जे मान्यता भने इतिहासकार देथु, मुदा रचना-कर्म होइत अछि, जनताक लेल। तें कवि जीवकांतक कविता शाश्वत भ' पाओल, युग-यथार्थक गीत भ' पाओल, सामान्य-जन-जीवनक दुःख-दर्दक मीत भ' पाओल। शोषण, श्रमक अवमूल्यन, रूढ़ि, अराजकता आदिक विरोध आ मजदूर वर्गक प्रति सहानुभूति हिनकर कविताक मौलिक विषय थिकनि।

आधुनिक मैथिली कविता मे युग-यथार्थक सुच्चा स्वरूप ताक' लेल जीवकांतक कविताक अनुशीलन आवश्यक मानल जाएत से बात निर्विरोध सत्य अछि। मनसा-वाचा-कर्मणा कवि जीवकांत अपन सृजनधर्मिताक प्रति ईमानदारी रखने छथि। सैद्धांतिक आ व्यावहारिक दुनू स्तर पर कवि मे स्पष्ट सामंजस्य छनि।

आजुक कविता आ प्रारंभिक कविता मे वस्तुतः एकटा सांस्कारिक अंतर बुझाइछ जे कविता राजदरबारक मनोरंजन मे दिन-राति अपन घाम-पसेना बहबैत छलि, से आइ जन-सामान्यक सुख-दुःखक संग रमि गेल अछि। आभिजात्य वर्गक विलासक पलंग सं उतरि कए श्रमिक वर्गक संग खेतक आरि-धूर पर बौआए लागल अछि। एहि परिवर्त्तनक मूल कारण थिक, कवि समुदाय मे सांस्कृतिक-क्रांति, ईमानदार संवेदनशीलता। महल आ खोपड़ीक असमानता रचनाकारक कारयित्री प्रतिभा कें जगओलक। फलतः सृजनधर्मी लोकनि, आभिजात्य वर्गक बीच श्रम आ कलाक अवमूल्यन अनुभव करए लगलाह। ओ सामान्य जनताक बीच आबि ओकर दुःख-दर्द सं जुटि गेलाह। एखन समाज मे चतुर्दिक असमानता, बेकारी, शोषण, अनाचार, घूस, चोरी, अपहरण, ईर्ष्या, द्वेष, षड्यंत्र, लूटि, बलात्कार, अमानवीयता आदि पसरल अछि।

एहि परिस्थिति मे नवचेतना, जाग्रत हएबाक नव बाटक प्रयोजन भ' आएल छल। सृजनधर्मीक जागरण, सामाजिक जागरणक प्रारंभ मानल जाइत अछि। सामान्य जनता, सामाजिक अनुकरण सं बेसी प्रभावित होइत अछि। तें जीवकांत स्वयं सजग हैब श्रेयस्कर बुझलनि अछि; दोसर कें लड़बाक लेल पीठ ठोकबा सं श्रेयस्कर, युद्धक तैयारी मे स्वयं जुटि जाएब बुझलनि। यथेष्ट धैर्यक संग अपन युद्धक तैयारी मे योजनाबद्ध ढंग सं संलग्न। हिनकर काव्य साधना अत्यंत आश्वस्त भ' क' आकांक्षाक पूर्ति हेतु अग्रसर अछि, कोनो अगुताहटि नहि, कोनो उद्विग्नता नहि। ई धैर्य हिनकर गंभीर चेतना आ परिपक्वताक द्योतक थिक। बीच मे थोड़ेक कविता मे हिनका मे स्थगन आबि गेल छलनि, जे बादक रचना मे आ बादक संग्रह मे बदलल।

अपन अधिकांश कविता मे कवि समष्टि कें अपनहि मे समाहित कएने बुझाइत छथि। एकता मानवीय उत्थानक लेल अति आवश्यक अछि, से संदेश जहां-तहां हिनकर कविता मे भेटैत रहैत अछि। जनसमूहक पराक्रम कें उत्कर्ष दैत कवि अपन जाहि आस्था पर टिकल छथि, से सहजहिं, हिनकर कविता मे देखल जा सकैत अछि। एकता पर कविक बल बेसी काल पड़ैत रहैत अछि, जे हिनकर समूह सं सटि कए रहबाक, ओकर दुःख-दर्दक अवगति लेबाक संग-संग लक्ष्य-प्राप्तिक मार्ग पर अग्रसर हएबाक औत्सुक्य देखबैछ, 'एहि रमना पर आउ/कनियो स्वाद लियौक जे/हजार आ लाख भेला पर/कोना भ' जाइछ खढ़क टुकड़ी इस्पातक तार...'

व्यवस्थाक अमानुषिकता समाज कें गुमसराइन बना चुकल अछि से बात आब स्पष्ट रूप मे सोझां अछि। मुट्ठी भरि लोकक चांगुर ततबा मजगूत आ चोखगर भ' गेल अछि, जे विशाल जनसमूह ओकरा आगू नतमस्तक भ' जाइछ। ओहि वर्गक नीचता आ ओकर षड्यंत्रक आगू विशाल जनशंकुलक साहस पछड़ि जाइत अछि, 'केहनो कोठली बना अबैत छी/एकटा सांप ओहि मे पैसबाक/बना लैत अछि ग'र'। अदौ सं अपन-अपन प्रवृत्ति मे रत राजपुरुष आ जनताक बीच स्पष्ट विडंबना पर कविक व्यंग्य मुखर भ' उठल अछि, 'शहर मे बैसल भाग्यविधाता सभक/ह'र सरंग मे बहैत अछि/ओत' घीउक घैल ओंघराइत अछि/आ शेष जनता चुटकी भरि नोनो लेल/बेलल्ला बनल रहैत अछि...'

एकर अतिरिक्त 'एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे', 'सूर्य गलि रहल अछि', 'करमी झील', 'वस्तु' (कथा संग्रह), 'दू कुहेसक बाट', 'पनिपत', 'नहि कतहु नहि', 'अगिनबान', 'पीयर गुलाब छल' (उपन्यास), 'खांड़ो', 'तकैत अछि चिड़ै' (कविता संग्रह) क रचनाकार जीवकांतक संपूर्ण कविताक अनुशीलन सं इएह स्पष्ट होइत अछि,

जे ई आन कवि जकां नाराबाजी, ललकारा आदि मे विश्वास नहि राखि, पितमरू भ' कए समूहक संग चल' चाहैत छथि। अनावश्यक ललकारा द' कए अपन कविता मे कल्पना कें प्रश्रय नहि दैत छथि। विशुद्ध मैथिली शब्द कें पुनर्जीवित करबाक प्रवृत्ति मे ई सीताराम झा आ यात्री सन अपन विराट आ उदाहरणीय व्यक्तित्व ठाढ़ कएलनि अछि। लिक्खाड़पन मे हिनका राजकमलक टक्कर मे ठाढ़ कएल जाएत। अर्थात् एकहि ठाम एहेन समन्वय स्पष्ट होइत अछि, जेना सृजनशीलता हिनका शोणित मे बहैत हो।

जीवनक डायरिए असली कथा थिक

सुभाषचन्द्र यादवक कथा लेखन बीसम शताब्दीक सातम दशकक उत्तरार्द्ध सं शुरुह होइत अछि। दशक बीतैत-बीतैत आधुनिक मैथिली कथाधाराक स्थापित कथाकारक रूप मे हिनका मानि-मोजर देल जाए लगलनि। ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, बलराम, धीरेन्द्र, रामदेवक पीढ़ी आ गुंजन, प्रभास, रेणु, जीवकान्त, राजमोहनक पीढ़ी मैथिली कथाक क्षेत्र मे ता अपन चमत्कार देखा चुकल छल। वस्तुगत आ शिल्पगत विकास मैथिली कथा मे पूर्णतया भासित होमए लागल छल। स्वातंत्र्योत्तर भारतक जनताक जीवन-मूल्य संबंधी मोहभंग, राजनीतिज्ञक राजनीतिक मोहभंग सेहो भ' चुकल छल। सीमा-संघर्ष, चीन आ पाकिस्तानक धोखाधड़ी सं जन आ जन-प्रतिनिधि चौंकि चुकल छल। नेहरू आ लालबाहादुर शास्त्री कें कारगर झटका लागि चुकल छलैक। अही तरहक विकराल समय मे सुभाष कलम धयलनि, जखन हिनका सोझां भयावह परिस्थिति ठाढ़ छल। मुदा अहू समय मे मिथिलाक समस्या घरेलुए आ सामाजिके छलैक। अशिक्षा, अभाव, शोषण पराकाष्ठा पर आबि गेल छल। मान-मर्यादा, अचार-विचार, परंपरा-प्रगति, स्थापित मान्यता आ अर्जित विचारधाराक संघर्ष मे बुद्धिजीवी फिरीसान छल। सुभाषचन्द्र यादवक बखरा मे इएह दारुण स्थिति पड़लनि, अही तीत-मीठक संग अपन साहित्यिक जीवन सुभाष प्रारंभ कएलनि।

असल मे सभ रचनाकार कें कच्चा माल समाजे सं उठएबाक रहैत छैक आ तें ईमानदार रचनाकार कें समाजक जाहि जनवृत्तक मौलिक अनुभव प्राप्त होइत छैक, तही मे ओ अपन जीवन-दर्शन विकसित करैत अछि आ तही कोटिक जनताक जीवन यापनक माध्यमे अपना कें अभिव्यक्त करैत अछि। ई एकटा सुखद आ तोषप्रद स्थिति थिक जे समाजक जे जनवृत्त अदौ सं साहित्य आ आनो आन ठाम अचर्चित, उपेक्षित, शोषित, दलित आ पराजित रहल अछि, मध्यकालीन साहित्य मे अथवा आधुनिको कालक साहित्य मे कोनो तरहें कतहु आबियो गेल, तं दास,

अनुचर, भृत्य, सेवक आदिक रूप मे; ताहि जनवृत्त कें सुभाष अपना कथा-संसार मे स्वरूप देलनि, प्रतिष्ठा देलनि। उपेक्षित, अपमानित, तिरस्कृत आ कथित रूप सं पतित संवर्ग कें प्रतिष्ठा भेटब तं ललितेक पीढ़ी सं प्रांरभ भ' गेल छल, मुदा तकर कोटि अलग छल। ललितक ओतए आचरण सं बदनाम वर्ग कें, प्रतिष्ठा बेसी भेटलैक, मायानन्दक ओतए संपदा सं आ वेतन सं हीन वर्ग कें प्रतिष्ठा भेटलैक, राजकमल सवर्ण समूहक वित्तजन्य, आचरणजन्य संघर्ष कें उघार करैत रहलाह। गुंजन, प्रभास, धूमकेतु, रेणुक ओतए ई सभ चित्र मिश्रित रूप मे उपस्थित होइत रहल, राजमोहन शहरी सभ्यता मे रंगल आ जड़ि सं उखड़ल घर-परिवारक न्यों कें व्याख्यायित करैत रहलाह, जखन कि सुभाष शुद्ध क' कए जाति आ जीवन-यापनक पद्धति मे कथित रूप सं हीन समुदायक जनवृत्त कें अपन लक्ष्य बनौलनि।

सुभाषक अत्यंत प्रसिद्ध कथा थिक 'घरदेखिया'। कतहु प्रतिनिधि कथाक चयन करबाक बेगरता संकलक, संपादक, अनुवादक, आलोचक कें जहिना पड़ैक, कि 'घरदेखिया'क मनटीका साटि दिअए। एहि कथाक बेस चर्चा मैथिली मे भेल आ सुभाष एहि लेल ख्यात भेलाह। ओना 'काठक बनल लोक', 'फंसरी', 'एक दिनक घर', 'डर', 'झील', 'कुश्ती', 'बात', 'कारबार', 'सिगरेट' आदि कैकटा हिनकर महत्वपूर्ण कथा सब अछि। जकर चर्चा मैथिली साहित्यक भेड़ियाधसान प्रवृत्तिक कारणें नइं भ' सकल। कृति आ कृतिकार दुनूक लेल ई अपमानजनक स्थिति थिक।

जं आंकड़ाबाजी करी तं सुभाष थोड़े सुस्त कथाकार सेहो बुझएताह। संख्या हिसाबें कथा बेसी नइं छनि। सन् 1983 ते हिनकर कथाक एकटा संकलन 'घरदेखिया' मैथिली अकादमी सं प्रकाशित भेल। तकर बाद हिनकर लेखन आओर सुस्त भ' गेल। यद्यपि 'बात' आ 'कारबार' सनक किछु श्रेष्ठ कथा तकर बादे लिखलनि, मुदा 'नदी' आकि 'अपन-अपन दुख' सन किछु औसत सं नीचांक कथा सेहो लिखलनि। जे-से... 'घरदेखिया' संकलनो मे एकाध कथा सब एहेन अछि, जकरा पढ़बा लेल प्रारंभक दू-तीन अवतरण धरि श्रमक आवश्यकता पड़ैत अछि। हमरा बुझने, एकर मूल कारण होइत अछि बिना कोनो प्रयोजनक पात्र-परिचय नुकौने रहब, ताहि पर सं दर्शनक बघार करब आ कथ्य सं नमहर कथ्यक पीठिका तैयार करब।

सुभाषक कथाक भाषा एकदम थिर गति सं चलैत अछि, कोनो तेजी नइं, कोनो हलतलबी नइं, एकदम धीर आ शांत गति सं जाइत, मुदा अपन लग-पास, देश-दुनियांक तीत-मीठ कें चीन्हैत जाइवला भाषा शिल्पक ई कथा सब ठेंठ मिथिलाक उपेक्षित, तिरस्कृत जनताक तिरस्कृत हरक्कतिक डायरी थिक।

ललित, राजकमल आ मायानन्द अपन कथा-संरचना द्वारा जाहि तरहें मैथिली कथाक नव न्यों रखलनि, ताहि मे मायानन्द एकटा खास संवर्ग कें उठौने छलाह। सूक्ष्मता सं देखल जाए तं बात सोझां आओत, जे जाहि जनपदक जे भाग मायानन्दक बुतें छूटि गेल छल, सुभाष तकरहि पकड़नि आ ओएह संवर्ग एतए अपन स्वरूप मे आएल। कहल जा सकैत अछि, जे मायानन्द आ सुभाष दुनूक कथा-संसार समाजक डस्टबीन सं निकलल अछि, गोनौर पर सं उठाओल गेल अछि। अर्थात् जीवन-यापनक जे अंश बाहरन-सोहरन जकां फेकि देल जाइत रहल, मायानन्द आ सुभाष तकरहि झाड़ि-पोछि कए अपन कौशल सं अमूल्य चीज साबित क' देखौलनि। अर्थात्, ललित-राजकमल-मायानन्द द्वारा कथा-संसारक बान्ह-छेक, बिना सुभाषक कथा-संसारक पूर नइं होइत अछि।

सुभाषक साम्य मायानन्दक संग अहू अर्थ मे ताकल जा सकैत अछि, जे मायानन्दे जकां सुभाषोक कथा मे साधारणीकृत भ' कए ताकब, तं कोनो घटना नइं भेटत, सोझे-सोझ जीवनक डायरी भेटत, आकि कहू तं सोझे जीवन भेटत। एक पल, दू पल, पांच पलक आकि पांच घंटाक जीवन पद्धतिक क्रिया-कलाप आ कथा-पात्रक चिंतन-मनन...बस्स, अइ सं बेसी किछु नइं, खाली ओतबा कालक कमेन्ट्रीक संग कथाकारक ट्रीटमेंट महत्वपूर्ण होइत अछि। समाजक सब संवर्गक ओतए 'घरदेखिया' अबैत अछि, बिमलोक घरदेखिया आएल। मुदा मानव जीवनक एतेक महत्वपूर्ण, उल्लासपूर्ण आ निर्णायक घटना कोना उपेन, रघुनी आ ककाक लेल आयल पानि, गेल पानि सन होइत अछि, चकित होआए पड़ैत अछि। घरदेखिया सभक स्वागत-सत्कार, मान-सम्मान सब चीजक व्यवस्था भेल; विवशता, अभाव, तकरा पूर करबाक उद्योग, सामाजिकता, कन्याक निरीक्षण-परीक्षण, घरदेखियाक विदाइ...सबटा घटना-उपघटना होइत रहल, मुदा कथाकारक ट्रीटमेंट देखू, जे एकदम सं बुझाएत, जे कतहु किछु नइं भेल अछि, कोनो अफरा-तफरी नइं अछि। मुदा एहिना मे बहुत किछु भ' चुकल रहैत अछि। 'साठोत्तरी मैथिली कथाकार' पर चर्चाक क्रम मे ललितेश मिश्र सुभाष पर विचार करैत हिनकर कथा कें समस्त वैशिष्ट्यक अछैत संघर्षहीन स्वरूपक कारणें अपूर्ण आ असंतुलित कहलनि अछि। ओना सुभाषक 'घरदेखिया' कथा कें हमहूं, सर्वोत्तम नइं मानैत छी, मुदा 'काठक बनल लोक' आ हाल मे प्रकाशित कथा 'बात' सर्वोत्तम भ'ओ कए संघर्षक ओ स्वरूप प्रस्तुत नइं करैत अछि, जे ललितेश ताकि रहल छथि। किंतु, संघर्षक कोटि आ अपन समस्याक निराकरण हेतु संधान दुनू कें सोझां-सोझी राखि क' देखला पर किछु बात फरीछ होइत अछि। 'घरदेखिया' कें अरिआति कए अयलाक बाद ककाक पड़ि रहब आ आंखि लागि जाएब तथा चिंतित उपेनक बीड़ी पीब सेहो छोट-मोट संघर्षक स्वरूप नइं ठाढ़ करैत अछि। जे परिस्थिति छल, ताहि मे कथा-पात्र सब क'ए की सकैत छलाह ? कका कें बैसल नइं गेलै, ओ पड़ि रहल, आ आंखि लागि गेलै ई घनघोर चिंताक संकेत थिक, चिंता मे आंखि लागि जाएब, मिथिला मे नव तरहक ऊर्जा-संचयक संकेत मानल जाइत रहल अछि।

'काठक बनल लोक' आ 'बात', सुभाषक एखन धरिक सर्वश्रेष्ठ कथा मे

गनल जा सकैछ, आ मैथिली कथाधारा मे ई दुनू कथा अपना लेल महत्पूर्ण स्थान आरक्षित करैत अछि। 'बदरिया' कें काठक बनल लोक कहल गेल अछि, जकरा बड़ मारि मारल जाइत अछि, मुदा ओ अपन आदति सं बाज नइं अबैत अछि। आदतियो ओकर की थिक, तं' जे अन्न ओ खाय चाहैत अछि, सैह टा ओ खायत ! ताहि अन्न कें नुका क' रखबाक कोनो टा साधन, कोनो टा वर्जना बदरिया लेल गरू नइं अछि। बौकूक घर मे बचल-खुचल तरकारी लोहिए मे खाय लागल, खा कए बहरा गेल, बौकूक घरवाली देखि गेलैक, मुदा बदरिया निर्द्वंद्व, ओकरा मुखमंडल पर कोनो अपराध बोध नइं। जे बदरिया एतेक छोट उम्र मे जीवनक एतेक पैघ दर्शन कें पकड़ि लेलक अछि, जे 'जाहि वस्तुक भोग हमरा करबाक अछि, से करब,' अथवा दोसर दृष्टिएं देखू तं एहि सत्य सं परिचय जाहि बदरिया कें भ' गेलैक अछि, जे 'पेट आ जीह आ मोनक मांगक पूर्ति करबा लेल कोनो मान-सम्मान, गारि-मारिक चिंता नइं करबाक थिक,' ताहि बदरिया कें काठक बनल कहल जाइत अछि, मुदा सौंसे टोलक लोक कें अइ सत्य सं परिचय नइं होइत छैक। असल मे काठक लोक तं अइ कथा मे थोड़-बहुत सब अछि। 'काठक बनल' पदबंध सं व्यंजना अबैत अछि, जे ओ व्यक्ति काठ सन संवेदन-शून्य, चेतन शून्य, चिंतनशून्य, बोधशून्य...सब अछि। आ से सत्ते, जखन घर खसबाक मोआवजा कें रामी पेटपूर्ति मे खर्च करबा लेल विवश अछि, तखन कोन मान, कोन प्रतिष्ठा, कोन बोध, कोन चिंतन... ? 'काठक बनल लोक' एक विराट व्यंजना दिश संकेत करैत अछि, विषय-शिल्प-भाषा सब अर्थे ई सुभाषक श्रेष्ठ कथा थिक।

सन् 1999 क आरंभ में प्रकाशित 'बात' सेहो श्रेष्ठ कोटिक कथा थिक। एकटा दीर्घ अंतरालक पश्चात् प्रकाशित ई कथा सुभाषक नव तरहक भंगिमाक परिचय दैत अछि आ एतए आबि कए लगैत अछि जे विषयक स्तर पर सुभाष अपने बनाओल परिधि कें तोड़ि कए एकटा नव तरहक बात उठौलनि अछि। नेबो बेचैत एकटा छौंड़ा पर फरेबक अत्याचार करैत कोनो तिकड़मीक कारी मुंह देखार कएलनि अछि। अइ कथाक अंत मे ओहि तिकड़मीक जे हरक्कति चित्रित भेल अछि, ओ प्रमाणित सत्य थिक जे कोनो ठक, बड़ियाठ कें देखलाक बाद अपन समस्त उग्रता बिसरि जाइत अछि। ई कथा प्रमाणित करैत अछि, जे चोर इजोत नइं सहि सकैत अछि। ओना, अइ कथाक शानदार अंत एक अवतरण पूर्वहि भ' चुकल अछि। अंतिम अवतरण बंद टोंटी सं टप-टप चुबैत पानि थिक, जे मूल धारा सं असंबद्ध अछि। 'सिगरेट' सेहो सुभाषक बेस जानदार कथा छनि, जाहि मे घटना तं मात्र एतबा अछि : पाइक अभाव मे अपना खर्च सं कथानायक, सिगरेट नइं पीबि सकलाह, कोनो नोकर सं मांगेलाक बादो सिगरेट नइं प्राप्त क' सकलाह, कतेक-कतेक उद्योग सोचैत रहलाह, आ अंततः, बीड़ी धरि पीबि कए तलब शांत कर' चाहैत छलाह। मुदा, जखन दोसरक खर्च सं सिगरेट पीबाक आश्वासन भेटि गेलनि, तं ओ सब सं महग सिगरेट जरौलनि सामान्य रूप सं चिंतनपूर्ण घटना एतबे अछि, मुदा, जेना कि पहिनहुं कहल जा चुकल अछि, सुभाष, अपन कथानायकक जीवनक अत्यंत छोट सन अंशक संगें ट्रीटमेंट मे ततेक कलाबाजी देखबैत छथि, जे ओतए सामान्य जनताक दैवी-दानवी, मानवीय-पाशविक...सभ प्रवृत्ति देखार भ' जाइत अछि। अही क्रम मे मनुष्यक अहंकार, स्वीकार, आशा, निराशा, प्रतीक्षा, नकार, श्रम, चिंता, अभाव, आपूर्ति, ओरिआओन, व्यवस्था, संबंध-सरोकार, आदति, संस्कृति, आचार-विचार...सबटा चीज व्याख्यायित भ' जाइत अछि। 'प्रलय', 'नदी', 'अपन-अपन दुख' सन किछु कथा एहेन अछि, जे सुभाषक विकासमान आ उंचाइ चढ़ैत ग्राफ कें समतल अथवा अधोतल करैत अछि।

सुभाषक कथाक काया सामान्यतः छोट होइत अछि, भाषा थिर वेगक होइत अछि, पात्र सब बहुत मद्धम सांसें जीबैत अछि, पहिने तं बेसी काल गाम-घर पर केंद्रित रहैत छल, आब शहरो दिश, हाट बजार दिश अग्रसर भेल अछि, हो-हल्ला आ दंगा फसाद मे हिनकर पात्र विश्वास नइं रखैत अछि, जीवनक सहजता मे पड़ल गेंठ सब कें खोलबाक प्रयास मे लागल रहैत अछि, नइं खुजला पर ओतहि रुकि जाइत अछि। विद्रोहक स्वर जं हिनकर कथा मे अएलनि अछि,तं तकरो कोटि एना जे बदरिया दोसरक हांड़ी सं तरकारी खा आएल। शोर-शराबा, खून-खराबाक कोनो प्रयोजन नइं। एहेन कथाकार सुभाष, अपन पूर्वक कथा सब मे मैथिली भाषाक शब्द संसार कें सेहो पुनर्नवीकृत कएलनि अछि। हिनकर रचना मे कैक ठाम मैथिलीक हेराइत शब्द सब, एते धरि जे ग्रामीणो जनपद सं लुप्त भेल शब्द सब जीवंत भ' उठल अछि। भाषा-संरचना ततबे सरल अछि। मुदा एम्हर आबि कए, हिनकर किछु कथा मे शब्द-प्रदूषणक असरि देखाइ पड़ल अछि।

सुभाषक कथाक अवलोकन अवगाहनक पश्चात् एकटा बातक कचोट निरंतर होइत रहैत अछि। से, ई जे देशक संपूर्ण राजनीतिक दुरवस्थाक अछैत, हिनकर कथा मे राजनीतितक चेतनाक बहुत बेसी अभाव देखाइत अछि। ओना, कथाक माध्यमे आठम दशक मे स्थापित कथाकारक ओतए राजनीतिक बात भकरार भ'सकल, आ ताहि सं पूर्व गुंजन, राजमोहन आ महाप्रकाशक कथा मे राजनीतिक सजगता देखल जाइत अछि। मायानन्द, प्रभास, धूमकेतुक ओतए सेहो बाद मे राजनीतिक सजगता देखल जाए लागल। राजनीतिक सजगताक अभाव आ परिस्थितिक भयावहताक अछैतो मद्धम पानिक पात्रक सृजन, अर्थात् प्रतिपक्षक भूमिका मे ठाढ़ पात्रक विरोधी स्वरक अनुपस्थिति, सुभाषक कथाक महत्व कें कम करैत अछि। सामान्यतया सुभाषक पात्र दलित, दुखित, पीड़ित, शोषित, निर्धन, शापित लोक होइत अछि, मुदा ओकरा लोकनिक एहि दशाक लेल प्रभावी घटक की थिक, तकर अनुसंधान नहिएं जकां होइत अछि। आ, प्रायः सैह कारण थिक जे कतहु विरोधी स्वरक उद्गम हिनकर कथा मे नइं देखाइत अछि। 'बात' कथा सं अइ अभावक पूर्तिक आशा बनैत

अछि।

समस्त नीक-बेजाएक अछैत, सातम दशक सं अपन कथा-यात्रा प्रारंभ कएनिहार सुभाषचन्द्र यादव आधुनिक धाराक श्रेष्ठ कथाकार छथि, मैथिली साहित्य कें हिनका सं एखन बेस अपेक्षा छैक।

आकुल-व्याकुल मोनक रचनाकार

बीसम शताब्दीक आठम दशक मे मैथिलीक जाहि समर्थ आ झमटगर पीढ़ीक सृजन यात्रा प्रारंभ भेल, तइ मे विभूति आनन्द अत्यंत महत्वपूर्ण नाम थिक। सृजनरत तं विभूति पहिनहि सं छलाह, मुदा सन् 1977 ई. मे पहिल बेर हिनकर कविता सभक संकलन धीरेन्द्र सिंहक संग 'डेग' नाम सं प्रकाशित भेल। तकर सात बर्खक बाद विभूतिक दोसर कविता संग्रह 'उपक्रम' 1984 मे आएल। मुदा बीचहि मे 1981 मे हिनकर चौंतीस गोट गजलक संग्रह आएल। मैथिली मे गजलक ई पहिल संग्रह छल, जे 'उठा रहल घोघ तिमिर' नाम सं प्रकाशित भेल। फेर 1988 मे कुल चालीस गोट नवगीत-गजलक संकलन 'झूमि रहल पाथर मन' आएल। अइ सं पूर्वहि 1982 मे हिनकर पहिल उपन्यास 'गाम सुनगैत' प्रकाशित भ' चुकल छल। 1979 मे हिनकर दसटा कथाक संकलन 'प्रवेश' आएल छल। 'पराजित-अपराजित' उपन्यास, 'खापड़ि महंक धान' कथा संग्रह आ 'समय संकेत' नाटक सेहो प्रकाशित भेल। किछु संपादित पोथी गीतनाद (लोक गीतक संग्रह), विद्यापति पदावली, एकटा छला गोनू झा (चरित कथा), कथा-कहिनी (लोक कथाक संग्रह), अड़हुल (विभिन्न कथाकारक कथाक संकलन) प्रकाशित भेल। 1992 मे फेर हिनकर सत्ताइसटा बीछल कविताक संग्रह 'पुनर्नवा होइत ओ छौंड़ी' आएल आ 1999 मे फेर पैंतीसटा कविताक संग्रह 'नेहाइ पर स्वप्न'। एतद्रिक्त बीच-बीच मे जतेक कथा लिखैत रहलाह अछि, कथा गोष्ठी सभ मे पढ़ैत रहलाह अछि, पत्रिका सभ मे छपैत रहलनि अछि, से असंकलिते छनि। 'फेर बघुआइ छौ तोरे पर' उपन्यास अप्रकाशिते छनि मुदा 'ललित आ हुनक कथायात्रा' समालोचना पोथी प्रकाशित छनि। समय-समय पर किछु निबंधो लिखैत रहलाह अछि। पत्रिकाक संपादन आ संपादन सहयोगक तं गिनती नइं अछि। अभिनय सेहो कएने छथि, वृत्ति सं प्राध्यापक छथि...।

बहुमुखी प्रतिभा आ बहुविधावादी रचनाधर्मक दृष्टिएं जं देखैत छी तं विभूति

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आ राजकमल चौधरी सन प्रतिभावान बुझाइत छथि। मैथिली मे हमरा एहेन एकहु टा आन रचनाकार नइं देखाइ छथि, जे एके संग एतेक ठाम, एतेक रूप मे क्रियाशील होथि आ सब ठाम एक्के रंग प्रभावशाली साबित भेल होथि। रचनाक स्वभाव आ तेवर सं ल' कए रचनाकारक प्रवृत्ति धरि पर जं चर्चा करी, विभूति नव चेतनाक एकटा 'होल टाइमर' कार्यकर्ता बुझएताह। मुदा ई अचरजक विषय थिक जे शताब्दीक अंतिम दशक मे हिनकर क्रियाशीलता मात्र कमिए टा नइं गेलनि, ई अपना कें ततेक बेसी समेटि लेलनि, जकर किओ उमेदो नइं क' सकैत छल। आठम दशकक अंतिम चरण सं ल' कए नवम् दशकक प्रायः अंत धरि विभूति मनसा, वाचा, कर्मना जाहि तरहें क्रियाशील रहलाह, ताहि मे ज्वालमुखीक ताप छल; कोशी, बागमती आ गंगाक उद्दाम प्रवाह छल, मृगराज जकां स्वशक्ति आ जनशक्ति पर हिनका आस्था छल, हिनकर सांस मे भूकंप सं पूर्वक हुंकार छल...तुलना करैत उपर जं भारतेन्दु आ राजकमलक नाम लेल गेल अछि, तं तकर उचित तर्क अछि. ..मुदा अचानक विभूति कोन मोहभंगक कारणें अथवा कोन आतंकें अपना कें समेटि लेलनि, से कहब कठिन अछि।

खैर...विभूतिक नाटक, उपन्यास आ कथा लेखन पर किंचित चर्चा आनो आन निबंध मे कएल जा चुकल अछि, तें एतए कविता टा पर चर्चा करब। पाखंडक आवरण, अंधकार आ कुहेस आ मेघक झलफली, रूढ़िक सड़ाइन गंध आदिक विरोध आ नव ज्योति पुंजक स्थापना दिश संकेत हिनकर रचनाकर्मक मूल स्वभाव रहल अछि। रोजगारविहीन जीवनक मनोदशा आ जीवन-यापन, सेवानिवृत्तिक बाद शेष-जीवनक दशा, दांपत्य आ पारिवारिक आनो आन संबंधक गहन पक्ष...अत्यंत तीक्ष्ण तेवरक संग हिनकर कथा, आ नाटक मे उपस्थित भेल अछि। अइ समस्त स्थितिक संग केंद्रीय राजनीति आ स्थानीय तिकड़मक संयुक्त प्रभाव सं सोझ-सपाट, निश्छल-निर्विकार, छल-छद्मविहीन जनता अपरिचित रहैत अछि, ओ एतेक करिया-झूमरि बुझैत नइं रहैत अछि। मुदा ओतए रथक टूटल पहियो, अइ जनता कें बड़ सहयोग करैत छैक. ..ई समस्त स्थिति विभूतिक उपन्यास, कथा आ नाटकक विषय होइत अछि, आ एहि सभक प्रस्तुति अत्यंत प्रभावकारी होइत अछि। अइ समस्त विपरीत परिस्थितियहु मे विभूतिक कृति-नायक विजयश्री प्राप्त करैत अछि। गाम सुनगैत (उपन्यास), समय संकेत (नाटक) आ प्रवेश, खापड़ि महंक धान (कथा संग्रह) आदि अही विजयश्रीक गाथा थिक।

बीसम शताब्दीक आठम दशकक उत्तरार्द्ध भारतीय बुद्धिजीवीक लेखें किंकर्त्तव्यविमूढ़ करबाक स्थिति छल। इन्दिरा सरकारक आततायीपन भारतीय जनताक माथ पर नंगटे नचैत छल। लोकनायक जयप्रकाश इन्दिरा सरकारक विरोधक बिगुल बजा चुकाल छलाह आ हुनका समर्थन मे भारतीय छात्र अपन मौलिक अधिकारक सुरक्षा हेतु आ स्वेच्छारिणी सरकारक नृशंसता सं मुक्ति हेतु जयप्रकाशकजीक नेतृत्व मे छात्र आंदोलन प्रारंभ क' चुकल छल। संपूर्ण देश मे कांग्रेस विरोधी वातावरण व्याप्त भ' गेल छल। आम चुनाव भेल। कांग्रेस पराजित भेल आ सर्वदलीय संगठनक आयोजन सं जे टीम बनल से भारतक गद्दी पर काबिज भ' गेल। मुदा कुकरालूझि झट द' शुरुह भ' गेल। स्वयं लोकनायकक अवमानना भेलनि आ हुनकर मोहभंगक संग संग संपूर्ण भारतक युवाशक्ति मोहभंगक शिकार भ' गेल। नक्सलबाड़ी आंदोलन, तेलंगानाक किसान आंदोलनक प्रभाव मुखरित भ' चुकल छल। अइ समस्त स्थितिक अराजक प्रभाव आ सुधारक प्रभाव मिथिलाक जनमानस पर पड़ल। यद्यपि सौंसे दुनिएंक ई हाल अछि, मुदा अधोमुखी प्रवृत्तिक नकल मिथिला मे कनेक बेसिए पसरि जाइत छैक, तें अइ समस्त घटनाक दुष्प्रभाव तेजी सं पसरल। एकर किछु जे सुधारक संकेत छल, से रचनाकारक नजरि मे अभरल। विभूति ओही रचनाकार मे सं एक छथि। अही समस्त विपरीत परिस्थिति मे अइ सं किछु पूर्वहु सं हिनकर गजल आ नवगीत लिखा रहल छल। मैथिलीक आ विभूतिक सेहो, पहिल गजल संग्रह मे संकलित गजलक पंक्ति सभ अइ समस्त परिस्थितिक चित्र उपस्थित करैत अछि, जतए आशा, प्रेम, घृणा, राग, द्वेष, प्रकाश, अन्हार, भय, आतंक, साहस, डांट, फटकार, पाखंड, प्रगति कामना सब चीज अपन-अपन अस्तित्वक संग उपस्थित अछि। आ, अइ उपस्थिति मे हरदम कवि प्रगतिकामी, साहसी आ आस्थावान, आशावान जनशक्तिक पक्षधर छथि। अइ संपूर्ण विकराल स्थिति कें गीत-गजल सन कोमल रचना मे प्रभावी ढंग सं व्यक्त क' सकलाह, से बात रेखांकित कर'क थिक।

विभूतिक रचनाकाल मात्र राजनीतिक कुटिलता, धार्मिक पाखंड, असामाजिक तत्वक विकास आ सामंती अपराधे टाक फल नइं थिक। अइ काल मे सभ सं बेसी विकृत स्थिति उत्पन्न करबा मे अहम भूमिका बुद्धिजीवी वर्गक छनि, जे अइ समस्त समाज विरोधी आ जन विरोधी शक्तिक दलाल बनि गेलाह आ आत्मप्रचार तथा लाभ-लोभक मोह मे दानवीय हरक्कति कें समर्थन दैत रहलाह। विभूति अपन कृति कर्म मे अहू वर्ग कें नांगट करबा मे नीक जकां सफल भेल छथि। 'झूमि रहल पाथर मोन' संकलनक नवगीत सब सेहो अइ स्थितिक उदाहरण थिक। कविता हो, गीत हो, गजल हो   विभूतिक आग्रह किरिण, प्रात, भोरुकबा, सुरुज, उन्माद, पसेना, फूल, खेत, फसिल, चूल्हि, अन्न, ढेकी, वसंत, भोर, ताप, ऊष्मा, रश्मि आदि दिश रहैत छनि; ई आग्रह विभूतिक आस्था थिक। दोसर दिश अन्हार, भूख, उदासी, चिंता, श्मशान आदिक चर्चा क्रोधावेश मे करैत छथि, ई चर्चा ओकर तिरस्कार लेल करैत छथि।

परंपरा सं जे किछु हमरा लोकनिक जीवन मे शुद्ध, सौम्य आ शांतिक प्रतीक बनल रहल अछि, सुरक्षाक आधार बनैत आबि रहल अछि, से सब जखन अपवित्र भ' गेल, जखन 'घोंका चुकल अछि पोखरिक जल/टूटि चुकल छै घाटक सभ खरंजा'

तखनहुं विभूतिक मानब छनि, जे 'खखरी नहि भेल अछि गहूमक गोटा/भोंथ नहि अछि हांसूक धार/हथौड़ाक निहाइ-चोट एखनो सकुशल अछि...'। विभूतिक इएह आस्था, इएह साहस समाजक अधिसंख्य कें वेदना आ पीड़ा सं उबारि सकबा मे सफल होएत, ओकरा अपन पराक्रमक प्रति सचेत क' सकत।

समाज मे आधुनिकताक प्रवेशक बादो किछु लोकक पाखंडी प्रवृत्ति, आधुनिकता सं उत्पन्न विकृति, नवीन शिक्षा पद्धति मे शकपंज भेल बाल मनोविज्ञान, सुशिक्षित पति द्वारा पत्नीक शोषण, स्त्री शोषणक सहजात नैरंतर्य...सबटा हिनकर नवीनतम कविता संग्रह 'पुनर्नवा होइत ओ छौंड़ी' आ 'नेहाइ पर स्वप्न' मे उतरि आएल अछि। बहुविधावादी हेबाक कारणें प्रायः हिनकर कविता मे कथात्मकता आ नाटकीयता तथा कथो मे काव्यमयताक समावेश रहैत छनि, मुदा से रचनाक दोष जकां नइं, गुण आ वैशिष्ट्य जकां उपस्थित होइत अछि। यद्यपि संयुक्त क्रियापद आ कारक विभक्ति बहुल विशेषणक आधिक्य सं ठाम-ठीम अर्थ बाधा उपस्थित होइत अछि, मुदा तकर परिमाण बड़ कम अछि। बेसी ठाम ठेंठ शब्दावलीक मुहावरा जकां प्रयुक्ति, किताबी आ शास्त्रीय शब्दावली सं परहेज, हिनकर कविता कें आओर बेसी उत्कर्ष देलकनि अछि ई देश की आजाद भेल/फुसिएक बबाल भेल/ठाम-ठाम बेंतल जाइए लोक/कतौ चास लेल/कतौ बास लेल/अनेरो रेतल जाइए लोक सन कवितांश देखि कए कैक बेर हिनकर कविता पढ़बा काल चकित होअए पड़ि सकैत अछि। स्वातंत्र्योत्तर कालीन देश मे पुनर्वास योजना पर अइ तरहें प्रसंगवश टिप्पणी कतेक गंभीर चोट करैत अछि !

परिवार, समाज आ कुटुंबक संबंधजन्य भावना, अतीतक स्मृति, भविष्यक चिंता, वर्तमानक समझ हिनकर कविताक प्राणतत्व थिक आ अही क्रम मे ई अपन उत्कृष्ट दृष्टिबोधक परिचय दैत बढ़ि चलैत छथि। अपेक्षाकृत नमहर हिनकर जतेक कविता छनि, ताहि मे विभूति अपना परिवेशक कोलाज बनौने छथि। एकहि कविताक किछु-किछु पंक्ति मे कैकटा कविता कहा जाइत छनि आ अंत मे समग्रताक संग फेर ओ अलग काव्य रसक संचार करैत छनि।

एम्हर आबि कए विभूतिक शब्द संस्कार थोड़ेक प्रदूषित भेलनि अछि। ठेंठ शब्दक सुरक्षा हेतु विभूतिक रचना संसार कें अभिलेखागार मानल जाइत छल, मुदा से विभूति, अइ प्रदूषणक शिकार कोन कारणें भेलाह अछि, कहब कठिन अछि।

'नेहाइ पर स्वप्न' कविता संग्रहक कविता सभ कविक आकुल-व्याकुल मनःस्थितिक कविता थिक, दीर्घकाल सं धैर्य धारण करैत रहबाक सूचना थिक, दीर्घ अवधिक संघर्षक सूचना थिक, आ एखन धरि अपेक्षित उपलब्धि सं दूर रहबाक सूचना थिक जे, जे कोनो स्वप्न छल, से नेहाइ पर आबि गेल अछि, आब थोस-थाम्हक स्थिति नइं अछि। की तं, नेहाइ पर कुटाइत अपन स्वप्न कें देखैत पीड़ा भोगैत रहू, वा अही नेहाइ पर सं उछलि जाउ आ किछू करू।...एतबा तं तय अछि, जे विभूतिक रचना हो-हल्ला, नाराबाजी सं बेसी विश्वास 'एक्शन' मे रखैत अछि। जतए कतहु ई जोश-खरोश, मारि-लड़ाइ, युद्ध-संघर्षक गप करैत छथि, ताहू मे कोनो चिकरा-भोकरी नइं। लगैत अछि कोनो पंच, आराम सं समझा रहल होथि। ई रोचक बात अछि, जे परिवर्त्तन आ प्रगतिक कामना सं भरल रचनाकार विभूतिक कविता बहुत आराम सं, बहुत गंभीरता आ शांति सं समस्त परिवर्त्तनक गप करैत अछि, तं दोसर दिश मैथिलक उत्कृष्ट परंपरा, पारिवारिक-सामाजिक-कौटुंबिक संबंधक सौष्ठव, गामक ग्राम्य संस्कृति, परिवारक ममत्वपूर्ण स्नेहसूत्र, प्रेमबंधनक ओर-छोर, ग्राम्य-कला आ लोक-संस्कृति...सब कें बचा कए राखए चाहैत अछि। हड़बड़ी मे तं कोनो व्यक्ति एकरा रचनाकारक द्वैध कहि कए निकलि जाएत, मुदा ई ततेक हड़बड़ी मे देल जाए वला निर्णय नइं थिक। विभूतिक सृजन संसार संभावित मिथिलाक संरचनात्मक चित्र थिक, जतए मैथिल आ मैथिली अपन समस्त श्रेष्ठ परंपरा आ आवश्यक प्रगतिक संग उपस्थित रहत। अपन समस्त रचना मे ई प्रारंभहि सं अइ प्रयोगक आग्रही रहलाह अछि। हिनकर समस्त गीत, गजल, नाटक, उपन्यास, कथा, कवितादि अही प्रयोगक उदाहरण थिक। अतीत मोह हिनका पर हरदम सवार रहैत छनि, मुदा तें हिनका प्रतिमुखी अथवा प्रत्यावर्त्तनक कवि नइं कहल जा सकैत अछि। अलग सं कहबाक कोनो प्रयोजन नइं अछि, जे विभूतिक कविता घटना-कारण-विन्यास-विचार-परिणति- निर्णयक कविता थिक। अर्थात्, कवि अपन रचना मे अइ तरहें विचार करैत अंत मे निर्णय सुनबैत छथि। 'नेहाइ पर स्वप्न' संग्रह एक अर्थे निर्णयक कविता थिक। अइ निबंधक अंत विभूतिएक एकटा निर्णय सं हो तं उत्तम

एखन धरि मांगि क' आगि
काज निकालबाक परिपाटीक विरुद्ध
एकटा श्वेतपत्र जारी करबाक होएत
जे छाउरक ढेरी मे सुनगैत चिनगी
भुम्हुर बनैत अछि
जे ओ बहुत-बहुत काल धरि टिकैत अछि...

नवकथ्य-शिल्पक मांसलकथा

कथा मानव जीवनक सूक्ष्म-सं-सूक्ष्मतर क्षणक भोगल तीत-मीठक रिपोर्ताजक रूप मे अपन परिचिति बना चुकल अछि। एहि सत्य कें विश्व-साहित्यक कथा-लेखनक स्तर पर सेहो देखल जा सकैत अछि। मैथिली कथा सेहो, अभिव्यक्तिक एहि सीमा धरि आबि अपन तीक्ष्णतम शैलीक निर्माण मे लागल अछि। पुरना कथाक विविध उपांग सभ सं मुक्त भेल सातम दशकक कथा अपन परवर्ती कथा लेखन कें थातीक रूप मे कथ्य आ शिल्प दिश केंद्रित कएलक। आठम आ नवम दशकक कथा-लेखन कें अपन पूर्वक पीढ़ी सं प्रेरणा भेटलैक, समकालीन आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था भैटलैक, धार्मिक पाखंड सं युद्ध करैत प्रगतिशीलताक जोश भेटलैक, प्रकाशनक सौविध्य भेटलैक, भाषांतर साहित्य द्वारा विश्व-साहित्यक कथा-मंच भेटलैक आ विश्व-स्तरक चिंतनशीलता एवं ओकर सांस्कृतिक, सामजिक धरोहरि सं परिचित होएबाक सुयोग भेटलैक। एतेक रास सुविधाक मध्य मैथिलीक कथाकार अपन कथ्य-चयन आ शिल्प-निर्माण मे संलग्न भ' गेलाह। कथाकार अशोक, एही व्यवस्थाक बीच लेखनरत ओहेन सृजनधर्मी छथि, जे अपन कथाभूमि गाम सं शहर धरिक परिवेश मे सूक्ष्मतापूर्वक ताकि लेलनि अछि। दुनू परिवेश मे जीबैत प्रायः सभ वर्गक व्यक्तिक जीवन हिनकर कथाकारक लेल अवलोक्य भेलनि अछि। अपन प्रत्येक कथा कें ई व्यक्ति-सत्यक रूप मे उपस्थापित करबा मे पूर्ण सफल भेल छथि। व्यक्ति-सत्य कथाकारक ग्रहण आ पाचन क्रिया मे बेस जकां प्रसिद्ध भेल अछि। व्यक्तिगत जीवन क यथार्थ हिनकर सृजनशील, कल्पनाशीलता आ अभिव्यक्ति शैलीक त्रिवेणी मे ततेक नीक जकां भीजल अछि, जे ओकरा समष्टि-सत्य आ युग यथार्थ बनबा मे कोनो बितय नहि रहलैक अछि।

'व्यक्ति-सत्य समूह-सत्यक मात्र भागफल नहि होइछ', कुलानन्द मिश्रक एहि पंक्तिक सत्य कें स्वीकारैत, हम कहब, जे वस्तुतः व्यक्ति-सत्य, कहिओ आ कोनो समय मे समूह-सत्यक भागफल नहिएं टा होइत अछि। ज्यामितीय भाषा मे ई व्यक्ति-सत्य, समूह-सत्यक गुणनखंड होइत अछि, ओकर भाजको भ' सकैत अछि। अशोक गुणनखंड सभ कें जमा क' क' संख्या बनएबाक प्रयास कएलनि अछि आ सफल भेलाह अछि।

अशोकक कथा कहबाक जे शैली छनि ताहि मे समूह-सत्य कें आनला सं, एकर बेसी संभावना छल जे हिनकर कथ्य ओझरा जइतनि। 'ओ मनुक्ख भ' गेल' कथा मे कथाकार सर्वाधिक रूपें अभिव्यक्त भ' सकैत छलाह, अपना कें पूर्ण रूपें देखा सकैत छलाह, अपन अनुभूति कें चमत्कृत ढंग सं प्रस्तुत क' सकैत छलाह, जं ई कथाक शिल्प ताक' मे नहि अगुतबितथि। एकटा श्रेष्ठ कथ्य, हिनकर शिल्पक कमजोरीक कारणें एकटा सहज संप्रेषणीय कथा होएबा सं बांचि गेल। कथा मूलतः संबोधनात्मक स्वरूप मे आएल आ कथाकारक दर्शन, विचार-मंथनक बाहुल्यक कारणें उबाउ भ' गेल। जखन कि मानवीय जीवनक विडंबना कें सर्वथा नव दृष्टिकोणें देखबाक प्रयास कएल गेल अछि। ड्राइडनक उक्ति छनि Prose is thinking from' मुदा तें कथा मे सेहो चिंतनशीलता एहि तरहें भरि देल जाए, से उचित नहि।

अशोक अपन कथाक कथ्य गाम आ शहरक संस्कृतिक घालमेल होइत परिस्थिति सं उठबैत छथि, निम्न मध्यमवर्गीय जीवन जीबैत मानवक विकासोन्मुख प्रवृतिक आपाधापी सं उठबैत छथि। सामान्तया मनुष्य ऐश्वर्य प्राप्तिक चरम समाधान अर्थ संचय मानि लैत अछि। एहि उपलब्धिक अगुताहटि मे पीढ़ीगत द्वंद्व सं निकलल समाधानक बाट मनुष्य कें कोन संकटक आवा मे झोंकि दैत अछि, तकर जाग्रत उदाहरण थिक 'तेसर प्रश्न'। पुरान पीढ़ीक कें समृद्धि चाही आ नव पीढ़ी तकर समाधान लेल निचेन सं नहि, अगुता क' बाट तकैत अछि। अगुताहटि मे मात्र अवैधानिके मार्ग टा बांचि जाइत अछि। एहेन पात्र युग-यथार्थक भोक्ताक लघुत्तम इकाइ होइत छथि। अइ तरहक जिनगी सं एकटा विशाल समूह कें साक्षात्कार कर' पड़ि रहल छैक। कथानायक एहि समूहक गुणनखंड थिक। कथाकार एहि व्यक्तिपरक जीवनक आधार ल' क' समूहपरक यथार्थ दिश अपन अंगुरी उठबैत छथि। पुरान पीढ़ी अक्सर आदर्श आ सिद्धांतक दोहाइ दैत रहैत छथि। मुदा, एतए तर्कक वस्तु ई अछि, जे ओहि पीढ़ीक प्रतिबद्धता की छनि ? आदर्शक मूल्य पर की अपन ऐश्वर्य आ अर्थ समृद्धिक लोलुपता कें तिलांजलि द' सकैत छथि ? कथाक संदर्भ मे उत्तर होएत नहि। तखन, फेर ओहि पीढ़ीक आदर्श आन ठाम कोना सुरक्षित रहओ। आजुक पीढ़ीक गर्त्तगमन मे पुरान पीढ़ीक ई सर्वतोन्मुखी प्रोत्साहन कोनहु कथाकारक तटस्थ मनोवृत्ति कें कोना नहि मथओ।

आजुक कथाकार कथ्यक चयन युग-जीवनक अंतःपक्ष सं करैत छथि। एहि क्रम मे घोड़ाक घास खएबाक प्रक्रियाक चित्रण लेल रचनाकार द्वारा घास खाएब आवश्यक नहि। यथार्थक अनुभूति मात्र भोक्ते टा नहि, प्रेक्षको प्राप्त क' सकैत

छथि। प्रेक्षण, अवलोकन आ भोग एहि तीनू अभिक्रियाक माध्यमे भोक्ताक संवेदना धरि कोनो सृजनशील प्राणी पूर्ण सफलता सं पहुंचि सकैत छथि, जं हुनकर कल्पनाशीलता ऊर्वर होनि, अनुभूतिक कौशल पकिया होनि, वस्तुतः रचनाकार अपनहु भोगक समय मे एकटा प्रेक्षके रहैत अछि। भोगक समय मे एक दिश हुनकर व्यक्ति भोग मे लागल रहैत छनि, तं दोसर दिश हुनकर रचनाकार हुनकर सहयात्री बनि प्रेक्षण मे लागल रहैत छनि। एक्के समय मे ओहि काल मे ओ दू टा जीवन जीबैत छथि। आ, अइ तरहें हुनकर अनुभूति सुच्चा सामाजिक जीवनक प्रतिकृति भ' जाइत अछि। ई घटना अशोकक 'ओ मनुक्ख भ' गेल' कथा मे नीक जकां देखल जा सकैत अछि।

अपन आन समस्त कथा मे अशोक अनुभूत-सत्यक एहि सूक्ष्म परिभाषा कें अक्षुण्ण रखलनि अछि। घर-अंगना मे छिड़िआएल उपेक्षित बिंदु सभ कें समेटि क' कथाकार जे उत्कर्ष देलनि अछि, अति सामान्य सन बात कें जतेक महिमामंडित कएलनि अछि, से सहजहि प्रशंसनीय। कथा 'डेरबुक' एही कोटिक बात कें उठबैत अछि। सुभाष आ मंजूक जीवनक जाहि मर्मस्पर्शी बिंदु कें कथाकार एहि मे उठौलनि अछि आ एकरा दुनूक जीवन मे जे महत्वपूर्ण परिवर्तन आएल अछि, से तं सामान्य ढंगें कथाकार कहि गेलाह, मुदा मानवक मनोवेग कतेक प्रबल होइत अछि तकर चित्रण बिना किछु कहनहि सर्वांश मे क' देलनि। ई बिंदु एकटा गंभीर अनुशीलनक थिक। एकटा ग्राम्य बाला कें सुभाष की सोचि ढेपा फेक' सं मना करैत छथि आ की भ' जाइत अछि। एते क्षिप्र गतिएं स्थिति बदलि जाइत अछि, मुदा कथाकार कें कोनो अफरा-तफरी नहि छनि।

एकटा बालाक आगू सौंसे जीवन ठाढ़ अछि, मुदा मनोवेग ओकरा किछु सोचए देबाक पलखति नहि रह' दैत अछि। पुनः नारी सन लजकोटरि जाति एतेक साहस सं आगू भागि जाइछ, जखन कि साहस आ शौर्यक उदाहरण मर्द, नांगरि सुटका लैछ।एकटा कथा मे एतेक तरहें अपना कें स्पष्ट क' सकबाक सफलता निश्चित रूप सं कथाकारक अनुभूतिक गहनता आ शिल्पक मौलिकताक परिचायक थिक।

'ओहि रातिक भोर' आ 'मिर्जा साहेब' क बीज रूप एक्के थिक प्रायः। एक टा जातिवादी द्वेषक बात करैत अछि, जखन कि दोसर संप्रदायवादी। मूल अंश मे दुनू एके बात भेल, मुदा दृष्टिकोणहिक विस्तृतिक कारणें दुनू कथा कें दू स्वरूप मे ठाढ़ कएल गेल। 'मिर्जा साहेब' कथा मे मानवताक प्रति गलैत-भखरैत आस्था कें आओरो उत्प्रेरण देनिहार तत्व सभक कुकृति पर चिंता कएल गेल अछि, जतए नकारात्मक दिशासोची व्यक्तिक तर्क कें बल भेटैत अछि, जे अइ समाजक सत्य थिक जखन कि 'ओहि रातिक भोर' मे भोरक संग-संग अनावश्यक कारणें द्वेषपोषीक मोक्ष मे मानवताक किरिण फुटैत अछि।

सामान्य जन-जीवनक भीतरी खोह मे वस्तुतः पीड़ाक विपुल साम्राज्य बनल अछि, जतए रंग-बिरंगक गढ़ल सपना थौआ भ' जाइछ। लोक सोचैत अछि किछु, आ भ' जाइत अछि किछु, लोक विश्वास क' अबैए आ ओकरा आस्थाक संग सांप सभ अपन बिक्खक फगुआ खेला अबैत अछि। 'Blood is thicker than water' रटि अबैए मुदा खूनक संबंध छलफड्डू भ' जाइछ। पारिवारिक संबंध बना अबैत अछि, मुदा धोखा भ' जाइत अछि। दोसर दिश कोनो मित्रक बहिनक रूप-लावण्य पर मोने-मोन गुड़ चाउर खाइत रहैत अछि, किंतु ओकर संबोधनक पवित्रता सं डेरा उठैत अछि। मानसिक उद्वेलनक एहि खैंचा-तानी मे, निर्णयहीनताक स्थिति मे आबि कोनो व्यक्ति भगीरथ प्रयासक पश्चात् एहि द्वंद्व सं मुक्त होइछ। तेसर दिश आंगिक निश्चेष्टताक कारणें एकटा अर्थ-विपन्न लोक अपन निम्नवर्गीयताक अभिशाप भोगैत रहैत अछि। खूब रतिगर कें हवेली सं आपस भेल पत्नीक अभिक्रिया पर, ओकर सेन्ट-पाउडर आदि प्रसाधन-सामग्री व्यवहार कएला पर मोन मे असंख्य प्रश्न जमा करैत अछि, मुदा किछु पूछि नहि पबैत अछि। डरें नहि, विवशतें। पत्नी कें सभटा दुनियावी सुख दोसर ठाम भेटि जाइत छैक, मुदा ओ पूर्ण रूप मे समर्पित अछि पतिक लेल। पतिक लेल ई समर्पण ओकर समाजिक विवशता नहि, ओकर नैसर्गिक विवशता थिक। पति, अपन पत्नीक एहि सभ परिस्थिति कें जनैत अछि, मुदा किओ दोसर जखन एहि तरहें कलंक थोपैत अछि, तं ओकरा हार्दिक पीड़ा होइत छैक। एहि सभ परिस्थितिक जीवंत उदाहरण थिक कथा 'सरोकार', 'जहल मे टांगल मोन' आ 'बौका चुप छल' आजुक समाज मे व्याप्त ई समस्त परिस्थिति हमरा लोकनिक सामूहिक जीवन कें, मानवताक धरातल कें कोन तरहें खोंख कएने जा रहल अछि से भकरार भ' कए एहि कथा सभ मे आएल अछि।

युगीन चटक-मटकक पाछू पिआसल हरिण जकां लोकक बेतहाश भागब, छल-छद्मक शिकार बनल लोकक निष्क्रियता, ओकर कायरता, नपुंसकता, फैंटेसी आ वर्त्तमानक खोह मे निसभेर सूतल लोकक भविष्यक प्रति उदासीनता, मुदा षड्यंत्र वा कुचक्र दिश उन्मुखता, दांपत्य जीवनक मध्य कुहेस जकां परसरैत संशय, नारी-मुस्कानक घातक मूल्य सं परिचित कोनो महिला द्वारा अपन हंसी बेचबाक अभिक्रिया, मुदा तकरा अपन-चारित्रिक स्खलन नहि बुझबाक प्रवृत्ति...आदि-आदि बिंदु मैथिली अथवा आनहु साहित्यक लेल विषयक स्तर पर भने पुरान हो, मुदा ताहि मे सं कथ्य निकालबाक क्षमता आ तकरा उपस्थापित करबाक शिल्प मे निश्चित रूप सं अशोक नवीनता देखओलनि अछि। 'धरती गोल छै', 'एकटा दोसर ब्रह्मा', 'एकटा चौक माने चण्डीनाथ', 'सरिसवक साग' आदि कथा मे से सहजहिं ताकल जा सकैछ।

कथा 'हेयरपिन' आ 'खौंझ' दांपत्य जीवन मे रबड़ जकां नमरैत आ सिकुड़ैत तनाव आ प्रेमक कथा थिक। हमरा समाजक जे पुरुष अपन मनोवेगक कारणें, अपन उन्मादक कारणें, एकटा दूध बेच' वाली लग एतेक छोट भ' भ' जाइत अछि, से

अपन समर्पित स्वभावक पत्नीक चरित्र पर संदेह करैत अछि। अर्थात् चरित्रहीनो पति कें पवित्र पत्नी पर कलंकिनी भ' सकबाक संदेह करबाक सामाजिक अधिकार प्राप्त छनि। नारी जाति एकरा सहि रहल अछि, पुरुष वर्ग लगातार एहि दिश बढ़ि रहल अछि, नारी कें भाइओक संग मुसकिआ कए गप्प करबाक स्वतंत्रता नहि, मुदा पुरुष असंख्य जनानीक संग कामतृप्ति करैत रहैत अछि। कथा हेयरपिन मे एही तथ्य कें अगाध प्रेमक नाटकीय दृश्य सं प्रारंभ करैत संदेहक बिंदु पर ठाढ़, कएल गेल अछि। बीच-बीच मे प्रसंगवश आएल पंक्ति सब कें कथाकार उल्लेखनीय प्रसंगक लेल प्रस्तुत कएलनि अछि। चन्दर द्वारा दूधवाली कें दू सय टाका देबा-लेबाक प्रसंग सन घटना आनो आन कथा सभ मे ताकल जा सकैछ।

'खौंझ' कथाक दांपत्य तनाव आ 'हेयरपिन' क तनाव मे अंतर अछि। 'हेयरपिन'क तनाव लेल मात्र पुरुष उत्तरदायी अछि, मात्र ओकर अपन घटिया चरित्र उत्तरदायी छैक, जखन कि 'खौंझ' क तनावक लेल मर्द कम आ परिस्थिति बेसी। 'हेयपिन'क तनावक परिवेश ओकर पुरुष पात्रक सृजन थिक, जखन कि 'खौंझ'क तनावक परिवेश व्यवस्था सं उद्भूत अछि। अर्थतंत्रक धाह आ श्रमक पहाड़क यातना सहि क' ऑफिस सं आएल प्रत्येक मर्दक ई स्वाभाविक प्रक्रिया थिक, जे ओहिकाल ओ समस्या सं दूर रहए चाहैत अछि। मानसिक रूप सं खौंझाएल रहैत अछि। मुदा सामान्य महिलाक सेहो ई स्वभाव होइत छनि, जे ओ एही समय मे पति कें सभ समस्या सं अवगत करओतीह। अशोक एही बिन्दु कें उत्कर्ष देलनि अछि। हिनकर एहि दुनू कथाक नारी विशेष होशियारि, बुधियारि आ समझौता क' कए रहनिहारि छथि, जखन कि 'हेयरपिन' क पुरुष पात्र धृष्ट आ धोखेबाज।

कथा 'अंतिम राह' अर्थाभावक घूर सं उठल धुआंक कुंठापूर्ण परिणाम थिक, जतए गामक समृद्ध पारिवारिक दानवीय प्रवृत्ति आ निम्नवर्गक शोषित होएबाक घटना चित्रित अछि। श्रमिक वर्गक विजय दिश उन्मुख कथाकारक प्रवृत्ति हिनकर प्रगतिशीलताक द्योतक थिक। किंतु कथाशीर्षक प्रतीकात्मकता कें पूर्ण बनएबा मे किछु अंश मे कमजोर रहि गेल छनि।

'एकटा मुसकुराइत आंखि' कें संस्मरणात्मक कथा कहल जएबाक चाही। कथा मे भाषाक प्रवाह बहुत शांत चित्त सं जाइत रहल अछि। मुदा कथाक उद्देश्य बिंदु कें बेस भकरार होएबा मे बाधा उपस्थिति भ' गेल छनि। ई बाधा हमरा जनैत कथाक भाषा मे भावनात्मक प्रभावक कारणें भेल अछि। भावनात्मक प्रवाहमयी भाषा अधलाह नहि थिक, मुदा जखन रचनाकार ओहि भावना मे डूबि जाथि, तं अपन मंतव्य सं आगू बढ़ि जएबाक संभावना रहिते टा अछि। कथा 'हड्डी' छोट सन कथा मे बहुत बात ल' कए सोझां आएल अछि। कथा नायकक वैयक्तिक समस्या कें उठा क' ओकर मानसिक यात्रा कें जाहि ढंगें कथाकार प्रस्तुत कएलनि अछि, तेना कहल कम जाइत अछि।

'जहिआ सुरुज नहि उगलै' आ 'नचनियां' मानवताक ह्रास नहि ओकर हलालक कथा थिक। गृहस्थक वेश मे व्याधाक कथा थिक, मनुष्यक वेश मे गिद्धक कथा थिक। जतए दुनू ठाम, नारी अपन बापक द्वारा देल गेल उपहारक अभिशाप भोगि रहल अछि। एक ठाम कम दहेज ल' कए अएला पर कलंकिनी होइत अछि, तं दोसर ठाम अपन जवानीक उमेरिक कारणें वयसाहु पतिक अशक्यताक दंड क्रूरतम बाटें भोगैत अछि। एहि दुनू कथाक नारी मे सं दोसर नारी अपेक्षाकृत साहसी अछि, जे अपन सुख-सुविधाक बाट ताकि लैत अछि। ओना, मोटा-मोटी, अशोकक नारी पात्र प्रायः बेसी होसगरि छनि, जखन कि पुरुष पात्र कतहु डेरबुक, कतहु क्रूर, कतहु पलायनवादी, कतहु भ्रष्ट, कतहु संशयी, कतहु पुंसत्वहीन, कतहु कायर आ कतहु-कतहु उदारो छनि। अपन कथ्य कें पूर्ण रूपें स्पष्टता देबा मे कथाकार कतहु-कतहु कथो मे किछु उपकथा गढ़ि लैत छथि, से सराहणीय ढंगें, आ से अप्रासंगिको नहि होइत छनि।

अशोकक संपूर्ण कथा संसारक अनुशीलन, ई स्पष्ट करैछ, जे वर्ष 1989, प्रायः हिनकर नव शिल्पक अनुसंधान आ पछिला शिल्पक त्यागक संक्रमण काल थिक। एहि अंतरालक कथा मे अशोक अपन पछिला कथा सभक शिल्प सं दूरस्थ छथि। यद्यपि कथ्यक दिशा मे कथाकार किछु विस्तृति पाबि लेलनि अछि, जखन कि शिल्पक स्तरपर एखन प्रायः नव निर्माण मे लागल छथि। कथित अंतरालक कथा सं पूर्वक कथा सभक शिल्प मे कथाकार अपन नितांत मौलिकताक संग ठाढ़ भेल छथि, जतए सर्वथा भिन्न तरहक शिल्प निखरल अछि। मौलिक रूप सं कथाकारक समस्त कथाक कथ्य अत्यंत छोट होइत अछि, जकरा कथाकार अत्यंत छोट सन जगह मे कहि लैत छथि, मुदा से जगह ई अपन कथाक अधोभाग मे रखलनि अछि। किंतु, ओहि प्रस्तुतिक लेल स्पष्टता आ श्रेष्ठ संप्रेषणीयताक लेल एकटा शानदार पृष्ठभूमिक निर्माण करैत छथि। वस्तुतः हिनकर कथाक पृष्ठभूमि अधिकांश जगह छेकैत छनि अर्थात् अपन कथ्योत्कर्षक लेल निचेन सं वातावरणक निर्माण करैत छथि। इएह निचेनी हिनकर कथाक सहजताक मूलमंत्र थिक।

प्रारंभ मे शिल्प-अनुसंधानक नव प्रयास कथाकारक कथ्य कें नीक जकां सजएबा मे सफल नहि होअए दैत छलनि। कथाक गसाइन कनेक ढिल-ढिल रहि जाइत रहनि, मुदा बाद मे से सम्हरि गेलनि। एहि नव-निर्माणक प्रक्रिया मे 'जहिआ सुरुज नहि उगलै' आ 'ओहि रातिक भोर' शिल्पक स्तर पर सेहो, विकासोन्मुख कथा मानल जाएत जखन कि शिल्पक कमजोरीक कारणें 'नचनियां' एक रती टगि गेल अछि। कथाकारक शिल्प-अनुसंधानक ई नव प्रयास हिनकर कथालेखन कें एकटा नव क्षितिज द' सकल, से तोषक बात थिक।

विसंगतिक भीड़ मे सहज संधान

बीसम शताब्दीक आठम दशक मे लेखन प्रारंभ क' कए जे युवा पीढ़ी अपन हस्तक्षेप मैथिली कथा लेखन मे कएलक ताहि मे प्रदीप बिहारीक महत्वपूर्ण स्थान अछि। लगभग डेढ़ सय कथा, पचास गोट लघुकथा, दर्जन भरि एकांकी, दूटा उपन्यास आदि पुस्तकाकार अथवा पत्र पत्रिका मे प्रकाशित छनि। हिन्दी आ नेपाली मे कैकटा रचनाक अनुवाद भेल छनि। मैथिलीक किछु कथा संकलितो छनि। सन् 1983 मे हिनकर उपन्यास 'गुमकी आ बिहाड़ि' प्रकाशित भेल आ सन् 1986 मे दोसर उपन्यास 'विसूवियस'। 'विसूवियस' मैथिली उपन्यासक विकास-क्रम मे परिचित संबंध आ मानव-चरित्रक चित्र प्रस्तुत करैत सोझां अबैत अछि। ई उपन्यास नेपालक एकटा शोषित पराजित भूखंडक जन-जीवन कें केंद्र मे राखि कए लिखल गेल अछि। जं दृष्टि कें व्यापक कएल जाए तं ई जनपद प्रातिनिधिक रूप मे कतौको शोषित जनता क संकेत द' सकैए। एतए अस्तित्व रक्षा मे जुटल जनताक जीवनक सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि। उपन्यासक कथानायक मनीशक संग भावनात्मक अंतरंगता स्थापित क' कए समाजक परदा तर झांपल दुर्गंध सं परिचित भेल जा सकैछ, व्यवस्थाक चद्दरिक एक-एकटा भूर कें देखल जा सकैत अछि।

पोथीक नाम आ आवरण चित्र बहुत रास गूढ़ तत्वक रहस्योद्‌घाटन करैत अछि। 'विसूवियस', शब्द संपूर्ण उपन्यासक एक्को पंक्ति मे कतहु व्यवहृत नहि अछि। निश्चित रूपें एहि उपन्यासक कथा-भूमि सं विसूवियसक कोनो ताल-मेल हएबाक चाही।

जापानक धरती पर ज्वालामुखी पर्वत शृंखलाक बाहुल्य अछि आ पर्वत शृंखलाक बाहुल्य नेपालो मे अछि। ई आंचलिक उपन्यास नेपालक जाहि भूखंडक आंचलिकता सं भरल अछि, ततए अदौ सं श्रमशील मानवक शोषण होइत आएल अछि। ई उपन्यास ओही शोषणक तांडव आ प्रतिवाद लीलाक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। अर्थात्, साबित होइत अछि, जे अइ जनपदक ई पर्वतमाला मात्र निर्जीव पाथरक ढेरी नइं थिक, ई 'विसूवियस'क ज्वालामुखी बनि सकैत अछि। चाउर-तेलक मील मे धान उसनैत-कुटैत, तोड़ी-सरिसो पेड़ैत विशाल जनसमूह एकटा दीर्घ अवधि सं धानक संगें अपन आत्मा कें उसनैत, सुखबैत, कुटैत रहल अछि; अपन-अपन जीवन कें पेड़ि कए खोशमदिया हंसीक तेल निकालैत रहल अछि; दारुण सं दारुण विपत्ति कें सहि कए शोषण कें बर्दाश्त करैत चुप रहैत आएल अछि। अनेक वर्ष सं मधेसी आ पहाड़ीक एहि शोषणक प्रतिरोध मे उठैत चिनगी दबैत रहल, जमा होइत रहल आ अचक्के मे ई चिनगी सब एक दिन बनि गेल ज्वालामुखी; नेपालक सभ पहाड़ बनि गेल 'विसूवियस'। शोषणक इएह प्रतिवाद 'विसूवियस' मे स्पष्ट रूपें मुखरित भेल अछि।

पोथीक आवरण चित्र थिक मटियाह, करिछौन रंगक पर्वत शृंखला सं उठैत लाले-लाल बड़का धधरा। पहाड़ आ पहाड़क पाथर, निर्दयता आ क्रूरतापूर्ण शोषण कें घोषित करैत अछि तथा पहाड़क चोटी सं निकलैत धधरा, अदौ सं शोषित जनसमूह द्वारा एकत्रित आक्रोशक लहरि कें; जे ज्वालामुखी बनि निकलल अछि। ई सभटा बिंब-प्रतीक; पोथीक कथाभूमि मे चित्रित यथार्थ; विकासोन्मुख सर्वहाराक शक्तिक प्राबल्य; ओकरा अपन अस्तित्व बोध होयबाक सूचना; अपन मूल्य बूझि लेबाक स्थिति आ विकासोन्मुख एहि शक्ति द्वारा पराजित होइत पतनोन्मुख बुर्जुआक चित्र ठाढ़ करैत अछि।

कथाभूमिक चयन मे प्रदीप बिहारी सफल रहलाह अछि। कैक तरहें विसूवियसक कथानक कें सराहल जा सकैत अछि। पोथीक भूमिका मे जीवकांत प्रदीप कें 'जनवाद' सं बेसी निकट कहलनि अछि। कथानकक दृष्टिएं ठीके ई जनवादक बेसी निकट छथि। भद्रपुर स्थित मील मे धरती-आसमान एक क' कए, खून-पसेना बहा कए खटनिहार मजूरक व्यथागाथा आ पहाड़ी क्षेत्र, जंगली क्षेत्र मे जारनि बेचि कए गुजर करबा मे शासकीय तंत्र द्वारा उपस्थित व्यवधानक स्थिति कें मस्तिष्क मे राखि ओहि पर तैयार कयल कथानक प्रशंसनीय अछि। उपन्यास मे आधिकारिक कथावस्तु आ प्रासंगिक कथावस्तु, दुनूक निर्वाह सफल ढंगें भेल अछि। ई बात भिन्न, जे कथानकक तानी-भरनी मे कतहु-कतहु फांक बुझाइत छनि। औपन्यासिक शिल्पक खील कतौ-कतौ ढील लगैत छनि। मुदा घटना क्रमक तीव्रता आ तीक्ष्णता तकरा झांपि दैत अछि।

मनीशक पढ़ाइ, कथानायकक माइक रुग्नावस्था, पिताक मृत्यु सं ल' कए यूनियनबाजीक माध्यमे मील मालिक पर विजय प्राप्ति धरिक कथा आ 'चम्पक' तथा विधवा 'लिपिका'क रागात्मक संबंधक कथा, बेबीक परिवारक जनीजातिक स'ख सं अथवा लाचारीवश देह बेचबाक कथा, चम्पक सं पित्तीक झंझटिक कथा, मेवा-इजोतिया-भगलुआ इत्यादिक कथा सभक संयोजन कलात्मक ढंग सं भेल अछि।

विसूवियसक कथानायक मनीश कें संपूर्ण उपन्यास मे एहेन एकोटा कथानायिका नहि भेटलैक जे कथानायक कें कतहु कोनो क्षेत्र मे प्रेरित कयने हो। स्त्री पात्रक संबंध मे प्रदीपक समस्त रचना संसार कें देखि कए बद्धमूल धारणा सन लगैत अछि। हं, 'माइ' एकटा एहेन चरित्र अवश्य अछि जे प्रतीक रूप मे अइ मे उपस्थित अछि।

चरित्र-चित्रणहु मे कैक प्रकारक कलात्मकता देखाओल गेल अछि। कतहु मनीश कें सरल-सपाट तरहें चित्रित कएल गेल अछि, कतहु एकटा बेरोजगार युवकक अत्यंत खिन्न मानसिकता, तं कतहु मील मे रोजगार पाबि लेलाक बादहु ओतुक्का मजूरक शोषण देखि कए औनाहटि छटपटाहटि, तं कतहु क्रांतिक अगुआ आ सभ सं अपूर्व बात जे मील मलिकिनीक प्रेम निवेदनक मुक्त आमंत्रण कें अस्वीकार करब तथा मील मालिकक बेटीक न्योछावर कयल यौन भरल पुष्ट-कोमल देहक उपेक्षा क' कए चलि देब अत्यंत मनोविश्लेषणात्मक ढंगें भेल अछि। 'विसूवियस' मे कथोपकथन अपेक्षाकृत बेसी अछि।

पात्रक बहुविध चित्रण करबा काल ओकर देश, काल, वातावरण, कथोपकथन इत्यादिक समावेश करबा मे उपन्यासकार सचेष्ट रहलाह अछि। सामाजिक परिवेश, भौगोलिक परिवेश, भौतिक परिवेशक वैविध्य रीति-रेवाज, वेश-भूषा, आचार-विचार इत्यादि कलात्मकता सं व्यक्त भेल अछि।

मात्र ई उपन्यासे टा नहि, प्रदीप बिहारीक कोनो कृति पर नजरि दी तं स्पष्ट होएत जे हिनकर संवेदना मध्यम वर्ग आ निम्न मध्यम वर्गक जीवनक संघर्ष आ ओकर विसंगति सं संबद्ध अछि। प्रारंभ मे हिनकर लेखनक कथाभूमि समान्यतया नेपालक जनजीवन होइत छल। आब ई मिथिलाक पारिवारिक आ सामाजिक पाखंड सं उद्‌भूत जटिलता आ विसंगति दिश अभिमुख भेलाह अछि। 'फांक', 'लुत्ती', 'मकड़ी', 'मोटबाह', 'उपरौंझ' आदि कैकटा हिनकर स्मरणीय कथाक नाम लेल जा सकैत अछि। यौन-क्रीड़ा आ यौन-पीड़ा हिनकर कथा मे बड्ड मुखर रहैत अछि। हिनकर कथा संसारक एकटा विचित्र विडंबना अछि जे अधिकांश स्त्री पात्र देह तुष्टि सं मुक्त नइं भ' पबैत अछि। मानवीय जिजीविषाक पहिल शर्त थिक 'रोटी'। तइ रोटीक प्राप्ति हेतु हिनकर पुरुष पात्र तं जान-प्राण लगौने रहैत अछि, मुदा हिनकर स्त्री पात्र एखनहु, देह भोग सं उपर नहि आबि सकलनि अछि। यद्यपि ओ स्त्री पात्र प्रायः सभ ठाम हिनकर संघर्षशील नायकक संबल अथवा कही तं उद्देश्य केंद्रित संधान मे विचलन विरोधी तत्वक रूप मे अबैत छनि। मुदा ओहि स्त्री पात्रक अस्तित्व हिनकर रचना संसार मे स्वावलंबी जकां नइं बनि पबैत अछि।

प्रदीपक रचना संसार मे एकटा आओर समस्या, पूर्वक लेखन मे छल। हिनकर कथा सभक बुनावटि मे फांक रहि जाइत छल। कथा बनि तं जाइत छल, मुदा एतेक संख्या मे कथा लिखलाक बाद ओहि मे जाहि निस्सनताक आ सघनताक अपेक्षा रहैत छल, से अबैत नइं छल। कथा कहबाक लूरि छनि, तें ई कोनहुं वस्तु-विषय पर कथा लिखि लैत छलाह, यद्यपि ओ कथा होइत छल मात्र लूरिक बलें। मुदा से पाछू आबि कए दूर भ' गेलनि आ एखन प्रदीप अपन कथा-लेखन मे पर्याप्त सावधान छथि। वस्तु आ शिल्प दुनू स्तर पर।

पेशा सं बैंक कर्मी, रुचि सं रंग कर्मी आ कर्म सं कथाकर्मी, स्वभाव सं आयोजन कर्मी समय आ ऊर्जाक ई बहुआयामी उपयोग हिनकर लेखन कें कतेक प्रभावित अथवा अप्रभावित करैत छनि, से कहब कठिन अछि। मुदा अइ समस्त व्यस्तता आ अस्त-व्यस्तताक बीच प्रदीपक कथा-लेखन समृद्ध भ' रहल अछि, ई तोषक बात थिक। कहल जा सकैत अछि जे प्रदीप तुमुल कोलाहल आ व्यवधानक पहाड़ कें चीड़ि कए आगू बढ़ि रहलाह अछि।

प्रवहमान भाषाक डिक्टेटर

आठम दशक मे उभल रचनाकार लोकनिक पीढ़ी मे तारानन्द वियोगी एक महत्वपूर्ण नाम थिक।

वियोगी समकालीन साहित्यक प्रायः सभ विधा मे रचना कयलनि। मुदा, हमरा बुझने, समकालीन साहित्यक परिसर मे हुनकर जे विधा सभ सं सार्थक हस्तक्षेप करैत अछि, से थिक आलोचना, जे कि ओ अपेक्षाकृत कम लिखलनि अछि। मैथिली लघुकथाक क्षेत्र मे सेहो हिनकर काज महत्वपूर्ण अछि। बेछप विषय-वस्तु आ नूतन शैली हिनकर विशेषता थिकनि। वियोगी गजल सेहो लिखलनि। हिनकर गजल-संग्रह 'अपन युद्धक साक्ष्य' प्रकाशित अछि।

मैथिली मे गजल बहुत दिन सं लिखल जाइत रहल अछि। पहिल गजलकार पं. जीवन झा 1904 मे गजल लिखलनि। मुदा, ई धरि निश्चित जे मैथिली गजल एहि शताब्दीक नवम दशकक प्रारंभ मे आबि क' चर्चाक विषय बनल। 1981 मे मैथिलीक पहिल गजल-संग्रह, विभूति आनन्दक 'उठा रहल घोघ तिमिर' प्रकाशित भेल, आ यैह ओ वर्ष थिक जहिया मैथिली गजल पर पहिल बेर आलोचकीय प्रयास भेल, आ ई प्रथम निबंधकार छलाह तारानन्द वियोगी। पहिल बेर एत्तहि आबि मैथिली गजल बृहत्तर आयाम मे चर्चाक विषय बनल। गजलक मादे छपल। तहिया वियोगी गजल नहि लिखैत छलाह, आलोचनादि लिखैत छलाह। तकर दू बर्खक बाद ओ गजल-लेखनक क्षेत्र मे प्रवेश कयलनि।

ई कहब किन्नहु अतिशयोक्ति नहि जे मैथिली गजल कें वियोगी धारदार आ जुझारू तेवर देलनि अछि। हिनकर गजल सभ चर्चित आ लोकप्रिय सेहो भेल। बहुत गोटे कें हिनकर गजलक अनेक पांति मोन होयतनि।

1983 मे वियोगी गजल-लेखन दिस उन्मुख भेलाह, आ सात बर्खक बाद 1990 मे हिनकर गजल सभक पहिल संकलन प्रकाशित भेल। एकर बाद 1996 में वियोगीक छियालीस गोट शानदार मैथिली कविताक संकलन 'हस्तक्षेप' आ 1997 मे अड़तालीस गोट लघुकथाक संकलन 'शिलालेख' तथा ग्यारह गोट कथाक संकलन 'अतिक्रमण' प्रकाशित भेल।

'अपन युद्धक साक्ष्य' मे तारानन्द वियोगीक चालीस गोट गजल संकलित अछि, जे कथ्य आ बुनाबटि दुनू स्तर पर बहुरंगी दृश्य उपस्थित करैत अछि। वियोगी जीवंत रचनाकार छथि, तकर प्रमाण ईहो जे समकालीन जीवन सं जुड़ल प्रायः सब संदर्भ, सब प्रसंग हिनकर रचनाक वृत्त मे मुखर भेल अछि।

कोनो रचनाक तथ्यान्वेषण करबा काल परिदृश्य दिस देखि लेब आवश्यक होइत अछि। एहि संदर्भ मे सर्वप्रथम हमरा समक्ष समाजक नारकीय दृश्य अभरैत अछि, जतय मनुष्य कें सामाजिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक कथित अनुशासनक टांक सं टांकि क' ओकर संपूर्ण जिनगी मे एकटा गुमसड़ाइन वातावरण तैयार क' देल गेल अछि।

मनुक्ख कें ई जीवन-प्रक्रिया आजिज कयने अछि, मुदा मुक्ति पयबाक कोनहु टा बाट ओ ने तं ताकि सकैत अछि, आ ने तकबाक लेल पेट-प्राणक समस्या-पूर्त्ति सं पलखति पबैत अछि। वियोगीक गजल, कविता, कथा आ लघुकथा अइ स्थितिक अलबम थिक।

समकालीन विश्वसाहित्यक गर्भस्थल, गंहीर आत्मबोधक प्रतिफलन थिक। आत्मबोधक सर्वोच्च शिखर पर बेस सामर्थ्यक संग पहुंचि पयबाक लेल जतेक आवश्यक शर्त सभ अछि, ताहि मे पहिल थिक लेखकक अपन दृष्टिकोण। से खाहे जीवन मे हो अथवा लेखन मे। जीवन कें अतीव निर्ममता सं देखबाक प्रक्रिया आ अपन रचनाकार कें ओहि भोग-क्षण सं अलग क' कए ओहि अभिक्रियाक प्रेक्षक बनयबाक कलात्मकता वियोगी मे ततेक मौलिक छनि जे सहजहि हिनकर व्यक्ति-भोग, समुदाय-भोगक दस्तावेज बनि जाइत अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे वियोगी अद्यावधि उपलब्ध दृष्टिकोण सं जीवन कें जीबाक तरीका अपनौलनि, जाहि क्रम मे आत्म-परीक्षण आ आत्म-बोधक अवसर हाथ लगलनि। ई अवसर हिनकर मोह-भंगक प्रतिफलन थिक। हिनकर रचना-संसारक विषय मे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कारिक, भावनात्मक विद्रूपता एत्तहि सं अपन वास्तविक रूप मे आयल।

समकालीन जन-जीवनक सौविध्यक नियामक शक्ति थिक राजनीति। एकरा बिना आजुक जीवन-प्रक्रिया संभव नहि। मैथिली-लेखन सं जुड़ल कतोक गोटे राजनीतिक दृष्टि सं तटस्थ रहबाक बात कहैत छथि। मुदा, एकर अर्थ होयत सामाजिक व्यवस्था आ जन-जीवनक प्रति नपुंसक तटस्थता। कारण, समकालीन परिवेशक आ जीवन-जगतक कोनहु टा पक्ष राजनीतिक प्रभाव सं फराक नहि अछि। तें, एकरा प्रति लेखन मे तटस्थता देखायब वस्तुतः नपुंसक तटस्थता होयत, जे रचनाशीलताक प्रासंगिकता मे बाधक थिक। यद्यपि संपूर्णता मे राजनीतिक प्रतिफलन कें पकड़ब

कठिन अछि। एकर विस्तार आ व्यापक प्रभाव कें रचना मे गंभीरतापूर्वक उठेबाक लेल बहुत बेसी धैर्य आ संलग्नशीलताक अपेक्षा अछि। मैथिली मे जं राजनीतिक रूप सं दृष्टिसंपन्न रचना कम आयल अछि, तं तकर मूल कारण एही धैर्य, संलग्नशीलता आ गंभीरताक कमी थिक।

वियोगीक गजल सभ पूर्णतया एकटा राजनीतिक काव्य-रचना थिक, जकरा संगें उचित संलग्नशीलता आ धैर्य तं छैके, गंभीरतापूर्ण दृष्टि सेहो आद्योपांत छैक।

राजनीतिक लेखन मे एकटा जोखिम आओर रहैत अछि। से ई जे बदलैत समय-धाराक संग रचनाक प्रासंगिकता न्यून होइत जयबाक भय सदैव व्याप्त रहैछ। ई जोखिम उठब' मे वियोगी कतहु अपन कान्ह नहि छिपलनि। ओना, आजुक लेखन मे साहसिकता एक आवश्यक शर्त जकां भ' गेल अछि, अन्यथा अनुभूतिक अभिव्यक्तिए एकटा समस्या भ' जायत, भ' ईहो सकैत अछि जे बदलैत समय-धाराक क्रम मे वियोगीक राजनीतिक लेखनक प्रासंगिकता सेहो न्यून भ' जाइक; मुदा एहि सूचना सभक पक्ष मे सभ सं पैघ बात ई अछि, जे ने तं एहि मे कतहु कलात्मकताक कमी आयल अछि, आ ने गंभीरताक।

जे प्रमुख विषय-वस्तु वियोगीक गजल सभ मे मुखर भेल अछि, से थिक राजनीतिक विद्रूपता, विविध समस्या सभ सं गछारल जन-जीवनक अकुलाहटि, कुंठारहित आ सम-वेदनामय जीवन जीबाक आग्रह, अंध-वृत्तिक विरोध, वैज्ञानिक आ प्रगतिशील विचार-प्रणालीक प्रति आस्था, धार्मिक रूढ़िक विरोध आदि।

उर्दू-फारसी सं सीखल वा उधार लेल गेल गजलक जे सामान्य परिभाषा बनैत अछि, तकरा आधार पर एकटा प्रश्न मस्तिष्क मे उठैत अछि की मतला, मक्ता, शेर, यैह थिक गजल ? हमरा विचारें, किन्नहु नहि। एहि समस्त काव्यांगक संग सभ सं बेसी महत्वपूर्ण अछि एकर अन्विति, एकर चमत्कारिक उपस्थापन। आ, ताहि अन्विति आ उपस्थापन मे वियोगी बहुत सफल छथि। रदीफ आ काफियाक एतेक समधानल प्रयोग कम गजलकारक रचना मे भेटैत अछि।

उर्दू शब्दक प्रयोग वियोगीक गजल मे अखरैत रहैत अछि। एकरा बदला मे दोसरो शब्द सभ सहजता सं ताकल जा सकैत छल। बोधगम्य होइतहु एहन शब्दक बाहुल्य रचनाकारक ठेठ मैथिली शब्दक दारिद्र्यक बोधक थिक। तें हिनका अइ तरहक प्रयोग सं बचबाक चाहिअनि।

ग्राम्य परिवेशक फकरा, कहावत, मोहावरा आदिक प्रयोग आ वाक्य-विन्यासक सहजता ततेक जानदार ढंग सं ई सहियारैत छथि जे ई सभटा मिलि क' एकटा अनुपम शैलीक स्वरूप ठाढ़ करैत अछि। फेर उर्दू शब्दक जबर्दस्ती प्रयोगक की प्रयोजन !

अत्यंत संयमपूर्वक बात कहबाक अभ्यासी वियोगी जे रचैत छथि, बहुत आराम सं रचैत छथि। हुनका कतहु अगुताइ नहि रहैत छनि। विलंबित शैलीक ई प्रवाह हिनकर कलात्मकता कें बेस उंचाइ दैत छनि। हिनकर भाषा संस्कार ततबा फरीछ छनि, जे प्रेषणीयताक उत्कर्ष सभतरि देखाइत अछि। भाषाक सादगीक कारणें संप्रेषणीतयताक स्थिति हिनक रचना सभ मे ई अछि, जे कविता हो, कथा हो, गीत-गजल-आलोचना किछु हो, ओ समाजक सभ वर्गक अतल मोन धरि पहुंचैत अछि। भाषा-शिल्प मे पांडित्य भरनिहार लेखक लोकनि कें ई मोन राख'क चाहिअनि, जे, जं रचनाक पाठ सामान्य श्रोता/पाठक कें पकड़ि नइं सकए, तं ओ रचना नइं भेल। कहल गेल अछि, जे 'हरिण तं गीत रस लंपट, जे गीत प्यासल गाय कें पानि देखि दौड़ैत काल ठामहि रोकि दिअए, से भेल गीत'। अर्थात् साहित्यकार अथवा कोनो आन अनुशासनक विद्वान तं पढ़बाक लेल अभ्यस्त होइत अछि। जन साहित्य तं असल मे ओ भेल, जकर पाठ अनपढ़ व्यक्ति धरि कें प्रभावित क' दिअए। तइ रूप मे वियोगीक साहित्य जन-साहित्य थिक। ओना ई जीवकांत बला ओ चुइंगम नइं थिक, जे वियोगीक कविता संग्रह पर चर्चा करैत ओ देने रहथिन 'वियोगीक कविता दलित साहित्यक मैनीफेस्टो थिक'। अइ चुइंगम कें जं वियोगी चिबाएब शुरुह करताह तं मसुहरि खराब भ' जेतनि। जीवकांत ई पांती निशिचित रूप सं बिना सोचने विचारने लिखने हेताह। हिन्दी मे दलित साहित्यक झंडा फहराएब एकटा राजनीति थिक। मैथिली मे अइ राजनीतिक कोनो प्रयोजन नइं अछि। जे-से. ..

वियोगीक कथा, कविता, गजल, गीत, आलोचना; वस्तु, शैली, शिल्प सब अर्थें जनपद आ सामान्य जनजीवन कें संबोधित अछि। हिनकर कविताक मूल स्वर थिकनि आम जनताक इच्छा-आकांक्षाक हंता वर्गक विरोध, प्रतिपक्षक भूमिका आ कथाक मूल स्वर थिकिअनि ग्रामीण जनपद मे अर्थ तंत्रक पराभव सं खौंझाएल सामंती स्वभावक कुटिल आचरण कें उघारब, श्रमशील मानवक आर्थिक दशाक क्रमिक सुधारक प्रशंसा करब... आदि। अही जटिल परिवेश आ कुटिल परिदृश्य मे रचल गेल वियोगीक रचना संसार सहजहिं जनसाहित्य भ' जाइत अछि, तं ई श्रेय वियोगीक जनसंबंध कें जाइत छनि।

स्वाभाविक आ स्वाभिमानी जीवनक कथा

बीसम शताब्दीक आठम दशक मैथिली कथा लेखन लेल ऐतिहासिक दशक थिक। पर्याप्त संख्या मे अइ दशक मे मैथिलीक बेस समर्थ कथाकारक प्रवेश भेल आ किछु प्रविष्ट कथाकार, अपन परिचिति बनौलनि। अइ दशकक कथाकार सभ मे महत्वपूर्ण छथि विभूति आनंद, विनोद बिहारी लाल, नवीन चौधरी, तारानन्द वियोगी, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, प्रदीप बिहारी, शैलेन्द्र आनन्द, रमेश आदि। शिवशंकर श्रीनिवास अपन संपूर्ण पीढ़ी मे बेछप छवि बनौनिहार कथाकार छथि। शिवशंकर ओना किछु कविता, किछु गीत, किछु आलोचनात्मक लेख, किछु लघुकथा सेहो लिखने छथि, थोड़ेक संपादन कार्य आ किछु शोध कार्य सेहो कएने छथि। मुदा हम मूलतः हिनका कथाकार मानैत छी। कथा लेखन मे एखन धरि ई अपन जे स्थान बना सकलाह अछि, तकर तुलना मे आन विधाक लेखन झूस साबित होइत छनि। चर्चो-बर्चा हिनका पर नीके जकां होइत रहल अछि। पहिल बेर 'त्रिकोण' नामक साझी संकलन मे हिनकर किछु कथा अशोक आ शैलेन्द्र आनंदक कथाक संगें संकलित भेल। तदुपरांत 1991 मे पहिल बेर हिनकर स्वतंत्र संकलन 'अदहन' प्रकाशित भेल। अइ संकलन मे हिनकर पंद्रह गोट विशिष्ट कथा संकलित अछि। तत्पश्चातो लगातार हिनकर कथा सभ पत्र-पत्रिका मे अबैत रहल अछि आ कथा गोष्ठी सभ मे ई पाठ करैत रहलाह अछि।

'अदहन' हिनकर कथासंग्रहक नाम थिक। अइ शीर्षकक एको गोट कथा अइ मे नइं अछि। तथापि अइ संकलनक अइ नामक सार्थकता अछि। संघर्ष मे डेग लेबाक उपयुक्त वातावरण दिश 'अदहन' संकेत करैत अछि से कथाकारक कहब छनि। वस्तुतः अदहन जेना खौलैत अछि आ जेना हुमरैत अछि, हहाइत अछि, भारोत्तोलनक ऊर्जा ओहि मे जेना व्याप्त रहैत अछि, चाउर सन अंकड़ा आ कुपाच्य दाना कें भात सन सिद्धान्न आ सुपाच्य आ स्वस्थ्यवर्द्धक बनबैत अछि शिवशंकरक कथा सभ सैह अदहन थिक। हिनकर कथा-कौशल आ स्वानुभूति मे ओ ताप अछि, ओ उष्मा अछि, जे अनिष्ट कें जरा सकैत अछि आ अभीष्ट कें पनगा सकैत अछि।

आजुक समय मे शताब्दी कें विदा करैत-करैत मिथिला असंख्य समस्या सं संघर्ष क' रहल अछि। बेरोजगारी, बेकारी, फूसि, फरेब, धोखा, पाखंड, हत्या, दंगा, फसाद, चोरि, बटमारि, अशिक्षा, अनुपयुक्त शिक्षा आ राजनीतिक अपराधीकरण, सत्ता-लोलुप व्यक्ति द्वारा समाज विरोधी हरक्कति सब मिथिला मे व्याप्त अछि। समाजिक शिष्टाचार, पारिवारिक संबंध, जनपदीय संवेदना सभक लोप भ' चुकल अछि। अभाव पराकाष्ठा पर, जमाखोरी ताहू सं आगू एहि त्रासद वाातावरण मे शिवशंकर श्रीनिवास पेशा सं शिक्षक, मुदा गाम मे रहि कए मिथिलाक सुच्चा नागरिकक संग जीवन बिता रहल छथि, कथा रचि रहल छथि, कथानक बुनि रहल छथि, कथ्य बीछि रहल छथि। प्रायः इएह ग्रामवास हिनकर कथाकार कें जीवन-रस आ रचनात्मक ऊर्जा द' रहल छनि।

वर्तमान समय मे तीक्ष्णतर ढंगें जे कथा सभ लिखा रहल अछि, ताहि मे शिवशंकर श्रीनिवासक नाम महत्वपूर्ण ढंगें लेल जाइत छनि। कथ्य आ शिल्प दुनू स्तर पर शिवशंकर मैथिली कथाक विकास मे पर्याप्त योगदान देलनि अछि, द' रहलाह अछि। समाजक त्याज्य आ अनदेखल विषय वस्तु कें अपन कथा मे उठबैत छथि, किछु एहेनो विषय सभ, एहनो समस्या सभ, जे मूलतः ग्रामीण जनपदक नइं थिक, ओ वैज्ञानिक प्रगति आ शहरक आक्रमण सं नव-नव समस्या उत्पन्न भेल अछि, आ ग्रामीण समस्या सं मिलि कए क्रॉस-ब्रीड समस्या बनबैत अछि। हालहि मे हिनकर एकटा कथा सुनल अछि 'चिंता'। वायुमंडलीय प्रदूषण, कृषि कर्म पर आघात, ग्रामीण युवकक पलायन, ई पलायन गाम सं, दायित्व सं, संबंध सं, मानवता सं; युवकक माता-पिताक अइ चिंता मे अनेक मानसिक व्यायाम, ओहि माता-पिताक हार्दिक पीड़ा, संतान विछोहक दुख ई सबटा मिलि कए अइ कथा मे जे प्रभाव उत्पन्न केलक अछि, से मैथिली कथाक लेल उपलब्धि थिक।

जेना कि कहल गेल, शिवशंकरक कथाभूमि सामान्यतया गाम छिअनि, मुदा तें ई नइं कहल जाए जे हिनकर कथाक विषय राष्ट्रीय नइं अछि। शिल्प ई अपना तरहें विकसित कएलनि अछि, आ एहि शैल्पिक विकास मे हिनक ग्रामवासक योगदान पर्याप्त छनि। नगर-महानगर मे रहनिहार व्यक्तिक संवेदना आ धैर्य दुनू आहत रहैत अछि। महानगरीय जीवन-पद्धतिक आपा-धापी सं प्रभावित भेला बिना, कोनो व्यक्ति कोना रहि सकत ! आ जकर जीवने आपाधापी सं, हड़बड़ी आ बेचैनी सं प्रभावित रहत ओ कथा की लिखत ? ओतहु ओकरा हड़बड़ी पछाड़ने रहतै। असल मे कथाकार कोनो डाकिया अथवा अखबारक हॉकर नइं होइत अछि, जे हांइ-हांइ कए चिट्ठी आ कि अखबार फेकलक आ फेर दोसर दुआरि पर। कथावाचन आ कथा श्रवण प्रारंभहि सं राति कए होइत छल, जखन लोक जीवन यापनक

समस्तक हलचल सं निश्चिंत भ' जाइत छल। धैर्य सं कथा कहल आ सुनल जाइत छल। शिवशंकर धैर्य सं कथा कहै छथि, अर्थात् लिखै छथि। एक-एकटा बातक 'डिटेल' कहताह। अइ 'डिटेल' मे कतहु-कतहु अतिकथन भ' जाइत छनि, मुदा एना नइं होइत अछि जे कथा असंप्रेषित रहि जाए।

शिवशंकर श्रीनिवासक जांच पड़ताल जं हिनकर रचनाक माध्यमे कएल जाए, तं गजब समन्वय भेटत। वर्तमान समय मे मनुष्यक स्वभाव विचित्र तरहें परिवर्तित भेल अछि संस्कृति-रक्षाक नाम पर परंपरा सं अबैत लोकाचार कें निमाहबाक जिद मे किछु कट्टरपंथी एहेन भेटि जएताह, जे स्थान-काल-पात्रक विचार कएने बिना अव्यावहारिक आ अप्रासंगिको बात कें पकड़ने रहताह अथवा प्रगतिशीलताक नामपर परंपराक अव्यावहारिको बात कें नकारैत रहताह। शिवशंकर अइ दुनू विचारक विरोधी छथि। प्रगतिशील हेबाक पाछू कतहु ई अति क्रांतिकारी नइं देखाइ पड़ताह आ ने परंपरा रक्षकक रूप मे कतहु पाखंडी। इएह कारण थिक जे 'सीतापुरक सुनैना' कथाक नायिका कें आर्थिक स्वनिर्भरताक सलाह देलनि अछि। ई कोनो अति क्रांतिकारी जकां ओकर पुनर्विवाह नइं करबैत छथि, हिनकर कोनो पात्र आत्म निर्भर हेबाक प्रयास मे रहैत अछि, हिनकर पात्रक ऊर्जाक अपव्यय नइं जकां देखाइत अछि। ऊर्जाक व्यावहारिक उपयोगक चित्रण, ने मात्र कथा मे उत्कर्ष आ चरित्र-चित्रण मे जीवंतता भरैत अछि, बल्कि सामाजिक निर्माण मे सेहो विशिष्ट योगदान दैत अछि। चूंकि रचनाक माध्यमे सामाजिक शिष्टाचारक प्रतिस्थापन मे साहित्यकारक भूमिका महत्वपूर्ण होइत अछि, तें कोनो रचनाक समग्र प्रभावक संग संग ओकर एक-एक पंक्ति महत्वपूर्ण होइत अछि।

स्त्री, किसान आ वृद्ध ई तीन वर्ग मिथिला मे आर्थिक आ शैक्षिक परतंत्रताक कारणें उपेक्षाक शिकार होइत आएल अछि। अइ तीनू वर्गक दुर्दशाक प्रति शिवशंकर बेस चिंतित आ योजनाबद्ध ढंगें अइ तीनू वर्गक समस्या सोझरएबा मे लागल छथि। अही बीच एकटा खास बात ईहो देखाइत अछि, जे हिनकर पात्र पर्याप्त बुझनुक आ समय सं पहिने चेत जाइ वला आ अपन भाग्य-निर्माता स्वयं बनै वला सब छनि।

सिनुरहार, सीतापुरक सुनैना, अपना लेल, आदि कतोक कथा स्त्री समस्या कें केंद्र मे राखि कए लिखल गेल अछि। स्त्रीक पराश्रयी हएबे ओकरा जीवनक सब सं मूल समस्या थिक। सामान्यतया आन-आन भाषा-साहित्यक नारीवादी (?) स्त्री पात्र सं हो हल्ला मचबौताह, पुरुष-पात्र सं हाथा-पाही करबौताह, मोकदमा करबौताह, कोर्ट कचहरी, नारी सेल आदिक चक्कर कटबौताह, मुदा हिनका ओतए नारीक ओहन कोनो कल्पने नइं अछि, परिवार आ परिवारक स्त्रीक प्रति एक भव्य-दिव्य धारणा संपूर्ण कथा लेखन मे भेटैत अछि। जं हिनकर रचना मे नारीक स्थिति कतहु थोड़ बहुत गड़बड़ अछि, तं तकर मूल कारण पारिवारिक कम आ सामाजिक बेसी होइत अछि, नियतिक कारण बेसी होइत अछि।

'सिनुरहार' कथा मे स्त्री दुर्दशाक लेल के दोषी मानल जाएत ? घर-परिवार आ टोल-पड़ोसक स्त्री, जे अपनहि परिवारक विधवा युवती कें समस्त शुभ अवसर सं वंचित रखैत अछि ? आकि ओ समाज, जे ई आचार संहिता मानि रहल अछि ? आकि कैक पीढ़ी पाछूक पितर लोकनि, जे परंपरा बनौने हेताह ? कुला मिला कए देखी, तं केओ दोषी नइं अछि, अइ समस्त कुरीतिक अंत लेल सामाजिक नवजागरणक आवश्यकता अछि। आ, से संकेत हिनकर कथा सब मे अबैत रहैत अछि। 'सीतापुरक सुनैना' तं अद्‌भुत कथा अछि। पहिल पंक्ति सं अंतिम पंक्ति धरि जिज्ञासाक तार घिचाइत रहैत अछि। कथा-पाठ काल पाठक उत्सुकतावश कथाक अगिला घटनाक अनुमान करैत जाइत अछि। मुदा ई कथा हरेक पंक्ति मे पाठकक सभ अनुमान कें असफल करैत एकटा एहेन परिणतिक संग समाप्त होइत अछि, जे चकित भ' जाए पड़ैत अछि। इएह थिक कथाक सफलता। एहिना 'अपना लेल' कथा मे निर्मला आ आशा एहि दुनूटा बालिका कें जीवन संधानक पूर्वाभ्यास कराओल जाइत अछि, निर्मला, संभावित सासु-ससुर-ब'र-सासुर कें प्रसन्न करबाक प्रशिक्षण पाबि रहल अछि आ आशा, अपना कें प्रसन्न रखबाक प्रशिक्षण पाबि रहल अछि। अइ तुलनात्मक चित्रण मे शिवशंकर एकटा आओर महत्वपूर्ण काज कएलनि अछि, आ से थिक ई संदेश जे प्रगति कामना पीढ़ीक विकास सं नइं बढ़ैत अछि। आशाक माइ-बाप पुरान पीढ़ीक रहितहुं प्रगतिकामी आ व्यावहारिक जीवन-दृष्टि रखनिहार छथि, जखन कि निर्मला नव पीढ़ीक रहितहुं, पढ़लि-लिखलि होइतहुं जीवनक प्रति व्यावहारिक दृष्टि सं च्युत रहलीह। कथा कें मांसल(उत्तेजक आ अवमाननाक अर्थ मे नइं) आ प्रवाहमयी बनाएबाक क्रम मे कोनो महान घटनाक सृजन कएने बिना कथाकार एतेक महान बात क' जाइत छथि, जे वस्तुतः ओ कथो सं महान भ' जाइत अछि।

पात्र आ घटनाक विवरण मे वैधता आ अवैधता ताकए लागी, तं हिनकर कथा पढ़ैत काल कैक बेर गुनिधुनिक स्थिति उत्पन्न भ' जाइत अछि। कैक बेर हिनकर कथा मे ई निर्णय करब कठिन भ' जाइत अछि जे, के ठीक अछि, के गलत ? सबटा परिस्थितिक दोष बुझाइत रहत। 'आदंक' कथा मे 'अमिरती'क बेटा क मृत्यु, ब'र सं दुराव आदिक कारण की से निर्णय करब कठिन अछि। शुद्ध मनोविश्लेषणात्मक धरातल पर लिखल ई कथाक विषय एहेन उपेक्षित जीवनांश सं उठाओल गेल अछि, जेम्हर ककरहु नजरि नइं गेल होएत। बाल-मनोविज्ञान सं परिवार आ दांपत्य जीवन मे एतेक गंभीर आ भयानक समस्याक उदयक संभावना ताकब, निश्चित रूप सं शिवशंकरक श्रेष्ठ कथादृष्टिक परिचायक थिक। मिथिला मे कनैत बच्चा कें चुप करएबा लेल भय आ आदंकक सूचना देब आम बात भ' गेल अछि। मुदा अइ तात्कालिक शांतिक लेल ओ संपूर्ण जीवनक संतानसुख आ दांपत्यसुख कोना लुटा सकैत अछि, तकर चकित करबा योग्य चित्रण अइ कथा मे भेटैत अछि। यद्यपि अहू

कथाक अंतिम अंश मे कथावाचकक पति-पत्नी संवाद सं स्त्री स्वावलंबनक जतेक मजबूत आधार स्पष्ट भेल अछि, से प्रशंसनीय थिक।

अही तरहें, अर्थ लोलुप उच्च शिक्षित वर्गक अनाचार, पाइ आ सामाजिक मान्यताक जोर पर सिद्धांतवादी आ नैष्ठिक लोकक अवमानना, वृद्ध-बुजुर्गक असुरक्षा बोध, कृषि आ लोक-कला, लोक-संस्कृतिक प्रति अनुराग आदि हिनकर कथा मे बेस जगह पौलक अछि।

धोखा, अविश्वास, अनास्था, नितांत निर्धनतो मे निष्ठा आ व्यावहारिकताक निर्वाहक प्रति आग्रह आदि चित्र हिनकर कथाकृति मे चित्रित भेल अछि। 'इजोत', 'बांट-बखरा', 'पनिडुब्बी', 'बसात मे उड़िआइत लोक', 'अपन-परार' आदि कथा सभ मे एहि स्थितिक चित्र अपन संपूर्ण अस्तित्वक संग उपस्थित अछि।

कुल मिला कए शिवशंकर श्रीनिवासक कथाक लक्ष्य एकटा शांत, सहज आ स्वाभिमानी जीवन व्यतीत कर'वला परिवार आ समाजक स्थापना थिक। अर्थात् हिनकर कथा सुच्चा अर्थ मे सहज मानवीय संबंधक प्रति आग्रही रहैत अछि। कथा नायक, आकि कथाकार जनैत छथि, जे समाज मे ढोंग, पाखंड, गरीबी, बेकारी, समस्या, आतंक, फूसि, फरेब, धोखा, अनास्था, अवमानना, अपमान, रूढ़ि...सब छैक, मुदा सब किछुक अछैत जं मनुष्य चाहए तं ओकरा जीवन जीबा लेल, अपन अस्तित्व कायम कर' लेल, अपन अस्मिता बनब' लेल जाहि आगि, जाहि ऊष्माक प्रयोजन छैक, तकरा लेल चिनगी सेहो अही समाज मे छैक। शिवशंकरक कथा अही चिनगीक अनुसंधान करैत आबि रहल अछि, क' रहल अछि।

अद्यातन विषयक मनमौजी कवि

रमेश, मैथिली साहित्यक कथा, कविता आ गजलक क्षेत्र मे अपन मौलिक अनुभूतिक धरातल सं उठाओल विषयक कारणें तथा जनसामान्यक प्रति अपन औदार्यक कारणें स्वतंत्र अस्मिता बना चुकल छथि। कथाकार रमेशक स्तरीयताक परिचय कथा संग्रह 'समाङ' आ गजलकार रमेशक स्तरीयताक परिचय हिनकर स्वतंत्र संग्रह 'नागफेनी' तथा गजल संकलन 'लोक वेद आ लालकिला' मे ताकल जा सकैत अछि।

आठम दशकक उत्तरार्द्धे सं रमेश बेस क्रियाशीलता आ प्रखर रचनाधर्मिताक संग सृजनशील रहलाह अछि। हिनकर कविता 1990 मे आबि कए संग्रहित भ' सकल।

देश स्वतंत्र अछि, सब कें समानताक अधिकार प्राप्त अछि, मुदा केओ भूखें मरि रहल अछि, केओ भूख जगाब'क इलाज करबैत अछि, केओ अनेरो बकि रहल अछि, ककरो अपन दर्द कहबाक छूट नहि; दिन भरि परिश्रम कएनिहार माटि पर सूतए मुदा ओकरा पर जूति चलएनिहार पलंग पर ई वैषम्य रमेश कें नहि देखल भेलनि। अपन संपूर्ण क्षमताक संग कएल परिश्रमक बदला मे उचित पारिश्रमिकक अभाव, शोषण, अनाचार, प्रपंच आदि सामाजिक विकृति हिनकर कोमल स्वभाव कें बेस प्रभावित कएलकनि अछि। एहि सत्य सं हिनका परिचित हेबा मे देरी नहि लगलनि, जे पूंजीवाद आ अफसरशाही दुइए टा मूल कारण थिक शोषणक। पूंजीपति, व्यापारी, सूदखोर, जमाखोर, अनाचारी आदि-आदि असामाजिक तत्व कें सरकारी संरक्षण भेटैत अछि; ई समस्त अंग समाज मे दोसर दिश भूख, समस्या, बेकारी, अनाचार, शोषण, हत्या, लूटि आदिक फैक्ट्री चलबैत अछि एहि सृजित विडंबना सं रमेश नीक जकां परिचित छथि। फलस्वरूप, संघर्षशील नागरिकक प्रति हिनकर संवेदना अत्यधिक आपकता रखैत अछि।

विषयक स्तर पर सर्वत्र, कविक संवेदना एकल स्वरूप मे अछि। खाहे

प्रेम-प्रसंग मे उपस्थित बाधा हो अथवा बेकारीक समस्या सं कुश्ती लड़ैत मनोदशा; शोषणक जांत मे पिसाइत व्यक्तिक आर्त्तनाद हो अथवा प्रगतिक बाट मे कांट उपस्थित देखि प्रगतिकामी सर्वहाराक व्यथागीत सभ ठाम कवि एकहि रूप मे ठाढ़ छथि। आ, सगरे हिनकर नैतिकता निम्न आ निम्न मध्यवित्त व्यक्तिक संग जुड़ल अछि। सभ ठाम हिनकर कविताक विषय ओही वर्गक जीवन-यथार्थ बनैत अछि। मुदा, दृष्टिकोणक स्तर पर, अपन समस्त कविता मे, कवि दू स्वरूप मे ठाढ़ होइत छथि। यथास्थितिक भोग आ ताहि पर व्यथित मोन सं चिंतन-रोदन एवं यथास्थितिक भोगक कारणें मोन मे उठल विद्रोहक भावना। कविता शीर्षक 'यथास्थितिक बादक लेल', 'एकटा दोसर दिशा मे बढ़बाक थिक', 'गूड़', 'सर्चलाइट कें हाथक इशारा करू दोस', 'भगत सिंहक वसीयतनामा', 'शून्य काल सं शून्य काल धरि' आदि। दोसर दृष्टिकोणक रचना थिक, जतए कवि अपन दैन्यक प्रतिकार लेल फुफकारि उठल छथि।

रमेशक कविता संग्रह 'सङोर' वस्तुतः ओहि शक्तिक संङोर थिक, जकरा मे समाजक एहि विकृति, वैषम्य, शोषण, प्रपंच आदिक विरोधक ज्वाला अछि। एहि समस्त कविता मे कवि अपन दैन्यक लेल दुःखी छथि, मोन मे आक्रोशक आवा पजरि रहल छनि; अराजकता आ शोषणक प्राणदायी तत्व कें नैतिकताक पाठ पढ़बैत छथि; एहि समस्त विरोधक चिनगी, ज्वाला बनि उठल अछि एवं कवि अपन समस्त चेतनाक संग विद्रोहक स्वर सं फुफकारि रहल अछि।

'लक्ष्मण-रेखा अपन-अपन', 'जुनि चुचकार', आ 'चाहे किछु भ' जाए' आदि कविता मे कवि अनाचारीक संभावित दुर्दशाक घोषणा करैत छथि, अपन शक्तिक प्रखरता आ सहनशीलता आ दुर्दांत कष्ट सहैतो विरोधक स्वर उन्मुख रखबाक साहस रखैत छथि। मुदा 'मनरोग' शीर्षक कविताक पांती...आनक बखरा खेने/होइतहि टा छै मनरोग' हिनका अपन क्षमताक प्रति कमजोर करैत अछि। 'एकटा चुरीन', 'जीवन-संगिनी', 'ई प्रेम-पत्र नहि थीक', 'डाक्टर सं', 'एकटा जीबैत लहास' प्रभृति कविता सभ मे यद्यपि कवि अपन दैन्य पर कानि रहल छथि, व्यथा सं छटपटा रहल छथि, मुदा व्यथाक एहि पराकाष्ठा पर सेहो ई कायर नहि देखि पड़ैत छथि। व्यवस्थाक प्रति अपन असंतोष कें ई अपन अशक्यताक झूल नहि पहिरौलनि। फलस्वरूप ईहो कविता सभ आक्रोशक स्थिति मे विद्रोहक झंडा ताकि रहल अछि।

'सङोर' कवितासंग्रह असंतोष, मोह-भंग, अनास्था आदि सं ल' कए विद्रोह धरिक यात्रा थिक; जाहि मे कवि उजड़ल मनक व्यथा सं, डंरखिल गामक कथा सं, जीबैत लहासक दशा सं, बेरोजगार लोकक मुंहक गन्ह सं, सामाजिक विद्रूपताक दंश भोगैत जन सामान्यक बिसबिस्सी सं परिचित होइत छथि; एहि समस्त विडंबनाक भुक्तभोगी समुदाय सं प्रश्न पुछैत छथि 'कहिया धरि ?'

रमेशक कविताक दोसर संकलन थिक 'समवेत स्वरक आगू'। अठावन गोट गद्य कविता अइ पोथी मे संकलित अछि। यथार्थ भोगक सूक्ष्मता, गहनता आ ईमानदारीक स्तर कोनहुं रचनाकारक प्रतिभा कें रचनाक विधा आ फार्म तय करबाक निर्देश दैत अछि। जाहि रचनाकारक प्रतिभा अइ निर्देश कें ठीक सं ग्रहण क' लैत अछि, से ओइ विधा आ फॉर्म मे सफल होइत छथि, अन्यथा संप्रेषणीयता आ प्रभावोत्पादकताक पांतर मे बैसल आलोचकक आश तकैत रहैत अछि। रमेश अइ फार्म चयन मे आ अनुभूतिक संप्रेषण मे सफल भ' सकलाह अछि, से बात 'समवेत स्वरक आगू' पुस्तक कहैत अछि।

अइ संकलनक समस्त कविता सन् 1990 सं सन् 1995 धरि लिखल गेल अछि। ई बात संपूर्ण भारते टा नहि संपूर्ण विश्वक जनता जनैत अछि जे वर्तमान शताब्दीक अंतिम तीन दशक भारतक जनता लेल कोन तरहें पीड़क दशक साबित भेल अछि। तीव्र सं तीव्रतर गतिएं एतए सरकार बदलैत गेल, आम चुनाव, मध्यावधि चुनाव, गठबंधन, समर्थित सरकार, वैशाखी परस्त सरकार आदि-आदि देश आ राज्य मे होइत रहल। कहियो भारतक जनता कें अपन प्रतिनिधिक चयन कर' लेल सुचिंतनक अवसर नइं देल गेल। आकुलता आ व्यग्रता मे भारतक जनता अपन प्रतिनिधि बदलैत गेल। रमेश अही विकराल परिस्थितिक प्रतिफलन कें अपन कविताक विषय बनौलनि।

बिंब-प्रतीकक चयन मे किछु ठाम रमेश असंप्रेषित रहि गेलाह अछि। मुदा ई तय अछि जे 'शब्द', 'पद', 'लोकोक्ति' आ 'कहबी' सभ कें ई नव-नव अर्थ देबाक उद्योग सतत करैत अएलाह अछि। ताहि मे कतोक ठाम सफलतो भेटलनि, तं कतहु असफलतो।

रमेशक सृजन संसार मे विज्ञान, पर्यावरण, संस्कृति, इतिहास, दर्शन, भूगोल, भूमंडलीकरण, राजनीति, साहित्य, परंपरा, वेद, पुराण, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, अंतरिक्ष, सौरमंडल, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समस्या कोनो वस्तु त्याज्य नइं थिक। मुदा तें अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा उठबैत काल हिनकर कविता भाषा सं मैथिली आ विषय बोध सं कोनो आन भाषाक नइं भ' जाइत अछि। ओहू काल हिनक विषय-विधान खांटी मैथिल रहैत अछि।

वैज्ञानिक अवदान सं प्रभावित समाजक मनोवृत्ति आ क्रिया-अनुक्रिया तथा इलेक्ट्रोनिक आक्रमण सं आतंकित आ एक सीमा धरि अनुशासित समाजक जीवन-चक्र रमेशक कविता मे एन-मेन उतरि जएबा सं बाज नइं अबैत अछि। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय...सभ फलक पर रमेशक कविता अद्यतन रहैत अछि। एक सीमा धरि रमेशक कविता कें करेंट इवेंटक डायरी जकां पढ़बाक आ गुनबाक अवसर पाठक निकालि सकैत छथि। अर्थात् रमेशक बेसी कविता कें सज्ञान, सचर आ बेस अधीत लोकक लेल बेसी उपयोगी कहल जा सकैत अछि।

अलंकारक बोझ आ एकहि पंक्ति मे कैकटा संबंध कारक विभक्ति सं विशेषणक सृजन किछु ठाम कविताक सम्हार मे नहि अबैत छैक आ ताहि सं कविताक किछु पंक्तिक सौंदर्य प्रभावित भ’ जाइत अछि। मुदा कविता मे लुप्त होइत शब्द आ उपमा कें रमेश पुनर्जीवित कएलनि अछि।

सकारात्मक स्वरक प्रगतिकामी कविता

‘भोरक आयब⁄निविड़ अन्हार कें⁄फांसी द’ देबाक सूचना आनब नहि थिक⁄प्रकाश आनब थिक⁄ जे हमर बन्न खिड़की पर⁄अपना हाथक थाप दीअय’ एहि पांतीक कवि नारायण जी मैथिलीक कोमल आ परिपक्व मिजाजक कवि छथि। धनात्मक दृष्टिक तीक्ष्ण तेवर वला थोड़ कवि छथि मैथिली मे, जे चिकरा-भोकरी मे विश्वास नइं रखै छथि। एते धरि, जे उलहन-उपराग धरि मे हिनकर भाषा संयते रहैत छनि। कैक बेर एहेन होइत अछि, जे चिकरा-भोकरी मे कविक तेख-तामस निरर्थक जियान भ’ जाइत छनि, फलस्वरूप ओकर प्रभाव दीर्घकालीन नइं रहि पबैत अछि। नारायण जी अइ सत्य सं प्रारंभे सं परिचित रहलाह अछि। तें अपन कविता मे क्रोध कें भाषाक भट्ठी मे द्रवित कएलनि अछि। स्पष्ट अछि, जे द्रवीभूत क्रोध भाषा आ उक्ति वैचित्र्यक कारणें व्यंग्य मे परिवर्तित भ’ जाइत अछि, जेना मैथिली मे यात्री, राजकमल, मायानंदक कविता मे आ हिन्दी मे रघुवीर सहाय, शमशेर आ केदारनाथ सिंहक कविता मे होइत अछि।

साहित्य मे नारायण जीक प्रवेश आठम दशकक मध्यांतर मे होइत अछि, ई समय भारतक लेल इमरजेंसीक समय थिक। अइ शब्द कें अनूदित क’ कए कही, तं बात बेसी फरिछाएत। ई समय ‘संकटकालीन’ छल। प्रश्न उठैत अछि, जे संकट ककरा लेल छल ! राजसत्ता लेल, जे मनुष्य कें छागर-पाठी जकां पटकि-पटकि बधिया करैत छल आ जन-हितैषी कें बरद जकां पकड़ि-पकड़ि अड़गड़ा (जेल, आकि मीसा, आकि कांजी हाउस) मे ठूसि दैत छल ? अथवा जनसत्ता लेल, जाहि मे सत्ता तं छलहे नइं, आ ‘जन’ केर हाल तं उपर्युक्ते छल ?...ई समय जयप्रकाश आंदोलनक छल, युवा शक्तिक पराक्रम सं भीख मांगल जा रहल छल, किछु नढ़िया सभ जयप्रकाश नारायण सन तपस्वीक पोसुआ बनि कए दा सुतारै मे लागल छल।...ई समय, तेलंगानाक किसान आंदोलन आ नक्सलबाड़ीक जनांदोलन सं मिथिला कें परिचित

करा चुकल छल। यात्री, किसुन, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द, धीरेन्द्र आ गुंजन, रेणु, जीवकान्त, धूमकेतु, रामलोचन, सुकान्त, महाप्रकाश, महेन्द्र आदिक काव्य कृतिक परिणाम आ अइ विकराल स्थितिक संग नारायण जीक प्रवेश मैथिली साहित्य मे भेल।

एतए धरि आबि कए मैथिली कविता मिथिलाक पारिवारिक आ आन स्थानीय समस्या सभक अतिरिक्त राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय नीक बेजाएक खोज-खबरि बेस जकां लेब' लागल छल। अही समय मे बेस तीक्ष्ण तेवरक संग नारायणजी सन समर्थ युवा कविक पदार्पण मैथिली मे भेल। हिनकर अनुभव, युग यथार्थ आ पूर्ववर्ती परंपराक अही दबावक संग अभिव्यक्त होअए लागल। परिस्थिति, भयवहता हरेक सुधातु कें मांजैत अछि, नारायण जी एकदम सं मंजा कए बाहर अएलाह, परिणाम स्वरूप हिनकर कविता हमरा लोकनिक समक्ष अछि।

लिखबा लेल नारायण जी कथो लिखै छथि, कहियो कहियो समीक्षा आ टिप्पणीत्यादि दिश सेहो घूमि जाइत छथि। मुदा हम मूलतः हिनका कवि मानैत छी। किछु प्रारंभिक कथा सभ मे तं ई हास्यास्पद रहलाह, बादक कथा सभ मे थोड़ेक परिपक्वता देखएलनि, मुदा कविता मे अपन जाहि इमेजक संग ठाढ़ भेलाह, से इमेज कथा मे नइं अयलनि। कविता निरंतर लिखैत रहलाह अछि। पछिला दू दशक भारतीय राजनीति, राजसत्ता, लोकतंत्र, कुटिलतंत्र (जे मोन होअए कहि लिअ', कारण, शब्द आ पद केर अर्थविकृति जतेक अइ दुनू दशक मे भेल अछि, ततेक, न भूतो, न भविष्यति) मे घोर अराजकता व्याप्त भ' गेल। आ तें अंततः मिथिलाक संपूर्ण सामाजिक संरचना सब अर्थें अस्त-व्यस्त रहल अछि। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक उथल-पुथलक कारण देशक कोन-कोन प्रभावित भेल, सहजहिं मिथिलाक जनजीवन, स्थानीय अस्तित्व आ सार्वदेशिक अस्मिता आहत-मर्माहत भेल। नारायणजीक कविता अही पृष्ठभूमि पर अपन पैर रोपलक। सन् 1993 मे 1984 सं 1993 धरिक पचपन गोट कविताक संकलन 'हम घर घुरि रहल छी' प्रकाशित भेल। ताहि सं पूर्वहु, आ तकर पश्चातहु वृहत् संख्या मे नारायण जी कविता लिखलनि अछि, लिखैत रहलाह अछि।

प्रश्न, जिज्ञासा, भविष्यक प्रति आस्था, समाद कहबाक सुनबाक ललक, जीवनक सद्परिणाम'क प्रति आश्वस्ति, सूचना, चेतावनी, आत्मस्वीकृति, प्रतिज्ञा, विचार, मंथन, आत्मविश्लेषण, समाचार संप्रेषण, उलहन आदि तत्व हिनकर कविताक प्रमुख अंग थिक। वैज्ञानिक युगक आक्रमण सं प्रगतिक नाम पर दिशाहारा पड़ाइत जन जीवनक स्थिति देखि हिनकर व्याकुलता हिनकर कविता मे स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि, जतए ई देखि रहल छथि, जे विनाश दिश उन्मुख हमरालोकनि अपन सबटा विरासतीय हथियार त्यागि रहल छी, ओहि समस्त आचार-विचार आ संस्कृति सं विच्छिन्न भ' रहल छी, जे हमरा लोकनि कें विज्ञानक संहारक रुचि सं, ध्वंसात्मक एप्रोच सं अपना के बचा पएबाक प्रेरणा देत। अपन अतीत आ अपन विरासत, लोक संस्कृति, लोक-कला, लोक निष्ठाक प्रति ई प्रेम नारायणजीक कथो मे परिलक्षित भेल अछि। मुदा कविता मे ई एहि सब बिन्दु पर बेसी व्यवस्थित भ' कए व्यक्त भ' सकलाह अछि। 'सोचू कतेक सही थिक', 'लाबन', 'बीस वर्ष बाद', 'दूभि', 'हम घर घुरि रहल छी', 'मैयां अरिपन लिखैत छथि' आदि कविता उदाहरणार्थ देखल जा सकैत अछि। 'लाबन' कविता एक तरहें तीन पीढ़ीक कथा थिक आ अइ कथा मे विकासक माध्यमे पकड़ाइत नव नव क्षितिज आ तकरा कारणें उद्भूत पुरान क्षितिजक निर्थकता मे बिसराइत इतिहास जोगाओल अछि। ई छोट सन कविता पुरना जीवन पद्धति आ लोक जीवनक प्राचीनता कें मात्र बिसारि देबाक कथे टा नइं, अपितु ओहि भयावह स्थितिक सूचना दैत अछि, जे आब' बला समय मे, जहिना आइ 'लाबन' गोठुल्ला मे हेराएल अछि, तहिना हमर इतिहासो हेराएल रहत।

'भोरक आयब' कविता सं नारायण जी पर बात शुरुह कएल गेल अछि। कविक दृष्टिकोण ओतहि साफ भ' जाइत छनि, जतए हिनका लेल इजोतक आगमन महत्वपूर्ण अछि, अंधकारक निष्क्रमण नइं। जे किछु उपलब्ध भ' रहल अछि तकर महत्व कविक नजरि मे तुलनीय छनि, सुखक प्राप्रि सुखद थिक, दुखक निबटारा सं सुखी हएबाक कोनो उद्योग हिनका ओतए नइं देखाइत अछि। प्रायः इएह कारण थिक जे नारायण जीक कविता मे घृणा तत्वक समावेश कतहु नइं भेटैत अछि। प्रेम, भोर, सूर्य, सृजन, धरती, स्त्री, वसंत, इजोत, प्रकाश, आकाश, हंसी, फसिल आदि शब्दक उपयोग हिनकर कविता मे विभिन्न रीतिएं भेल अछि। संज्ञा रूपें, प्रतीक रूपें, आशा आ संभावनाक रूपें अइ शब्दावलीक उपयोग हिनकर कविता सभ मे भेल अछि।

ई बात अकाट्य सत्य थिक जे कोनो आधुनिकतम हथियार सं बेसी उपयोगी मनुष्यक दृढ़ता, ओकर प्रतिज्ञा होइत अछि। हथियार नहियों रहए, मुदा इच्छा शक्ति मजगुत रहए तं हथियारक इंतजाम कहुना भ'ए जाइत अछि मानलहुं/लड़बा लेल ओकरा हथियार नहि छैक/मुदा, फसिल काटबाक कचिया त' छैक/खुर्पी आ कोदारि आ हरबाही पैना त' छैक/सभ सं पैघ बात थिक/ओकर अपन दुनू हाथ मौजूद छैक/किछुओ करबा लेल ओकरा अपना अधीन/ओकरा की नहि छैक ?

वस्तुतः, 'हाथ छैक, तं की नइं छैक !' ई कनी टा बात नइं थिक। 'हाथ' शब्दक उपयोग एतए देखबा मे बड़ सहज आ सामान्य बुझाइत अछि, मुदा एकर व्यंजना बहुत विराट, व्याख्येय आ विशिष्ट अछि। कोनो मनुष्यक हाथ ओकरा जीवनक संपूर्ण संधान, संघर्ष, संग्राम कें द्योतित करैत अछि। मनुष्यक हाथ जं दुरुस्त, सशक्त आ मुक्त छैक, तं संसारक कोनहुं टा वस्तु कें अपना अधीन ओ क' सकैत अछि, 'खाली विचार टा करबाक छैक पक्का'। मनुष्यक अही आस्था कें नारायणजीक कविता पुष्ट करैत अछि।

'गोधन मियां ह'र ट्रैक्टर जकां चला रहल अछि', 'हम इजोत सं प्रेम करैत छी', 'हम घर घुरि रहल छी', 'बसंत आबि रहल अछि' आदि कविता समाद, सूचना, समाचार वाचनक शैली मे कहल तं गेल अछि, मुदा अइ सब मे जीवनक विराट व्याख्या निहित अछि, खैंक भरिक बीया मे वटवृक्षक विशालता वला व्याख्या। गोधन मियां कें छोट सन उपलब्धि भेटलैक अछि, जे पुत्रक कमाइ सं अपन जमीन किनलक अछि, आब ओइ जमीन कें जोतैत काल गोधन मियां ट्रैक्टर जकां ह'र चला रहल अछि। ई छोट सन समाचार, कोनो पैघ पाठ केर व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। अर्थात गोधन मियां थकान विहीन जोताइ क' रहल अछि, बेर उनहि गेलैक, मुदा हर जोतिए रहल छैक; अथवा खेत चूंकि अपन थिकैक, तें ओहि मे जोतैत ह'रो कें ओ कोनो ट्रैक्टर सं कम नइं बुझैत अछि...एहेन एहेन व्याख्याक संभावना नारायणजीक कविता मे जतए ततए ताकल जा सकैत अछि।

हिनकर कविताक उत्स ताक' लेल बेसी उद्योग अथवा श्रमक प्रयोजन नइं बुझाइत रहैत अछि। आ, हिनकर कविता सभक व्याख्या-बहस लेल कोनो आलोचना-समालोचनाक ग्रंथ पढ़बाक प्रयोजन नइं पड़ैत अछि। सुच्चा मैथिल ठाठक ई शुद्ध मैथिली कविता सहज-सरल-संप्रेषणीय भाव-भाषा मे मानव जीवनक रनिंग कमेन्ट्री थिक, सामान्य सं सामान्य पाठक कें एकहु बेर कतहु कोनो अर्थबाधा नहि होइत छनि। शुद्ध रूप सं ई कविता, खेत-खरिहान मे काज करैत, हर जोतैत, कमठौन करैत, खेत तमैत जन-मजूरक श्रमक टोह लैत, तीर्थ-बर्थ करैत, भानस भात करैत, सोइर सेबैत, बच्चा पोसैत, प्रेम करैत विचार विमर्श करैत, चिंतन करैत, समाजक सुखद भविष्यक संकेत तकैत बुद्धिजीवीक पीड़ा, जनता सं प्रपंच करैत, कुर्सीक षड्यंत्र रचैत, फूसि कें सत्य आ सत्य कें फूसि बनबैत राजनीतिज्ञक आ जनप्रतिनिधिक मनोविश्लेषण, अपन विरासत, अपन संस्कृति, अपन परंपरा, अपन लोकाचारक निर्वहण करैत निष्ठाक उपेक्षा आ अपमान आदिक व्याख्या थिक। एहि समस्त कविता मे एक दिश काव्यमयताक उत्कृष्ट लय गुंफित अछि, जकरा कारण कविताक व्याकरण अनेरे आकर्षक बनि पड़ल अछि तं दोसर दिश शब्दक प्रयोग आ भाव संप्रेषण एतेक स्पष्ट आ सहज, जे सामान्यो पाठकक लेल सहज संप्रेषणीय भ' उठल अछि।

नारायणजीक कविताक पाठ ठामे ठाम ई जनतब दैत रहैत अछि, जे हमरा लोकनि जाहि गतिएं आगू मुंहें जा रहल छी, से मान्य, सर्वथा मान्य; मुदा ताहि मूल्य पर जाहि तीव्रताक संग हम अपन प्राचीन धरोहरि सं मूलोचिछन्न भ' रहल छी, से कदापि उचित नइं।

समयक दाब सं थकुचाएल मिथिलाक आम जनजीवनक समस्या आ यातना बहुल चित्र आइ सोझां मे ठाढ़ अछि। अभाव, अकाल, बेकारी, यातना, प्रपंच, हत्या, दंगा, फसाद, लूटि, सूदखोरी, घूसखोरी, राजनीतिक तिकड़म, राजनीतिक हत्या-अपहरण-शोषण, शैक्षिक उद्दंडता, शैक्षिक दरिद्रता, शिक्षा माफिया, संस्कृति माफिया, शोषण, बलात्कार...समस्त अमानवीय आचरण आइ समाज मे व्यापत अछि। मुदा अइ विकराल परिस्थितियहु मे नारायणजी अपना लेल जतबा टा क्षेत्रक चुनाव कएने छथि, ताहि मे विषय बोध, भाव संप्रेषण, अतीत स्मृति, परंपराक प्रति आसक्ति, शब्द माधुर्य, उत्कृष्ट प्रतीकार्थ आ स्पष्ट बिंब निरूपणक लेल पूर्ण रूप सं सफल छथि। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय भावनाक उदय हिनकर कविता मे होइत अछि अवश्य, मुदा, से अत्यंत शालीन भावें। मैथिली कविता कें एखन मरखाह बनब जरूरी छैक। मरखाह क्षेत्र मे कविक प्रवेश आवश्यक छैक। नारायणजीक भाषा ततबाक सम्हरल छनि, जे विषय टा जं बढ़ि जाए, तं मरखाहो क्षेत्रक कविता हिनकर भाषाक चमत्कार पाबि कए सांघातिक भ'जाएत। जहिना धरती मे, स्त्री मे, बीया मे, बसंत मे, सूर्य मे, डिबिया मे, दूभि मे, ओस मे आदि-आदि तत्व मे सृजन, उत्पादन, प्रकाश, किसलय, शीतलता आदिक संभावना अछि, तहिना, देश मे व्याप्त हत्या, फसाद, दंगा, बलात्कार, शोषण, अत्याचार आदिक नरमेध पर्व मे एकटा बिहारि, एकटा आंदोलनक संभावना ताकल जा सकैत अछि, आ ई संभावना जखन प्रस्फुटित हएत, तं ओ 'छाउर पर ठाढ़' भ' कए 'आगि पर ठाढ़ होएबाक, अपन वीरता' नइं देखाओत, ओ सत्ते आगि पर ठाढ़ होएत आ आगि उगलत/नारायणजी सं ओहू दिशाक कविताक अपेक्षा अछि।

बहुपठित, बहुज्ञ आ विराट अध्ययनशीलताक कारणें नारायणजी कें देशी-विदेशी प्रचुर साहित्यक सान्निध्य प्राप्त छनि, ताहू कारणें हिनका अपन विषयबोध के फरीछ करबा मे आ शिल्प-शैली कें धारदार बनएबा मे सहयोग भेटल होइन, से संभव थिक। मुदा कवि नारायणजी मे जे कोना संभावना छनि, तकर प्रतीक्षा हुनकर पाठक वर्ग कें छनि।